प्रकाशक:
श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय,
अमरावती [बरार]

मुद्रक—
टी. एम्. पाटील,
मॅनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [बरार]

THE

ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUSPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. III

DRAVYA-PRAMĀṆĀNUGAMA

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, M. A., LL. B.

C. P. Educational Service, King Edward College, Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra Siddhānta Shāstri ✽ Pandit Hiralal Siddhānta Shastri Nyāyatirtha

With the co-operation of

Pandit Devakinandana, Siddhānta Shāstri ✽ Dr. A. N. Upadhye, M. A., D. Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya

AMRAOTI (Berar)

1941

Price rupees ten only

Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya
AMRAOTI (Berar).

Printed by—
T M Patil, *Manager,*
Saraswati Printing Press
AMRAOTI (Berar)

त्वदीयं वस्तु, भो स्वामिन्,
तुभ्यमेव समर्प्यते ।

मूडबिद्रीके स्वर्गीय भट्टारक
चारुकीर्ति स्वामी

६ मूडबिद्रीके वर्तमान भट्टारक
चारुकीर्ति स्वामी

विषय सूची

प्राक् कथन

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गत द्वितीय भागके प्राक् कथनमें हमने मूडबिद्री सिद्धान्तभवनके अधिकारियोंके सहयोगकी जो सूचना प्रकट की थी, वह क्रियात्मक रूपमें परिणत हुई। इसके प्रमाण पाठक इसी भागमें साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रीमें देखेंगे। हमने महाबंधके अंतर्गत प्रथम रचनाके संबंध एक स्वतंत्र लेखद्वारा जो चिन्ता और जिज्ञासा प्रकट की थी, उसने उक्त सिद्धान्त भवनकी क्रियात्मक शक्तिको जागृत कर दिया। शीघ्र ही हमें स्वयं **भट्टारक स्वामी चारुकीर्तिजी** द्वारा महाबंधके संबंध अनेक सूचनाएं और उसका परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिलसिलेमें सिद्धान्तग्रंथोंके ताडपत्रों, मंदिरों व अधिकारियों व कार्यकर्ताओंके चित्र भी उन्होंने भिजवानेकी कृपा की, व ताडपत्रीय प्रतियोंसे पाठ-मिलानकी सुविधा भी कर दी। इस पुण्य कार्यमें हमारे सदा सहायक **पं. लोकनाथजी शास्त्री** ने उक्त महाबंध-परिचय और मूडबिद्रीका कुछ इतिहास भी लिख भेजनेकी कृपा की, तथा वे अपने दो सहयोगी **पं. नागराजजी शास्त्री** और **पं. देवकुमारजी शास्त्री** के साथ मिलान कार्यमें दत्तचित्त भी हो गये। इस समस्त सहयोगके फलस्वरूप इस भागके साथ हम मूडबिद्री, वहांकी सिद्धान्तप्रतियों, मन्दिरों और अधिकारियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठकोंके सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, अब तक प्रकाशित तीनों भागोंके पाठका ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलान व तत्सम्बन्धी निष्कर्ष अत्यन्त परिश्रमपूर्वक सुव्यवस्थित करके पाठकोंके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूडबिद्रीमें षट्खंडसिद्धान्तकी एक संपूर्ण ताडपत्रीय प्रतिके अतिरिक्त दो और ताडपत्रीय प्रतियां हैं। यद्यपि ये बहुत अधिक त्रुटित हैं— इनके बीचके सैकड़ों पत्र अप्राप्य हो गये हैं— तथापि जितने हैं उतने पाठसंशोधनकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि, इनमें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहांसे हमारे मिलानमें दिये हुए 'ब' खंडके पाठभेदोंकी उत्पत्ति संभव है। विशेषतः मिलानके 'ब' खंडमें दिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से आगेतकके पाठभेद तो यहीं से उत्पन्न हुए विदित होते हैं। यथाशक्ति इन त्रुटित प्रतियोंके मिलान लेनेका भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु वर्तमान परिस्थितिमें इनका उतना और उसप्रकार उपयोग नहीं हो पाया जितना सूक्ष्मताकी दृष्टिसे अभीष्ट है। यथावसर इन प्रतियोंका विशेष परिचय देने और उपयोग लेनेका भी प्रयत्न किया जावेगा। इस महान् साहित्यिक निधिको सर्वोपादेय बनानेमें सहायताके लिये मूडबिद्रीके उक्त महानुभावोंका हम जितना उपकार मानें, थोड़ा है।

---

१ यह लेख जैन गजट, जैन मित्र, जैन संदेश, जैन बोधक आदि पत्रोंमें नवम्बर १९४० में प्रकट हुआ था। उसका पूर्णरूप वर्णित सूचनाओं तकके समाचार सहित दिसम्बर १९४० के जैन सिद्धान्त भास्करमें प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सम्पादकोंको विशेष कठिनाईका सामना करना पड़ा है। एक तो यहांका विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर धवलाकारने अपने समयके गणित शास्त्रकी गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बड़ा हैरान किया, तथापि किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सद्भावना और विद्वानोंके सहयोगसे यह कठिनाई भी अन्ततः हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्व भागोंके समान कुछ आत्मविश्वासके साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं। मूल भागमें सामान्य विषय प्ररूपणके अतिरिक्त कोई २८० शंकाएं उठाकर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुरूह भागको अनुवादमें बीजगणित और अंकगणितके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थों व २२२ पादटिप्पणोंद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसप्रकार गणित बैठानेमें हमें हमारे कालेजके सहयोगी, गणितके अध्यापक प्रोफेसर काशीदत्तजी पांडे, एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होंने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर करण-गाथाओंको समझने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और लगनसे खूब परिश्रम किया है। गाथा नं. २८ (पृ. ४७) का गणित नागपुरके वयोवृद्ध गणिताचार्य, हिस्लाप कालेजके भूतपूर्व गणिताध्यापक प्रोफेसर जी. के. गर्देने बैठा देने की कृपा की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एवं पृ. ५०-५१ पर दिये हुए घनफल-निकालनेका जो गणित संबंधी सामंजस्य प्रस्तावनाके पृ. ६६ पर 'अर्धमत्स्य विशेष सूचना' शीर्षकसे दिया गया है वह लखनऊ विश्वविद्यालयके गणिताचार्य व 'हिंदू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक डाक्टर **अवधेश नारायणसिंहजीने** लिखकर भेजनेकी कृपा की है। इस अत्यन्त परिश्रम पूर्वक दिये हुए सहयोगके लिये उपर्युक्त सभी सज्जनोंके हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्वपूर्ण सम्पादन कार्य हुआ है तो वह इसी सहयोगका परिणाम है। हां, जो कुछ त्रुटियां और स्खलन रहे हों उनका उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है, क्योंकि, अन्ततः समस्त सामग्रीको वर्तमान रूप देनेकी जिम्मेदारी हमारी ही रही है।

इन सिद्धान्त ग्रंथोंकी ओर विद्वान् पाठक कितने आकर्षित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट है जो या तो समालोचनाओंके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सदभिप्रायोंके लिये हम लेखकोंके विशेष आभारी हैं। इन अभिप्रायोंमें कुछ ऐसी अनेक सैद्धान्तिक व अन्य शंकाएं भी उठाई गई हैं जो ग्रंथके सूक्ष्म अध्ययनसे पाठकोंके हृदयमें उत्पन्न हुईं। जितने ही अंश उन शंकाओंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे भेजते गये हैं। अब हम उनमेंसे कुछ महत्वपूर्ण शंकाएं और उनके समाधान इस भागकी भूमिकामें पृथक्रूपसे व्यवस्थित करके प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे सभी पाठकोंको लाभ हो और इस सिद्धान्तके समझने समझानेमें सहायता पहुंचे। गहन सिद्धान्तके इस प्रकारसे डालनेवाले अभिरुचिका हम सदैव आदर करेंगे।

सम्पादन-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी हस्तलिखित प्रतिके अतिरिक्त **आराके सिद्धान्तभवन** और **कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमकी** प्रतियोंका मिलानके लिये लाभ मिलता रहा, तथा **सहारनपुरकी** प्रतिके नोट किये हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिकारियोंके बहुत आभारी हैं। मूडबिद्रीय प्रतियोंके मिलान प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियोंके परस्पर पाठभेद व छूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें विशेषरूपसे सहायक पं. **देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री** गत तीन चार मास बहुत ही व्याधिग्रसित रहे, जिसकी हमें अत्यन्त चिन्ता और आकुलता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुत ही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे उत्तरोत्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं जिसका हमें परम हर्ष है। हमें आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करके अपनी विद्वत्ताका लाभ हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

हमारे सहयोगी पं. **फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका** नवजात पुत्र गत फरवरी मासमें अस्वस्थ हो गया, जिससे परमर्शके अर्थमें पंडितजीको अकस्मात् देश जाना पड़ा। यथाशक्ति सदुपचार करने पर भी दुर्दैववश पंडितजीको पुत्र वियोगका अपार दुख सहन करना पड़ा, जिसका हमें भी अत्यंत शोक है, और इस कुटुम्बकी सहानुभूतिमें हृदय व्यथित होता है। तबसे फिर पंडितजी कारंजा नहीं आ सके। चूंकि इस समय पंडित फूलचन्द्रजी हमारे सन्मुख नहीं हैं, इससे हमें यह निःसंकोच प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन ग्रंथको वर्तमान स्वरूप देनेमें पंडितजीका भारी प्रयत्न रहा है, जिसके लिए हम सम्पादकगण उनके बहुत आभारी हैं।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेके ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४० में प्रकाशित हुआ था। अब १९४१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहानुभूति इस महत्वपूर्ण साहित्यके प्रकाशनमें मिल रहा है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती
१-४-४१

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION

1 Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf Mss. of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts as well as of those who realised the value and importance of this venture brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf Ms. which goes by the name of Mahadhavala. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those Mss. and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf Mss. was therefore immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the results of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhavala Mss. with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search two more old but incomplete palmleaf Mss. of Dhavala have been discovered. They would prove of immense value in settling the text more accurately [illegible] collation of all these palmleaf Mss. in a thorough and [illegible] possible but it might be hoped that this [illegible] The result of the Moodbidri collation [illegible] noticed [illegible] the text of the three volumes [illegible] contribute towards [illegible] expression or both 62 appear [illegible] of the Prakrit language while 10 [illegible] These have been properly classified [illegible] incorporated in the Hindi Introduction [illegible] very slightly only at 8 places in [illegible] as laid down by us in the Int[illegible] by this collation. The [illegible] must wait for more material [illegible] the available Mss. but were thought [illegible] and placed within brackets in the

the two and half Dvipas or mainlands over which the human population is spread (Page 38-43)

4 Scientific Importance of the Work

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jaina dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sutras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical from. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sutras were composed as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sutras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred thousand tens and hundreds of thousands and crores also their multiples squares and square roots as well as the fundamental operations of arithmetic, namely addition subtraction multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors or to determine divisors when a particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus we notice the use of powers (Vargita samvargita) and roots (Varga-mula). This indicates that the author of Dhavala had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms as may be inferred from the relations shown between the Varga-shalakas and Ardhacchedas ‡. The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmatic series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$ and it is just possible that approximations to this value in a fractional form to a fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword my colleague Professor K. D. Panday M. A. has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations while Dr Avadhesh Narain Singh D. Sc. Professor

‡ The number of times that a particular figure is multiplied by itself is its Varga-shalākas while the number of times that a particular figure is successively halved is its ardhacchedas.

१ चित्र परिचय.

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताडपत्र श्रीधवल मपका है। इसके मध्यमें एक तीर्थंकरका चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः यक्ष यक्षिणी खडे किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्थंकरोंके और चित्र हैं, तथा उनके एक ओर यक्ष और दूसरी ओर यक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रवचन करते हुए आचार्य व श्रोता श्रावकोंके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताडपत्र भी श्रीधवल मपराजका है। बीचमें तीर्थंकर विराजमान हैं, और बाजू बाजू सात सात भक्त वन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताडपत्र श्रीधवलका कनाडी लिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताडपत्र कनाडी लिपिमें हस्त लिखित श्रीमहाधवल मपका है।

पांचवां ताडपत्र श्रीजयधवल मपका है। बीचमें कनाडीका हस्तलेख तथा बाजू बाजू चित्र हैं।

छठवां ताडपत्र श्रीमहाधवलका २७ वां पत्र है, जहां 'सत्तकम्मपंचिका' पूरी हुई कही जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख और बाजू बाजू चक्राकार चित्र हैं।

सातवां ताडपत्र त्रिलोकसार मपके भीतरका है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम ग्रंथ श्रीधवल सिद्धान्त (षट्खण्डागम) है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २ फुट, चौडाई २॥ इंच, तथा पत्र संख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १४ पंक्तियां हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १२८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥ आती है, जिससे कुल मपका प्रमाण ७१४८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अभीतक यही समझा जाता था कि धवलाकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहां धवलाकी दो और भी ताडपत्रीय प्राचीन प्रतियां हैं, जिनकी ताडपत्रोंकी संख्या क्रमशः ८०० और ६०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके बीचबीच के अनेक ताडपत्र अप्राप्य हैं, और इस प्रकार ये दोनोंही प्रतियां बहुत कुछ त्रुटित हैं। इनका प्रशस्तियों आदि सहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा ग्रंथ श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २ फुट ४ इंच, चौडाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या २०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तियां, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या १३८ आती है, जिससे कुलग्रंथका प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। किंतु बड़े बड़े पारिभाषिक शब्दोंके सूक्ष्म रूप बनाकर लिखे गये हैं, इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीजयधवल सिद्धांत है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २। फुट, चौडाई २॥ इंच, तथा पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्राय १३ पंक्तियां, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक संख्या लगभग १२० आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ६११२० श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूडबिद्रीका वही सुप्रसिद्ध मंदिर है, जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताडपत्रीय प्रतियां नाना निधियोंसे विराजमान हैं। इन्हींके कारण यह मंदिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त बसदि' कहलाता है। अनेक रत्नमयी प्रतिमायें भी यहां विराजमान हैं, जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरसे यात्री आते हैं। यहांके मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर हैं। यहीं भट्टारक गद्दी है, जिससे इसे 'गुरु बसदि' भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पंचायतके आधीन है, जिससे यह 'पंचायती मन्दिर' भी कहलाता है।

४

यह मूडबिद्रीका 'बड़ा मन्दिर' है। यहां के मूलनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर हैं, जिनकी पूर्ण पुरुषाकार मूर्ति पंच धातुओंकी बनी मानी जाती है। इसकी इमारत तीन मंजिलकी है। दूसरे मंजिलका 'सहस्रकूट चैत्यालय' बहुत ही मनोज्ञ है। तीसरे मंजिलमें छोटी बड़ी ५० प्रतिमाएं विराजमान हैं जो स्फटिकमयी हैं। इसीलिये इस मंजिलको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मंदिरके सन्मुख एक 'मानस्तम्भ' और एक 'ध्वजस्तम्भ' लगा है। तीनों मंजिलोंमें स्तम्भोंकी संख्या कोई एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम 'सहस्रस्तम्भ' या हजार स्तम्भवाला मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। अतः अनुपम सुन्दरताके कारण यह मन्दिर 'त्रिभुवन तिलक चूडामणि' भी कहलाता है।

५

ये मूडबिद्रीके वर्तमान भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान् हैं, तथा अन्य अनेक भाषाओंके भी जानकार थे। आपके समयमें मूडबिद्रीमें अच्छी धर्मप्रभावना हुई। आपने वहांके कई [illegible] जैनमंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया व पंचकल्याणादि कराये। आपके ही [illegible] इन ताडपत्रीय सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपियां हुई थीं, और [illegible] भी प्रारम्भ [illegible] गया था। अजैन जनतामें [illegible] था।

६

ये मूडबिद्रीके वर्तमान भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कनाडी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समयमें श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुफल है कि वहांकी पंचायतद्वारा श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि जिज्ञासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप जीर्णोद्धारादि धार्मिक कार्योंमें खूब दत्तचित्त रहते हैं। ग्रंथोंका जीर्णोद्धार कार्य भी आपकी दृष्टिके ओझल नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त ग्रंथके संशोधन व प्रकाशन कार्यमें अब हमें आपकी पूर्ण सहानुभूति और सहायता मिल रही है, जिसके सुफल पाठक इस ग्रंथभागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिद्रीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और भट्टारकजीके सत्कार्योंमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडबिद्री सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीयुक्त धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार करानेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्रीका पैतृक निवासस्थान मूडबिद्री ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बरैयाकी अध्यक्षतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिद्रीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कठिन परिश्रमसे वीरवाणीविलास सिद्धान्तभवनकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार ग्रंथोंसे ऊपरका संग्रह है। यहांसे आप एक वीरवाणी ग्रंथमालाका भी संपादन करते हैं, जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडबिद्रीके भंडारसे अलभ्य ग्रंथोंकी प्रतिलिपि कराकर मुंबई, आरा, इन्दौर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शास्त्रभंडारोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्लोक सं. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तग्रंथोंकी प्रतिलिपियोंसे संबंध रखता है। जैसा हम प्रथम भागकी भूमिकामें कह आये हैं, महाधवलकी नागरी प्रतिलिपि पहले पहल आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२४ में आपने सहारनपुर पहुंचकर वहांकी धवला और जयधवलाकी कनाडी और नागरी प्रतियोंका मिलान करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महाधवलकी प्रतिसंबंधी शंकाओंपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिकी जांच पड़ताल की, और बहुमूल्य परिचय भेजनेका कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय ग्रंथोंका ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलान भी आपके [illegible] द्वारा किया जा रहा है। आपकी आयु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्षसे आप क्षयव्याधिसे पीड़ित होने हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विश्रान्ति नहीं लेते, और प्रस्तुत सिद्धान्तप्रकाशन कार्यमें तो आप अत्यन्त तन्मयताके साथ जी तोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके सुफल पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागोंमें देखेंगे।

२ मूडबिद्रीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। दिगम्बर जैन सम्प्रदायके अधिकांश सुविख्यात और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और ग्रंथकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, चामुण्डराय आदि महान् ग्रंथकारोंने इसी भूभागको अलंकृत किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूडबिद्री नामका एक छोटासा नगर है जो शताब्दियोंसे जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होय्सल-नरेश बल्लालदेव प्रथमके समयसे बढ़ा। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पार्श्वनाथ बसदिको तुलुवके आलूप नरेशोंसे राज्याश्रय मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजयनगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ (सन् १४२९) के देवराय द्वितीयके एक शिलालेखमें उल्लेख है कि वेणुपुर (मूडबिद्री) उसके भव्यजनोंके लिये सुप्रसिद्ध है। वे शुद्ध चारित्र पालते हैं, शुभ कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका श्रवण करते हैं। यहांके स्थानीय राजा भैरसूने अपने गुरु वीरसेन मुनिकी प्रेरणासे यहांके चन्द्रनाथ मन्दिरको दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होस बसदि (त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि व बड़ा मन्दिर) का 'भैरादेवी मण्डप' नामसे प्रसिद्ध मुखमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मडिदेवरायके राज्यमें बनवाया गया था। विरूपाक्ष नरेशके राज्यमें उनके सामन्त विठरस ओडेयरने सन् १४७२-७३ में इसी बसदिको भूमिदान दिया था। यहां सब मिलकर अठारह बसदि (जिनमंदिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'गुरु बसदि' है जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां सुरक्षित हैं और जिनके कारण वह 'सिद्धान्त बसदि' भी कहलाती है। यह नगर 'जैन काशी' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन समाजमें इसका महत्व कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त ग्रंथोंके लिये यह स्थान जैन धार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।[1]

---

1 देखो Saletore Mediaeval Jainism, P. 351 ff, and Ancient Karnataka P. 410-11

मूडबिद्रीके पंडित लोकनाथजी शास्त्रीने मूडबिद्रीका निम्न इतिहास लिखकर भेजनेकी कृपा की है। कनाडी भाषामें बांसको 'बिदिर' कहते हैं। बांसोंके समूह को छेदकर यहांके सिद्धान्त मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'बिदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। कनाडीमें 'मूड' का अर्थ पूर्व दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका वाचक शब्द 'पडु' है। यहां मूल्की नामक प्राचीन ग्राम पडुबिदुरे कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेके कारण यह ग्राम मूडबिदुरे या मूडबिद्री कहलाया। वंश और वेणु शब्द बांस के पर्यायवाची होनसे इसका वंशपुर अथवा वेणुपुर नामसे भी उल्लेख किया गया है। अनेक व्रती साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम व्रतिपुर या व्रतपुर भी पाया जाता है।

यहां की गुरुबसदि अपरनाम सिद्धान्त बसदिके सम्बन्धमें यह दन्तकथा प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहांपर बांसोंका सघन वन था। उस समय श्रवणबेलगुल (जिनबिद्री) से एक निर्ग्रन्थ मुनि यहां आकर पडुबस्ती नामक मंदिरमें रहे। पडुबस्ती नामक प्राचीन जिनमंदिर अब भी यहां विद्यमान है, और उस मंदिरमें भैरवी पद्मावतीकी मूर्ति स्वर्गीय भट्टारकजीने मठमें विराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निर्ग्रन्थ मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्याघ्रको परस्पर क्रीडा करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पड़ताल करने लगे। उसी खोजबीनके फलस्वरूप उन्हें एक बांसके भिड़में छुपी हुई व पत्थरों [illegible] हुई पार्श्वनाथ स्वामीकी काले पाषाणकी नौ हाथ प्रमाण खड्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तदनन्तर [illegible] के द्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि' का निर्माण हुआ। इस मूर्तिके पादपीठपर उसके शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठित किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके आगेका गद्दीमण्डप (लक्ष्मी मण्डप) सन् १५३७ में [illegible] द्वारा निर्मित किया गया था। इस बसदिके निर्माण का व्यय एक करोड रुपया कहा जाता है जिसमें [illegible] यहां की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मंदिरमें गुप्तरूपसे [illegible] 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहते हैं।

[illegible]

पहुंचे और उन्होंने अपनी विद्या व बुद्धिके प्रभावसे वहांका सब उपद्रव शांत किया, जिससे जैन धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। इसका कुछ उल्लेख विळगीके शासन लेखमें भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है—

"कर्णाटक सिद्धसिंहासनाधीश्वर भट्टाकराय मार्थिसे श्री चारुकीर्तिपंडिताचार्यर् इनु कीर्तिप पेळेदर्"

त्रिबें रायनवोंडु नै—
छवारिवडे सह मनअलरिउेविभिनद् ॥
कुचककायि सूळ्दु च—
म बळेदेसककके पडितार्यने मॉत ॥

दोरसमुद्रसे चारुकीर्तिजी महाराज अपने शिष्योंसहित मूडबिद्री आये और उन्होंने यहां गुरुपीठ (भट्टारक गद्दी) स्थापित की, यहां आते समय उन्होंने पासही मल्लूर ग्राममें भी भट्टारक गद्दी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहां कोई अलग भट्टारक नहीं हैं, वहांके मठका सब प्रबन्ध मूडबिद्री मठसे ही होता है। यह मूडबिद्रीमें भट्टारक गद्दी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७२ ईस्वी बतलाया जाता है। तबसे भट्टारकोंका नाम चारुकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वतंत्र नामों, जैसे वर्धमानसागर, अनन्तसागर, नेमिसागर आदिका भी उल्लेख पाया जाता है। धवलादि सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां यहां धारवाड जिलेके बंकापुरसे लाई गईं, ऐसी भी एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका खूब प्रचार व उन्नति हुई। वर्तमानमें मठकी संपत्तिसे वार्षिक आय लगभग दस हजारकी है।[1]

२ महाबंधकी खोज

१ खोजका इतिहास

षट्खंडागमका सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रकाशित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है[2]। वहां हम बतला आये हैं कि धरसेनाचार्यसे आगमका उपदेश पाकर पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें ग्रंथरचना की, जिनमेंसे प्रथम पांच खंड उपलब्ध धवलटीकाकी प्रतियोंके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महाबंधके सम्बन्धमें धवल तथा जयधवलमें यह सूचना पाई जाती है कि महाबंध स्वयं भूतबलि आचार्यका रचा हुआ ग्रंथ है, उसमें बंधविधानके चार प्रकारों प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश का खूब विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वांग व हुआ कि यतिवृषभ और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी ग्रंथरचनामें उसकी सूचनामात्र दे देना पर्याप्त समझा, उस विषयपर और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें आवश्यकता नहीं दिखी।

१ देख सावयासमाजीत मूडबिद्री चरित्र (कनाडी)
२ देखो प्रथम भाग, भूमिका पृ. ६६ आदि, व द्वि. भाग भूमिका पृ. २५ आदि

इस महाबंधकी अभीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आई। किन्तु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडबिद्रीके सिद्धान्तभवनमें जो महाधवल नामकी कनाडी प्रति ताडपत्रोंपर तृतीय सिद्धान्तग्रंथ रूपसे सुरक्षित है, वही भूतबलिकृत महाबंध ग्रंथ है। इस आशाका आधार अभी-तक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विद्वान् उस प्रतिका अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उसके कोई विस्तृत अवतरण आदि देकर उसका सुपरिचय ही कराया था। उस प्रतिका जो कुछ थोडासा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूडबिद्रीके प. लोकनाथजी शास्त्रीकी कृपासे उनके वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) के भीतर पाया जाता था। उस परिचयमें दिये गये महाधवल प्रतिके प्रारंभिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे ज्ञान हुआ कि वह ग्रंथरचना महाबंध प्रतीत नहीं है, किन्तु सत्कर्मके अन्तर्गत शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी एक 'पंजिका' है, जिसे उसके कर्ताने 'पंजिकारूपेण विवरणं सुमहत्थं' कहा है। उन अवतरणोंसे महाबंधका वहां कोई पता नहीं चला। मैंने अपनी इस आशंकाको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रेरणा की कि महाधवलकी प्रतिका शीघ्रही पर्यालोचन किया जाना चाहिए और महाबंधका पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये। इस लेखके फलस्वरूप मूडबिद्रीमठके भट्टारकस्वामी व पंचोंने उस प्रतिकी जांचकी व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे तारद्वारा सूचित किया कि महाधवल प्रतिके भीतर सत्कर्म-पंजिका भी है, और महाबंध भी है। तत्पश्चात् वहांसे प. लोकनाथजी शास्त्रीद्वारा संग्रह किये हुए उक्त प्रतियोंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रंथरचनाका यहां कुछ परिचय कराया जाता है।

२ सत्कर्मपंजिका परिचय

महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रंथरचनाके आदिमें 'सत्कर्मपंजिका' है, जिसकी उत्थानिका का अवतरण अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह अवतरण पूर्व प्रकाशित धवलाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्धृत किया जा चुका है, तथापि वह उक्त रिपोर्टपरसे लिया गया था, और कुछ त्रुटित था। अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है।

वोच्छामि संतकम्मे पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं।

महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदिवेदणाओ (दि-) चउवीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदिवेदणा त्ति जाणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्हि पुणो पास-कम्म-पयडि-बंधण चत्तारि अणियोगद्दारेसु तत्थ बंध-बंध- णिज्जणामणियोगाणि सह वग्गणाखंडम्हि पुणो बंधविधाणणामणियोगो महाबंधम्मि पुणो बंधगाणियोगो खुद- बंधम्हि सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसाणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूवेण भणिस्सामो।

इस उत्थानिकासे सिद्धान्तग्रंथोंके सम्बन्धमें हमें निम्न लिखित अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचनाएं बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

१ महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो अर्थात् कृति और वेदना, वेदनाखण्डके अन्तर्गत रचे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बंधनके चार भेदोंमेंसे बंध और बंधनीय वर्गणाखण्डके अन्तर्गत हैं। बंधविधान महाबंधका विषय है, तथा बंधक खुद्दाबंध खण्डमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्व बतलाई हुई खण्डव्यवस्थाकी पूर्णतः पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखण्डके भीतर चौबीसों अनुयोगद्वारोंको मानने तथा वर्गणाखण्डको उपलभ्य धवलाकी प्रतियोंके भीतर नहीं माननेवाले मतका अच्छी तरह निरसन हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगद्वारोंसे शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणाका नाम संतकम्म (सत्कर्म) है, और इसी सत्कर्मके गंभीर विषयको स्पष्ट करनेके लिए उसके थोडे थोडे अवतरण लेकर उनके विषमपदोंका अर्थ प्रस्तुत ग्रंथमें पंचिकारूपसे समझाया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगद्वारोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म ग्रंथ कौनसा है? इसके लिए सत्कर्मपंचिकाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है

तं जहा। तत्थ ताव जीवदव्वस्स पोग्गलदव्वमवलंबिय पज्जाएसु परिणमणविहाणं उच्चदे– जीवदव्वं दुविहं, संसारिजीवो मुक्कजीवो चेदि। तत्थ मिच्छत्तासंजमकसायजोगेहि परिणदसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोग्गलविवाइसरूवकम्मपोग्गले बंधिदूण पच्छा तेहिंतो पुव्वुत्त-छव्विहफलसरूवपज्जायमणेयभेयभिण्णं संसरंतो जीवो परिणमदि त्ति। एदासिं पज्जायाणं परिणमणं पोग्गलणिबंधणं होदि। पुणो मुक्कजीवस्स एवं विध णिबंधणं णत्थि, किंतु सहावेण पज्जायंतरं गच्छदि। पुणो—

जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि।

एदस्सत्थो-जस्स जीवदव्वस्स सहावो णाणदंसणाणि। पुणो दुविहजीवाणं णाणसहावविसयविसेसेहिंतो बाहिरित्थ जीवपोग्गलादि-सव्वदव्वाणं परिच्छिंदणसहावेण पज्जायंतरगमणणिबंधणं होदि। एवं एदम्मि वत्तव्वं।

यहां पंजिकाकार कहते हैं कि यहांपर अर्थात् उनके आधारभूत ग्रंथके अठारह अधिकारोंमेंसे प्रथमानुयोगद्वार निबंधनकी प्ररूपणा सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबंधनका निक्षेप छह प्रकारसे बतलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिक्षेपके स्वरूपकी प्ररूपणामें आचार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका खुलासा यह है कि यहां पर पुद्गलद्रव्यके अवलंबनसे जीवद्रव्यके पर्यायोंमें परिणमन विधानका कथन किया जाता है। जीवद्रव्य दो प्रकारका है, संसारी व मुक्त। इनमें मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे परिणत जीव संसारी है। वह जीवविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी और पुद्गलविपाकी कर्मपुद्गलोंका बांधकर अनन्तर उनके निमित्तसे पूर्वोक्त छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है अर्थात् फिरता है। इन पर्यायोंका परिणमन पुद्गलके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणमन नहीं पाया जाता है। किन्तु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरको प्राप्त होता है। पश्चात् लिखते हैं 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि' अर्थात् 'जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है' इति।

इस प्रकरणके मिलानके लिए हमने वीरसेन स्वामीके धवलान्तर्गत निबन्धन अधिकारको निकाला। वहां आदिमें ही निबन्धनके छह निक्षेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय द्रव्य-निक्षेपका कथन शब्दशः ठीक वही है जो पंजिकाकारने अपने अर्थ देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने अर्थ कहा है। यथा—

णिबंधणेत्ति अणियोगद्दारे णिबंधणं णाम अप्पयदणिबंधणणिराकरणट्ठं णिक्खिवियव्वं। तं जहा— णामणिबंधणं, ट्ठवणणिबंधणं, दव्वणिबंधणं, खेत्तणिबंधणं, कालणिबंधणं, भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निबन्धनका स्वरूप बतलाया गया है और उसके पश्चात् द्रव्यनिबन्धनका वर्णन इस प्रकार है—

जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि, जस्स वा सहावस्स (दव्वस्स) सहावो दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिबंधणं। (धवला क प्रति, पत्र १२१०)

प्रतिमें 'सहस्स' पद अशुद्ध है, वहां 'दव्वस्स' पाठ ही होना चाहिए। यहां वाक्यके ये शब्द 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो' ठीक वे ही हैं, जो पंजिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पंजिकाकारने 'एत्थ जीवदव्वस्स सहावो णाणदंसणाणि' आदि वाक्योंमें अर्थ किया है। यथार्थतः जितना वाक्यांश पंजिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका अर्थ व्यवस्थित करना कठिन है। किन्तु धवलाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम खुल जाता है। इसपरसे पंजिकाकारकी शैली यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके सुगम प्रकरणको तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्थलोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी सिलसिलेमें मूलके विवक्षितपदोंको लेकर उनका अर्थ कर देना। इस परसे पंजिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, जहां उन्होंने कहा है कि 'तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूवेण भणिस्सामो' अर्थात् उन अठारह अनुयोगद्वारोंका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके अर्थकी दृष्टिसे विषमपदोंका व्याख्यान करते हैं, और ऐसा करनेमें मूलके केवल थोड़ेसे उद्धरण लेंगे। यही पंजिकाका स्वरूप है। मूलग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यरचनामें लेकर अर्थ करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है। उदाहरणार्थ, विद्यानन्दिकृत अष्टसहस्रीमें अकलंकदेवकृत अष्टशती इसीप्रकार गुंथी हुई है। पंजिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषमपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है।

सत्कर्मपंजिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

"इस प्रकार छह ■ योंका पर्यायान्तरका परिणमन विधान विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

संपहि एक्कमाहियारस्स ...... उप्पायाणुगमविवरणं करस्सामो। तं जहा— अप्पसत्थमाण-माणस्स ...... भोण। कुदो इच्चादि।

कन्दवृत्त पद्य हैं जो कि शान्तिनाथ राजाके प्रशंसात्मक पद्य हैं। उक्त राजाने 'सत्कर्मपंजिका' को विस्तारसे लिखवाकर भक्तिके साथ श्री माघनंद्याचार्यजीको दे दिया। प्रति लिखनेवाला श्री उदयादित्य है।"

इसके ताडपत्रोंकी संख्या २७ और ग्रंथ-प्रमाण लगभग ३७०६ श्लोकके है।

३ महाबंध-परिचय

मूडबिद्रीकी महाधवल नामसे प्रसिद्ध ताडपत्रीय प्रतिके पत्र २७ पर पूर्वोक्त सत्कर्मपंजिका समाप्त हुई है। २८ वां ताडपत्र प्राप्त नहीं है। आगे जो अधिकार-समाप्तियां व नवीन अधिकार-प्रारंभकी प्रथम सूचना पाई जाती है वह इसप्रकार है—

एवं पगदिसमुक्कित्तणा समत्ता (त्ता)। जो सो सव्वबंधो णोसव्वबंधो इत्यादि।

तथा 'एवं कालं समत्तं' 'एवं अंतरं समत्तं' इत्यादि।

पं. लोकनाथजी शास्त्रीके शब्दोंमें 'इस रीतिसे भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव और अल्पबहुत्वका वर्णन है'। अल्पबहुत्वकी समाप्ति-पुष्पिका इसप्रकार है—

एवं परत्थाणअप्पाबहुगं समत्तं। एवं पगदिबंधो समत्तो।

इस थोड़ेसे विवरणसे ही अनुमान हो जाता है कि प्रस्तुत ग्रंथरचना महाबंधके विषयसे संबंध रखती है। हम प्रथम भागकी भूमिकाके पृष्ठ ६७ पर धवला और जयधवलाके दो उद्धरण दे चुके हैं, जिनमें कहा गया है कि महाबंधका विषय बंधविधानके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश, इन चारों प्रकारोंका विस्तारसे वर्णन करना है। इन प्रकारोंका कुछ और विषय-विभाग धवला प्रथम भागके पृष्ठ १२७ आदि पर पाया जाता है जहां जीवट्ठाणकी प्ररूपणाओंका उद्गम स्थान बतलाते हुए कहा गया है—

बंधविहाणं चउव्विहं। तं जहा- पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि। तत्थ जो सो पयडिबंधो सो दुविहो, मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो मूलपयडिबंधो सो थप्पो। जो सो उत्तरपयडिबंधो सो दुविहो, एगेगुत्तरपयडिबंधो अव्वोगाढउत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो एगेगुत्तरपयडिबंधो तस्स चउवीस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तं जहा- समुक्कित्तणा सव्वबंधो णोसव्वबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहण्णबंधो अजहण्णबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धुवबंधो बंधसामित्तविचओ बंधकालो बंधंतरं बंधसण्णियासो णाणाजीवेहि भंगविचओ भागाभागाणुगमो परिमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि।

यहां प्रकृतिबंध विधानके एकैकोत्तरप्रकृतिबंधके अंतर्गत जो अनुयोगद्वार गिनाये गये हैं, उनमेंसे आदिके समुत्कीर्तना, सर्वबंध और नोसर्वबंध, इन तीन, तथा अंतके भंगविचयादि नौ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख महाधवलकी उक्त ग्रंथरचनाके परिचयमें भी पाया जाता है। अतः यह भाग महाबंधके प्रकृतिबंधविधान अधिकारकी रचनाका अनुमान किया जा सकता है। यह प्रकृतिबंध ताडपत्र ७० पर अर्थात् २१ पत्रोंमें समाप्त हुआ है।

प्रकृतिबंध अधिकारकी समाप्तिके पश्चात् महाधवलमें ग्रंथरचना इसप्रकार है—

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें[1] हम वर्तमान ग्रन्थभाग अर्थात् द्रव्यप्रमाणप्ररूपणामें के[2] तथा अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें 'उत्तरप्रतिपत्ति' और 'दक्षिण-प्रतिपत्ति' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है। वहां हम कह आये हैं कि 'हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। संभव है इससे धवलाकारका तात्पर्य जैनसमाजके भीतरकी किन्हीं विशेष साम्प्रदायिक मान्यताओंसे ही हो' वहां हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अंग्रेजी वक्तव्यमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

"At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools."

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको 'पवाइज्जमाण' और 'आयरियपरंपरागय' भी कहा है। अब श्रीजयधवलमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहां 'पवाइज्जंत' तथा 'आइरियपरंपरागय' का स्पष्टार्थ खोलकर समझाया गया है और आर्यमंक्षुके उपदेशको वहां 'अपवाइज्जमाण' तथा नागहस्ति क्षमाश्रमणके उपदेशको 'पवाइज्जंत' बतलाया है। यथा—

को पुण पवाइज्जंतोवएसो णाम वुत्तमेदं? सव्वाइरियसम्मदो चिरकालमव्वोच्छिण्णसंपदायकमेणागच्छमाणो जो सिस्सपरंपराए पवाइज्जदे पण्णविज्जदे सो पवाइज्जंतोवएसो त्ति भण्णदे। अथवा अज्जमंखु भयवंताणमुवएसो एत्थापवाइज्जमाणो णाम। णागहत्थिखवणाणमुवएसो पवाइज्जंतओ त्ति घेत्तव्वो।

(जयधवला अ. पत्र ९०८)

अर्थात् यहां जो 'पवाइज्जंत' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है? जो सर्व आचार्योंसे सम्मत हो, चिरकालसे अव्युच्छिन्नसंप्रदाय क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरंपरासे प्रचलित और प्रज्ञापित किया जा रहा हो वह 'पवाइज्जंत' उपदेश कहा जाता है। अथवा, भगवान् आर्यमंक्षुका उपदेश यहां (प्रकृत विषयपर) 'अपवाइज्जमाण' है, तथा नागहस्ति क्षपणका उपदेश 'पवाइज्जंत' है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

आर्यमंक्षु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त ग्रंथोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं। जान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था। जहां वीरसेनस्वामीके समक्ष ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहां जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत ज्ञात हुआ उसे पवाइज्जमाण कहा।

१ षट्खंडागम भाग १ भूमिका पृष्ठ ५७

२ देखो पृ. ९२, ९४, ९८ आदि मूल व अनुवाद

इसप्रकार मूडबिद्रीकी प्रति व प्रचलित प्रतियोंके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदनाखंडके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामंजस्य बैठ जाता है, तथा उससे धवलाकारके णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबंधी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबंधी इस निष्कर्ष-द्वारा कुछ लोगोंके मनमें प्रचलित एक मान्यताको बडी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि णमोकारमंत्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुष्पदन्ताचार्य हैं। तथापि धवलाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि णमोकारमंत्र-संबंधी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुष्पदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अरिहंतादि पंच परमेष्ठीकी मान्यता है तभीसे उनको नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किंतु 'णमो अरिहंताणं' आदि शब्द-रचनाके कर्ता पुष्पदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान श्रुतावतारसंबंधी कथनकी ओर आकर्षित करता हूं। धवला, प्रथम भाग, पृ ५५ पर कहा गया है कि—

'सुत्तमोइण्णं अत्थदो तित्थयरादो, गंथदो गणहरदेवादो त्ति'

अर्थात् सूत्र अर्थप्ररूपणाकी अपेक्षा तीर्थंकरसे, और ग्रंथरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमत्वतः सदा स्थितस्य श्रुतस्य कथमवतार इति ?

अर्थात् द्रव्य भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वदा अवस्थित श्रुतका अवतार कैसे हो सकता है?

इसका समाधान किया जाता है—

न्याय्यैषाभविष्यद्यदि द्रव्यार्थिकनयोऽविवक्षिष्यत्। पर्यायार्थिकनयापेक्षायामवतारस्तु पुनर्घटत एव।

अर्थात् यह शंका तो तब बनती जब यहां द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा होती। परन्तु यहां-पर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे श्रुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृ ६० पर कर्त्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्त्ता व दूसरा ग्रंथकर्त्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थंकर भगवान् महावीरको श्रुतका अर्थकर्त्ता, गौतम गणधरको द्रव्यश्रुतका ग्रंथकर्त्ता तथा भूतबलि-पुष्पदन्तको भी खंडसिद्धान्तकी अपेक्षा कर्त्ता या उपग्रंथकर्त्ता कहा है। यथा—

तत्थ कत्ता दुविहो, अत्थकत्ता गंथकत्ता चेदि। महावीरोऽर्थकर्ता। एवंविधो महावीरोऽर्थकर्ता। तदो भावसुदस्स अत्थपदाणं च तित्थयरो कत्ता। तित्थयरादो सुदपज्जाएण गोदमो परिणदो त्ति दव्व

२ शंका—गाथा ४ में ' मडु ' पाठ है, जिसका अनुवाद ' मुद्गर ' किया गया है। समझमें नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'मडु' का संस्कृत रूपान्तर 'मधु' होता है ? (विवेकाभ्युदय, ता २०-१-४०)

समाधान—प्राकृतमें ' मडु ' का संस्कृत रूपान्तर ' मद्गम् ' करना चाहिए। देखो हेम व्याकरण ' मडु मज्ज इति ट्रस्यात् ' ८, ४, ३७९ इसीके अनुसार ' मुद्गर ' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ में ' हणवरसीहो ' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक ' हर ' शब्द नहीं है। ' वर ' की जगह ' हर ' रखना चाहिए था। (विवेकाभ्युदय, ता २ १ ४०)

समाधान—हमारे सम्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें ' हणवरसीहो ' ही पाठ था और मूडबिद्रीसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें ' वर ' के स्थानपर जबरदस्ती ' हर ' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ ' हर ' के बिना भी सुगम है ? ' वादीभसिंह ' आदि नामोंमें विनाशबोधक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

पृष्ठ ७

४ शंका—गाथा ५ में ' दुक्ख्यं ' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है ' दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले ' यह अर्थ किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए। (विवेकाभ्युदय, १ १० ४)

समाधान—' दुक्यन ' का संस्कृत रूपान्तर है ' दुष्कृतान्त ' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में ' -वइ सया दन ' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा ' -पति सदा दन्त '। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि ' दन्त ' शब्दसे इंद्रियदमनका अर्थ किसप्रकार लाया जा सकता है ? (विवेकाभ्युदय १ १० ४०)

समाधान—प्राकृतमें ' दन ' शब्द ' दान्त ' के लिये भी आता है। यथा, ' दतेण चित्तेण चरंति धीरा ' (प्राकृतसूक्तरत्नमाला) पाइअसद्दमहण्णओ कोषमें ' दत ' का अर्थ ' जितेन्द्रिय ' दिया गया है। इसीके अनुसार ' निरन्तर पंचेंद्रियोंका दमन करनेवाले ' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में ' विणिहयवम्महपसर ' का अर्थ होना चाहिये ' जिन्होंने ब्रह्मा हैतकी व्यापकताको नष्ट कर दिया है और निर्मलज्ञानके रूपमें ब्रह्मकी व्यापकताको बताया है '। (विवेकाभ्युदय १० १० ४०)

समाधान—जब वाक्यमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अर्थ भिन्न भिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें ' वम्मह ' का अर्थ दोनों जगह ' ब्रह्म ' ले लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें ' अद्वैत ' शब्द अपनी ओरसे डाला गया

है, जिसके लिए मूलमें सर्वथा कोई आधार नहीं है । प्राकृतमें 'वम्मह' शब्द 'मन्मथ' के लिए आता है । हेम प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है— 'मन्मथे वः' ८, १, २४ इसकी वृत्ति है 'मन्मथे मस्य वो भवति, वम्महो' । इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है जिसमें कोई दोष नहीं ।

पृष्ठ १५

७ शंका—आगमे सूत्रे 'सम्मइसुत्त' इति लिखितमस्ति भवद्भिश्च कृतं 'सम्मतितर्के' सम्मतितर्काख्य श्वेताम्बरीयग्रन्थमध्ये, तस्य निर्दिष्ट आचार्य कृत वा सम्मइसुत्त नाम किमपि दिगम्बर ग्रन्थ वर्तते ?

(पं. सुमनलालजी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४...)

अर्थात् मूलके 'सम्मइसुत्ते' से सम्मतितर्कका अर्थ लिया है जो श्वेताम्बरीय ग्रंथ है आचार्यने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय ग्रंथ भी है ?

समाधान—'णाम ठवणा दविए' इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्मतिसूत्रका उल्लेख किया है वह सम्मतितर्क नामका प्राप्त ग्रंथ ही प्रतीत होता है, क्योंकि वह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएं वहां पाई जाती हैं । सम्मतितर्कके कर्ता सिद्धसेनका स्मरण महापुराण आदि अनेक दिगम्बर ग्रंथोंमें भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि वे आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें मान्य रहे हैं । इससे अन्य कोई ग्रंथ इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं ।

पृष्ठ १९

८ शंका—'बाह्यार्थनिरपेक्षा मंगलसंज्ञा नाममंगलं' इत्यत्र तस्य मंगलस्याधारविषये विधेयत्वेऽजीवाधारकथने भाषायां जिनप्रतिमाया उदाहरणं प्रदत्तं, तत्कथं संगच्छते ? अजीवाधारः जिनभवनमुद्रादिकमिति ।

(पं. सुमनलालजी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४...)

अर्थात् नाममंगलके आठ प्रकारके आधार-कथनमें भाषानुवादमें अजीव आधारका उदाहरण जिनप्रतिमाका दिया गया है, सो कैसे संगत है ? जिनभवनका उदाहरण अधिक ठीक था ?

समाधान—धवलाकारने नाममंगलका जो लक्षण दिया है और उसके जो आधार बतलाये हैं, उनसे तो यही ज्ञात होता है कि एक या अनेक चेतन या अचेतन मंगल नाममंगलके आधार होते हैं । उदाहरणार्थ, यदि हम पार्श्वनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममंगल होगा । यदि हम चौबीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममंगल होगा । यदि हम अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ, या केशरियानाथ आदि प्रतिमाओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममंगल होगा, इत्यादि । इस प्रकार जिनप्रतिमा नाममंगलका आधार बन जाती है, जिसका कि उसी पृष्ठपर दी हुई टिप्पणियोंसे यथोचित समर्थन हो जाता है । इसी प्रकार पंडितजी द्वारा सुझाया गया जिनमंदिर भी अजीव नाममंगलका आधार माना जा सकता है ।

पृष्ठ २९

९ शंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमंगलके कथनमें लिखा है 'अर्धाष्टारत्न्यादि पंचविंशत्युत्तरपंचधनुःशतप्रमाणशरीर' जिसका अर्थ आपने 'साढ़े तीन हाथसे लेकर ५२५ धनुष तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें 'अर्धाष्ट इत्यत्र अर्धचतुर्थ इति पाठेन भाव्यम्' ऐसा लिखा है। सो आपने यह कहांसे लिया है और क्यों लिखा है? (माणकचंदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ (अरत्नि) और उत्कृष्ट अवगाहना पांचसौ पच्चीस धनुष प्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वोक्त बतलाई है। इसके लिए त्रिलोकसारकी गाथा १४१-१४२ देखिये। संस्कृतमें साढ़े तीनको 'अर्धचतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रख कर 'अर्धाष्ट' के स्थानमें 'अर्धचतुर्थ' का संशोधन सुझाया गया है, यह आगमानुकूल भी है। 'अर्धाष्ट' का अर्थ 'साढ़े सात' होता है जो प्रचलित मान्यताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी दूसरी पंक्तिमें त्रिलोकप्रज्ञप्तिका जो उद्धरण (आहुट्ठहत्थपहुदी) दिया है उससे भी सुधारे गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० शंका—धवलराजमें क्षयोपशमसम्यक्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे न्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है? इसका क्या कारण है? (माणकचंदजी, पत्र १४४१)

समाधान—सर्वार्थसिद्धिमें क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर या राजवार्तिकमें सम्यग्दर्शनसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागर और धवला टीका पृ० १० पर सम्यग्दर्शनकी अपेक्षा मार्गणाकी उत्कृष्ट स्थिति देशोन छयासठ सागर कही है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

धवलाकारने जीवट्ठाण खंडकी अन्तरप्ररूपणामें ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करनेका क्रम इसप्रकार दिया है —

एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा लंतव-काविट्ठवासियदेवेसु चोद्दससागरोवमाउट्ठिदिएसु उववण्णो। एवं सागरोवमं गमिय बिदियसागरोवमादिसमए सम्मत्तं पडिवण्णो। तेरस सागरोवमाणि तत्थ अच्छिय सम्मत्तेण सह चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुसाउएणूण-बावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु आरणच्चुददेवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजममणुपालिय उवरिमगेवज्जे देवेसु मणुसाउगेणूणएक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तूणछावट्ठिसागरोवमचरिमसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदो। × × × एसा उप्पत्ति अउप्पण्णउप्पायणट्ठं वुत्तो। परमत्थदो पुण जेण केण वि पयारेण छावट्ठी पूरेदव्वा।

अर्थात्—कोई एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चौदह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले लान्तव

कापिष्ट कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांपर एक सागरोपम काल बिताकर दूसरे सागरोपम आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहां रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यभवमें संयमको अथवा संयमासंयमको परिपालनकर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले आरण अच्युत कल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत होकर पुनः मनुष्य हुआ। इस मनुष्यभवमें संयमको धारणकर उपरिम ग्रैवेयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहां पर अन्तर्मुहूर्त कम छ्यासठ सागरोपमके अंतिम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्य मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। × × × यह उत्पत्तिक्रम अव्युत्पन्न जनोंके व्युत्पादनार्थ कहा है। पर मार्गसे तो जिस किसी भी प्रकारसे छयासठ सागरोपमकालको पूरा करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धिकार जो क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह षट्खंडागम के दूसरे खंड क्षुद्रबंधके आगे बताये जानेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है, उसमें धवला से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल धवलाके प्रथम भाग पृ. ३९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। सो यहांपर ध्यान देनेकी बात यह है कि धवलाकार वेदकसम्यक्त्व या सम्यक्त्वसामान्यकी स्थिति नहीं बता रहे हैं, किन्तु मंगलका उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे, जिसका अभिप्राय यह समझमें आता है कि सम्यक्त्व होने पर जो असंख्यातगुणश्रेणी कर्म-निर्जरा सम्यक्त्वी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मंगल अर्थात् पापको गलानेवाला होनेसे यह सम्यक्त्व मंगलरूप है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अंतिम मुहूर्तमें सम्यक्त्वको छोड़कर नीचेके गुणस्थानोंमें जा रहा है, उसके सम्यक्त्वकालमें होनेवाली निर्जरा बंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें संक्लेशका वृद्धि होनेसे वह सम्यक्त्वसे पतनो मुख हो रहा है। अतएव इस अंतिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजवार्तिकमें बताये गये साधिक ६६ सागरोपमकालकी बात सो उस विषयमें एक बात खास ध्यान देनेकी है कि राजवार्तिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्यग्दर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं, और सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकता बन भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुत्तरादिकमें जाकर आये हुए जीवके मनुष्यभवमें क्षायिकसम्यक्त्वकी उत्पत्तिकी भी सम्भावना है। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्राप्तकर संयमी हो अनुत्तरादिकमें उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर काल बन जाता है, और क्षायोपशमिकसे क्षायिक सम्यक्त्वको उत्पन्न कर लेनेपर भी सम्यग्दर्शनसामान्य बराबर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीव स्थान खंडकी अन्तर प्ररूपणाके निम्न अवतरणसे भी होती है*—

' उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ पुव्वकोडाउअमणुस्सेसु उववण्णो अट्ठवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो १ तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण २ उवसमसेढीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो ३ अपुव्वो ४ अणियट्टी ५ सुहुमो ६ उवसंतो ७ पुणो वि सुहुमो ८ अणियट्टी ९ अपुव्वो १० होदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदो देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेदूण मदो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। अट्ठवस्सिओ ... कादूण कालं गदो। तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो ४ संजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अपुव्वो जादो लद्धमंतरं ११ अणियट्टी १२ सुहुमो १३ उवसंतो १४ पुणो सुहुमो १५ अणियट्टी १६ अपुव्वो १७ अप्पमत्तो १८ पमत्तो १९ अप्पमत्तो २० उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अट्ठहि वस्सेहि छव्वीसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि '

यह विवरण उपशामक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकाल बतलाते हुए अन्तरप्ररूपणामें आया है। अर्थात् कोई एक जीव उपशमश्रेणीसे उतरकर साधिक छयासठ सागरके बाद भी पुनः उपशमश्रेणीपर चढ़ सकता है। उक्त धवला मत यह है—

' मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्ता रखनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयु वाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको युगपद् प्राप्त हुआ। पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें कईबार आ जा कर उपशमश्रेणीपर चढ़ा और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी वर्षतक संयमको पालके मरणकर तेतीस सागरकी आयुवाला देव हुआ। वहांसे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहांपर क्षायिकसम्यक्त्वको भी धारण कर तथा संयमी होकर मरा और पुनः तेतीस सागरोपमकी स्थिति वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पुनः पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथासमय संयमको धारण किया। जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब पहले उपशमश्रेणीपर चढ़ा, पीछे क्षपकश्रेणीपर चढ़कर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इसप्रकारसे उपशमश्रेणीवाले जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छब्बीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक छयासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है।

इस अन्तरकाल में रहते हुए भी वह बराबर सम्यग्दर्शनसे युक्त बना हुआ है, भले ही प्रारम्भमें ३३ सागर तक क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी और बाद में क्षायिकसम्यक्त्वी रहा हो। इस प्रकार सम्यग्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छयासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है।

खुद्दाबंधके कालानुयोगद्वारमें भी सम्यक्त्वमार्गणाके अन्तर्गत सम्यक्त्वसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरसे कुछ अधिक ही है। यथा—

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। (धवला अ प, ५०७)

समयमें तो गिने चुने ही श्रुतकेवली हुए हैं। सात हजार सकल श्रुतके धारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अत यह अंश विचारणीय प्रतीत होता है। (पृष्ठ ६५)

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—त्रिलोकप्रज्ञप्ति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान महावीरके तीर्थकालमें पूर्वधारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमती मन पर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधिज्ञानी १३००, वैक्रियिकऋद्धिधारी ९०० और वादी ४०० बतलाये हैं। इनमें यद्यपि पूर्वधारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व श्रेणी आरोहणकालमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमती मन पर्ययज्ञानी जीव तद्भव-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं। पर अवधिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकालमें हजारों द्वादशांगधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

पृष्ठ ६८

१३ शंका—'धरगारवपरिबद्धो' का अर्थ 'रसगारवके आधीन होकर' उचित नहीं जचता। गारव (गारव?) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। 'धद' का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४

समाधान—'गारव' पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

तओ गारवा पण्णत्ता। त जहा—इड्ढिगारवे रसगारवे सातागारवे। स्था ३, ४

ऋद्धियोंके अभिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिचर्याके सुखको सातगारव या सुखगारव क

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय 'रसादि गारवके आधीन होकर' से है। मूलपाठक रूपा तर हमारी दृष्टिमें रसगारवप्रतिबद्ध' रहा है। प्रतियोंमें 'धद' के स्थानपर ' भी पाया जाता है जिससे यदि दधिका अभिप्राय लिया जाय तो उपलक्षणासे रसगा आजाता है।

पृष्ठ १४८

शंका १४—प्रतिभास प्रमाणाप्रमाणस्य इत्यादि वाक्यमें प्रतिभासका अ अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ यहां ज्ञान सामान्य ही हो क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य बाह्यार्थ पर अवलम्बित है, अत यह वि

सकता है और अविसंवादी भी। अनध्यवसाय विसंवादी ज्ञानका भेद है। उसमें जिस तरहसे विसंवादित्व और अविसंवादित्वकी चर्चा की गई है वह स्याद्वादकी दृष्टिसे अनुकूल होते हुए भी चित्तको नहीं लगता। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान— यद्यपि प्रतिभासका जो अर्थ किया गया है, वह स्वयं शंकाकारके मनसे भी सदोष नहीं है, तथापि यदि प्रतिभासका अर्थ ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, तो भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवस्थामें अनुवाद पंक्ति १७ में 'और अनध्यवसायरूप जो प्रतिभास है' के स्थानमें 'और जो ज्ञान सामान्य है' अर्थ करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

१५ शंका— 'असग्गहाणं व्याख्यातृणामभाव आर्षमन्तरविच्छेदस्य' ...... वचनरचनानामार्षत्वाभावात्'। यहां 'विच्छेदस्य' के स्थानमें 'विच्छेद' पाठ अच्छा जचता है। उससे वाक्यरचना भी ठीक हो जाती है। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—प्राप्त प्रतियोंसे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति संगति अनुवादमें बैठा दी गई है। मूडबिद्रीसे भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ। तथापि 'विच्छेदस्य' के स्थानपर 'विच्छेद स्यात्' पाठ स्वीकार कर लेनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त शंकाका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका—असग्गहको व्याख्याता नहीं मानने पर आर्ष-परम्पराका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, अर्थशून्य वचन-रचनाको आर्षपना प्राप्त नहीं हो सकता है।

पृष्ठ २१३

१६ शंका— संस्कृत (मूल) में जो 'नवक' शब्द आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करके 'नवक' ही लिया है। सो इसका क्या अर्थ है? (नानकचंदजी, पत्र १४ ...)

समाधान—'नवक' का अर्थ नवीन है, इसलिए सर्वत्र नवीन बंधनेवाले समयप्रबद्धको नवक समयप्रबद्ध कहते हैं। पर प्रकृतमें विवक्षित प्रकृतिके उपशमन और क्षपणके द्विचरमावली और चरमावली अर्थात् अंतकी दो आवलियोंके कालमें बंधनेवाले समयप्रबद्धको ही नवकसमयप्रबद्ध कहा है। इस नवकसमयप्रबद्धका उस विवक्षित प्रकृतिके उपशमन या क्षपण कालके भीतर उपशम या क्षय न होकर उपशमन या क्षपणकालके अनन्तर एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय होता है। एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय कैसे होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१४ का विशेषार्थ देखिए। विशेषके लिए देखिए लब्धिसार क्षपणासार।

पृष्ठ २५०

१७ शंका—शंकाकार प्रारंभ प्रथम पंक्तिमें आए हुए 'तथापि' शब्दसे जान पड़ता है,

स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं? उसका समाधान करते हुए लिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न होते हैं'। सो इसका खुलासा क्या है? क्या सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न हो सकता है? (नानकचंदजी, १४४०)

स्त्रियोंको अपर्याप्तदशामें सम्यक्त्व नहीं होता है, ऐसा गोम्मटसार आदि ग्रंथोंका वचन है। तदनुसार धवलाके द्वितीय खंडमें पृ० ४३० पर भी लिखा है 'इत्थिवेदेण विणा ' अपर्याप्त-दशामें स्त्रीवेदीको सम्यक्त्व नहीं। किंतु धवलाके प्रथम खंडमें पृ० ३३२ पर इसके विरुद्ध लिखा है—हुंडावसर्पिण्यां स्त्रीषु सम्यग्दृष्टयः किन्नोत्पद्यन्त इति चेत्, नोत्पद्यन्ते। कुतोऽवसीयते? अस्मादेवार्षात्। ऐसा विरोधी वचन क्यों है? (पं० अजितकुमारजी शास्त्री पत्र ३३। ४०)

समाधान—अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है। इसलिए उक्त शंका-समाधानका अर्थ इस प्रकार लेना चाहिए—

शंका—हुंडावसर्पिणी कालमें स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं होते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं।

यहां 'उत्पद्यन्ते' क्रियाका अर्थ 'होना' लेना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंडावसर्पिणीकालके दोषसे स्त्रियां सम्यग्दृष्टि न होवें, ऐसा शंकाकारके पूछनेका अभिप्राय है।

अथवा, इस शंका समाधानका निम्न प्रकारसे दूसरा भी अभिप्राय कदाचित् संभव हो सकता है—

शंका—हुंडावसर्पिणीकालमें जैसे अन्य अनेकों असंभव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं?

समाधान—सूत्र नं० ९३ में कहा है कि 'असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्त्रियां नियमसे पर्याप्त होती हैं' इससे जाना जाता है कि किसी भी कालमें सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं।

इस अभिप्रायके लिये मूलपाठमें 'चेत्' के पश्चात्का विराम हटा देना चाहिये। तथापि आगेके संदर्भसे इस अभिप्रायका सामंजस्य यथोचित नहीं बैठता।

पृष्ठ ३४२

२९ शंका—धवलसिद्धांतानुसार जो द्रव्यसे पुरुष होवे और भावोंमें स्त्रीरूप हो उसे योनिमती कहते हैं। किंतु गोम्मटसार जीवकांड गाथा १५०, १५६, ३८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें स्त्री हो, और परिणतिमें स्त्रीभाव हो उसको योनिमती कहते हैं। इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्थान माने हैं। इसका समाधान कीजिए। (न० हरजीवनजी)

समाधान—योनिमती तिर्यंच स्त्रियोंके उदय प्रकृतियां बतलाते हुए कर्मकांड गाथा नं

२९६ में कहा है—'कुमइन्थिवेदृण जोणिणीवे' अर्थात् योनिमतीके पूर्वोक्त ९७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवेद और नपुंसक वेदको घटाकर स्त्री वेदके मिला देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनीके विषयमें कहा है—'मणुसिणि स्त्रीसहिदा' ॥३०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें स्त्रीवेद मिला देनेपर और तीर्थंकर आदि ५ प्रकृतियां निकाल देनेपर मनुष्यनियोंके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां योनिमती उस कहा है जिसके स्त्रीवेदका उदय हो जीवके द्रव्य वेद कोई भी रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमतीके १४ गुणस्थानकी बात, सो कर्मभूमिज स्त्रियोंके अन्तके तीन संहननोंका ही उदय होता है, ऐसा गो० कर्म० की गाथा ३२ से प्रगट है। परन्तु शुक्लध्यान, क्षपकश्रेण्यारोहणादि कार्य प्रथम संहननवालेके होते हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि द्रव्यस्त्रियोंके १४ गुणस्थान नहीं होते हैं। पर गोम्मटसार स्त्रीवेदीके १४ गुणस्थान बतलाये अवश्य हैं, इसलिए वहां द्रव्यसे पुरुष और भावसे स्त्रीवेदीका ही योनिमती पदसे ग्रहण करना चाहिए। इस विषयमें गोम्मटसार और धवलसिद्धान्तमें कोई मतभेद नहीं है। द्रव्यस्त्रीके आदिके पांच गुणस्थान ही होते हैं। गोम्मटसारकी गाथा नं. १५० में भाववेदकी मुख्यतासे ही योनिमतीका ग्रहण है। गाथा नं. १५६ और १५९ में टीकाकारने योनिमतीसे द्रव्यस्त्रीका ग्रहण किया है, किन्तु वहां भी परिणतिमें अभाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ शंका—सतारा पुस्तकोंमें दिये गये भगवती आराधनाकी गाथाओंका मूलाराधना नामसे उल्लिखित किया गया है, यह ठीक नहीं। जबकि प्रस्तावनामें दिखाया स्वयं उस भगवती आराधना ग्रन्थ है, तब मूलाराधना नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलाराधनादर्पण नामकी आशाधरकी टीका का नाम है, जिसे उन्होंने अन्य टीकाओंसे व्यावृत्ति करनेके लिए दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन प्रतिमें ग्रन्थका नाम मूलाराधना देखा हो तो कृपया लिखनेका अनुग्रह कीजिए।

(प. परमानन्दजी शास्त्री पत्र २९-१-३९)

समाधान—टिप्पणियोंके साथ जो ग्रन्थनाम दिये गये हैं वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रकाशित प्रतियोंके नाम हैं। शोलापुरसे जो ग्रन्थ छपा है, उसपर ग्रन्थका नाम 'मूलाराधना' दिया गया है। इसी प्रति हमारी टिप्पणियोंका आधार रहा है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

२४ शंका—[illegible]

(अनेक [illegible])

(अनेकान्त [illegible] १५४)

(अनेकान्त [illegible] १५४)

समाधान—प्रथम भागमें कुल टिप्पणियोंकी संख्या ८५५ है। उनमेंसे दिगम्बर ग्रंथोंसे ६२२ और श्वेताम्बर ग्रंथोंसे २२८ तथा अन्य ग्रंथोंसे ५ टिप्पणियां ली गई हैं। यदि ग्रंथ-संख्याकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणोंमें उपयोग किये गये ग्रंथोंकी संख्या ७७ है, जिनमें दिगम्बर ग्रंथ ४०, श्वेताम्बर ग्रंथ ३०, अजैन ग्रंथ १, व न्याय, व्याकरण, अलंकारादि विषयक ग्रंथोंकी संख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश तुलना किन ग्रंथोंपरसे की गई है। जहां जिस ग्रंथकी जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह ली गई है। इसमें ध्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी दृष्टि जा सके।

---

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

षट्खंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यहां यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशि कितनी है, तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गणा स्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषय का वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये हैं कि षट्खंडागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान्की द्वादशांगवाणीके अंगभूत चौदह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आग्रायणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्स्नपाहुड (वेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौबीस अधिकारोंमें छटवां अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अर्थाधिकार हैं, बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एकजीवकी अपेक्षा काल, आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें से पांचवां अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहींसे प्रकृत द्रव्य प्रमाणानुगम लिया गया है। (देखो षट्खंडागम, प्रथम भाग, पृ. १२५–१२६)

यहां प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवट्ठाणकी सत, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर और अल्पबहुत्व, ये छह प्ररूपणायें बंधविधानके प्रकृतिस्थानबंध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनुयोगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहींसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहां भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानबंधके द्रव्यानुयोगद्वारमें 'इस बंधस्थानके बंधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है, किन्तु मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन किया गया है, वहां बतलाया गया है कि मिथ्यादृष्टि जीव इतने होते हैं, सासादनसम्यग्दृष्टि जीव इतने हैं, इत्यादि। अतएव जीवट्ठाणमें द्रव्यप्रमाणानुगमके निरूपक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयोगी सिद्ध हुआ। (देखो षट्. प्रथम भाग, पृ. १२९)

२ प्रमाणका स्वरूप

द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति बतलानेमें जो कुछ कहा गया है उसीसे स्पष्ट है कि यह भिन्न भिन्न गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण बतलाया गया है। यह प्रमाण चार अपेक्षाओंसे बतलाया गया है, द्रव्य, काल, क्षेत्र और भाव।

१. **द्रव्यप्रमाण**—द्रव्यप्रमाणके तीन भेद हैं, संख्यात, असंख्यात और अनन्त। जो संख्यान पचेन्द्रियोंका विषय है वह **संख्यात** है। उससे ऊपर जो अवधिज्ञानका विषय है वह **असंख्यात** है और उससे ऊपर जो केवलज्ञानका विषय है वह **अनन्त** है[1]।

संख्यातके तीन भेद हैं, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। गणनाका आदि एकसे माना जाता है। किन्तु एक केवल वस्तुकी सत्ताको स्थापित करता है, भेदको सूचित नहीं करता। भेदकी सूचना दोसे प्रारंभ होती है, और इसीलिये दोको संख्यातका आदि माना है[2]। इसप्रकार **जघन्य संख्यात** दो है। **उत्कृष्ट संख्यात** आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतासंख्यातसे एक कम होता है। तथा इन दोनों छोरोंके बीच जितनी भी संख्यायें पाई जाती हैं वे सब **मध्यम संख्यात**के भेद हैं।

असंख्यातके तीन भेद हैं, परीत, युक्त और असंख्यात, और इन तीनोंमेंसे प्रत्येक पुनः जघन्य, मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकारका होता है। **जघन्य परीतासंख्यातका** प्रमाण अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका और महाशलाका, ऐसे चार कुंडोंको द्वीपसमुद्रोंकी गणनानुसार सर्षोंसे भर भरकर निकालनेका प्रकार बतलाया गया है, जिसके लिये त्रिलोकसार गाथा १८–३५ देखिये। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य युक्तासंख्यातमेंसे एक कम करने पर **उत्कृष्ट परीतासंख्यातका** प्रमाण मिलता है, तथा जघन्य और उत्कृष्ट परीतके बीचकी सब गणना **मध्यम परीतासंख्यातके** भेद रूप है।

जघन्य परीतासंख्यातके वर्गित-संवर्गित करनेसे अर्थात् उस राशिको उतने ही बार गुणित प्रगुणित करनेसे **जघन्य युक्तासंख्यातका** प्रमाण प्राप्त होता है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य असंख्यातासंख्यातमेंसे एक कम **उत्कृष्ट युक्तासंख्यातका** प्रमाण है और इन दोनोंके बीचकी सब गणना **मध्यम युक्तासंख्यातके** भेद हैं।

---

१ जं संखेज्जं पंचिंदियविसओ तं संखेज्जं णाम। तदो उवरि जं ओहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम। तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम। (पृ. २६७–२६८)

२ एयादीया गणणा, बीयादीया हवंति संखेज्जा'। (त्रि. सा. १६) जघन्यसंख्यातं द्विरूपं [illegible] भेदग्रहणैकत्वात्। (गो. जी. जी. प्र. टीका ११८ गा.)

जघन्य युक्तासंख्यातका वर्ग (य × य) **जघन्य असंख्यातासंख्यात** कहलाता है, तथा आगे एक-एक बढ़ाते जानेसे जघन्य परीतानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात** होता है, और इन दोनोंके बीचकी सब गणना **मध्यम असंख्यातासंख्यात** कहलाती है।

जघन्य असंख्यातासंख्यातका तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, एक जीव और लोकाकाश, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित वनस्पतिके प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करना चाहिए। इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमें कल्पकालके समय, स्थिति और अनुभागबन्धाध्यवसायस्थानोंका प्रमाण तथा योगके उत्कृष्ट अविभागप्रतिच्छेद मिलाकर उसे पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह **जघन्य परीतानन्त** कही जाती है। और एक-एक बढ़ाते जानेसे जघन्य युक्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट परीतानन्त** का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम परीतानन्त** हैं।

जघन्य परीतानन्तका वर्गित संवर्गित करनेसे **जघन्य युक्तानन्त** होता है। और एक-एक बढ़ाते जानेसे जघन्य अनन्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट युक्तानन्तका** प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम युक्तानन्त** होते हैं।

जघन्य युक्तानन्तका वर्ग **जघन्य अनन्तानन्त** होता है। इस जघन्य अनन्तानन्तको तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें सिद्ध जीव, निगोदराशि, प्रत्येकवनस्पति, पुद्गलराशि, काल के समय और अलोकाकाश, ये छह राशियाँ मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य सम्बन्धी अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेद मिला देना चाहिए। इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसे केवलज्ञानमेंसे घटावे और फिर शेष केवलज्ञानमें उसे मिला देवे। इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अर्थात् केवलज्ञानका प्रमाण **उत्कृष्ट अनन्तानन्त** होता है। जघन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यवर्ती सब गणना **मध्यम अनन्तानन्त** कहलाती है। ([illegible] पृ. ११-१६ तथा त्रिलोकसार गाथा १८-५१)

२ **कालप्रमाण** [illegible] है, जिसके [illegible] **समय** [illegible] **आवलि** [illegible] आवलिका [illegible] **उच्छ्वास** [illegible] **प्राण** [illegible] **स्तोक** [illegible] लव, [illegible] **नाली** [illegible] **मुहूर्त** [illegible] **अहोरात्र** [illegible] **दिवस** [illegible]

[illegible]

रख दी गई है। यह सब संख्यात (मध्यम) का ही प्रमाण है। इससे कई गुणे ऊपर जाकर उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना मानमें बता ही आये हैं।

आगे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाये जानेवाले एक प्रमाण योजन (अर्थात् दो हजार कोश) लम्बा चौड़ा और गहरा कुंड बनाकर उसे उत्तम भोगभूमिके सात दिनके भीतर उत्पन्न हुए मेढ़ेके रोमाग्रों (जिनके और खंड कैंचीसे न हो सकें) से भर दे, और उनमेंसे एक एक रोमखंडको सौ सौ वर्षमें निकाले। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जितना काल व्यतीत होगा, उसे व्यवहारपल्य कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुल संख्या गणितसे ४५ अंक प्रमाण आती है, और तदनुसार व्यवहारपल्यका प्रमाण ४५ अंक प्रमाण शताब्दियां अथवा ४७ अंक प्रमाण वर्ष हुआ।

इस व्यवहारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर **उद्धारपल्यका** प्रमाण आता है, जिससे द्वीप समुद्रोंकी गणना की जाती है। इस उद्धारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर **अद्धापल्यका** प्रमाण आता है। कर्म, भव, आयु और काय, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्धापल्यका उपयोग होता है। जीवद्रव्यकी प्रमाण-प्ररूपणामें भी यथावश्यक इसी पल्योपमका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोड़से गुणा करनेपर जो लब्ध आता है उसे **कोड़ाकोड़ी** कहते हैं। दस कोड़ाकोड़ी अद्धापल्योपमोंका एक **अद्धासागरोपम** और दस कोड़ाकोड़ी अद्धासागरोपमोंकी एक **उत्सर्पिणी** और इतने ही कालकी एक **अवसर्पिणी** होती है। इन दोनोंको मिलाकर एक **कल्पकाल** होता है।

२ **क्षेत्रप्रमाण**—पुद्गल द्रव्यके उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागको परमाणु कहते हैं जिसका पुनः विभाग न हो सके, जो इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य नहीं और जो अप्रदेशी तथा अन्त, आदि व मध्य रहित है। एक अविभागी परमाणु जितने आकाशको रोकता है उतने आकाशको एक **क्षेत्रप्रदेश** कहते हैं। अनन्तानन्त परमाणुओंका एक **अवसन्नासन्न स्कंध**, आठ अवसन्नासन्न स्कंधोंका एक **सन्नासन्न स्कंध**, आठ सन्नासन्न स्कंधोंका एक **त्रुटरेणु** (त्रुटिरेणु, त्रुटरेणु), आठ त्रुटरेणुओंका एक **त्रसरेणु**, आठ त्रसरेणुओंका एक **रथरेणु**, आठ रथरेणुओंका **उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक **मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक **जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक **कर्मभूमिसंबंधी बालाग्र**, आठ कर्मभूमिसंबंधी बालाग्रोंकी एक **लिक्षा** (लीख), आठ लिक्षाओंका एक **जूं**, आठ जूओंका एक **यव** (यव-मध्य), और आठ यवोंका एक **अंगुल** होता है। अंगुल तीन प्रकारका है, उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल। ऊपर जिस अंगुलका प्रमाण बतलाया है वह **उत्सेधांगुल** (सूचि) है। पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक **प्रमाणांगुल** होता है, जो अवसर्पिणीकालके प्रथम चक्रवर्तीके पाया जाता है। भरत और ऐरावत क्षेत्रमें जिस कालमें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह उस उस कालमें उस उस क्षेत्रका **आत्मांगुल** कहलाता है। मनुष्य, तिर्यंच, देव और नारकियोंके शरीरकी अवगाहना तथा चतुर्निकाय देवोंके निवास और नगरके प्रमाणके लिये उत्सेधांगुल ही ग्रहण किया जाता है। द्वीप, समुद्र,

पर्वत, वेदी, नदी, कुंड, जगती (कोट), वर्ष (क्षेत्र) का प्रमाण प्रमाणांगुलसे लिया जाता है, तथा भृंगार, कलश, दर्पण, वेणु, पटह, युग, शयन, शकट, हल, मूसल, शक्ति, तोमर, सिंहासन, बाण, नाली, अक्ष, चामर, दुदुंभि, पीठ, छत्र तथा मनुष्योंके निवास व नगर, उद्यानादिका प्रमाण आत्मांगुलसे किया जाता है। छह अंगुलोंका पाद, दो पादोंकी विहस्ति (बलिस्त), दो विहस्तियोंका हाथ, दो हाथोंका किष्कु, दो किष्कुओंका दंड, युग, धनु, मुसल व नाली, दो हजार दंडोंका एक कोश तथा चार कोशोंका एक योजन होता है। (ति प १, ९८-११६)

द्रव्यका अविभागी अंश = परमाणु	८ जू = यव
अनन्तानन्त परमाणु = अवसन्नासन्न स्कंध	८ यव = उत्सेधांगुल
८ अवसन्नासन्नस्कंध = सन्नासन्नस्कंध	(५०० उत्सेधांगुल = प्रमाणांगुल)
८ सन्नासन्नस्कंध = त्रुटरेणु	६ अंगुल = पाद
८ त्रुटरेणु = त्रसरेणु	२ पाद = विहस्ति
८ त्रसरेणु = रथरेणु	२ विहस्ति = हाथ
८ रथरेणु = उत्तम भो भू बालाग्र	२ हाथ = किष्कु
८ उ भो भू बा = मध्यम ,, ,, ,,	२ किष्कु = दंड, युग, धनु, मुसल या नाली
८ म भो भू बा = जघन्य ,, ,, ,,	
८ ज भो भू बा = कर्मभूमि बालाग्र	
८ क भू बालाग्र = लिक्षा	२००० दंड = कोस
८ लिक्षा = जू	४ कोश = योजन

अंगुलसे आगेके प्रमाण भी आत्म, उत्सेध व प्रमाण अंगुलके अनुसार तीन तीन प्रकारके होते हैं। एक प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश लम्बे, चौडे और गहरे कुंडके आश्रयसे अद्धापल्य नामक प्रमाण निकालनेका प्रकार ऊपर कालप्रमाणमें बता आये हैं। उसी अद्धापल्यके अर्धच्छेद¹ प्रमाण अद्धापल्योंका परस्पर गुणा करनेपर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके वर्गको प्रतरांगुल और घनको घनांगुल कहते हैं। अद्धापल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण, अथवा मतान्तरसे अद्धापल्यके जितने अर्धच्छेद हों उसके असंख्यातवें भागप्रमाण, घनांगुलोंके परस्पर गुणा करनेपर जगश्रेणीका प्रमाण आता है। जगश्रेणीके सातवें भाग प्रमाण रज्जु होता है, जो तिर्यग् लोकके मध्य विस्तार प्रमाण है। जगश्रेणीके वर्गको जगप्रतर तथा जगश्रेणीके घनको लोक कहते हैं।

य सब अर्थात् पल्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक उपमा मान हैं, जिनका उपयोग यथावसर द्रव्य, क्षेत्र और काल, इन तीनों अपेक्षाओंसे बतलाये गये प्रमाणोंमें किया गया है। उनका तात्पर्य द्रव्यप्रमाणमें उतनी संख्यासे, कालप्रमाणमें उतने समयोंसे सदा क्षेत्रप्रमाणमें उतने ही आकाशप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

---

¹ एक राशि जितनी बार उत्तरोत्तर आधी आधी की जा सके, उतने उस राशिके अर्धच्छेद कहे जाते हैं।

की ओर ही रखे हैं । कहीं कहीं राशिके जो अंक दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण विवक्षित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है । ऐसे स्थानोंपर अंकके आगे धनका चिह्न + बना दिया गया है, और अंक देकर टिप्पणीमें उस विवक्षित राशिका उल्लेख कर दिया गया है । इस दिशामें यह प्रयत्न, जहां तक हमें ज्ञात है, प्रथम ही है, अतः सावधानी रखने पर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं । यदि पाठकोंके ध्यानमें आवें, तो हमें अवश्य सूचित करें ।

चौदह मार्गणास्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टियां

(मार्गणा शीर्षकके आगे दी गई पृष्ठसंख्या उस मार्गणाके भागाभागकी सूचक है ।)

१ गति मार्गणा (पृ २०७)

तिर्यंच	देव	नारक	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
९०/१६	१२/१६	८/१६	४/१६	१२/१६	१६

२ इन्द्रिय मार्गणा (पृ ३१९)

१ इन्द्रिय	२ इन्द्रिय	३ इन्द्रिय	४ इन्द्रिय	५ इन्द्रिय	अतीन्द्रिय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८२/१६	१४/१६	१२/१६	१/१६	६/१६	१२/१६	१६

३ काय मार्गणा (पृ ३४१)

वनस्पति	वायु	जल	पृथिवी	तेज	त्रस	अकाय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१७६/१६	१६/१६	१२/१६	९/१६	६/१६	४/१६	१२/१६	१६

४ योग मार्गणा (पृ ४१२)

काय	वचन	मन	अयोगी	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८४/१६	२४/१६	१६/१६	१२/१६ +[1]	१६

१ यहां [illegible] सिद्धोंका प्रमाण अयोगकेवलियोंसे अधिक समझना चाहिए ।

५ वेद मार्गणा (पृ. ४२१)

नपुंसक	स्त्री	पुरुष	अवेद	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{२००}{१६}$	$\frac{१०}{१६}$	$\frac{४}{१६}$	$\frac{१२}{१६}$ + [2]	१६

६ कषाय मार्गणा (पृ. ४३१)

लोभ	माया	क्रोध	मान	अकषायी	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
$\frac{८२}{१६}$	$\frac{५०}{१६}$	$\frac{४८}{१६}$	$\frac{४४}{१६}$	$\frac{१२}{१६}$ + [3]	१६

७ ज्ञान मार्गणा (पृ. ४४२)

कुमति कुश्रुत	विभंग	मति श्रुत	अवधि	मनःपर्यय	केवल	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{१६}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{११८}{६४}$ + [4]	१६

८ संयम मार्गणा (पृ. ४५१)

असंयमी	देशसं	सामा छेदो	यथाख्या	परि वि	सू सा	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	संख्यात	संख्यात	संख्यात	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$ + [5]	$\frac{१०}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{१०}{६४}$	$\frac{३}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१२८}{६४}$	१६

९ दर्शन मार्गणा (पृ. ४५०)

अचक्षु	चक्षु	अवधि	केवल	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{६०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१२८}{६४}$ + [6]	१६

२ यहां सिद्धोंका प्रमाण ९ वें गुणस्थानके अवेद भागसे उपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

३ यहां सिद्धोंका प्रमाण ११ वें और उपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

४ यहां सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

५ यहां मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण २ रे, ३ रे और ४ थे गुणस्थानोंकी राशियोंसे साधिक है।

६ यहां सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

मार्गणास्थानोंके भीतर अनन्तादि राशियोंका [illegible] विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त

१ असंयमी
२ अचक्षुदर्शनी
३ कुमति }
४ कुश्रुत }
५ मिथ्यादृष्टि
६ नपुंसकवेदी
७ तिर्यंच
८ असंज्ञी
९ काययोगी
१० एकेन्द्रिय
११ वनस्पतिकायिक
१२ भव्य
१३ आहारक
१४ अनाहारक
१५ कृष्ण लेश्या
१६ नील ,,
१७ कापोत ,,
१८ लोभ कषायी
१९ माया ,,
२० क्रोध ,,
२१ मान ,,
२२ सिद्ध
२३ अभव्य

असंख्यात

२४ वायुकायिक
२५ जल ,,
२६ पृथिवी ,,
२७ त्रस ,,
२८ तेज ,,
२९ वचनयोगी
३० द्वीन्द्रिय
३१ त्रीन्द्रिय
३२ चतुरिन्द्रिय
३३ चक्षुदर्शनी
३४ पंचेन्द्रिय
३५ संज्ञी
३६ मनोयोगी
३७ विभंगज्ञानी
३८ देवगति
३९ स्त्रीवेदी
४० नारक
४१ पुरुषवेदी
४२ मनुष्य
४३ पीतलेश्या
४४ पद्म ,,
४५ मतिज्ञानी }
४६ श्रुत ,, }
४७ अवधि ,, }
४८ अवधिदर्शनी }
४९ शुक्ललेश्या
५० क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी
५१ क्षायिक ,,
५२ औपशमिक ,,
५३ मिश्र ,,
५४ सासादन
५५ देशसंयत

संख्यात

५६ सामायिकसंयत }
५७ छेदोपस्थापना ,, }
५८ यथाख्यात ,,
५९ केवलज्ञानी }
६० केवलदर्शनी }
६१ परिहारसंयत
६२ मनःपर्ययज्ञानी
६३ सूक्ष्मसाम्परायसंयत

अनन्त राशियां २३, असंख्यात राशियां २४ ५५—[illegible]

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र नं. १५ से मार्गणास्थानोंमें प्रमाणका निर्देश प्रारंभ होता है जिसके प्ररूपणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है—

	सूत्रसे		सूत्रतक	कुल सूत्र		सूत्रसे		सूत्रतक	कुल सूत्र
नरकगति	१५	—	२३ =	९	ज्ञान मार्गणा	१४१	—	१४७ =	७
तिर्यंचगति	२४	—	३९ =	१६	संयम ,,	१४८	—	१५४ =	७
मनुष्यगति	४०	—	५२ =	१३	दर्शन ,,	१५५	—	१६१ =	७
देवगति	५३	—	७३ =	२१	लेश्या ,,	१६२	—	१७१ =	१०
इन्द्रिय मार्गणा	७४	—	८६ =	१३	भव्य ,,	१७२	—	१७३ =	२
काय ,,	८७	—	१०२ =	१६	सम्यक्त्व ,,	१७४	—	१८४ =	११
योग ,,	१०३	—	१२३ =	२१	संज्ञी ,,	१८५	—	१८९ =	५
वेद ,,	१२४	—	१३४ =	११	आहार ,,	१९०	—	१९२ =	३
कषाय ,,	१३५	—	१४० =	६					

५ मतान्तर और उनका खंडन

धवलाकारने अपने समयकी उपलब्ध सैद्धान्तिक सम्पत्तिका कितना भरपूर उपयोग किया है वह सबके अवलोकनसे ही पूर्णतः ज्ञात हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानों और उपदेशोंका जो साहित्य उनके सम्मुख उपस्थित था, उसका सिंहावलोकन प्रथम भागकी भूमिकामें कराया जा चुका है। प्रस्तुत भागमें भी जहां प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके लिये धवलाकारको सूत्र, सूत्रयुक्ति व व्याख्यानका आधार नहीं मिला, वहां उन्होंने 'आचार्य परंपरागत जिनोपदेश' 'परम गुरूपदेश,' 'गुरूपदेश,' व 'आचार्य-वचन' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है[1]। किंतु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहां आचार्यने भिन्न भिन्न मतोंका स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरेका मंडन किया है। यहां हम इसीप्रकारके सब मतान्तरोंका कुछ परिचय कराते हैं—

(१) ग्रन्थकारने प्रमाणप्ररूपणामें प्रथम द्रव्यप्रमाण, फिर कालप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य क्रमानुसार क्षेत्र पहले और काल पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहां कालका क्षेत्रसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया? इसका समाधान धवलाकार करते हैं कि कालकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म होता है, अतएव 'जो स्थूल और अल्प वर्णनीय हो, उसका पहले व्याख्यान करना चाहिए।' इस नियमके अनुसार कालप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस स्थलपर उन्होंने सूक्ष्म कालके संबंधमें कुछ आचार्योंकी एक भिन्न मान्यताका उल्लेख किया

१ [illegible] । [illegible] आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो । [illegible] (पृ. [illegible]) और भी देखिये पृ. १११, १५७, ४०१, ४०७

और न केवली द्वारा भाषित प्रमाणभूत अन्य सूत्रसे इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंका ठीक प्रमाण ३७७३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रोक्त एक दिवसमें १,१३,१९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्वोक्त मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६०० प्राण होंगे, जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (पृ. ६६)

(४) उपशामक जीवोंकी संख्याके विषयमें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी संख्या ३०४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् २९९ है। इस मतभेदकी प्ररूपक दो गाथाएं भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है, जिसके अनुसार उपशामकोंकी संख्या पूरे ३०० है। इन मतभेदोंपर धवलाकारने कोई ऊहापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमात्र इनका उल्लेख ही किया है।

(५) इन्हीं उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तियोंका मतभेद प्रमत्तसंयत राशिके प्रमाण-प्ररूपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिके अनुसार प्रमत्तोंका प्रमाण ४,६६,६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्त्यनुसार यह प्रमाण ५,९३,९८,२०६ आता है। इन मतभेदोंके बीच निर्णय करनेका भी धवलाकारने यहां कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिके प्रमाणमें जो कुछ आचार्योंने यह शंका उठाई है कि सब तीर्थंकरोंमें सबसे बड़ा शिष्यपरिवार पद्मप्रभस्वामीका ही था, किन्तु वह परिवार भी मात्र ३,३०,००० ही था। तब फिर जो सब संयतोंकी पूर्ण संख्या ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथामें बतलाई है, वह कैसे सिद्ध हो सकता है? इसका परिहार धवलाकारने यों किया है कि इस हुंडावसर्पिणी कालसंबंधी तीर्थंकरोंके साथ भले ही संयतोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अन्य उत्सर्पिणी-अवसर्पिणियोंमें तो तीर्थंकरोंका शिष्य-परिवार बड़ा पाया जाता है। दूसरे, भरत और ऐरावत क्षेत्रोंकी अपेक्षा मनुष्योंका प्रमाण विदेह क्षेत्रमें संख्यातगुणा पाया जाता है, अतः यहां उक्त प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कोई दूषण नहीं है। (पृ. ९८-९९)

(६) पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल देवोंके अवहारकालसे आश्रय बतलाया गया है। किन्तु धवलाकारका मत है कि कितने ही आचार्योंका उक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र बतलाया गया है। यहां कोई यह शंका कर सकता है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि संबंधी अवहारकाल ही गलत है और वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल ठीक है, यह कैसे जाना जाता है? यहां धवलाकार कहते हैं कि हमारा कोई एकान्त आग्रह नहीं है, किन्तु [illegible] विरोध है तो उनमेंसे कोई एक तो असत्य होना ही चाहिये। किन्तु इनका समाधानपूर्वक कह चुकने पर धवलाकारको अपनी निर्णायक बुद्धिका [illegible] है और न यह [illegible] — अहवा दो विण्णि वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एदा [illegible]। अर्थात् उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसके आगे [illegible] सूत्रके [illegible] आधारसे उक्त दोनों अवहारकालोंको असिद्ध करके उन्होंने कदाचित् प्रमाणप्रमाण? उनका उल्लेख किया है। (पृ. २३१-२३२)

(७) सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण एक प्राचीन गाथामें १२ करोड और दूसरी गाथामें ५० करोड पाया जाता है। धवलाकारने प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, यह प्रमाण आचार्य परम्परागत है। (पृ २५२)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोडाकोडाकोडीसे ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीसे नीचे अर्थात् छटवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे। किंतु एक दूसरा मत है कि मनुष्य पर्याप्तराशि बादाल वर्गके (४२९४९६७२९६) अर्थात् द्विरूप वर्गधाराके पांचवें वर्गस्थानके घनप्रमाण है। धवलाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं। एक तो बादालका घन २९ अंक प्रमाण होकर भी कोडाकोडाकोडाकोडीके ऊपर निकल जाता है, जिससे सूत्रोक्त अंक-सीमाओंका सर्वथा उल्लंघन हो जाता है। दूसरे यदि ढाई द्वीपके उस भागका क्षेत्रफल निकाला जाय जहां मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अंक प्रमाण प्रतरांगुलोंमें आता है, जिससे उस २९ अंक प्रमाण मनुष्यराशिका वहां निवास असंभव सिद्ध होता है। यही नहीं, सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशिसे संख्यातगुणा कहा गया है जबकि सर्वार्थसिद्धि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है। अतएव उक्त प्रमाणसे इन देवोंकी अवगाहना भी उनकी निश्चित निवास भूमिमें असंभव हो जायगा। अतः उक्त राशिका प्रमाण सूत्रोक्त अर्थात् कोडाकोडाकोडाकोडीसे नीचे ही मानना उचित है। (पृ २५७-२५८)

(९) आहारमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण आचार्य-परम्परागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र नं १२० में उनका प्रमाण 'संख्यात' शब्दके द्वारा सूचित किया गया है। इसपरसे धवलाकारका मत है कि उक्त राशिका प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये, किन्तु मध्यम संख्यातकी अन्य कोई संख्या होना चाहिये, जिसे जिनेन्द्र भगवान् ही जानते हैं। यद्यपि २७ भी मध्यम संख्यातका ही एक भेद है और इसलिये उसके भी उक्त प्रमाणप्ररूपणमें ग्रहण करनेकी संभावना हो सकती है, किन्तु इसके विरुद्ध धवलाकारने दो हेतु दिये हैं। एक तो सूत्र में केवल 'संख्यात' शब्द द्वारा ही यह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित संख्या द्वारा नहीं। दूसरे मिश्रकाययोगियोंसे आहारकाययोगी संख्यातगुणे कहे गये हैं। दोनों विकल्पोंमें वहां सामंजस्य बन नहीं सकता क्योंकि, सब अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्तकाल भी संख्यात गुणा माना गया है। (पृ ४०२)

६ गणितकी विशेषता

धवलाकारने अपने इस भागके आदिमें ही मंगलाचरण गाथामें कहा है कि — 'जिण भणिमा [illegible] णमंसिमा' अर्थात् जिनेन्द्रको नमस्कार करके हम द्रव्यप्रमाणानुगमका कथन करते हैं [illegible] गणितशास्त्रका संग्रह करता है [illegible] यह प्रतिज्ञा इस भागमें पूर्ण रूपसे निभाई गई है। धवलाकारने इस भागमें गणितज्ञानका खूब उप

लब्धको उसी भाजकमें भाग देनेसे निश्चित भजनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणकारमें निश्चित भजनफलका विवक्षित राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आया उसको उसी भाजक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए भजनफलका विवक्षित राशिके वर्गमें भाग देकर निश्चित भजनफल प्राप्त किया गया है। ये सब विकल्प वर्गात्मक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्पष्टीकरण पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैराशिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ. ९५, १००)

मनुष्यगति प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुनः दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोज राशि, यदि एक शेष रहे तो कलिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्यराशि तेजोज कही गई है। (पृ. १४९)

८ मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंको विदित ही है कि इन सिद्धान्तग्रंथोंकी प्राचीन प्रतियां केवल एकमात्र मूडबिद्रीके सिद्धान्तमन्दिरमें सुरक्षित हैं। पूर्व प्रकाशित दो भागोंके लिये हमें इन प्राचीन प्रतियोंसे पाठ-मिलानका सुअवसर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वर्तमान भट्टारक स्वामी और पंचोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्व प्रकाशित दोनों भागों और इस तृतीय भागका मुद्रित पाठ वहांकी ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाया जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर खूब विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्थ व पाठकी दृष्टिसे अधिक शुद्ध प्रतीत हुए। (देखो परिशिष्ट पृ. १० आदि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुद्ध हैं, अतएव [illegible] प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. ११ आदि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न होते हैं और विकल्पसे [illegible] हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. १९ आदि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं और इसलिये ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखो परिशिष्ट पृ. १८ आदि)

इस [illegible] विभागके अनुसार मूडबिद्रीकी प्रतियोंका [illegible] इस [illegible] हो रहा है। [illegible] पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार आती है—

द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं

२

आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १२१ ४८७

१ गतिमार्गणा १२१ ३०५

(नरकगति)

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१. पृष्ठ ४७ की गाथा नं. २८ का प्रतियोंमें उपलब्ध पाठको रखते हुए अर्थ

दो हारोंके अन्तरसे एक हारमें भाग देने पर जो लब्ध आता है उसमें भाजित पूर्ण लब्धराशि तथा दोनों हारोंसे अलग अलग भाजित भाज्यके भजनफलोंका अन्तर हानिवृद्धिरूप होता है। (अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल बराबर ही होता है और समानरूपसे घटना बनता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे)—

भाज्य = अ, हार (भाजक) = ब और स, पूर्णलब्ध $\frac{अ}{ब}$ = क

(१) यदि स से ब छोटा है तो— $\frac{अ}{ब} - \frac{अ}{स} = क - \frac{स}{स - ब}$

(२) यदि स से ब बड़ा है तो— $\frac{अ}{स} - \frac{अ}{ब} = क - \frac{स}{ब - स}$

(अंकगणितसे)—

भाज्य = ३६, हार (भाजक) = ६ और ९,

पूर्णलब्ध = $\frac{३६}{६}$ = ६, दूसरा लब्ध $\frac{३६}{९}$ = ४, हारान्तर ९ − ६ = ३

$\frac{९}{३}$ = ३, $\frac{६}{३}$ = २, ६ − ४ = २

२. पृष्ठ ५०–५१ परके पश्चिम विकल्पका स्पष्टीकरण

पृ. ५०–५१ पर सूत्रमें जो पश्चिमविकल्प बतलाया गया है, उसके सम्बन्धमें हमारे समक्ष दो आपत्तियां उपस्थित हुईं, कि एक तो वह धवलाकार द्वारा स्वीकृत अकसहदटिस घनित नहीं होता, और दूसरा प्रश्नमें ग्रहण किया पाठ नहीं दिखाई देता। इन्हीं आपत्तियोंको दूर करनेके लिये सूत्रमें ग्रहण पाठ रखकर भी अनुवादमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक स्पष्ट बीजगणित द्वारा सूत्रमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे—

मनुष्य, जीवराशि = क, मिथ्यादृष्टिराशि = अ, सिद्धराशि = ब, अ = क − ब

अब चूंकि क अनन्तराशि है, अतएव— क + १ = क, क − १ = क.

अब मूल पाठानुसार—

$$\frac{क^2}{क + \frac{अ}{ब}} = \frac{क^2}{क + \frac{क - ब}{ब}} = \frac{क^2}{(ब - १) + \frac{क}{ब}} = \frac{क^2}{क + \frac{क}{ब}}$$

$$= क - \frac{क}{ब + १} = क - \frac{क}{ब}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अकसद्दष्टिसे नहीं बतलाया जा सकता।

---

११ पाठसंबंधी विशेष सूचना

पृ. २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं ओघमिव' आदिसे लगाकर पृ. २९० पंक्ति २ के 'णायव्वाओ' तकका पाठ प्रतियोंमें व मूडबिद्रीकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो धवला कारकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका प्रमाण भी वहीं दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनार्थ उपेक्ष यह पूरा पाठ प्रतियोंके अनुसार यहां दिया जाता है—

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति। तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमो। अहवा घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। वग्गिदमेत्ताणि। उवरि सत्थाण सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो। उवरि सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। विक्खंभ सूची असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? विक्खंभसूई। भवो। एवं ओघमिवकाणवतराण वि णेदव्वं। भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठिविक्खंभ अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? विक्खंभसूई। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सूई। अहवा घणंगुलं। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। एवं णेदव्वं गारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। भवणवासियाणं सव्वत्थोवा असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति। तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जाणि सेढी। सासणादीणं सूचिअंगुलं। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। वग्गिदमेत्ताणि? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति सव्वत्थोवा भागा? पलिदोवमो। उवरि सत्थाणभंगो। सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो त्ति सव्वत्थ सत्थाण दि णत्थि एवं णादव्वं। उवरि परत्थाण णत्थि तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो सव्वत्थ सत्थाण दि णत्थि णाणत्तं णायव्वाओ।

शुद्धिपत्र

(पुस्तक १)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उज्वल और निर्मल विनयसे	धवल, निर्मल और नानाप्रकारकी विनयसे
१८८	४	उपदेशाएम्यम्	उपदेष्टव्यम्
२०५	२५	शङ्का—	×
"	२९	इसलिये	शङ्का— तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिधान	तत्प्रतिविधान
३४१	८	-सन्तापान्यूनतया	-सन्तापान्न्यूनतया
"	२६	सन्तापसे न्यून नहीं है,	सन्तापसे न्यून है,

(पुस्तक २)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	दव्वेण छल्लेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ	दव्व भावेहिं छल्लेस्साओ,
"	१५	द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं,	द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

(पुस्तक ३)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	२	अवशेष	अविशेष
"	१२	अशेष	अविशेष
१५	२	कदय द्वलगदीव	कदय द्वलग दीव
"	१४	वटक, रूचक द्वीप	वटक (कनक), रुचक (तारीन) व द्वीप
१५	३१	व्यतिरिक्त	तद्व्यतिरिक्त
"	१७	नोआगमद्रव्यानंत	नोआगमद्रव्यानन्त
१६	१४	अप्रदेशानंत	अप्रदेशानन्त
१८	६	तस्स	तत्थ तस्स
२६	२८	दुक्खेवा	पक्खेवा
२७	३०	असखेज्जा	असंखेज्जा
२८	७	रासिम्हि	रासिम्हि
"	८	अवहिरिज्जदि	अवहिरिज्जदि

—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१३	व्यरयान	व्याख्यान
२०	२६	शतप्रयक्त्त्र	शतपृथक्त्व
३२	१०	कोद्येण	कोड्येण
,,	३०	कोंदोके समान	या कुडव (कुडे) से
३३	२९	घणयमाणो	घणपमाणो
३४	३	छिण्णायिसिट्ठ	छिण्णावसिट्ठ
३५	३०	वेगद	वेसद
३८	२	णेहासगहो	णेहासग्गहो
,,	१६	मी हो चाहिये,	ही है, ऐसा असद् आग्रह नहीं करना चाहिये,
३९	५	सहिय	सुहिय
४१	५	असखेज्ज	असखेज्ज
५१	१४	क–ख (मिथ्यादृष्टि)	क–अ (मिथ्यादृष्टि)
८८	६	विरदाण ग्रु कमेण	विरदाणुक्कमेण
८९	३	पमत्तसजदा ण	पमत्तसजदाण
११२	६	दसगुणट्ठारासिणा	दसगुणट्ठाणरासिणा
१२६	३	ज	घ
१३१	७	असंसेज्जदि	असंखेज्जदि
१५७	२७	जिनबिम्ब	जिन और जिनबिम्ब
१७६	१६	जणश्रेणी	जगश्रेणी
१७६	२२	$\frac{१०४८\ ७६}{१२३}$	$\frac{१०४८५७६}{१९३}$
१९०		सव्वहीणरूवाणि	सव्वहाणिरूवाणि
२०७	६	सिमयहारकाल	सि अवहारकाल
२१७	६	पर्चिदिय	पंचिंदिय
१७१	२	ताए	तीए
२२१	११	गुणिय	गुणिय
२५७	२२ २४	यहां धवलाने स्पष्ट है	×
२६०	१०	मणुसणीण	मणुसिणीण
२६२	४	असखेज्जस	असंखेज्जस
२६३	८	पचियपदि	पलिदोवमपदि
,,	,,	पादेसु	पादेसु
२६४	०	के	को
२८१	१	सासणर्दीण	सासणदीर्णं
२८७	५	असद्दसम्माइट्ठिणो	असंजदसम्माइट्ठिणो

दव्वपमाणाणुगमो

मंगलाचरणम्

पच परमेट्ठि-वदण
(धरअन्तर्गतम्)

सिद्धा दद्धट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सव्वत्था ।
तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ॥ १ ॥

तिहुवण-भवणप्पसरिय-पच्चक्खवबोह-किरण-परिवेढो ।
उइओ वि अणत्थवणो अरहंत-दिवायरो जयऊ ॥ २ ॥

ति-रयण-खग्ग-णिहाएणुत्तारिय-मोह-सेण्ण-सिर-णिवहो ।
आइरिय-राउ पसियउ परिवालिय-भविय-जिय-लोओ ॥ ३ ॥

अण्णाणयघयारे अणोरपारे भमंत-भवियाण ।
उज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

संधारिय-सीलहरा उत्तारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।
साहू जयंतु सव्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गलिय-भया ॥ ५ ॥

जयउ धरसेण-णाहो जेण महाकम्म-पयडि-पाहुड-सेला ।
बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥ ६ ॥

सद्दादि । तं च रूवि अजीवदव्वं छव्विहं, पुढवि जलं छाया चउरिंदियविसय कम्म खंध परमाणू चेदि । वुत्तं च—

पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसय कम्म-परमाणू ।
छव्विहभेयं भणियं पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं[1] ॥ २ ॥

जं तं अरूवि-अजीवदव्वं तं चउव्विहं, धम्मदव्वं अधम्मदव्वं आगासदव्वं कालदव्वं चेदि । तत्थ धम्मदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे ववगदपंचवण्णं ववगदपंचरसं ववगद दुगंधं ववगदअट्ठफासं जीव पोग्गलाणं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोगपमाणं धम्मदव्वं । एवं चेव अधम्मदव्वं पि, णवरि जीव पोग्गलाणं ट्ठिदिहेदू । एव-मागासदव्वं पि, णवरि आगासदव्वमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं । एवं चेव कालदव्वं पि, णवरि सं परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं[2] । एदाणि छ

अजीवद्रव्य है, जैसे शब्दादि । वह रूपी अजीवद्रव्य छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया, नेत्रको छोड़कर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्कन्ध और परमाणु । कहा भी है—

जिनेन्द्रदेवने पृथिवी, जल छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुद्गलद्रव्य छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर जो पुद्गलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये उपलक्षणसे उस उस जातिके पुद्गलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । ग्रन्थान्तरोंमें जो पुद्गलके स्थूल-स्थूल, स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म, ये छह भेद गिनाये हैं और उनका दृष्टान्तोंद्वारा स्पष्टीकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार बतलाये हैं इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये गये हैं ।

अरूपी अजीवद्रव्य चार प्रकारका है, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य । उनमेंसे धर्मद्रव्यका लक्षण कहते हैं । जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और पुद्गलोंके गमन और आगमनमें साधारण कारण है, असंख्यातप्रदेशी है और लोकाकाशके बराबर है वह धर्मद्रव्य है । इसीप्रकार अधर्मद्रव्य भी है, परंतु इतनी विशेषता है कि यह जीव और पुद्गलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि आकाशद्रव्य अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अवगाहनलक्षणवाला है । इसीप्रकार

१ गो. जी. ६०२. पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसयकम्मपाओग्गा । कम्मातीदा एवं छब्भेया पोग्गला होंति ॥ पंचा. ८२.

२ लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का । रयणाणं रासी इव ते कालाणू असंखदव्वाणि ॥ द्र. स. २२. गो. जी. ५८९.

प्रतिशयस्य कथनं वा निर्देशः। स द्विविधः द्विप्रकारः, शरीरस्वभावरूपप्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव। ओघेन, ओघः वृन्दं समूहः सम्पातः समुदयः पिण्डः अवशेषः अभिन्नं सामान्यमिति पर्यायशब्दाः। गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देशः। चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेशः किन्न स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात्। क्व प्रतिज्ञाऽऽचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा। सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादिसूत्रादवसीयते। सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितः स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं। अथवा, कुतीर्थ अर्थात् सर्वथा एकान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लंघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं। यह निर्देश शरीरके स्वभाव रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है। उनमेंसे एक ओघनिर्देश है। ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणास्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है।

शंका — यह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है?

समाधान — नहीं, क्योंकि ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है।

शंका — तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है?

समाधान — आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है।

शंका — आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान — 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इत्यादि सूत्रसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है।

शंका — संपूर्ण जीवराशिको छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है?

समाधान — नहीं, क्योंकि ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय गौण है।

विशेषार्थ — यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान संभव हैं, इसलिये यह कहा गया है कि ओघनिर्देशमें

वर्तमाना अनागमिष्यन्तो वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, ज्ञप्तिरूपोपयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्राभावात्। आगमादण्णो णोआगमो। जं तं णोआगमदो दव्वाणंतं तं तिविहं, जाणुगसरीरदव्वाणंतं भवियदव्वाणंतं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं चेदि। तत्थ जाणुगसरीरदव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं। कधं अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरित्तस्स सरीरस्स अणंतववएसो? ण, असिसदं धावदि परसुसदं धावदि इच्चेवमादिसु तदो वदिरित्तस्स वि आधारपुरिसस्स आधेयववएसदंसणादो। भवदु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति? ण एस दोसो, णट्ठे भविस्सरज्जम्हि वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो। पज्जयपज्जइणो

आगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका—जिनको पहले ज्ञान था किंतु पश्चात् विस्मृत हो गया है, अथवा छूट गया है, अथवा जो भविष्यकालमें जानेंगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय?

समाधान—नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा ज्ञप्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं। यह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यानन्त, भावीनोआगमद्रव्यानन्त और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। उनमेंसे अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं।

शंका—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और उसका शरीर आधार है, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है, इसलिये उस शरीरको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सौ तलवारें (सौ तलवारवाले) दौड़ती हैं, सौ फरसा (सौ फरसावाले) दौड़ते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तलवार और फरसासे भिन्न परन्तु उनके आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयरूप तलवार और फरसा यह संज्ञा देखी जाती है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये।

शंका—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ, परन्तु अतीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है, अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार 'राजा आता है' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका—पर्याय और पर्यायीमें भेद न होनेके कारण यहां पर आधार आधेयभाव नहीं

प्पाहुडजाणुगभावी जीवो। जं तं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्माणंतं चेदि। जं तं कम्माणंतं तं कम्मस्स पदेसा। जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजग-दीव-समुद्दादि एयपदेसादि पोग्गलदव्वं वा। आगममधिगम्य विस्मृत कान्तर्भवतीति चेत् तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्ते। जं तं सस्सदाणंतं तं धम्मादिदव्वगयं। कुदो? सागयत्तेण दव्वाणं विणासाभावादो। जं तं गणणाणंतं तं बहुवण्णणीयं सुगमं च। जं तं अपदेसियाणंतं तं परमाणू। नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयोः शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः किमिति न स्यादिति चेत्? उच्यते- न शाश्वतानन्तं नोकर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति, तयोर्भेदात्। अन्तो विनाशः, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम्। द्रव्यं शाश्वतमनन्तं शाश्वतानन्तम्। नोकर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कटकादीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया च अनन्तम्, ततो नानयोरेकत्वमिति। एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीय

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शास्त्रको जानेगा उसे भावी नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त और नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त। ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। कटक, रुचकवरद्वीप और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि पुद्गलद्रव्य ये सब नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त हैं।

शंका—जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें अन्तर्भाव होता है?

समाधान—ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोकर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे उनका कभी भी विनाश नहीं होता है।

जो गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है। एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त कहते हैं।

शंका—द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोकर्म द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है, क्योंकि, इन दोनोंमें परस्पर भेद है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं। अन्त विनाशको कहते हैं, जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता है उसे अनन्त कहते हैं। जो धर्मादिक द्रव्य शाश्वत अनन्त है उसे शाश्वतानन्त कहते हैं। और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा और कटकादिके वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त है इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं हो सकता है। एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होने वाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है। ऐसी स्थितिमें

'मिच्छाइट्ठी केवडिया' इदि सिस्सेण पुच्छिदे 'अणंता' इदि पमाणपरूवणादो णव्वदि। ण च सेस अणंताणि पमाणपरूवयाणि तत्थ तधादंसणादो। जदि गणणाणंतेण पयदं सेस दसविध अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे? वुच्चदे—

अप्पयदणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च।
संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १२ ॥

उत्तं च पुव्वाइरिएहि—

जत्थ बहुं जाणिज्जो अवरिमिदं तत्थ णिक्खिवे णियमा।
जत्थ बहुं ण वि जाणइ चउट्ठयं तत्थ णिक्खेवो ॥ १३ ॥

अधवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वक्खाणं सुणंतीणं सुट्ठु इदि णिक्खेवो कीरदे। तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते।
युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥

शंका— यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है?

समाधान—'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर 'अनन्त हैं' इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है। इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है।

शंका— यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहां पर किसलिये किया है?

समाधान—अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां पर सभी अनन्तोंका कथन किया है ॥ १२ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे वहां पर आचार्य सभीका निक्षेप करे। तथा जहां पर बहुत न जाने तो वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके बिना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले जावे, इसलिये यहां पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है। कहा भी है—

प्रमाण नय और निक्षेपके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका अयुक्त होते हुए भी युक्तकी भांति प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

१ अ प १० २ अ प । ४ पाठ ॥

'मिच्छाइट्ठी केवडिया' इदि सिस्सेण पुच्छिदे 'अणंता' इदि पमाणपरूवणादो जाणिज्जदि। ण च सेस अणंताणि पमाणपरूवयाणि तत्थ तधादंसणादो। जदि गणणाणंतेण पयदं सेस दसविह अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे? वुच्चदे—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च।
संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च॥ १२ ॥

उत्तं च पुव्वाइरिएहि—

जत्थ बहु जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खिवे सूरी।
जत्थ बहुं ण जाणइ चउट्ठयं तत्थ णिक्खेवो॥ १३ ॥

अथवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वत्तारसुणंताणं जुज्जदि इदि णिक्खेवो कीरदे। तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते।
युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत्॥ १४ ॥

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है?

समाधान—'मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं' इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर 'अनन्त हैं' इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है। इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है।

शंका—यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहां पर किसलिये किया है?

समाधान—अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां पर सभी अनन्तोंका कथन किया है॥ १२॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे वहां पर आचार्य नियमसे निक्षेप करे। तथा जहां पर बहुत न जाने तो वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये॥ १३॥

अथवा निक्षेपके बिना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले जाये, इसलिये यहां पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है। कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

१ स. प. गा. १५   २ ल. व. स्त. १४. (?) पृ. ८६

ण्णायादो ।

जं तं अणंताणंतं तं पि तिविहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि । तत्थ इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च भवदि ? 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्सं अणंताणंतस्सेव गहणं'[1] इदि परियम्मवयणादो जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स अणंताणंतस्सेव गहणं होदि त्ति । तं पि अणंताणंतवियप्पमत्थि त्ति इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि ? जहण्णअणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिऊण उक्कस्सअणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण अंतरे जिणदिट्ठभावो रासी घेत्तव्वो । अहवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणो छद्दव्वपक्खित्तरासीदो अणंतगुणहीणो मिच्छाइट्ठिरासी होदि । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी ? उच्चदे— जहण्णमणंताणंतं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स

विशेषकी प्रतिपत्ति होती है ऐसा न्याय है जिससे भी जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं।

ऊपर जो अनन्तानन्त कह आये हैं वह भी तीन प्रकारका है, जघन्य अनन्तानन्त, उत्कृष्ट अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त ।

शंका — उन तीनों अनन्तानन्तोंमेंसे यहां पर जघन्य अनन्तानन्त नहीं होता है और उत्कृष्ट अनन्तानन्त होता है, ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान—'जहां जहां अनन्तानन्त देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण होता है ' इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण है।

शंका — वह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त विकल्परूप है इसलिये उनमेंसे यहां कौनसा विकल्प लिया है, इस बातका केवल मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे ज्ञान नहीं होता है ?

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान ऊपर जाकर और उत्कृष्ट अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा यथादृष्ट राशि यहां पर अनन्तानन्त पदसे ग्रहण करना चाहिये। अथवा, जघन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गित संवर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशि है।

शंका—तीन वार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है ?

१ ति प पत्र ५२ यत्रानन्तानन्त मार्गणं तत्राजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तं ग्राह्यम्। त रा वा ३, ३८

जहण्णमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवर महारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणो उप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी णाम।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों पर स्थापित करना चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होता है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं।

उदाहरण (बीजगणितसे) – जघन्य अनन्तानन्त = क

एकवार वर्गितसंवर्गित राशि = $\text{क}^{\text{क}}$

दोवार „ „ $= \left(\text{क}^{\text{क}}\right)^{\text{क}^{\text{क}}} = \text{क}^{\text{क} \times \text{क}^{\text{क}}} = \text{क}^{\text{क}^{\text{क}+1}}$

तीनवार „ $= \left(\text{क}^{\text{क}^{\text{क}+1}}\right)^{\text{क}^{\text{क}^{\text{क}+1}}} = \text{क}^{\left(\text{क}^{\text{क}+1} \times \text{क}^{\text{क}^{\text{क}+1}}\right)}$

$= \text{क}^{\text{क}^{\text{क}+1+\text{क}^{\text{क}+1}}}$

(अङ्कगणितसे)— जघन्य अनन्तानन्त = [illegible]

एकवार [illegible] दोवार [illegible] तीनवार [illegible]

एसो सव्वजीवरासीदो सिद्धूणमिच्छाइट्ठिरासीदो य अणंतगुणहीणो त्ति कधं णव्वदे? वुच्चदे- जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवाहियाओ पक्खित्ते जहण्णअणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति। जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहि दुगुणिदाहि जहण्णपरित्ताणंते गुणिदे जहण्णमणंताणंतस्स अद्धछेदणयसलागा हवंति। एदाओ च जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्जगुणहीणाओ। एदाणमुवरि जहण्णअणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति। जहण्णअणंताणंतस्स अद्धछेदणाओ जहण्णअणंताणंतेण गुणिदे पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धछेदणयसलागा भवंति। एदाओ जहण्णअणंताणंतादो

(यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह ६१७ अंकप्रमाण होगी। इसप्रकार इकाईरूप छोटीसी २ संख्याको तीनबार वर्गितसंवर्गित करने पर ६१७ अंकप्रमाण महासंख्या उत्पन्न होती है। इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई त्रिवार वर्गितसंवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है।)

शंका— तीनबार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे और संपूर्ण जीवराशिमेंसे कुछ कम (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंबंधी राशि और सिद्ध राशि प्रमाण कम) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। तथा जघन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन हैं। इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रूवं पडि जहण्णमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगरासिं विरलेऊण अवरमहारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणो उप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगरासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिम्हि रूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी होदि।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् उत्पन्न राशिको दो स्थानों पर स्थापित करना चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं।

उदाहरण (बीजगणित) - जघन्य अनन्तानन्त = क

जहण्णमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरमहारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणो उप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगरासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी णाम।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो प्रति करना चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों पर स्थापित करना चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो प्रति करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती है उसे तीनबार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं।

उदाहरण (बीजगणितसे) – जघन्य अनन्तानन्त = क

एकबार वर्गितसंवर्गित राशि = $क^{क}$

दोबार " " = $\left(क^{क}\right)^{क^{क}} = क^{क \times क^{क}} = क^{क^{क+1}}$

तीनबार " " = $\left(क^{क^{क+1}}\right)^{क^{क^{क+1}}} = क^{क^{क+1} \times क^{क^{क+1}}} = क^{क^{क+1+क^{क+1}}}$

(अंकगणितसे) – जघन्य अनन्तानन्त = [illegible]

एकबार = [illegible] दोबार [illegible] तीनबार = [illegible]

[illegible]

होंगी। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसकी एक अधिक वर्गशलाकायें मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेदशलाकाओंसे जघन्य परीतानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। इसीप्रकार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेदशलाकाओंकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय वार वर्गितसंवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसंवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

मान लो जघन्य परीतानन्तका मान $२^{२^{अ}}$

परीतानन्तकी वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त $= २^{२^{२^{अ} + अ + १}} = २^{२^{ब}}$ (मान लो)

अनन्तानन्त प्रथमवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{ब} + ब}} = २^{२^{स}}$ (मान लो)

द्वितीयवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{स} + स}} = २^{२^{ग}}$ (मान लो)

तृतीयवार वर्गितसंवर्गित $= २^{२^{२^{ग} + ग}}$

२ संख्याके जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती हैं, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ वार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं। तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके अर्धच्छेद होते हैं। जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे $२^{२^{अ}}$ राशिके अर्धच्छेद $२^{अ}$ होंगे और वर्गशलाका अ होगी।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

किमट्ठं खेत्तपमाणमइक्कम्म कालपमाणं वुच्चदे? 'जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं' इदि णायादो। कधं कालपमाणादो खेत्तपमाणं बहुवण्णणिज्जं? वुच्चदे— खेत्तपमाणे लोगो परूवेदव्वो। सो वि सेढिपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेढी परूवेदव्वा। सा वि रज्जुपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परूवेदव्वा। रज्जू वि सगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परूवेदव्वा। ताओ वि दीव-सागरपरूवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परूवेदव्वा त्ति। ण च कालपमाणे एवं महल्ली परूवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे। के वि आइरिया एवं भणंति बहुएहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि। उत्तं च—

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेत्तं।
अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ॥ १७ ॥ इदि ॥

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ ३ ॥

शंका—क्षेत्रप्रमाणको उल्लंघन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है?

समाधान—'जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना चाहिये' इस न्यायके अनुसार पहले कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है।

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है। उसका भी जगच्छ्रेणीके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छ्रेणीका प्ररूपण करना चाहिये। जगच्छ्रेणीका भी राजुके प्ररूपण किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये राजुका प्ररूपण करना चाहिये। राजुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये राजुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये। राजुके छेदोंका भी द्वीपों और सागरोंके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये। परन्तु कालप्रमाणमें इसप्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे वर्णित है यह बात जानी जाती है।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है। कहा भी है—

कालप्रमाण सूक्ष्म है और क्षेत्रप्रमाण उससे भी सूक्ष्म है, क्योंकि अंगुलके असंख्या

१ सुहुमो य हवइ कालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खेत्तं। [illegible] पृ. १४ गा. ६२१

एदं वक्खाणं ण घडदे । कुदो ? खेत्तादो दव्वस्स परूवणप्पसंगादो । तं कधं ? एक्कम्हि दव्वंगुले अणंतपरमाणुपदेसेहि णिप्पण्णे ओगाहणं पडुच्च एगं खेत्तंगुलं होदि, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि होंति त्ति ।

सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो य सुहुमदरं हवदि दव्वं ।
खेत्तंगुला अणंता एगे दव्वंगुले होंति ॥ १८ ॥ इदि ॥

कधं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठी जीवा ? अणंताणंताणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिं च ठवेऊण कालम्हि एगो समयो मिच्छाइट्ठिरासिम्हि एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि । एत्थ चोदगो भणदि– मिच्छाइट्ठिरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंति त्ति । केण कारणेण ? कालमाहप्पपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं ? उच्चदे–

सवें भागमें असंख्यात करप होते हैं ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका व्याख्यान करना घटित नहीं होता है, क्योंकि ऐसा मान लेने पर क्षेत्रप्ररूपणाके अनन्तर द्रव्यप्ररूपणाका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका— यह कैसे ?

समाधान— क्योंकि, अनन्त परमाणुरूप प्रदेशोंसे निष्पन्न एक द्रव्यांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है, किंतु गणनाकी अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिये 'जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है' यह कहना ठीक नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं ॥ १८ ॥

शंका— कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कैसे निकाला जाता है ?

समाधान— एक ओर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समयोंको स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिको स्थापित करके कालके समयोंमेंसे एक एक समय और उसीके साथ मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर कालके समय और जीवराशिके प्रमाणको कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके सब समय समाप्त हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है ।

शंका— यहां पर शंकाकारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण भले ही समाप्त हो जाओ परंतु कालके संपूर्ण समय समाप्त नहीं हो सकते हैं, क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणकी अपेक्षा कालके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्ररूपण करनेवाला सूत्र भी देखनेमें आता है । वह सूत्र कौनसा है इसप्रकार पूछने पर शंकाकार कहता है–

धम्माधम्मागासा तिण्णि वि तुल्लाणि होंति थोवाणि ।
वड्ढिदु जीवपोग्गलकालागासा अणंतगुणा ॥ १९ ॥

ण एस दोसो, अदीदकालग्गहणादो । जहा सव्वे लोए[1] पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो णाम । घडिज्जमाणो वट्टमाणो । णिप्फण्णो ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्वबीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—

पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्वबीजं तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाकाश, ये तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य कालके समय और आकाशके प्रदेश, ये उत्तरोत्तर वृद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेमें अतीत कालका ही ग्रहण किया है ।

जिसप्रकार, सब लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारसे विभक्त है, अनागत वर्तमान और अतीत । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रस्थ है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रस्थ है और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रस्थ है । उनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं । यहां पर इस विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रस्थ तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काल भी तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है । यहां पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काल तीन प्रकारका है, अनागतकाल वर्तमानकाल और अतीतकाल । इनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

---

१ प्रतिषु 'जहा लोए तहा सव्वलोए' इति पाठः ।

पत्थेण तारपत्थबाहिरत्थो पुरिसो पत्थबाहिरत्थाणि बीयाणि मिणेदि । कधं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थ मिच्छाइट्ठिरासिं मिणेदि त्ति ? जदो लोगेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा तदो ण एस दोसो । कध पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा ? वुच्चदे- एक्केक्कम्हि लोगागासपदेसे एक्केक्कं मिच्छाइट्ठिजीवं णिक्खेविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो । एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि । एत्थुवसंहारगाहा—

> लोगागासपदेसे एक्केक्के णिक्खिवेवि तह दिट्ठं ।
> एवं गणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २३ ॥

को लोगो णाम ? सेढिघणो । का सेढी ? सत्तरज्जुमेत्तायामो । का रज्जू

राशिका प्रमाण लानेके लिये अनन्त लोक होते हैं, अर्थात् अनन्तलोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ॥ २२ ॥

शंका—प्रस्थसे बहिर्भूत पुरुष प्रस्थसे बहिर्भूत बीजोंको प्रस्थके द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्यादृष्टि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है ?

समाधान—चूंकि बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, इसलिये उपर्युक्त दोष नहीं आता है।

शंका—बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव कैसे मापे जाते हैं ?

समाधान—लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे संकल्प करना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है। इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी जाती है। इस विषयकी यहां पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करने पर जैसा जिनेन्द्रदेवने देखा है उसीप्रकार पूर्वोक्त लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

शंका—लोक किसे कहते हैं ?

समाधान—जगच्छेणीके घनको लोक कहते हैं।

शंका—जगच्छेणी किसे कहते हैं ?

समाधान—सात राजुप्रमाण आकाश प्रदेशोंकी लम्बाईको जगच्छेणी कहते हैं।

१ जगसेढिघणपमाणो लोयायासो । ति. प. पत्र ४. पञ्चसं. । २ द्रव्यप्र. । अनु. सू. पृ. १४९.
२ हे. ति. त्रिलोकप्र. । हादि अणभाखदेसप्पमाणविन्नाण हदी ॥ । १ गा. ७. अमलमाओ आदप कोहार(हाओ) सगी ।

'दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे' त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे। ण च एदं वक्खाणं जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि त्ति परियम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ, रूवेहि अहियाणि रूवाहियाणि त्ति गहणादो। अण्णाइरियवक्खाणेण सह विरुज्झदि त्ति ण, एदस्स वक्खाणस्स जं भसत्तं तेण वक्खाणाभासेण विरुद्धदाए एदस्स समवट्ठाणादो। तं वक्खाणाभासमिदि कुदो णव्वदे? जोइसियभागहारसुत्तादो चंदाइच्चबिंबपमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो च। ण च सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होइ, अइप्पसंगादो। किं च ण तं वक्खाणं घडदे, तम्हि वक्खाणे अवलंबिज्जमाणे सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णदंसणादो। ण च सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णाणि अत्थि तदत्थित्तविहाययसुत्ताणुवलंभादो। तदो तत्थ अट्ठसुण्णविणासणट्ठं केत्तिएण वि रासिा

सूत्रसे और 'तिर्यग्लोकमें दोके वर्गसे लेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है' इस त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यातगुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है। और यह व्याख्यान 'जितने द्वीपों और सागरोंकी संख्या है और जम्बूद्वीपके रूपाधिक जितने छेद हैं उतने रज्जुके अर्धच्छेद हैं' परिकर्म सूत्रके इस व्याख्यानके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर रूपसे अधिक अर्थात् एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अर्थात् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है।

शंका — यह व्याख्यान अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है?

समाधान — नहीं, क्योंकि, यह व्याख्यान जिसलिये सत्य है इसलिये दूसरे व्याख्यानाभासोंसे इसके विरुद्ध पड़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है।

शंका — अन्य आचार्योंका व्याख्यान व्याख्यानाभास है यह कैसे जाना जाता है?

समाधान — ज्योतिषियोंके भागहारके प्ररूपक सूत्रसे और चन्द्र तथा सूर्यके बिम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानाभास है। और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान ठीक नहीं कहा जा सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा। तथा वह अन्य आचार्योंका व्याख्यान घटित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, उस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छ्रेणीके सातवें भागका जो प्रमाण बतलाया है उसके अन्तमें आठ शून्य दिखाई देते हैं। परन्तु जगच्छ्रेणीके सातवें भागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, अन्तमें आठ शून्योंके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है। इसलिये

१ [illegible] । [illegible] [illegible]
[illegible]
११, १३, १४ [illegible]

अहिएण होदव्वं । होंतो वि असंखेज्जभागब्भहिओ संखेज्जभागब्भहिओ वा ण होदि, तदणुग्गहकारिसुत्ताणुवलंभादो । तदो दीवसमुद्दरुद्धखेत्तायामादो संखेज्जगुणेण बाहिर खेत्तेण होदव्वमण्णहा पुव्वुत्तसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो । 'जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घाएण समुहदो काउलेस्सियाए लग्गो' त्ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण, सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिर वेदियादो परभागट्ठिदपुढवीए बाहिरिल्लतडसद्देण गहणादो । सो वि काउलेस्सियाए महामच्छो ण लग्गदि त्ति णासंकणिज्जं, पुढविट्ठिदपदेसम्हि चेव हेट्ठा वादवलयाणम

रज्जुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए आठ शून्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी राशि हो वह अधिक ही होना चाहिये । अधिक होती हुई भी वह राशि असंख्यातवांभाग अधिक अथवा संख्यातवांभाग अधिक तो हो नहीं सकती है, क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने क्षेत्र विस्तारको द्वीपों और समुद्रोंने रोक रक्खा है उससे संख्यातगुणा बाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका क्षेत्र होना चाहिये, अन्यथा पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

'जो एक हजार योजनका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्घातसे पीड़ित हुआ स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य तट पर कापोतलेश्या अर्थात् तनुवातवलयसे लगता है' इस वेदनाखंडके सूत्रके साथ पूर्वोक्त व्याख्यान विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पूछने पर आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं आता है क्योंकि, यहां पर 'बाह्य तट' इस पदसे स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है ।

शंका—यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतलेश्यासे संसक्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अध स्तन वातवलयका अवस्थान रहता ही है ।

विशेषार्थ—यहां ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ रज्जुछेदणाण(?) [illegible] विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थं काऊण तत्थ [illegible] अवणिय जोयणलक्खेण गुणिदे दीवसमुद्दरुद्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तीदो । ण च एत्तियो चेव तिरियलोगविक्खंभो जगसेढीए सत्तमभागम्मि पंचगुणणाणुवलंभादो । ण च एदं हादि रज्जुविक्खंभो ऊणो होदि रज्जुअब्भंतरसमुद्दस्स पंचवीसजोयणमेत्त बादरवादखेत्तस्स व अणुवलंभादो । ण च तत्थियमेत्तं पक्खित्ते पंचगुणणाओ [illegible] तहाणुवलंभादो । तम्हा सयदीव सायरविक्खंभादो बाहिं केत्तिएण वि खेत्तेण होदव्वं । धवला ८८१ त्रि प प २२५

२ जो मच्छो जोयणसहस्सओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए [illegible] अच्छिदो ॥ ८ ॥ वेयणसमुग्घादेण समुहदो ॥ ८ ॥ काउलेस्सियाए लग्गो काउलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ ॥ १ ॥ धवला पत्र ८८१ ८८२

होदि । णिट्ठिदं गदं । तं चेव धुवरासिं सलागभूदं ठवेऊण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिउवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो च धुवरासी च जुगवं णिट्ठिदा । तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं केत्तियं ? सव्वजीवरासिस्स अणंता भागा अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि त्ति । तं जहा—

सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंड

अत एव खड १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि हुए।

पूर्वोक्त ध्रुवराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निकालकर शलाकाभूत ध्रुवराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे न्यून करके ध्रुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और ध्रुवराशि युगपत् समाप्त हो जाती है । इसमें एकवार निकाली हुई राशिका जितना प्रमाण हो उतना मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (अपहृत)—

शलाकारूप ध्रुवराशि १९ ९/१३ । जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६

−१	−१३
१८ ९/१३	२४३
−१	−१३
१७ ९/१३	२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमेंसे एक एक घटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इनमें एकवार घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि है ।

शंका— उस मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है, जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलोंके बराबर होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक

सव्वजीवरासी आगच्छदि । एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं संखेज्जभागब्भहिय-सव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? संखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्ससंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्तासंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । असंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? असंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्ताणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

अधिक तिगुनी राशिसे प्रत्येक वर्गके ऊपर दे देने पर चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आ जाती है।

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{\text{व}^2}{\text{व} + \frac{\text{व}}{३}} = \frac{३}{४}\text{व} = \text{व} - \frac{\text{व}}{४}$

(अंकगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग ५⅓ है, अतः तृतीय भाग ५⅓+१६=२१⅓ का २५६ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का चौथा भाग हीन है।)

शंका — इसीप्रकार संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संख्यातवां भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{\text{व}^2}{\text{व} + \frac{\text{व}}{\text{स}}} = \frac{\text{स}}{\text{स}+१}\text{व} = \text{व} - \frac{\text{व}}{\text{स}+१}$ (संख्यात = स)

शंका — उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — जघन्य परीतासंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

शंका — असंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

शंका — उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान — जघन्य परीतानन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

एदाहि गाहाहि पडिबोहियस्स सिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वुच्चदे। तं जहा, सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणोवट्टिदमिच्छाइट्ठिभागलद्धाहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भाग हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणभजिदसव्वजीवरासिभागहीणसव्वजीवरासी आग

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$, ब − ड नया भागहार,

$$नया\ लब्ध = \frac{अ}{ब - ड} = \frac{बस}{ब - ड} = स + \frac{सड}{ब - ड},$$

$\frac{सड}{ब - ड}$ इसे पुराने भजनफल स में जोड़नेसे नया भजनफल आ जाता है।

(अंकगणितसे) — $\frac{३६}{१२} = ३$, ९ नया भागहार,

$\frac{३ \times ३}{९} = १$, $३ + १ = ४$ नया भजनफल

इन गाथाओंके द्वारा जो शिष्य प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको पश्चिम विकल्प बतलाया जाता है। वह इसप्रकार है—

शंका— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी कम संपूर्ण जीवराशि आती है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

विशेषार्थ—यहां पर जो अन्तिम विकल्प बतलाया गया है उसका गणित पूर्व निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$\frac{क^२}{ब + \frac{ब}{अ}} = क - \frac{क}{अ}$$

(अंकगणितसे)—

$$\frac{१६}{१६ + \frac{१६}{३}} = १६ - \frac{१६}{३}$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राशियां समान नहीं सिद्ध होतीं और दूसरे उनका जो फल निकलता है वह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें उसका कोई उपयोग दिखाई नहीं देता। बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस विषयमें ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सके। तथापि विषयके पूर्वापर प्रसंगको देखते हुए यहां अंतिम विकल्पमें यही बात आना चाहिये जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है और

जो सो वियप्पो सो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। तं जहा, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि। कारणं सव्वजीवरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो त्ति। अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? जदि सव्वजीवरासिणा तस्स घणो अवहिरिज्जदि तो सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि? एवं मिच्छाइट्ठिरासिमागमणं मणेणावहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कदं। एत्थ दुगुणादिकरणं वत्तइस्सामो। तं जहा, सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि। दुगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि। तिगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि। अणेण

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प। इन दोनोंमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

द्विरूपवर्गधारामें (प्रकृतमें) अधस्तनविकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण अधिक है। अब अष्टरूप अर्थात् घनधारामें अधस्तनविकल्प बतलाते हैं। ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका संपूर्ण जीवराशिके घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है। और फिर ध्रुवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशि आती है इस बातको मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है।

उदाहरण—जीवराशि १६, ध्रुवराशि $१०\frac{१}{१३}$, $१६ \times १०\frac{१}{१३} = \frac{[illegible]}{१३}$,

जीवराशि १६ का घन ४०९६; $४०९६ \div \frac{[illegible]}{१३} = १३$ मिथ्यादृष्टि

अब यहां पर द्विगुणादिकरणविधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है ($४०९६ \div १६ = २५६$)। द्विगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका दूसरा भाग आता है ($४०९६ \div ३२ = १२८$)। त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा भाग आता है ($४०९६ \div ४८ = [illegible]$)। इसप्रकार इसी विधिसे जबतक ध्रुवराशिका प्रमाण

विहाणेण गुणगारो वड्ढावेदव्वो जाव धुवरासिपमाणं पत्तो त्ति। पुणो धुवरासिगुणिद-सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिभागो आगच्छदि सो चेव मिच्छाइट्ठिरासी। एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति।

घणाघणे वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? घणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे सव्वजीवरासिस्स घणो आगच्छदि। पुणो वि सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि।

१९,[?] प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाना चाहिये। पुनः ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर, संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गमें ध्रुवराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे, तत्प्रमाण भाग आता है, और यही मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसी कारणसे यह कहा कि ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—[illegible] × [illegible] = [illegible], [illegible] + [illegible] = [illegible] × [illegible] = १३ मि.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं। ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो गुणनफल आवे उससे जीवराशिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणनफल आवे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिका घन आता है। अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है। अनन्तर ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिका प्रमाण आता है ऐसा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है। यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है।

उदाहरण—[illegible] घनका प्रथम वर्गमूल ६४ घनाघनका प्रथम वर्गमूल [illegible]

[illegible] × ६४ = [illegible] [illegible] [illegible] = १३ मि.

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारे रासिम्हि अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। केण कारणेण? धुवरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा जदि सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागाहि सरिसा त्ति घेप्पंति तो धुवरासिं अद्धेण छिंदिऊण लद्धरासिपमाणं सव्वजीवरासिं मिच्छाइट्ठिरासिणा खंडिदभागो होदि। एवं होदि त्ति कादूण सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागभूदं ठवेऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धच्छिण्णे सव्वजीवरासी आगच्छदि। पुणो मिच्छाइट्ठिरासिणोवट्टिदसव्वजीवरासिणा उवरिम

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको दिखलाते हैं—

शंका — ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है (२५६ ÷ $\frac{16}{13}$ = १३)।

ध्रुवराशिप्रमाण भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार जीवराशिके उपरिमवर्गरूप राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आ जाती है।

उदाहरण—ध्रुवराशि १६/१३ है। इसमेंसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। शेष १३ के नीचे अर्धच्छेद पर १३ अधिक रहता है, इसलिये १६/१३ के १३ अधिक ४ अर्धच्छेद हुए। अतएव ध्रुवराशि १६ के वर्ग २५६ के इतनीवार अर्थात् ४ + १३ बार अर्धच्छेद करने पर १३ आ जाते हैं।

शंका—भागहारराशिके अर्धच्छेदप्रमाण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि किस कारणसे आती है?

समाधान—ध्रुवराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं संपूर्ण जीवराशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके बराबर होती हैं यदि ऐसा ग्रहण कर लिया जाता है तो ध्रुवराशिको आधेसे छिन्न करके [illegible] राशिका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिका मिथ्यादृष्टि राशिसे खण्डित करने पर जो [illegible] आता है उतना होता है ([illegible])। इसप्रकार होता है [illegible] संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंकी शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण आ जाता है। [illegible] जीवराशिके प्रमाणसे ऊपर [illegible] अर्धच्छेद प्रमाण [illegible] आती है।

[illegible]

सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अधवा धुवरासिअद्धच्छेदणया जदि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्धच्छेदणयमेत्ता हवंति तो अद्धद्धेण छिण्णावसिट्ठरासिपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिणा एगरूवं खंडिदेगखंडपमाणं होदि । पुणो धुवरासिअद्धच्छेदणए सलागा काऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धद्धेण छिण्णे एगरूवमागच्छदि । पुणो तेणेगरूवं मिच्छाइट्ठिरासिभजिदेगरूवेण भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । अधवा धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

१६/१३ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादृष्टिका प्रमाण लब्ध आता है ।

अथवा, ध्रुवराशिके अर्धच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धार्धरूपसे छिन्न करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे एक रूपको खंडित करके जो एक भाग आता है उतना होता है । अनन्तर ध्रुवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धार्धरूपसे छिन्न करने पर एक आता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे भक्त एकके द्वारा भाजित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—१६ के उपरिम वर्ग २५६ के अर्धच्छेद ८ के बराबर ध्रुवराशि २५६/१३ के अर्धच्छेद करने पर आठवां अर्धच्छेद १/१३ होता है जो १ में मिथ्यादृष्टिके प्रमाण १३ के भाग देने पर जो लब्ध आता है उतनेके बराबर है । पुनः इन ८ अर्धच्छेदोंको शलाका करके २५६ के इतनी बार अर्धच्छेद करने पर १ आता है । पुनः इस १ में १/१३ का भाग देने पर १३ लब्ध आते हैं, यही मिथ्यादृष्टिराशि है ।

अथवा, ध्रुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । पुनः ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—सर्व जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६; सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग ६५५३६

उस भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उस राशिके अर्धच्छेद करने पर १ मिथ्यादृष्टि

रूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । उवरि सव्वत्थ दोरूवादीणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं कदे अट्ठपरूवणा समत्ता भवदि ।

घणाघणे गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे घणउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमे

जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो संख्या आवे उतने उक्त भागहारके अर्धच्छे होते हैं ।

उदाहरण—$\overset{२}{१}$ = २ × ३ = ६ − १ = ५ × ४ = २० अर्धच्छेद, पर अन्तिम $\frac{१}{२}$ होगा ।

ऊपर सर्वत्र दो संख्या आदिका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे त्रिगुणित करके और उस त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी करना चाहिये । इस प्रकार करने पर घनधारा समाप्त होती है ।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जीवराशिके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनका उपरिम वर्ग आता है । फिर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । फिर ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । घनाघनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण—१६ × १६ × १६ = ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{६१ \quad १६ \times \frac{२५६}{१३} \times १६७७७२१६} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। तस्सद्धच्छेदणया केत्तिया? मिच्छाइट्ठिरासिअद्धच्छेदणएणूणतम्मानिदरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिघणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। एवमट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद [illegible] होगा। अतः इतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं?

समाधान—जिस राशिमें मिथ्यादृष्टि राशिका भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिके अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार ग्रहीतग्रहीत उपरिम विकल्पमें द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब ग्रहीतग्रहीत उपरिम विकल्पमें अष्टरूप अर्थात् घनधाराको बतलाते हैं—

सम्पूर्ण जीवराशिके घनके अनन्तवें भागका उपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आता है।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग [illegible] ... १३ मिथ्यादृष्टि

भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। (एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं)। एवं घणाघणपरूवणा गदा। गहिदं गहिदं गदं।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो। बेरूवे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं।

भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$\frac{२६२१४४}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{२६२१४४}{१३}, \quad \frac{२६२१४४^२}{१} \div \frac{२६२१४४}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि राशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके १४ अर्धच्छेद होने पर अन्तिम अर्धच्छेद १$\frac{१}{३}$ होता है। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

(इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये)। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी प्ररूपणा समाप्त हुई। इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—द्विरूप वर्गधारामें संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तवें भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६;

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}, \quad \frac{६५५३६}{१३} \times \frac{६५५३६}{१} = \frac{६५५३६^२}{१३}।$$

$$\frac{६५५३६^२}{१} \div \frac{६५५३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके २८ अर्धच्छेद होते हैं। अन्तिम अर्धच्छेद १$\frac{१}{३}$ होता है। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है।

इसप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार

सासणसम्माइट्ठिपरूवणा ण परूविदा? ण, एत्थ मिच्छाइट्ठिम्हि व्व परूवणाए कारणाभावा। किं तत्थ कारणं? वुच्चदे — असंखेज्जपदेसिए लोए कधमणंतो जीवरासी सम्मादि त्ति जादसंदेहणिराकरणट्ठं खेत्तपमाणं वुच्चदे। आयविरहिदस्स सिज्जमाण-अणेगसय सव्वयस्स सव्वजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि त्ति जादसंदेह-णिराकरणट्ठं कालपमाणं परूविज्जदि। ण च एदेसु कारणेसु एक्कं पि कारणमेत्थ संभवइ, अणुवलंभादो। तम्हा खेत्तकालपरूवणा सासणादीणं एत्थ ण परूविदा। एत्थ

...वराशिका प्ररूपण क्यों नहीं किया?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्ररूपण करनेका कारण था, उसप्रकार यहां पर उन दोनों प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका कोई कारण नहीं है। अतएव उन प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण नहीं किया।

शंका — यहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका क्या कारण है?

समाधान — असंख्यात प्रदेशी लोकमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है, इसप्रकारसे उत्पन्न हुए सन्देहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कथन किया जाता है। तथा आयरहित और सिद्ध्यमान जीवोंकी अपेक्षा व्ययसहित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं, इसप्रकार उत्पन्न हुए सन्देहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्ररूपण किया जाता है। परंतु इन कारणोंमेंसे यहां पर एक भी कारण संभव नहीं है, क्योंकि यहां पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है। अतः क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण ग्रन्थमें नहीं किया।

विशेषार्थ — शंकाकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करते समय 'अणंताणंताहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है और 'खेत्तेण अणंताणंता लोगा' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहना चाहिये। शंकाकारकी इस शंकाका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं अतएव उनका असंख्यातप्रदेशी लोकाकाशमें रहना असंभव है ऐसी शंका किसीको हो सकती है। अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण किया। दूसरे मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका व्यय तो निरंतर चालू है पर उनकी वृद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये उसका अभाव हो जायगा ऐसी शंका भी किसीको हो सकती है अतएव इसके परिहारके लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्ररूपण किया कि अनन्तानन्त

भागहारपमाणमंतोमुहुत्तमिदि सासणसम्माइट्ठिआदिरासिपमाणविसयणिण्णउप्पायणट्ठं परूविदं । तं च अंतोमुहुत्तमणेयवियप्पं, तदो एत्तियमिदि ण जाणिज्जदि । तत्थ णिच्छयजणणणिमित्तं किंचि अद्धापरूवणं कस्सामो । तं कधं ? असंखेज्जे समए घेत्तूण एया आवलिया हवदि । तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाओ घेत्तूण एगो उस्सासो हवदि । सत्त उस्सासे घेत्तूण एगो थोवो हवदि । सत्त थोवे घेत्तूण एगो लवो हवदि । अठतीस लवे अद्धलवं च घेत्तूण एगा णालिया हवदि । उत्तं च—

> आवलि असंखसमया संखेज्जावलिसमूह उस्सासो ।
> सत्तुस्सासो थोवो सत्तत्थोवा लवो एक्को[1] ॥ ३३ ॥

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि समाप्त नहीं हो सकती है । परन्तु सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके संबन्धमें इन दोनों प्रश्नोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है, क्योंकि, वे केवल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अतः उनकी लोकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी, यह बात नहीं कही जा सकती है। और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, यद्यपि मिथ्यात्व गुणस्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है, फिर भी उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमेंसे उसी अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान आय भी निरंतर चालू है। इसलिये उनका अभाव हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है। इसप्रकार क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नहीं होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका कथन नहीं किया।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशिका प्रमाण कहते समय भागहारका प्रमाण जो अन्तर्मुहूर्त कहा है वह सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके प्रमाणविषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है। परन्तु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है, इसलिये प्रकृतमें इतना अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है, यह नहीं जाना जाता है। इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये थोड़ेमें कालका प्ररूपण करते हैं।

शंका—यह कालप्ररूपणा किसप्रकार है ?

समाधान—असंख्यात समयकी एक आवली होती है। ऐसी तद्योग्य संख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास होता है। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है। सात स्तोकोंका एक लव होता है, और साढे अड़तीस लवोंकी एक नाली होती है। कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक आवली होती है। संख्यात आवलियोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक लव होता है ॥ ३३ ॥

1 गो. जी. ५७४

ज्जखइयसम्माइट्ठीणं संभवप्पसंगादो । असंखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं वुच्चदे । तं जहा, वासपुधत्तमंतरिय जइ सोहम्मदेवेसु संखेज्जाणं खइयसम्माइट्ठीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइट्ठी होंति । उवसमसम्माइट्ठीणमवहारकालो पुण असंखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइट्ठीहिंतो तेसिं असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइट्ठीहिंतो तेसिमसंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण' इदि सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्थे वर्तमानान्त शब्दग्रहणात्[1] । मुहूर्तस्यान्त

योंकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा । अब आगे संख्यात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

वर्षपृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो संख्यात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि संख्यातको इच्छाराशि संख्यात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् संख्यात आवलियोंसे पल्योपमके खंडित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक खण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असंख्यात आवलीप्रमाण है अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त दोनों गुणस्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । 'इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है' इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर् शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है । पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासादन, मिश्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां है । अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । धवला अ. प्र.

ज्जखइयसम्माइट्ठीणं समवप्पसंगादो। संखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं वुच्चदे। तं जहा, वासपुधत्तंतरिय जइ सोहम्मदेवेसु संखेज्जाणं खइयसम्माइट्ठीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइट्ठी होंति। उवसमसम्माइट्ठीणमवहारकालो पुण असंखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइट्ठीहिंतो तेसिं असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो। सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइट्ठीहिंतो तेसिमसंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो। 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण' इति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्थे वर्तमानान्त शब्दग्रहणात्[1]। मुहूर्तसान्त

योंकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा। अब आगे संख्यात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं। वह इसप्रकार है—

वर्षपृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो संख्यात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि संख्यातको इच्छाराशि संख्यात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् संख्यात आवलियोंसे पल्योपमके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक खण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असंख्यात आवलीप्रमाण है अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं। उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त दोनों गुणस्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं। इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है क्योंकि अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं।

विशेषार्थ— अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है। पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासादन मिश्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां हैं। अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेति सुत्तेण [illegible] [illegible] इत्थ [illegible] ।

धवला अ[illegible]

अन्तर्मुहूर्तः। कुतः पूर्वनिपातः? राजदन्तादित्वात्। कुत ओत्वम्? 'एए छच्च समाणा' इत्येतस्मात्। एदेण सणक्कुमारादिगुणपडिवण्णाणमवहारकालाण पि असंखेज्जावलियत्तं पसाहियं। एत्थ चोदगो भणदि। एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ ण होंति, हाणिवड्ढिसंजुत्तादो। ण च हाणिवड्ढीओ णत्थि त्ति वोत्तुं सक्किज्जदे, आयव्वयाभावे मोक्खाभावादो अणादिअपज्जवसिदसासणादिगुणकालाणुवलद्धीदो च। जदि एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ तो एदे भागहारा घडंति, अण्णहा पुण ण घडंति। अणवट्ठिदरासिभागहारेणावि अणवट्ठिदसरूवेणेव अवट्ठाणा होंति। एत्थ परिहारो उच्चदे– सासणसम्माइट्ठिरासीणमुक्कस्सवय

है कि उन तीनों गुणस्थानोंकी संख्या लानेके लिये यदि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भागहारके साथ उक्त असंख्यात आवलिप्रमाण भागहारका विरोध आता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त संख्यात आवलियां ही होती हैं, असंख्यात नहीं। इस पर वीरसेनस्वामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर् शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कालका ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है।

शंका — यहां पर अन्तर् शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है?

समाधान — क्योंकि, अन्तर् शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है।

शंका — अन्तर् शब्दमें अन्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है?

समाधान — 'एए छच्च समाणा' इस नियामक वचनके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपन्न सानत्कुमार आदि कल्पवासी देवोंसम्बन्धी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया।

शंका — यहां पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशियां अवस्थित नहीं होती हैं, क्योंकि, इन राशियोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है। यदि कहा जाय कि इन राशियोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशियोंका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा। तथा अनादि-अनन्तस्वरूपसे सासादन आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है, इसलिये भी इन राशियोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये। यदि इन उपर्युक्त राशियोंको अवस्थित माना जावे तो ये भागहार बन सकते हैं, अन्यथा नहीं, क्योंकि, अनवस्थित राशियोंके भागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही सद्भाव माना जा सकता है?

समाधान — अब पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है। क्योंकि सासादन-

१ [illegible]

तिकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवणं कदं तम्हा वड्ढिहाणीओ णत्थि त्ति भागहारपरूवणं घडदि त्ति। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। सासणसम्माइट्ठीणं पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद भाजिद विरलिद अवहिद पमाण-कारण णिरुत्ति वियप्पेहि वत्तइस्सामो। तं जहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलियमेत्तखंडे कए तत्थ एगखंडं सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। खंडिदं गदं। असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे जं भागलद्धं तं सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। भाजिदं गदं। असंखेज्जावलियाओ विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। विरलिदं गदं। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण

सम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके त्रिकालविषयक उत्कृष्ट संचयका आश्रय लेकर प्रमाण कहा गया है, इसलिये इस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है। अतः पूर्वोक्त भागहारोंका कथन बन जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आ जाती है।

अब वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं। वह इसप्रकार है—

असंख्यात आवलीके समयोंका जितना प्रमाण हो उतने पल्योपमके खण्ड करने पर उनमेंसे एक खण्डके बराबर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्योपमप्रमाण ६५५३६ के सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकाल ३२ प्रमाण खण्ड करने पर २०४८ आते हैं। यही सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि

असंख्यात आवलियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्योपमके समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर उनमेंसे एक खण्डप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—$\frac{२०४८}{१}$ $\frac{२०४८}{१}$ $\frac{२०४८}{१}$ इसप्रकार ३२ वार विरलित करके ६५५३६ को उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आ जाती है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके पल्योपममेंसे

पलिदोवमम्हि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमव-
णिज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं पलिदोवमम्हि अवणिज्जदि, अवहारकालादो
एगरूवमवणिज्जदि। एवं पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोवमो अवहारकालो च जुगवं
णिट्ठिदो। तत्थ एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अवहिदं गदं। तस्स
पमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि त्ति।
पमाणं गदं। केण कारणेण? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे पलिदोवम-
पढमवग्गमूलमागच्छदि। तस्सेव विदियवग्गमूलादो पलिदोवमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये। पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिको एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। फिर भी पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये। दूसरीवार यह क्रिया हुई, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पल्योपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त हो जाते हैं। इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जावे उतना सासादनसम्यग्दृष्टि जीव राशिका प्रमाण है। इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—शलाका राशि ३२ पल्योपम ६५५३६ इस क्रमसे पल्योपममेंसे २०४८ और शलाकारूप भागहारमेंसे एक एक कम करते जाने पर दोनों

शलाका राशि	पल्योपम
३२	६५५३६
१	२०४८
३१	६३४८८
१	२०४८
३०	६१४४०

राशियां एक साथ समाप्त होती हैं। इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली संख्या २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि हैं।

उस सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ है। २५६ का २०४८ में भाग देने पर ८ आते हैं। इस ८ संख्याको असंख्यातरूप मान लेने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

शंका—किस कारणसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है?

समाधान—पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर पल्योपमका प्रथम वर्गमूल आता है। उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर, दूसरे वर्गमूलका जितना

जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णब्भत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण ट्ठिदअसंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो। कारणं गदं। तस्स का णिरुत्ती? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि। अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं। पल्योपमके तीसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर दूसरे और तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं। इस क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर जो असंख्यात आवलियां स्थित हैं उनका पल्योपममें भाग देने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं। इसमें संदेह नहीं है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ का ६५५३६ में भाग देने पर २५६ लब्ध आते हैं। दूसरे वर्गमूल १६ का ६५५३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ वार २५६ अर्थात् ४०९६ लब्ध आते हैं। तीसरे वर्गमूल ४ का ६५५३६ में भाग देने पर, दूसरे वर्गमूल १६ और तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ लब्ध आते हैं, उतने अर्थात् ६४ वार प्रथम वर्गमूल २५६ अर्थात् १६३८४ लब्ध आते हैं। इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं।

शंका—असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं, इसकी निरुक्ति क्या है?

समाधान—असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं। अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर जितना प्रमाण आवे उतने पल्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं। अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके यहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं। इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके, उस गुणित राशिसे प्रतरा

भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरि उवरिमवग्गट्ठाणाणि विदियवग्गमूलावसाणाणि णिरंतरं गंतूणं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति त्ति। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तं पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अथवा अवहारकालेण पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि। अथवा अवहारकालेण पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण पुणो वि तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे

वलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यन्त सर्व उपरिम उपरिम वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं। इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—असंख्यात आवलीप्रमाण ३२ का भाग पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ में देने पर ८ लब्ध आते हैं। इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ में ८ का प्रथम वर्गमूल होते हैं। द्वितीय वर्गमूल १६ में ३२ का भाग देने पर $\frac{१}{२}$ लब्ध आता है। इसका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर ८ लब्ध आते हैं। तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर $\frac{१}{८}$ लब्ध आता है। इसका, दूसरे १६ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ६४ से, गुणा कर देने पर ८ लब्ध आते हैं। इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प। उन दोनोंमेंसे पहले द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्र. वर्गमूल २५६; असंख्यात आवलियां ८

$$२५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है।

उदाहरण—६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; अवहारकाल ३२।

$$१६ \div ३२ = \frac{१}{२},\ १६ \times \frac{१}{२} = ८,\ २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा}$$

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि

घडदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो भवदु णाम, वेरूव-हेट्ठिमवियप्पो ण घडदे। केण कारणेण? अवहारकालेण पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी ण उप्पज्जदि त्ति। ण एस दोसो, पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारकालेणोवट्टिय तप्पाओग्गवग्गट्ठाणाणि गुणिदे केवल-मोवट्टिदे च जम्हा रासी आगच्छदि सो हेट्ठिमवियप्पो त्ति अब्भुवगमादो। मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणाए वि एदम्हि णाए अवलंबिज्जमाणे वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति वत्तव्वो? एसा परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारेणोवट्टिय जदि सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाइदुं सक्किज्जदे तो हेट्ठिमवियप्पस्स वि संभवो होज्ज। ण च एवं वेरूवधाराए संभवइ। एदं णायमस्सिऊण मिच्छाइट्ठिरासि-परूवणाए हेट्ठिमवियप्पो णत्थि त्ति भणिदं। एसो णओ एत्थ पहाणो। एवमट्ठरूव-परूवणा गदा।

शंका—घनधारामें भले ही अधस्तन विकल्प रहा आवे, परन्तु द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्प घटित नहीं होता है, क्योंकि, अवहारकालका पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें भाग दिया जाता है तो सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसको उसके योग्य वर्गस्थानोंसे गुणित करने पर अथवा, केवल अपवर्तित करने पर, अर्थात् पल्योपमको अवहारकालसे भाजित करने पर, जो सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है वह अधस्तन विकल्प यहां पर स्वीकार किया गया है।

उदाहरण—पल्योपमका अधस्तन वर्गस्थान = [illegible] ३२ = ८ [illegible]
= [illegible] अथवा [illegible] ३२ = [illegible]

शंका—मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें भी इस नयके अवलम्बन करने पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प बन जाता है, इसलिये वहां पर उसका कथन करना चाहिये था?

समाधान—क्योंकि यह प्ररूपणा अवहारकालप्रधान है, इसलिये पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे भाजित करके यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहां पर अधस्तन विकल्प भी संभव है। परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालते समय द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार अधस्तन विकल्प संभव नहीं है। इसी कारण [illegible] मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें अधस्तन विकल्प नहीं कहा, [illegible] यहां पर प्रधान है। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये [illegible]

इट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एत्थ तिय-चउक्क-पंचादिछेदणाणि वि अवलंबिय सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाएदव्वो। अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण पदरपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि। पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे सासणसम्माइट्ठि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार पल्योपम राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—३२ भागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

इसीप्रकार त्रिकछेद, चतुष्कछेद और पंचछेद आदिका अवलम्बन करके भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये।

$$\text{उदाहरण—३२ के त्रिकछेद} = \overset{१}{\frac{३२}{२}}\quad \overset{२}{\frac{३२}{४}}\quad \overset{३}{\frac{३२}{२३}}$$

$$\text{६५५३६ के त्रिकछेद } \frac{६५५३६}{२}\quad \frac{६५५३६}{४}\quad \frac{६५५३६}{२३},$$

$$\frac{६५५३६}{२७} - \frac{३२}{२७} = २०४८ \text{ सा}$$

इसीप्रकार चतुष्कछेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। इसका कारण यह है कि पल्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है, और फिर असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है। द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—}\frac{६५५३६^{२}}{६५५३६ \times ३२} = \text{२०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त मध्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ रूप भागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

१ प्रतिषु 'भग अरिसन्न कदणए' इति पाठः।

एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । वेरूवपरूवणा गदा ।

अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण घणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? दुगुणिदपलिदोवमद्धच्छेदणएसु असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अथवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणपल्लं गुणेऊण घणपल्लउवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी

शलाकाएं आ जाती हैं ।

उदाहरण—२ २ = ४ − १ = ३ × १६ = ४८ + ४ = ५२
　　　　　　१ १

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हो गई ।

अब घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{६^{१}\ ३६^{१}}{३२ \times ६५५३६^{१}}$ = २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमानराशि घनपल्यके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहार ३२ × ६५५३६[१] के अर्धच्छेद ३७ होते हैं। इसलिये ३७ वार उक्त भज्यमान राशि ३६५३६[१] के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं ।

शंका— उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—द्विगुणित पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं ।

उदाहरण—१६ × २ = ३२ + ५ = ३७

अथवा असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो गुणितराशि लब्ध आवे उससे घनपल्यको गुणित करके लब्ध राशिका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर

आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिविगुणरूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवमुवरि वि अद्धच्छेदणयाणं संकलणविहाणं वत्तव्वं । एत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । अद्धच्छेदपरूवणा गदा ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुवरिम-

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, घनपल्यका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनपल्य आता है। पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है। पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^{3} \times ६५५३६^{1}}{३२ \times ६५५३६ \times ६५५३६^{2}} = २०४८$ सा

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये ८ वार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिको तीनसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके, इससे पल्यके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो संख्या आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

उदाहरण—[illegible]

इसीप्रकार ऊपर भी अर्धच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका कथन करना चाहिए। यहां पर द्विगुणादिकरणविधि करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी ले जाना चाहिए। इसप्रकार अर्धच्छेद प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनधारामें भागहार उत्पन्न करनेकी विधि बतलाते हैं— असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम

रिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? घणपल्लउवरिमवग्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि। पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि। पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया? रूवूणणवहि रूवेहि पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता। अथवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्लं[१] गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? घणाघणेण उवरिमवग्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि। पुणो वि

वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है। पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है। पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है। घनाघनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^{१} \times ६५५३६^{१} \times ६५५३६^{१}}{३२ \times ६५५३६^{१} \times ६५५३६^{१} \times ६५५३६^{१}} = २०४८$ सा

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके अर्धच्छेद १३३ होते हैं, इसलिये उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ आती है।

शंका— उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं?

समाधान— नौमेंसे एक कम करके जो शेष रहते हैं उनसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

उदाहरण— $९ - १ = ८ \times १६ = १२८ + ५ = १३३$

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनपल्यको गुणित करके आये हुए लब्धका घनाघनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनाघनपल्यका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनाघनपल्य

---

१ प्रतिषु 'घणपल्लं' इति पाठः।

करिय भागहारद्धच्छेदणया उप्पाएदव्वा । मत्तत्थ दुगुणादिकरणं कादव्वं । गहिद परूवणा गदा ।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । तं जहा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण वेरूव धाराए उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमुवरि सव्वत्थ कायव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्त

करण कर लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमविकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पल्योपमके असंख्यातवें भाग (सासादनसम्यग्दृष्टिराशि) का द्विरूपवर्गधारामें ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ का इच्छित वर्ग ६५५३६²

$$\frac{६५५३६^2}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२ \qquad \frac{६५५३६^2}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २१ अर्धच्छेद हैं अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार उपरिम वर्गस्थानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल = [illegible]

[illegible] × ३२ = [illegible] ३२² × [illegible] ३२² = [illegible] ३२² × ३२

[illegible] × ३२ = २०४८ सा

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं सव्वत्थ परूवेदव्वं । अट्ठरूवधारा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपल्लबिदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धछेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । गहिदगहिदो गदो ।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिम-

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्ररूपण करना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूपधारा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका घनाघनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाघन ६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; १६ का असंख्यातवां भाग २ × १६,

६५५३६ / (२ × १६) = २०४८, (६५५३६ × ६५५३६) / २०४८ = ६५५३६ × ३२,

(६५५३६ × ६५५३६) / (६५५३६ × ३२) = २०४८

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका पल्योपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे। एवं सव्वत्थ घणाघणधाराए वत्तव्वं। गहिदगुणगारो गदो। एवं सासणसम्माइट्ठिपरूवणा समत्ता। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च वत्तव्वं। णवरि विसेसो अप्पप्पणो अवहारकालेहि खंडिदादीणि वत्तव्वा। एत्थ एदेसिं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो—

बत्तीस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमट्ठवीसं च ।
एदे अवहारत्था हवंति संदिट्ठिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥

घनाघनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका घनाघनधाराके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।

उदाहरण—$\frac{१६'}{२ \times १६'} = २०४८;\quad \frac{६५५३६' \times ६५५३६'}{२०४८} = ६५५३६' \times ३२;$

$६५५३६'' \times ६५५३६' \times ३२ = ६५५३६''' \times ३२;$

$\frac{६५५३६'''}{६५५३६' \times ३२} = २०४८$ सा

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५९१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है।

सर्वत्र घनाघनधारामें आगे भी इसीप्रकार कहना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प समाप्त हुआ।

इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि प्ररूपणा समाप्त हुई।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवराशिके प्रमाणका खण्डित भाजित आदिके द्वारा कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि अपने अपने अवहारकालके द्वारा ही खण्डित भाजित आदिका कथन करना चाहिये। आगे इन सबका अंकसंदृष्टि बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ४, और संयता

परूवणट्ठं । पुधत्तमिदि तिण्हं कोडीणमुवरि णवण्हं कोडीणं हेट्ठदो जा संखा सा घेत्तव्वा । सा अणेगवियप्पादो इमा होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? ण, परमगुरूवदेसादो जाणिज्जदे । तत्थ पमत्तसंजदा पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्ठाणउदिसहस्सा छउत्तर विसदं च ५९३९८२०६ । एद्देमेत्तियं होदि त्ति कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो ।

अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥८॥

जदि वि एदं संखेज्जा इदि वयणं सव्वसंखेज्जवियप्पाणं साहारणं हवदि तो वि कोडिपुधत्तं ण पूरेदि त्ति णव्वदे । तं कधं ? पुध सुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो, 'पमत्तद्धादो अप्पमत्तद्धा संखेज्जगुणहीणो' त्ति सुत्तादो वा । अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरूवदेसादो उच्चदे । दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसयं च । अंकदो वि एत्तिया हवंति २९६९९१०३ । एत्थ च–

शंका — पृथक्त्व इस पदसे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी संख्या है, वह लेना चाहिये । परन्तु वह संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां ली गई है यह कहां जाना जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । उसमें प्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड तेरानवे लाख अट्ठानवे हजार दोसौ छह ५९३९८२०६ है ।

शंका — यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — आचार्यपरंपरासे आये हुए जिनेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ 'संखेज्जा' यह वचन, संख्यात संख्याके जितने भी विकल्प हैं, उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपृथक्त्वको पूरा नहीं करता है, अर्थात् यहां पर कोटिपृथक्त्वसे नीचेकी संख्या इष्ट है, यह जाना जाता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — यहां पर पृथक् अर्थ इष्ट न होकर यदि कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ ही इष्ट होता तो अलगसे सूत्र बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी । अथवा, प्रमत्तसंयतके कालसे अप्रमत्तसंयतका काल संख्यातगुणा हीन है इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहां पर कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ इष्ट नहीं है ।

अब गुरूपदेशसे अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड छ्यानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन

१ अप्रमत्तसंयता [illegible] । [illegible] [illegible] अप्पमत्ता [illegible] ।
गो. जी. ६२५ [illegible]

तिगहियसदणवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त बे कोडी ।
पंचेव य तेणउदी णवट्ठविसया छउत्तरं पमदे ॥ ४१ ॥

अप्पमत्तदव्वादो पमत्तदव्वं केण कारणेण दुगुणं ? अप्पमत्तद्धादो पमत्तद्धाए दुगुणत्तादो ।

चदुण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥

एगेगगुणट्ठाणम्हि एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुवसामेंता जहण्णेण एगो जीवो पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा पविसंति । एदं सामण्णेण भणिदं । विसेसदो पुण अट्ठसमयाहिय-वासपुधत्तंतरे उवसमसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति । तत्थ पढमसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण सोलस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । बिदियसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण चउवीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । तदियसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण छत्तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति ।

है । अंकोंसे भी अप्रमत्तसंयत २९६९९१०३ इतने ही हैं । कहा भी है—

प्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानबे लाख अट्ठानबे हजार दोसौ छह है और अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छ्यानबे लाख निन्यानबे हजार एकसौ तीन है ॥ ४१ ॥

शंका— अप्रमत्तसंयतके द्रव्यसे प्रमत्तसंयतका द्रव्य किस कारणसे दूना है ?

समाधान— क्योंकि, अप्रमत्तसंयतके कालसे प्रमत्तसंयतका काल दुगुणा है ।

चारों गुणस्थानोंके उपशामक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे चौवन होते हैं ॥ ९ ॥

उपशमश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें एक समयमें चारित्रमोहनीयका उपशम करता हुआ जघन्यसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपसे चौवन जीव प्रवेश करते हैं । यह कथन सामान्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक वर्षपृथक्त्वके भीतर उपशमश्रेणीके योग्य (लगातार) आठ समय होते हैं । उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे सोलह जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौवीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे तीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे

---

१ गो. जी. ६२५. परं तत्र 'पणतिय तेणउदा णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे' इति पाठः । प. स. ६२, ६३.

२ चत्वार उपशमकाः प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्षेण चतुःपंचाशत् । स. सि. १, ८. एगाइ चउपण्णा समगं उवसामगा य उवसंता । पंचसं. २, २३.

उवसामगाणं पमाणं हवदि। सउक्कस्सपमाणजीवसहिदा सव्वे समया जुगवं ण लब्भंति त्ति के वि पुव्वुत्तपमाणं पंचूणं करंति। एदं पंचूणं वक्खाणं पवाइज्जमाणं दक्खिणमाइरियपरंपरागयमिदि जं वुत्तं होइ। पुव्वुत्तवक्खाणमपवाइज्जमाणं वाउं आइरियपरंपराअणागदमिदि णायव्वं।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अट्ठसमयाहिय-छ-मासब्भंतरे खवगसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति। तेसिं समयाणं विसेसमविवक्खिय काऊण सामण्णपरूवणे कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जदि। उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसयमेत्तजीवा खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जंति। विसेसमस्सिदूण परूविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण बत्तीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। विदियसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण अडदालीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। तदियसमए वि एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति। चउत्थसमए एगजीवमादिं काऊण जा उक्कस्सेण बाहत्तरि जीवा त्ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कम करते हैं। पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कमका यह व्याख्यान प्रवाहरूपसे आ रहा है, दक्षिण है और आचार्य परंपरागत है, यह इस कथनका तात्पर्य है। तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवाहरूपसे नहीं आ रहा है, वाम है, आचार्य परंपरासे अनागत है, ऐसा जानना चाहिये।

चारों गुणस्थानोंके क्षपक और अयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपकश्रेणीके योग्य आठ समय होते हैं। उन समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्ररूपण करने पर जघन्यसे एक जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होता है। तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होते हैं। विशेषका आश्रय लेकर प्ररूपण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बत्तीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं। दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे अडतालीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं। तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढते हैं। चौथे समयमें एक जीवको

---

१ सर्वोत्कृष्टप्रमाणाढ्या लभ्यन्ते न यतः क्षणाः । [illegible] पंचभी रहितास्ततः ॥ पं. सं. १८.

२ चत्वारः क्षपका अयोगिकेवलिनश्च प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा। उत्कर्षेणाष्टोत्तरशतसंख्याः। स. सि. १, ८. खवगा खीणाजोगी एगाइ जाव होंति अट्ठसयं। पंचसं. २, २४.

एक्केक्कगुणट्ठाणे अट्ठसु समएसु संचिदाण तु ।
अट्ठसय सत्ताणउदी उवसम-खवगाण परिमाण ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसणेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयं ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं व परूवेदव्वो ।

अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ॥ १४ ॥

अट्ठमस्सिऊण सदसहस्सपुधत्ताणयणविहाणं वुच्चदे- अट्ठसमयाहियछम्मासाणमब्भंतरे जदि अट्ठ सिद्धसमया लब्भंति तो चालीससहस्स अट्ठसय एक्केतालीसमेत्त अट्ठसमयाहियछम्मासाणमब्भंतरे केत्तिया सिद्धसमया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे तिण्णिलक्ख छव्वीससहस्स सत्तसय अट्ठावीसमेत्त सिद्धसमया लब्भंति[1]। पुणो एम्हि सिद्धकालम्हि संचिदसजोगिजीवाणं पमाणाणयणं वुच्चदे। तं जहा- छसु सिद्धसमएसु तिण्णि तिण्णि

एक एक गुणस्थानमें आठ समयमें संचित हुए उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण आठसौ सतानवे है ॥ ४७ ॥

सयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशसे एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ होते हैं ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहलेके समान कहना चाहिये।

कालकी अपेक्षा संपूर्ण सयोगी जिन लक्षपृथक्त्व होते हैं ॥ १४ ॥

सयोगी जिन कालका आश्रय करके लक्षपृथक्त्व कहे हैं, आगे उसी लक्षपृथक्त्वके लानेकी विधि कहते हैं—

आठ समय अधिक छह माहके भीतर यदि आठ सिद्ध समय प्राप्त होते हैं तो चालीस हजार आठसौ इकतालीस मात्र अर्थात् इतनीवार आठ समय अधिक छह माहके भीतर कितने सिद्ध समय प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर तीन लाख छब्बीस हजार सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समय आते हैं। अब आगे इस सिद्ध कालमें संचित हुए सयोगी जीवोंका प्रमाण लानेकी विधि कहते हैं। वह इसप्रकार है—

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

जीवा केवलणाणं उप्पाएंति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाणं उप्पाएंति, तो अट्ठसमयसंचिदसजोगिजिणा बत्तीस भवंति। अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि बत्तीस सजोगिजिणा लब्भंति तो तिण्णिलक्ख-उणतीससहस्स-सत्तसय अट्ठावीसमेत्त सिद्धसमएसु केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए अट्ठलक्ख अट्ठाणउदिसहस्स दुरहिय पंचसदमेत्ता सजोगिजिणा लद्धा हवंति। वुत्तं च—

अट्ठेव सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साइं।
संखा जोगिजिणाणं पंचसद बिउत्तरं जाण[१] ॥ ४८ ॥

एदीए दिसाए बहुएहि पयारेहि सजोगिरासिस्स पमाणमाणेयव्वं। तं जहा- जम्हि पुव्विल्लसिद्धकालस्स अद्धमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि तेरासियमेवमाणेयव्वं। तं जहा— अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि चउदालीसमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो एक्कलक्ख विसट्ठिसहस्स तिण्णिसय चउसट्ठिमेत्त सिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कदे पुव्विल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि। जम्हि आउ व्वे पुव्विल्ल सिद्धकालस्स चउब्भागमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि एवं तेरासिअं कायव्वं। अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि अट्ठासीदि सजोगिजिणा लब्भंति तो एगासीदिसहस्स छस्सय बासीदि

एक सिद्ध समयोंमें तीन तीन जीव, और दो समयोंमें दो दो जीव यदि केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, तो आठ समयोंमें संचित हुए सयोगी जिन बत्तीस होते हैं। इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोंमें बत्तीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन लाख उनतीस हजार सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं। कहा भी है—

सयोगी जीवोंकी संख्या आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी दिशासे अनेक प्रकारसे सयोगी जीवोंकी राशि लाना चाहिये। आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

जहां पर पहलेके सिद्धकालका अर्धमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक लाना चाहिये। वह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोंमें यदि चवालीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं, तो एक लाख बासठ हजार तीनसौ चौसठ सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पूर्वोक्त ८९८५०२ सयोगी जीवोंकी ही राशि आ जाती है। अथवा, जिसमें पहलेके सिद्धकालका चौथा भागमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इस प्रकार त्रैराशिक करना चाहिये। आठ सिद्ध समयोंमें यदि अट्ठासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो इक्यासी हजार छहसौ ब्यासीमात्र सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस

१ गो. जी. ६२०

गणपमाणेण विदेहेक्कतित्थयरगणो सरिसो होज्ज। किं तु भरहेरावदमणुस्सेहिंतो विदेह-मणुस्सा संखेज्जगुणा। तं जहा- सव्वत्थोवा अंतरदीवमणुस्सा। उत्तरकुरुदेवकुरुमणुवा संखेज्जगुणा। हरिरम्मयवासेसु मणुआ संखेज्जगुणा। हेमवदहेरण्णवदमणुआ संखेज्जगुणा। भरहेरावदमणुआ संखेज्जगुणा। विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा त्ति। बहुगमणुस्सेसु जेण संजदा बहुआ चेव तेणेत्थतणसंजदाणं पमाणं पहाणं काऊण जं दूसणं भणिदं तण्ण दूसणं, बुद्धिविहूणाइरियमुहविणिग्गयत्तादो।

एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो। एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ छासट्ठिलक्खा छासट्ठिसहस्सा छस्सद-चउसट्ठिमेत्तं भवदि। वुत्तं च —

चउसट्ठी छच्च सया छासट्ठिसहस्स चेव परिमाणं।
छासट्ठिसयसहस्सा कोडिचउक्कं पमत्ताणं ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४। बे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउदिसहस्सा चत्तारिसद-अट्ठाणउदिमेत्ता अप्पमत्तसंजदा हवंति। उत्तं च—

माना जाय। किन्तु भरत और ऐरावत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

अन्तरद्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य उनसे संख्यातगुणे हैं। हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। भरत और ऐरावत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। विदेह क्षेत्रके मनुष्य भरत और ऐरावतके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। बहुत मनुष्योंमें क्योंकि [illegible] बहुत [illegible] होंगे, इसलिये इस क्षेत्रसंबन्धी संयतोंके प्रमाणको प्रधान करके जो दूषण [illegible] गया है वह दूषण नहीं हो सकता, क्योंकि वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुखसे निकला हुआ है। अब आगे उत्तर [illegible] बतलाते हैं—

उत्तर [illegible] संयतोंमें प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण चार करोड़ [illegible] लाख छ्यासठ हजार [illegible] है। कहा भी है—

प्रमत्तसंयत [illegible] चार करोड़ [illegible] लाख छ्यासठ हजार [illegible] ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४ [illegible]

दो करोड़ सत्ताईस [illegible] हजार चारसौ अट्ठानवे [illegible] हैं। कहा भी है—

बे कोडि सत्तावीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी।
चउसद अट्ठाणउदी परिसंखा होदि विदियगुणा॥ ५३॥

अक्खवगा वि २२७९९४९८। उवसामग-खवगपमाणपरूवणा पुव्वं व भाणिदव्वा। णवरि 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स परूवणा अण्णहा हवदि। तं जहा— अट्ठसमयाहियछम्मासाणं जदि अट्ठसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि सहस्स सत्तसद एगूणतीसमेत्त अट्ठसमयाहिय छम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि त्ति तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स अट्ठसद बत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति। एदम्हि कालम्हि संचिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे। तं जहा— अट्ठसु समएसु चोद्दस चोद्दस सजोगिजिणा होंति त्ति कट्टु जदि अट्ठण्हं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो सत्ततीससहस्स अट्ठसद बत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स छस्सय-अट्ठेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति। उत्तं च—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा।
छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा॥ ५४॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अप्रमत्तसंयत जीवोंकी संख्या दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे है॥ ५३॥

अक्षपकोंसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसंयत जीव हैं। उपशामक और क्षपक जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि सयोगिकेवली जीव कालकी अपेक्षा संचित हुए संख्यात होते हैं। यहां पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा दूसरे प्रकारसे होती है। वह इसप्रकार है— आठ समय अधिक छह महीनेका यदि आठ समयमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसौ उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सैंतीस हजार आठसौ बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं। अब इस कालमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन होते हैं, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो सैंतीस हजार आठसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस सयोगी जीव प्राप्त होते हैं। कहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी संख्या पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस है॥ ५४॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध
६ मास ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

५२९६४८। एदेण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयव्वो। उवसामग-खवगपमाणपरूवणगाहा—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव तेत्तीसा।
अट्ठसया चोत्तीसा उवसम-खवगाण केवलिणो ॥ ५५ ॥

एदे सव्वसंजदे एयट्ठे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगदसव्वरिसओ भवंति। तेसिं पमाणं छक्कोडीओ णवणउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसय-छण्णउदिमेत्तं हवदि। एदस्स बे-तिभागा पमत्तसंजदा हवंति। तिभागो अप्पमत्तादिसेससंजदा हवंति। वुत्तं च—

छक्कादी छक्कंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे।
तिगभजिदा बिगगुणिदा पमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥

६९९९९९९६। दव्वपमाणेण अवगदचोद्दसगुणट्ठाणाणं अप्पप्पणो इच्छिद-इच्छिदरासिस्स केत्तियो केत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागाभागपरूवणा कीरदे। तं जहा— भागादो भागो भागाभागो। तं भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुणट्ठाणजीवेहि ऊण

इस पद्धतिके अनुसार दूसरे प्रकारसे भी सयोगी जीवोंकी राशि ले आना चाहिये। अब उपशामक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा कहते हैं—

चारों उपशामक, चारों क्षपक और केवली ये तीनों राशियां मिलकर पांच लाख तेतीस हजार आठसौ चौंतीस हैं ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—ऊपर सयोगिकेवलियोंकी संख्या ५२९६४८ बतला आये हैं। उनमें चारों उपशमकोंकी संख्या ११९६ और चारों क्षपकोंकी संख्या २९९० और मिला देने पर तीनोंकी संख्या ५३३८३४ हो जाती है।

इन सब संयतोंको एकत्रित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण ऋषि होते हैं। उन सबका प्रमाण छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ छ्यानवे है। इसका दो बटे तीन भाग अर्थात् ४६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं, और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्तसंयत आदि शेष संयत हैं। कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें छह, अन्तमें छह और मध्यमें छहबार नौ हैं उतने अर्थात् छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ छ्यानवे ६९९९९९९६ जीव संपूर्ण संयत हैं। इसमें तीनका भाग देने पर लब्ध आवे उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्त आदि संपूर्ण संयत हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात् ४६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं ॥ ५६ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा जाने हुए चौदहों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी इच्छित राशिके प्रमाणका कितनवां कितनवां भाग होता है, इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी भागाभाग प्ररूपणा करते हैं। वह इसप्रकार है— भागसे होनेवाला भाग भागाभाग है। आगे उसी भागाभागको बतलाते हैं—

बे कोडि सत्तावीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी ।
चउसद अट्ठाणउदी परिसंखा होदि विदियगुणा ॥ ५३ ॥

अक्कदो वि २२७९९४९८ । उवसामग-खवगपमाणपरूवणा पुव्वं व भाणिदव्वा। णवरि 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स परूवणा अण्णहा हवदि । तं जहा- अट्ठसमयाहियछम्मासाणं जदि अट्ठसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि सहस्स सत्तसद एगूणतीसमेत्त-अट्ठसमयाहिय छम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि त्ति तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स अट्ठसद बत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति । एदम्हि कालम्हि संचिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे । तं जहा- अट्ठसु समएसु चोद्दस चोद्दस सजोगिजिणा होंति त्ति कट्टु जदि अट्ठण्हं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो सत्ततीससहस्स अट्ठसद-बत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति त्ति तेरासिए कए पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स छस्सय-अट्ठेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति । उत्तं च—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव ऊणतीसा।
छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा ॥ ५४ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अप्रमत्तसंयत जीवोंकी संख्या दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे है ॥ ५३ ॥

अर्थोंसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसंयत जीव हैं। उपशामक और क्षपक जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि सयोगिकेवली जीव कालकी अपेक्षा संचित हुए संख्यात होते हैं। यहां पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा दूसरे प्रकारसे होती है। वह इसप्रकार है- आठ समय अधिक छह महीनेका यदि आठ समयमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसौ उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सैंतीस हजार आठसौ बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं। अब इस कालमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन होते हैं, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो सैंतीस हजार आठसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस सयोगी जीव प्राप्त होते हैं। कहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी संख्या पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध
६ मास ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

जीवरासिमेत्ते भागे कदे तत्थ बहुभागो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। सेस-तेरसगुणट्ठाणोवट्टिदसिद्धरासिणा रूवाहिएण खंडिदे बहुखंडा सिद्धा हवंति। सेसाणं भागाभाग-परूवणट्ठं सेसरासीओ एगभागहारेणाणिज्जंते। तं जहा- संजदासंजददव्वं तप्पमाणेण कीरमाणे एगं[1] हवदि। सासणसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि। सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि। असंजदसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि।

सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने संपूर्ण जीवराशिके भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। जो एक भाग शेष रहता है उसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणसे भाजित सिद्धराशिमें रूपाधिक करके जो लब्ध हो उससे खण्डित करने पर जो बहुभाग आवे उतने सिद्ध होते हैं।

उदाहरण—सर्व जीवराशि १६, सिद्ध २, सासादन आदि १,

१६ ÷ ३ = ५ १/३, ३/१ ३/१ ३/१ ३/१ ३/१ १/१ बहुभाग १५ मिथ्यादृष्टि और ३ सिद्धतेरस
३

२ ÷ १ = २ + १ = ३; ३ ÷ ३ = १ ३ − १ = २ सिद्ध १ सासादन आदि

अब शेष राशियोंके भागाभागके प्ररूपण करनेके लिये शेष राशियां एक भागहारसे लाई जाती हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संयतासंयत जीवराशिके द्रव्यको उसी प्रमाणसे (शलाकारूप) करने पर एक होता है (५१२ = १ पिंडरूप)। सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणसे करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण होता है।

उदाहरण—१२८ ÷ ३२ = ४ × ५१२ = २०४८ सासा.

सम्यग्मिथ्यादृष्टिका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणरूपसे करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण होता है।

उदाहरण—१२८ ÷ १६ = ८ × ५१२ = ४०९६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य

असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाणरूपसे करने पर असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण

१ प्रतिषु ' एगम्मो ' इति पाठः।

सासण सजदासजदाण अवहारकालो होदि । पुणो त दो-गुणट्ठाण अवहारकाल सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकाल गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण पुव्व गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे तिण्ह गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि । पुणो तमवहारकाल असजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण असजदसम्माइट्ठि अवहारकाल गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगाररासिणा रूवाहिएण पुव्विल्ल-गुणिद अवहारकालमोवट्टिदे चउण्ह गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि । पुणो पत्त-संजद दव्वेण चउण्ह गुणट्ठाणाण दव्वमोवट्टिय लद्धेण चउण्ह गुणट्ठाणाणमवहारकाल गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण त चेव गुणिद अवहारकालमोवट्टिदे तेरसण्ह गुणट्ठाणाणमवहारकालो होदि ।

अनन्तर उन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकालको सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके अवहारकालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे गुणित करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयत इन तीनों गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$\frac{१२८}{५} \div १६ = \frac{१२८}{८०}$; $\frac{१२८}{८०} \times १६ = \frac{१२८}{५}$; $\frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०}$;

$\frac{१२८}{५} \div \frac{२०८}{८०} = ९\frac{११}{१३}$ सा. सम्यमि. और संयतासंयतका अवहारकाल।

अनन्तर इन तीनों गुणस्थानोंसंबन्धी अवहारकालको असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उससे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके पुनः एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने पर द्वितीयादि चार गुणस्थानोंका भागहार आ जाता है।

उदाहरण—$९\frac{११}{१३} \div ४ = \frac{१२८}{५२}$; $\frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}$; $\frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२}$;

$\frac{१२८}{१३} \div \frac{१८०}{५२} = २\frac{३८}{४}$ सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल।

अनन्तर प्रमत्तसंयत आदि नौ संयतोंके द्रव्यसे सासादन आदि चार गुणस्थानोंके द्रव्यको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उक्त चार गुणस्थानोंके अवहारकालको गुणित करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकालको अपवर्तित करने पर सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—संयतराशि ८, सासादनादि चार गुणस्थानराशि ९२०४०, सासादनादि चार गुणस्थानोंका अवहारकाल $\frac{१२८}{४५}$; $\frac{९२०४०}{८} = \frac{११५२०}{१}$;

$\frac{१२८}{४५} \times \frac{११५२०}{१} = \frac{२०४९१२}{९}$; $\frac{११५२०}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२१}{१}$;

अधवा संजदासंजद-अवहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि संजदासंजददव्वपमाणं पावदि। तमेगरूवस्सुवरि ट्ठिद-संजदासंजददव्वं पमत्तसंजदरासिणोवट्टिय लद्धं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजददव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पमत्तसंजदरासिपमाणं पावेदि। पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए विदियादि-रूवाणमुवरि ट्ठिदसंजदासंजददव्वाणमुवरि पक्खित्ते जाव हेट्ठिमविरलणोवरि ट्ठिद पमत्तसंजदरासी सरिसच्छेदं काऊण पविट्ठो त्ति। जदि हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूवपरिहाणी हवदि। अध रूवाहियदुगुणमेत्ता हवदि तो दोण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि। अध तिरूवाहियतिउणमेत्ता हवदि तो तिण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि। एत्थ पुण उवरिमविरलणादो हेट्ठिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति एगरूवअसंखेज्जदिभागस्स परिहाणी हवदि। तं जहा, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडिय-

$$\frac{२९४९१२}{९} - \frac{११५२१}{१} = \frac{२०४९१२}{१०३६८०} = २\frac{२३७७८}{३४५६१}$$ संयतासंयत आदि ११ गुणस्थान राशिका अवहारकाल

अथवा, संयतासंयतके अवहारकालको विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर विरलित राशिके एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि तीन संयतराशिसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले एकके ऊपर रखे हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रमत्तादि तीन संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस तीन संयत द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तबतक मिलाते जाना चाहिए जबतक अधस्तन विरलनके ऊपर स्थित तीन संयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो जाय। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होवे तो एककी हानि होती है। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक दुगुना होवे तो दोकी हानि होती है। यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होवे तो तीनकी हानि होती है। यहां प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकके असंख्यातवें भागकी हानि होती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो

रूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासिए कदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। तमुवरिमविरलणाए अवणिदे संजदसहियसंजदासंजदाणमवहारकालो होदि।

पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावदि। पुणो उवरिमविरलणपढमरूवधरिदसासणसम्माइट्ठिदव्वं संजदसहिदसंजदासंजददव्वेणोवट्टिय तत्थ लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवस्सुवरि ट्ठिदसासणसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासीओ पावंति। एत्थ एगरूवधरिददसगुणट्ठाणरासिपमाणं घेत्तूण उवरिमविरलणम्हि सुण्णं मोत्तूण तदणंतररूवस्सुवरि ट्ठिदसासणदव्वम्हि पक्खित्ते एक्कारसगुणट्ठाणरासीओ सव्वे मिलिदा हवंति। एवं हेट्ठिम

उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर एकका असंख्यातवां भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमेंसे घटा देने पर जो संयतसहित संयतासंयत राशिका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—भी संयतराशि २; संयतासंयत अवहारकाल १२८; संयतासंयत द्रव्य ५१२।

$\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ $\frac{५१२}{१}$ १२८ बार। अधस्तन विरलन २५६ में १ अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर यदि १ की हानि प्राप्त होती है

५१२ – २ = २५६।

$\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ २५६ बार, तो उपरिम विरलन मात्र १२८ स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

इसप्रकार त्रैराशिकसे $\frac{१२८}{२५७}$ की हानि प्राप्त हो जाती है। इसे उपरिम विरलन राशि १२८ मेंसे घटा देने पर १२७$\frac{१२९}{२५७}$ आते हैं। यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका अवहारकाल है।

अनन्तर सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनके पहले अंकपर रक्खे हुए सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको प्रमत्तादि भी संयतोंके द्रव्यसहित संयतासंयतके द्रव्यसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानवर्ती जीवोंकी संख्या प्राप्त होती है। यहां अधस्तन विरलनके एक अंकपर रक्खे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्य स्थानको (जिस पहले अंकके ऊपर रक्खी हुई संख्यामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका भाग दिया है उसे) छोड़कर उसके अनन्तर अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर सब मिल कर सासादन और संयतासंयत आदि अयोगिकेवलीपर्यंत ग्यारह गुणस्थानवर्ती

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठि अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि। पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिदव्वमोवट्टिय तत्थ लद्धसगेज्जरूवाणि विरलेऊण उवरिमविरलणपढमरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणदव्वपमाणं पावेदि। तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि परिवाडीए दिण्णे रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण हेट्ठिमविरलणमेत्तरासी समप्पदि, उवरिमविरलणाए एगरूवपरिहाणी च हवदि। तत्थेगरूवं पडि बारसगुणट्ठाणमेत्तरासी च हवदि। पुणो उवरिमतदणंतरएगरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए

२०४८/१ २०४८/१ २०४८/१ ३२ बार;

$२०४८ − ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७}$,

५१४/१ ५१४/१ ५१४/१ $५०६\frac{८३}{२५७}$,

$६५५३६ − २५\frac{७४३}{१२८१} = २५६२$

अवस्तन विरलन $३\frac{२५३}{२५७}$ में १ और मिला देने पर जो जोड़ हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ अंककी हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $६\frac{५३८}{१२८१}$ लब्ध आते हैं। इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर $२५\frac{७४३}{१२८१}$ रहते हैं। यही उक्त ११ गुणस्थानवर्ती राशिके लानेके लिये अवहारकाल है।

अनन्तर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यको भाजित करके वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रक्खे हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसको लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर परिपाटीसे देने पर उपरिम विरलनसे एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अधस्तन विरलनमात्र राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है। तथा उपरिम विरलनमें जहां तक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि दी गई है वहां तक प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती जीवराशि होती है। अनन्तर उपरिम विरलनमें, जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानोंकी जीवराशि मिलाई हो उसके, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टिके

समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणमेत्तरासी पावदि । तमेक्कारसगुणट्ठाणरासिं गुणट्ठाणं मोत्तूण उवरि णिरंतरं दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासी हवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहियं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च हवदि । एवं पुणो पुणो ताव कायव्वं जाव रूवपरिसुद्धा उवरिमविरलणा बारसगुणट्ठाणदव्वस्स अवहारकालं पत्ता त्ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासियं काऊण रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे बारसगुणट्ठाणदव्वस्स अवहारकालो हवदि । पुणो तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे बारसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि ।

द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । उस ग्यारह गुणस्थानसम्बन्धी राशिको गुणस्थानको (जिस अंकके ऊपरकी राशिको अधस्तन विरलनमें समान खण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर निरन्तर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानसम्बन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसम्बन्धी द्रव्यके अवहारकालको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । अब यहां पर हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसम्बन्धी द्रव्यका अवहारकाल होता है । पुनः इस अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसम्बन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६, द्रव्य ४०९६,

अधस्तन विरलन [illegible] एक और मिलाकर [illegible] उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र १६ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर [illegible] लब्ध आता

पुणो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि। पुणो बारसगुणट्ठाणरासिणा असंजदसम्माइट्ठिदव्वमोवट्टिय लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं हेट्ठा विरलेऊण असंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। पुणो उवरिमगुणट्ठाणं मोत्तूण सेसुवरिमरूवधरिदअसंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि हेट्ठिमविरलणाए रूवं पडि ट्ठिदबारसगुणट्ठाणरासिं पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। पुणो वि तदणंतरएगरूवधरिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिदअसंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि गुणट्ठाणं वोलिय पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि

है। इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर ९३६/१२ आते हैं। यही उन १२ गुणस्थानोंका अवहारकाल है। इस अवहारकालका भाग पल्योपम ६ ३२ में देने पर उन बारह गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ६६०८ आता है।

अनन्तर असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको भाजित करके जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनके प्रथम स्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाणमें अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह गुणस्थानसंबन्धी (सासादनादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः जिस स्थानतक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिलाई हो उसके आगेके एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको, अर्थात् जिस स्थानकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि अधस्तन विरलनमें दी है उसे, छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा रूवपरिसुद्धा तेरसगुणट्ठाण-अवहारकालमेत्ता जादा त्ति। पुणो एत्थ अवणयणरूवपमाणमाणिज्जदे। तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहिय-हेट्ठिमविरलणाए असंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले ओवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि परिहाणिरूवाणि लब्भंति। कुदो णव्वदे? सव्वगुणट्ठाणेसु पविट्ठसव्वगुणगार-सव्वग्गादो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरूवदेसादो।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमें मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपयुक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि होती है। इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण रूपको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर संपूर्ण तेरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये। अब यहां हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक स्थानकी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने हानिरूप अंक प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको भाजित करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४, द्रव्य १६३८४।

$\frac{16384}{1}$　$\frac{16384}{1}$　$\frac{16384}{1}$　$\frac{16384}{1}$

१६३८४　[illegible] ८८२ $\frac{1\ 35}{11[illegible]}$

[illegible]　$\frac{[illegible]}{1}$　३०६८
　　　　　　　　१५३४
　　　　　　　　३३२९

अधस्तन विरलन २$\frac{1}{1}$$\frac{1}{2}$ में १ और मिलाकर जो हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ स्थानकी हानि होती है तो उपरिम विरलन मात्र ४ स्थान जाकर कितनी हानि होगी इसप्रकार [illegible] करने पर [illegible] हानिरूप स्थानांक आते हैं। इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर [illegible] आते हैं। यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल है। इस अवहारकालका भाग पल्योपम [illegible] में देने पर सासादनादि १३ गुणस्थानराशिका प्रमाण २२०४ होता है।

शंका— आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणकारोंके सर्वाग्रसे असंयत सम्यग्दृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है' इस परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि

दव्वमोवट्टिय रूवाहिय करिय विरलऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाण पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाण होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहिय करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंड करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाण पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाण होदि। सेस संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाण होदि। सेस संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाण होदि। सेस संखेज्जभागे कदे तत्थ बहु-भागा सजोगिरासिपमाण होदि। सेस संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच खवग-पमाण होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाण होदि। एवं भागभागो समत्तो।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—२०४८ ÷ ५१४ = ३ $\frac{२५३}{२५७}$ + १ = ४ $\frac{२५३}{२५७}$।

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण
१	१	१	१	$\frac{२५३}{२५७}$	सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर भी (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसम्बन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—५१२ ÷ २ = २५६ + १ = २५७।

२	२	२	२	२		यहां पर बहुभाग ५१२ संयता
१	१	१	१	१	२५७ वार	संयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागभाग समाप्त हुआ।

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपहुडिरासिणा असंजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहिय रासिस्स असंजदसम्माइट्ठिपहुडिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारस ट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो एक्क गुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहिय विरलेऊण बारसगुण रासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठाणरासिणा सासणसम्मा

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंय १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्य आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्र एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयता तादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्य जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$१६३८४ - ६६५८ = २\frac{१५३४}{३३२९} + १ = ३\frac{१५३४}{३३२९}$;

$\frac{६६५८}{१}\quad\frac{६६५८}{१}\quad\frac{६६५८}{१}\quad ३०६८\frac{१५३४}{३३२९}$; इसमें बहुभाग १६३८४ प्र असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादिक १०) गुणस्थानसंबन्धी रा सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उ विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देन विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थ संबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि प्रमाण है।

उदाहरण—$४०१[illegible] - [illegible] = १\frac{१५३४}{[illegible]} + १ = २\frac{१५३४}{२१६२}$;

$[illegible]\quad[illegible]\quad [illegible]$; इसमें बहुभाग ४०१६ प्रमाण स मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग दृष्टिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर कुल राशिका विर

दव्वमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंचक्खवगपमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागाभागो समत्तो।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$२०४८ - ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७} + १ = ४\frac{२५३}{२५७}$,

$\frac{५१४}{१}$	$\frac{५१४}{१}$	$\frac{५१४}{१}$	$\frac{५१४}{१}$	$\frac{५०६}{\frac{२५३}{२५७}}$	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आये उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसम्बन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$५१२ - २ = २५६ + १ = २५७$,

$\frac{२}{१}$	$\frac{२}{१}$	$\frac{२}{१}$	$\frac{२}{१}$	$\frac{२}{१}$	२५७ बार	यहां पर बहुभाग ५१२ संयतासंयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशामकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपमुहरासिणा असंजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहियलद्ध-रासिस्स असंजदसम्माइट्ठिपमुहरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं विरलेऊण बारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठाणरासिणा सासणसम्माइट्ठि

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—१६३८४ – ६६५८ = २ $\frac{५३४}{३३२९}$ + १ = ३ $\frac{१५३४}{३३२९}$;

६६५८	६६५८	६६५८	३०६८	इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमाण
१	१	१	$\frac{१५३४}{३३२९}$;	असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादिक १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—४०९६ – २०६२ = १ $\frac{१५३४}{२०६२}$ + १ = २ $\frac{१५३४}{२०६२}$;

२०६२	२०६२	१५३४	इसमें बहुभाग ४०९६ प्रमाण सम्यग्-
१	१	$\frac{१५३४}{२०६२}$;	मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर हुए राशिका विरलन

दव्वमोवट्टिय रूवाहिय करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि । तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहु-भागा सजोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच खवग-पमाणं होदि । सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि । एवं भागाभागो समत्तो ।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

उदाहरण—२०४८ ÷ ५१४ = ३ $\frac{२५३}{२५७}$ + १ = ४ $\frac{२५३}{२५७}$,

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण
१	१	१	१	$\frac{२५३}{२५७}$	सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है ।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है ।

उदाहरण—५१२ ÷ २ = २५६ + १ = २५७,

२	२	२	२	२		यहां पर बहुभाग ५१२ संयता-
१	१	१	१	१	२५७ बार	संयत राशि है ।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है । इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपहुडिरासिणा असंजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहियं रासिस्स असंजदसम्माइट्ठिपहुडिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारस[…] ट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो एक्का[…] गुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं विरलेऊण बारसगुण[…] रासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। त[…] बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठाणरासिणा सासणसम्माइ[…]

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयता[…] १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध [आवे] उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग[्दृष्टि] आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्ये[क] एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासं[य]तादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्[दृष्टि] जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—१६३८४ − ६६५८ = २ १५३४/३३२९ + १ = ३ १५३४/३३२९;

६६०८ ६६५८ ६६५८ ३०६८ १५३४/३३२९ इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमा[ण]
१ १ १ असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादिक १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि[से] सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उस[को] विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और[…] संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने प[र] विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थान[…] संबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—४०९[६] − २५६२ = १ १५३४/२ २२ + १ = २ १५३४/२५६२;

[२५]६२ २५६२ १५३४ इसमें बहुभाग ४०९६ प्रमाण सम्य[ग्]
१ १ १ ५३४/२५६२ मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर हुए राशिका विरलन

दसगोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहु-भागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच-खवग-पमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागाभागो समत्तो।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—२०४८ ÷ ५१४ = ३ $\frac{२५३}{२५७}$ + १ = ४ $\frac{२५३}{२५७}$।

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण
१	१	१	१	$\frac{२५३}{२५७}$	सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसम्बन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—५१२ ÷ २ = २५६ + १ = २५७।

२	२	२	२	२		यहां पर बहुभाग ५१२ संयता-
१	१	१	१	१	२५७ बार	संयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशामकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

दव्वमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि । तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा खवगपमाणं होदि । सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि । एवं भागाभागो समत्तो ।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

उदाहरण—२०४८ − ५१४ = ३ $\frac{२५३}{२५७}$ + १ = ४ $\frac{२५३}{२५७}$

$\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५०६}{५१४}$ २५७ — यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है ।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (प्रमत्तादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है ।

उदाहरण— १० २ = ४ ... + १ = ५ ...

$\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ = ५ बार — यहां पर बहुभाग ११२ संयतासंयत राशि है ।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग चारों क्षपकोंका प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है । इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपमुहरासिणा असजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहियलद्ध रासिस्स असजदसम्माइट्ठिपमुहरासिं समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि बारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं विरलेऊण बारसगुणट्ठाणरासिं समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठाणरासिणा सासणसम्माइट्ठि

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—१६३८४ − ६६५८ = $२\frac{१५३४}{३३२९}$ + १ = $३\frac{१५३४}{३३२९}$।

६६५८	६६५८	६६५८	३०६८
१	१	१	$\frac{१५३४}{३३२९}$

इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादिक १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—[illegible] − [illegible] = $१\frac{१[illegible]३४}{२[illegible]६२}$ + १ = $२\frac{१५३४}{२[illegible]६२}$।

[illegible]६२	[illegible]६२	[illegible]३४
१	१	$\frac{१[illegible]३४}{२[illegible]६२}$

इसमें बहुभाग [illegible] प्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर हुई राशिका विरलन

दव्वमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा खवगपमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागाभागो समत्तो।

करके प्राप्त उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$२०४८ - ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७} + १ = ४\frac{२५३}{२५७}$।

$\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५१४}{१}$ $\frac{५०६ \frac{२५३}{२५७}}{}$ यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर भी (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति भी (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—$५१२ - २ = २५६ + १ = २५७$;

$\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ २५७ बार यहां पर बहुभाग ५१२ संयतासंयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशामकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

दुप्पमोवट्टिय रूवाहिय करिय विरलेऊण एगारसगुणट्ठाणरासिं समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच खवगपमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागाभागो समत्तो।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—२०४८ − ५१४ = ३ $\frac{२५३}{२५७}$ + १ = ४ $\frac{२५३}{२५७}$।

५१४ ५१४ ५१४ ५१४ ५०६
१ १ १ १ $\frac{२५३}{२५७}$

यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उदाहरण—५१२ − २ = २५६ + १ = २५७।

२ २ २ २ २
१ १ १ १ १ —२५७ बार

यहां पर बहुभाग ५१२ संयतासंयत राशि है।

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है। शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है। शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है। इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

कादव्वं । तं जहा, वत्तइस्सामो– सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा इट्ठिरासी आगच्छदि । दुगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठि रासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा इट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एवं तात दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठि अवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति । तत्थ अतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइट्ठि अवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भासे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठि रासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलि दोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि असंजद-सम्माइट्ठि संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं । पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो ।

—

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ – ३२ = २०४८ सा) द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (६५५३६ – ६४ = १०२४) । त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६५५३६ – ९६ = ६८२ $\frac{२}{३}$) । इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेबार द्विगुणादिकरण विधि हो जाये तबतक यह विधि करते जाना चाहिये । यहां अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्ध च्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है । इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव राशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५;

$\frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१} = ३२$; ३२ × ३२ = १०२४ गुणकार प्रतिभाग

सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम) ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाल नहीं है ।

घादव्वं । तं जहा, पयइरासी– सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । विगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति । तत्थ अतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भासे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं । पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो ।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ – ३२ = २०४८ सा) द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (६ ३६ – ६४ = १०२४) । त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६ ५३६ – ९६ = ६८२३) । इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसम्बन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तबतक यह विधि करते जाना चाहिये । यहां अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसम्बन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है । इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५;

$\frac{2}{1}\ \frac{2}{1}\ \frac{2}{1}\ \frac{2}{1}\ \frac{2}{1}$ = ३२; ३२ × ३२ = १०२४ गुणकार प्रतिभाग

सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम) ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाल नहीं है ।

कादव्वं। तं जहा, वत्तइस्सामो— सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। बिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स दुभागो आगच्छदि। तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि। एवं ताव दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति। तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि। तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि। सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सग अवहारकालो। एवं सम्मामिच्छाइट्ठिअसंजदसम्माइट्ठिसंजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं। पमत्तसंजदादीणं गुणगारप्पाबहुगं णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये। वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— प्रथम अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.)। द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ६४ = १०२४)। त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ९६ = ६८२ २/३)। इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जाये तबतक यह विधि करते जाना चाहिये। यहां अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है। इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२, अर्धच्छेद ५,

२　२　२　२　२ = ३२; ३२ × ३२ = १०२४ गुणकार प्रतिभाग
१　१　१　१　१

सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम)।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। प्रमत्तसंयत आदिका गुणकार अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि उनका अवहारकाल नहीं है।

संपहि अवगदसव्वपमाणस्स सिस्सस्स एत्थेव रासीणमप्पाबहुअं भणिस्सामो—

अट्ठमे अणियोगद्दारे एदं सुत्तयारो भणिस्सदि त्ति पुणरुत्तदोसो णासंकणिज्जो, तस्स पडिबुद्धसिस्सविसयत्तादो। अप्पडिबुद्धसिस्से अस्सिऊण परूवणं पि ण दोसकारणं हवदि। तत्थ अप्पाबहुगं दुविहं, सत्थाणप्पाबहुगं परत्थाणप्पाबहुगं चेदि। एत्थ मिच्छाइट्ठिस्स सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि। किं कारणं? मिच्छाइट्ठिरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो। तत्थ ताव सासणसम्माइट्ठिस्स सत्थाणप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा, सव्वत्थोवो अवहारकालो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सग अवहारकालो। अधवा गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो। एत्थ पडिभागणिमित्तं दुगुणिद

अब जिसने संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणको जान लिया है ऐसे शिष्यके लिये यहीं पर जीवराशियोंका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

शंका—सूत्रकार आठवें अनुयोगद्वारमें इसका कथन करेंगे ही, इसलिये यहां पर उसका कथन करनेसे पुनरुक्त दोष होता है?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, वह पुनरुक्तिरूप कथन प्रतिबुद्ध शिष्योंका विषय है। किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध हैं उनकी अपेक्षा दोबार कथन करना भी दोषका कारण नहीं है।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व। इस प्रकरणमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है।

शंका—इसका क्या कारण है?

समाधान—क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ध्रुवराशि बड़ी है। अब यहां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं। वह इसप्रकार है- सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनसम्यग्दृष्टि) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (सासादनसम्यग्दृष्टि) अवहारकाल प्रतिभाग है। अर्थात् अवहारकालका सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको अवहारकालसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। अथवा, गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादन द्रव्य [illegible]; अवहारकाल [illegible]
प्रतिभाग [illegible]; अवहारकालका वर्ग [illegible]
प्रतिभाग [illegible] गुणकार

कादव्वं । तं जहा, वत्तइस्सामो– सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा- इट्ठिरासी आगच्छदि । विगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठि- रासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा- इट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठि- अवहारकालस्स अद्धछेदणयमेत्तरासी गदा त्ति । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धछेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भासे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठि- रासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलि- दोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग अवहारकालो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि असंजद- सम्माइट्ठि संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं । पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो ।

—

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये। वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.)। द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका दूसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ६४ = १०२४)। त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ९६ = ६८२ $\frac{२}{३}$)। इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण है उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तबतक यह विधि करते जाना चाहिये। यहां अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है। इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५।

$\frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}$ = ३२; ३२ × ३२ = १०२४ गुणकार प्रतिभाग।

सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम)।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, उनका अवहारकाल नहीं है।

ुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। को पडिभागो? सम्मामिच्छाइट्ठि अवहार-
ालो। संजदासंजद अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग अवहारस्स
असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सासणसम्माइट्ठि अवहारकालो। तदो संजदासंजद
व्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो?
ग अवहारकालो। अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढ-
वग्गमूलाणि। को पडिभागो? सग अवहारकालवग्गो। संजदासंजददव्वस्सुवरि सासण-
म्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को
डिभागो? संजदासंजददव्वमवहारकालो। अहवा सासणसम्माइट्ठि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; १६ ÷ ४ = ४ गुणकार; ४ × ४ = १६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय। प्रतिभाग क्या है? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; ३२ ÷ १६ = २ गुणकार; १६ × २ = ३२ सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८; १२८ ÷ ३२ = ४ गुणकार; ३२ × ४ = १२८ संयतासंयत अवहारकाल।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (संयतासंयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने (संयतासंयतके) अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२; ५१२ ÷ १२८ = ४ गुणकार; १२८ × ४ = ५१२ संयतासंयत द्रव्य। अथवा, १२८ × १२८ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

गुणो। को गुणगारो? असंखेज्जसमया। को पडिभागो? सम्मामिच्छाइट्ठि अवहारकालो। संजदासंजद अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग अवहारस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सासणसम्माइट्ठि अवहारकालो। तदो संजदासंजद दव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सग अवहारकालो। अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सग अवहारकालवग्गो। संजदासंजददव्वस्सुवरि सासणसम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? संजदासंजददव्वमवहारकालो। अहवा सासणसम्माइट्ठि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६। १६ – ४ = ४ गुणकार। ४ × ४ = १६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय। प्रतिभाग क्या है? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२। ३२ – १६ = २ गुणकार। १६ × २ = ३२ सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८। १२८ – ३२ = ४ गुणकार। ३२ × ४ = १२८ संयतासंयत अवहारकाल।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (संयतासंयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने (संयतासंयतके) अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२। ५१२ – १२८ = ४ गुणकार। १२८ × ४ = ५१२ संयतासंयत द्रव्य। अथवा, १२८ × १२८ = १६३८४। ६५५३६ – १६३८४ = ४ गुणकार।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? अड्ढाइज्जरूवाणि। सजोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। सव्वत्थ हेट्ठिमरासिणोवरिमरासिम्हि भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो। पमत्तसंजददव्वादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग-अवहारकालस्स संखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पमत्तसंजददव्वं। सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सग-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो। सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो संखेज्ज

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— चारों उपशामक (उपशम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव) सबसे स्तोक हैं। पांचों क्षपक (क्षपक श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती और अयोगिकेवली जीव) उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। यहां गुणकार क्या है? ढाई अंक गुणकार है।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक ११९६, ११९६ × ५/२ = २९९० पांचों क्षपक।

सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण पांचों क्षपकोंसे संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। अप्रमत्तसंयत सयोगिकेवलियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। यहां सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे वह वहां गुणकार होता है।

उदाहरण—सयोगिकेवली ८९८५०२, अप्रमत्त २९६९९१०३, प्रमत्त ५९३९८२०६,

$२९६९९१०३ \div ८९८५०२ = ३३\frac{४८५३७}{८९८५०२}$ इससे सयोगी राशिको गुणित करने पर अप्रमत्त राशि आती है।

५९३९८२०६ ÷ २९६९९१०३ = २ इस गुणकारसे अप्रमत्त राशिको गुणित करने पर प्रमत्तसंयत राशि आती है।

प्रमत्तसंयतके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? प्रमत्तसंयतका द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है।

उदाहरण—प्रमत्तसंयत ५९३९८२०६ = २, असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४,

४ ÷ २ = २ गुणकार, २ × २ = ४ अवहारकाल।

असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

गुणो। को गुणगारो ? असंखेज्जसमया वा। को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि अवहारकालो। संजदासंजद अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सग अवहारस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि अवहारकालो। तदो संजदासंजद दव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? सग अवहारकालो। अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो ? सग अवहारकालवग्गो। संजदासंजददव्वस्सुवरि सासणसम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? संजदासंजददव्वस्स अवहारकालो। अहवा सासणसम्माइट्ठि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; १६ – ४ = ४ गुणकार; ४ × ४ = १६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? संख्यात समय। प्रतिभाग क्या है ? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; ३२ – १६ = २ गुणकार; १६ × २ = ३२ सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८; १२८ – ३२ = ४ गुणकार; ३२ × ४ = १२८ संयतासंयत अवहारकाल।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? अपना (संयतासंयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? अपने (संयतासंयतके) अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२; ५१२ – १२८ = ४ गुणकार; १२८ × ४ = ५१२ संयतासंयत द्रव्य। अथवा, १२८ × १२८ = १६३८४; ६५५३६ – १६३८४ = ४ गुणकार।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि अवहारकालो । संजदासंजद अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग अवहारस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि अवहारकालो । तदो संजदासंजद दव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग अवहारकालो । अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सग अवहारकालवग्गो । संजदासंजददव्वस्सुवरि सासणसम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? संजदासंजददव्वमवहारकालो । अहवा सासणसम्माइट्ठि अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; १६ ÷ ४ = ४ गुणकार; ४ × ४ = १६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय। प्रतिभाग क्या है? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; ३२ ÷ १६ = २ गुणकार; १६ × २ = ३२ सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८; १२८ ÷ ३२ = ४ गुणकार; ३२ × ४ = १२८ संयतासंयत अवहारकाल।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना (संयतासंयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने (संयतासंयतके) अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२; ५१२ ÷ १२८ = ४ गुणकार; १२८ × ४ = ५१२ संयतासंयत द्रव्य। अथवा १२८ × १२८ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

मणकालादो संजदासंजद-उवक्कमणकालो संखेज्जगुणो हवदि तो वि संजदासंजद-दव्वादो सासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्तचारित्तविरोहिसासण-गुणपरिणामेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मणिज्जरणहेउभूदसंजमासंजम-परिणामो अइदुल्लहो त्ति काऊण समयं पडि संजमासंजमं पडिवज्जमाणरासीदो समयं पडि सासणगुणं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो हवदि त्ति । सासणसम्माइट्ठिरासीदो सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं, सासणसम्मादिट्ठि-छआवलि-अब्भंतर-उवक्कमणकालादो अंतोमुहुत्तमेत्त-सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एत्थ वि रासिणा रासिं भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । अवहारकालेण अवहारकाले भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासिं अवहारकालेण हेट्ठिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्मामिच्छाइट्ठि-दव्वस्सुवरि असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । कुदो ? सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमण

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि सासादनसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे संयतासंयतका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, तो भी संयतासंयत द्रव्यप्रमाणसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा ही है, क्योंकि, सम्यक्त्व और चारित्रके विरोधी सासादनगुणस्थानसंबन्धी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी श्रेणीरूपसे कर्मनिर्जराके कारणभूत संयमासंयमरूप परिणाम अत्यन्त दुर्लभ हैं, इसलिये प्रत्येक समयमें संयमासंयमको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण संख्यातगुणा है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके छह आवलीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। यहां भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है। अथवा, अवहारकालसे अवहारकालके भाजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है। अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका पल्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य ४०९६ ÷ ४०९६ ३२ = १२८ गुणकार; ३२ × १२८ = ४०९६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य। अथवा ४०९६ ÷ २०४८ = २ गुणकार; ... × २०४८ सासा० द्रव्य। अथवा ३२ ÷ १६ = २ गुणकार। २०४८ × ... ४०९६। अथवा २०४८ ... ३२०९६ ... १३६ ... = गुणकार, २०४८ × २ = ४०९६।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है, क्योंकि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमण कालसे असंख्यात आवलियोंके भीतर होनेवाला असंयत

कालो । तस्सुवरि सिद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि वि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो ।

एवमोघे चोद्दसगुणट्ठाणपरूवणा समत्ता ।

दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदसिस्साणमणुग्गहणट्ठं सामण्णेण चोद्दसगुणट्ठाणपमाणपरूवणं करिय पज्जवट्ठियणयमवलंबिय ट्ठियसिस्साणमणुग्गहणट्ठमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ १५ ॥

आदेसेण पज्जवट्ठियणयावलंबणेण गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणं कीरदे । एत्थ इत्थंभावलक्खणो तदियाणिद्देसो त्ति दट्ठव्वो[2] । गदियाणुवादेण । सा च भेदपरूवणा चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि अस्सिऊण ट्ठिदा । तेहि अक्कमेण परूवणा ण संभवदीदि अपगदमग्गणट्ठाणाणि अवणिय पयदमग्गणट्ठाणणाणावणट्ठं गदिग्गहणं । आदेसमस्सिऊण जा गुणट्ठाणाणं पमाण

पल्योपमके ऊपर सिद्ध उससे अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा या सिद्धोंके असंख्यातवां भाग गुणकार है। सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्धोंके अनन्त बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है।

इसप्रकार ओघमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई।

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं। यहां 'आदेसेण' इस पदमें तृतीया विभक्तिका निर्देश इत्थंभावलक्षण है, ऐसा समझना चाहिये। अब 'गदियाणुवादेण' इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं। ऊपर जो भेदप्ररूपणाकी प्रतिज्ञा की है वह भेदप्ररूपणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है। परन्तु उनके द्वारा अक्रमसे अर्थात् युगपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है, इसलिये अविवक्षित मार्गणास्थानोंको छोड़कर प्रकृत मार्गणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है। आदेशका आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परम्पराके द्वारा

१ [illegible] । ... १४२ पृ. १ २

२ इत्थंभूतलक्षणे (तृतीया) । पाणिनि, २, ३,

परूवणा सा आइरियपरंपराए अणाइणिहणत्तणेण आगदा त्ति जाणावणट्ठं अणुवादग्गहणं। सेसगदिणिवारणट्ठं णिरयगदिग्गहणं कदं। सेसगदीओ मोत्तूण पुव्वं णिरयगदी चेव किमट्ठं वुच्चदे? ण, णेरइयदंसणेण समुप्पण्णसंवेगस्स भवियस्स दसलक्खणे धम्मे णिच्चलसरूवेण बुद्धी चिट्ठदि त्ति काऊण पुव्वं तप्परूवणादो। णेरइएसु त्ति किमट्ठं? ण, तत्थतणखेत्तकालपडिसेहफलत्तादो। मिच्छाइट्ठिग्गहणं किमट्ठं? सेसगुणट्ठाणणिवारणट्ठं। दव्वपमाणेणेत्ति किमट्ठं? खेत्तकालणिवारणट्ठं। केवडिया इदि पुच्छा किंफला? णिगंथ-सत्थकत्तारत्तपदुप्पायणमुहेण अप्पणो कत्तारत्तपडिसेहफला। एवं गोदमसामिणा पुच्छिदे महावीरभयवंतेण केवलणाणेणावगयतिकालगोयरासेसपयत्थेण असंखेज्जा इदि तेसिं पमाणं परूविदं। एवमुत्ते संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती। तं पुण असंखेज्जमणेयवियप्पं। तं जहा-

अनादिनिधनरूपसे आई हुई है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अनुवाद पदका ग्रहण किया है। शेष गतियोंका निराकरण करनेके लिये सूत्रमें नरकगति पदका ग्रहण किया है।

शंका— शेष गतियोंके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया जा रहा है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हो जानेसे जिसे भय उत्पन्न हो गया है ऐसे भव्य जीवकी दशलक्षण धर्ममें निश्चलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया।

शंका— सूत्रमें 'णेरइएसु' यह पद किसलिये दिया गया है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नरकगतिसम्बन्धी क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करना उक्त पदका फल है।

शंका— सूत्रमें 'मिच्छाइट्ठी' इस पदका ग्रहण किसलिये किया है?

समाधान— शेष गुणस्थानोंके निवारणके लिये मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है।

शंका— सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणसे' ऐसा पद क्यों दिया है?

समाधान— क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करनेके लिये 'द्रव्यप्रमाणसे' पदका ग्रहण किया है।

शंका— 'कितने हैं' इस पृच्छाका क्या फल है?

समाधान— जिनेन्द्रदेव ही अर्थकर्ता हैं, इस बातके प्रतिपादन द्वारा अपने (भूतबलिके) कर्तापनका निषेध करना उक्त पृच्छाका फल है। नरकगतिमें मिथ्यादृष्टि नारकी कितने हैं, इसप्रकार गौतमस्वामीके द्वारा पूछने पर जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा त्रिकालके विषयभूत समस्त पदार्थोंको जान लिया है, ऐसे भगवान् महावीरने 'असंख्यात हैं' इसप्रकार नारकियोंके प्रमाणका प्ररूपण किया।

'नरकमें मिथ्यादृष्टि नारकी असंख्यात हैं' इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और अनन्तकी निवृत्ति हो जाती है। वह असंख्यात अनेक प्रकारका है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं-

आधारे आधेयोवयारदंसणादो। जहा असिसदं धावदि त्ति। एत्थ ण घडकुंभदिट्ठंतो जुज्जदे, कुंभस्स घदववएसादंसणादो। घदमिदि णिहिदे त्ति वट्टमाणकाले घदववएसो कुंभस्स उवलब्भदे? चे ण, अदीदाणागदकालेसु कुंभस्स घदववएसदंसणादो। जं तं भवियासंखेज्जयं तं भविस्सकाले असंखेज्जपाहुडजाणुगजीवो। ण च एस आगमदो दव्वासंखेज्जयम्हि णिवददि, संपहि तत्थ खओवसमलक्खणुवजोगाभावादो। जं तं तव्वदिरित्तदव्वासंखेज्जयं तं दुविहं, कम्मासंखेज्जयं णोकम्मासंखेज्जयं चेदि। तत्थ अट्ठ कम्माणि ट्ठिदिं पडुच्च कम्मासंखेज्जयं। दीवसमुद्दादि णोकम्मासंखेज्जयं। धम्मत्थिय अधम्मत्थिय दव्वपदेसगणणं पडुच्च एगसरूवेण अवट्ठिदमिदि कट्टु सस्सदासंखेज्जयं। जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं। जं तं अपदेसासंखेज्जयं तं जोगाविभागपलिच्छेदे पडुच्च एगो जीवपदेसो। अधवा सुण्णीय मग्गो, असंखेज्ज

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधेयका उपचार देखा जाता है। जैसे, सौ तलवारें (सौ तलवारवाले) दौड़ती हैं। तात्पर्य यह है कि सौ तलवारोंके आधारभूत पुरुषोंमें आधेयभूत तलवारोंका उपचार करके जैसे सौ तलवारें दौड़ती हैं यह कहा गया है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, कुम्भकी घृत संज्ञा व्यवहारमें नहीं देखी जाती है।

शंका—यह घृत रक्खा है, इसप्रकार वर्तमानकालमें कुम्भकी घृत संज्ञा पाई जाती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अतीत और अनागत कालमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा देखी जाती है।

जो जीव भविष्यकालमें असंख्यातविषयक प्राभृतका जाननेवाला होगा उसे भावि द्रव्यासंख्यात कहते हैं। इसका आगमद्रव्यासंख्यातमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता है, क्योंकि, वर्तमानमें इसमें (भाविद्रव्यासंख्यातमें) क्षयोपशमलक्षण द्रव्य उपयोगका अभाव है।

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यासंख्यात दो प्रकारका है कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात और नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात। उनमें आठों कर्म स्थितिकी अपेक्षा कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात हैं। अर्थात् आठों कर्मोंकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात समय प्रमाण होती है इसलिये वे स्थितिकी अपेक्षा असंख्यातरूप हैं। द्वीप और समुद्रादि नोकर्मतद्व्यतिरिक्त द्रव्यासंख्यात हैं।

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूप प्रदेशोंकी गणनाके प्रति सर्वदा एकरूपसे अवस्थित हैं, इसलिये वे दोनों द्रव्य शाश्वतासंख्यात हैं। गणनासंख्यातका स्वरूप परिकर्ममें कहा गया है। योगविभागमें जो अविभागप्रतिच्छेद बतलाये हैं, उनकी अपेक्षा जीवका एक प्रदेश अप्रदेशासंख्यात है। अथवा, असंख्यातमें उसका यह भेद शून्यरूप है, क्योंकि, असंख्यात पर्यायोंके आधारभूत अप्रदेशी एक द्रव्यका अभाव है। कुछ आत्माका एक प्रदेश

पज्जायाणमाहारभूदअण्णदव्वाभावादो। ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो। पज्जवणए पुण अवलंबिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्वं तत्तो पुधभूदसमुदायाभावादो। जं तं एगासंखेज्जयं तं लोयायासस्स एगदिसा। कुदो? सेडि-आगारेण लोयस्स एगदिसं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखातीदादो। जं तं उभया-संखेज्जयं तं लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखा-तीदादो। जं तं सव्वासंखेज्जयं तं घणलोगो। कुदो? घणागारेण लोगं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो। जं तं वित्थारासंखेज्जयं तं लोगागासपदरं, लोग-पदरागारपदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो। जं तं भावासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावासंखेज्जयं असंखेज्जपाहुडजाणगो उवजुत्तो। णोआगमदो भावासंखेज्जयं ओहिणाणपरिणदो जीवो। एदेसु असंखेज्जेसु गणणासंखेज्जेण पयदं। जदि गणणासंखेज्जेण पयदं तो सेसदसविहअसंखेज्जपरूवणं किमट्ठं कीरदे? अपयदणिवारणट्ठं पयदपरूवणट्ठं। वुत्तं च —

द्रव्य तो हो नहीं सकता है, क्योंकि एक प्रदेश जीवद्रव्यका अवयव है। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर जीवका एक प्रदेश भी द्रव्य है, क्योंकि, अवयवोंसे भिन्न समुदाय नहीं पाया जाता है।

लोकाकाशकी एक दिशा अर्थात् एक दिशास्थित प्रदेशपंक्ति एकासंख्यात है, क्योंकि, आकाश प्रदेशोंकी श्रेणीरूपसे लोकाकाशकी एक दिशा देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है। लोकाकाशकी उभय दिशाएं अर्थात् दो दिशाओंमें स्थित प्रदेशपंक्ति उभयासंख्यात है क्योंकि लोकाकाशके दो ओर देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं। घनलोक सर्वासंख्यात है, क्योंकि, घनरूपसे लोकके देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं। प्रतररूप लोकाकाश विस्तारासंख्यात है, क्योंकि, प्रतररूप लोकाकाशके प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं।

भावासंख्यात आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। असंख्यातविषयक प्राभृतको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगमभावासंख्यात कहते हैं। अवधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगमभावासंख्यात कहते हैं। इन ग्यारह प्रकारके असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है।

शंका — यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष दश प्रकारके असंख्यातोंका वर्णन क्यों किया गया?

समाधान — अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये यहां सभी असंख्यातोंका वर्णन किया है। कहा भी है —

परित्तासंखेज्जयं ण भवदि, जुत्तासंखेज्जयं पि ण भवदि, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं, असंखेज्जा इदि बहुवयणणिद्देसादो। पाइए दोसु वि बहुवयणोवलंभादो वत्तिमुहेण सव्वेसु असंखेज्जवहुत्तविरोहाभावादो वा अणेयंतिओ हेदुरिदि चेण्णाहि 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण' इदि पुरदो भण्णमाणसुत्तादो असंखेज्जासंखेज्जस्स उवलद्धी हवदि। तं पि तिविहं जहण्णमुक्कस्सं अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयं चेदि। तत्थ वि जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं ण भवदि उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं। कुदो? 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो।

तं पि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयमसंखेज्जवियप्पमिदि इदं होदि त्ति ण जाणिज्जदे? जहण्ण असंखेज्जासंखेज्जादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और युक्तासंख्यात भी नहीं लिया गया है, अतः यहां असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें 'असंखेज्जा' इस प्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है।

शंका — प्राकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है। अथवा, व्यक्तिमुखसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इसलिये प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो 'असंखेज्जा' यह बहुवचनरूप हेतु दिया है वह अनैकान्तिक है।

समाधान — यदि ऐसा है तो 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे असंख्यातासंख्यातका ग्रहण हो जाता है।

यह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात। इन तीनोंमें भी प्रकृतमें जघन्य असंख्यातासंख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात भी नहीं है, किंतु प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि 'जहां जहां असंख्यातासंख्यात देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण होता है' ऐसा परिकर्मका वचन है।

शंका — यह मध्यम असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विकल्परूप है, इसलिये यहां यह भेद लिया है यह नहीं जाना जाता है?

समाधान — जघन्य असंख्यातासंख्यातसे पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान ऊपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असंख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे आकर दोनोंके

वग्गट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जलोगमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण दोण्हमंतरे जिणदिट्ठभावरासी घेत्तव्वो। अथवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो असंखेज्जगुणो छद्दव्वपक्खित्तरासीदो असंखेज्जगुणहीणो। को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी को वा छद्दव्वपक्खित्तरासि त्ति वुत्ते वुच्चदे– जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी हवदि[1]। एसा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? जेणेदस्स वग्गसलागाओ वग्गसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स उवरिमवग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पलिदोवमवग्गसलागाणं पुण वग्ग

मध्यमें जिनेन्द्रदेवने जो राशि देखी है उसका यहां ग्रहण करना चाहिये। अथवा, तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे असंख्यातगुणी और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशिसे असंख्यातगुणी हीन राशि ग्रहणमें लेना चाहिये।

शंका — तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशि कौनसी है? इसप्रकार पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं—

समाधान — जघन्य असंख्यातासंख्यातका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य असंख्यातासंख्यातको देयरूपसे देकर उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेसे जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये। उनमेंसे एकका विरलन करके और उस विरलित राशिके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित उत्पन्न हुई महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि उत्पन्न होती है। (पृष्ठ २३ पर तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिका अंकसंदृष्टिसे उदाहरण दिया है उसीप्रकार यहां समझना चाहिये।)

यह तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि पल्योपमके असंख्यातवें भाग है, क्योंकि, इसकी वर्गशलाकाओंसे वर्गशलाकाएं जघन्य परीतासंख्यातके उपरिम वर्गको नहीं प्राप्त होकर,

1 [illegible]

संखेज्जाणंताणं णिवारणट्ठमसंखेज्जवयणं। असंखेज्जाओ सेढीओ इदि सामण्णवयणेण सव्वागाससेढीणं गहणं किण्ण पावदे? ण, तस्स—

पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी।
लोगपदरो य लोगो अट्ठ दु माणा मुणेयव्वा॥ ६५॥

इदि पमाणट्ठगब्भंतरे अप्पिदत्तादो। ण च पमाणे परूविज्जमाणे अप्पमाणस्स पवेसो अत्थि, अइप्पसंगादो। अहवा 'मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण असंखेज्जा' इदि पुव्विल्लवयणादो जाणिज्जदे जहा अणंताए सव्वागाससेढीणं गहणं णत्थि त्ति। जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि किमट्ठं? ण, जगपदरस्स संखेज्जदिभागप्पहुडि उवरिमसव्वसंखा

प्रमाण पूर्वोक्त ही बतलाया है। अब यदि सामान्य नारकियोंकी और मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कम्भसूची एक मान ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अभाव प्राप्त हो जाता है जो संगत नहीं है। अतएव यहां पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी जो विष्कम्भसूची बतलाई है, वह सामान्य कथन है। विशेषरूपसे विचार करने पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणा कर देने पर जो नारक सामान्य विष्कम्भसूची आवे उसे किंचित् न्यून कर देने पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कम्भसूची होती है।

संख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन दिया है।

शंका— सूत्रमें 'असंख्यात जगश्रेणियां' ऐसा सामान्य वचन दिया है इसलिये उससे संपूर्ण आकाश श्रेणियोंका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, वह श्रेणीप्रमाण—

पल्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, लोकप्रतर और लोक, इसप्रकार ये आठ उपमाप्रमाण जानना चाहिये॥ ६५॥

इसप्रकार इन आठ प्रमाणोंके भीतर आ जाता है। और जिसका प्रमाणके भीतर प्ररूपण किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा।

अथवा, 'नारक मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं' इस पूर्वोक्त वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें संपूर्ण आकाशकी अनन्त जगश्रेणियोंका ग्रहण नहीं है।

शंका— सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन किसलिये दिया?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जगप्रतरके संख्यातवें भागको आदि लेकर उपरिम

चेव णेरइयमिच्छाइट्ठीणं ओवट्टणं परूविदा, कधं तण्ण विरुज्झदे? आगमपमाणादो। अथवा पुण सव्वो अवि चेव सामण्णविसेसविक्खंभसूचीणं समाणत्तविरोहा। ×× तम्हा णेरइयविक्खंभसूची पुण किंचूणसूच्यंगु- [illegible] किंचिदूणमेत्ता त्ति घेत्तव्वं। धवला (मूडबिद्री) पत्र ११८, अ

१ प्रतिषु 'इवणा' इति पाठः।

२ पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी। लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा॥ त्रि. सा. ९२

पदरंगुलस्स घणंगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहणं एत्थ णो पावदे ? ण, 'अट्ठण्हं वग्गिज्ज-माणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविक्खंभसूई उप्पज्जदि। सा सई वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूई हवदि। सा सई वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूई हवदि। सा सई वग्गिदा घणंगुलो हवदि' त्ति परियम्मवयणादो णव्वदे घण-पदरंगुलाणं वग्गमूलस्स गहणं ण हवदि किंतु सूचिअंगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि त्ति, अण्णहा घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो। संपहि सूचिअंगुलबिदियवग्गमूलं भागहारं

गुणित प्रथम वर्गमूल लिया है। जैसे, 'जो जटाओंसे युक्त है वह तपस्वी भोजन करता है। यहां पर इत्थंभावलक्षण तृतीया निर्दिष्ट होनेसे जटाओंवाला यह अर्थ निकल आता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका—'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा सामान्य कथन करने पर उसमें प्रतरांगुलके वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असंख्यात वर्गस्थान जाकर सौधर्म और ऐशानसंबंधी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मद्विकसम्बन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (नारकसम्बन्धी विष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंसम्बन्धी विष्कम्भसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कम्भसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर घनांगुल प्राप्त होता है'। इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल और प्रतरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है किंतु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कम्भसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ—ऊपर जो परिकर्मका उद्धरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है कि सामान्य नारकविष्कम्भसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें अंगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूच्यंगुलका ग्रहण न करके प्रतरांगुल या घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायका परिकर्मके वचनके साथ विरोध आ जाता है, क्योंकि, उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कम्भसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं तो परिकर्मके उक्त वचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरांगुल करने पर भी यही आपत्ति आती है। हां, अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल ले लिया जाता है तो कोई विरोध नहीं आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सूत्रमें अंगुलसे सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको भागहार करके और सूच्यंगुलको भाज्य करके

घाऊण सूचिअंगुल विक्खंभमाणमिदि कट्टु विक्खंभसूचिपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद भाजिद विरलिद अवहिद पमाण कारण णिरुत्ति वियप्पेहि वत्तइस्सामो। तत्थ खंडिदादि-तिण्णि सुगमं। तस्स पमाणं केत्तियं? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि। केण कारणेण? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि। सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे दोण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। पुणो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तिण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। एवं पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागभूदसूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण सूचिअंगुले भागे हिदे

वर्गस्थानमें खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति, और विकल्पके द्वारा विष्कंभसूचीका प्रतिपादन करते हैं। उनमें प्रारंभके खण्डित आदि तीनका कथन सुगम है। (इन तीनोंका सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिके संबंधमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४८ में किया है, उसीप्रकार यहां भी समझना चाहिये।)

शंका — विष्कंभसूचीका प्रमाण कितना है?

समाधान — सूच्यंगुलके असंख्यातवां भाग विष्कंभसूचीका प्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है।

शंका — किस कारणसे सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कंभसूची होती है?

समाधान — सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{२ \times २^{\frac{1}{2}}}{२^{\frac{1}{2}}} = २^{\frac{1}{2}}\right)$। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके दो प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २^{\frac{1}{2}}}{\frac{२^{\frac{1}{2}}}{२}} = २ \times २^{\frac{1}{2}}\right)$। पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके तीन प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २^{\frac{1}{2}}}{\frac{२^{\frac{1}{2}}}{३}} = ३ \times २^{\frac{1}{2}}\right)$। इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध

असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो। कारणं गदं। णिरुत्तिं वत्तइस्सामो। अंगुलबिदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे भागलद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि घेत्तूण विक्खंभसूई हवदि। अधवा बिदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तिएहि पढमवग्गमूलेहि विक्खंभसूची होदि त्ति वत्तव्वं। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। सूचिअंगुलबिदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धेण पढमवग्गमूले गुणिदे विक्खंभसूई हवदि। अधवा बिदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले गुणिदे

आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं है। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $\frac{२^{\frac{१}{२}}}{२^{\frac{१}{४}}} = २^{\frac{१}{४}}$, $\frac{२ \times २^{\frac{१}{२}}}{२^{\frac{१}{४}}} = २$ सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंभसूची।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर भागमें जितनी संख्या लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंभसूची उत्पन्न होती है। अथवा, द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलोंसे (द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंको जोड़ देने पर) विष्कंभसूची होती है। इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $२^{\frac{१}{४}} \times २^{\frac{१}{२}} = २$ द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंका जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है उतना ही आता है।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमें पहले द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है। अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है।

उदाहरण— $\frac{२^{\frac{१}{२}}}{२^{\frac{१}{४}}} = २^{\frac{१}{४}}$, $२^{\frac{१}{४}} \times २^{\frac{१}{२}} = २$ वि॰ अथवा, $२^{\frac{१}{४}} \times २^{\frac{१}{२}} = २$ वि॰

विक्खंभसूई हवदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एत्थ विउणादिकरणं वत्तइस्सामो । अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । विगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि ।

—

अब अष्टरूपमें प्रकृतका विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको भाजित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। पुन उसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घन $\left(२^{\frac{१}{२}}\right)^{६} = २^{६}$; घनांगुलका प्रथम वर्गमूल $२^{६}$।

$$\frac{२^{६}}{२^{\frac{१}{२}} \times २^{\frac{१}{४}}} = २ \text{ विष्कम्भसूची}$$

अब यहां द्विगुणादिकरण विधिको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है $\left(\frac{४}{१} = २ \times २^{\frac{१}{२}}\right)$। द्विगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका दूसरा भाग आता है ( ) । त्रिगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका तीसरा भाग आता है। ( ) ।

एदेण कमेण णेदव्वं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स गुणगारो विदियवग्गमूलमेत्तं पत्तो त्ति। पुणो तेण सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण गुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विदियवग्गमूलोवट्टियसूचिअंगुलो आगच्छदि। सो चेव विक्खंभसूची। घणाघणे वत्त इस्सामो। अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूई आगच्छदि। केण कारणेण? घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि। पुणो वि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि। पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। एवं हेट्टिमवियप्पो समत्तो।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ

इसप्रकार जबतक सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। पुनः उस सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित सूच्यंगुल आता है, और वही विष्कंभसूची है।

उदाहरण—$\frac{२^{१}}{२^{\frac{१}{२}} \times २^{\frac{१}{४}}} = \frac{२ \times २^{\frac{१}{४}}}{२^{\frac{१}{४}}} = २$ विष्कंभसूची

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है। पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सूच्यंगुल आता है। पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है। इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घनाघन $(२)^{९} = २^{१२}$ सूच्यंगुलके घनाघनका द्वितीय

वर्गमूल $२^{\frac{१२}{४}} = २^{३}$; $\frac{२^{३}}{२^{\frac{१}{२}} \times २^{\frac{१}{४}} \times २^{\frac{१}{४}}}$ = २ विष्कंभसूची

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमें

अद्धच्छेदणयमेत्तमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। विदियवग्ग-मूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण घणंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। केण कारणेण? पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि। पुणो वि विदियवग्ग-मूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। घणाघणे वत्तइस्सामो। विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुल उवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणे भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि। केण

जाना चाहिये। यहां पर समस्त अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिको जानकर कथन करना चाहिये।

उदाहरण—$2^{\frac{6}{2}}$ के अर्धच्छेद $\frac{6}{2}$ होते हैं, अत इतनीवार २ के अर्धच्छेद करने पर $2^{\frac{6}{2}-\frac{5}{2}} = 2^1 = 2$ प्रमाण विष्कम्भसूची आ जाती है।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है। पुन सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कम्भसूचीका प्रमाण आता है। इसप्रकार विष्कम्भसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

$$\text{उदाहरण—}\frac{(2^{\frac{6}{2}})^1}{2^{\frac{4}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}}} = \frac{2^4}{2^3} = 2 \text{ विष्कम्भसूची}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कम्भसूचीका प्रमाण आ जाता है। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये।

उदाहरण—2^4 के अर्धच्छेद ३ होते हैं, अत इतनीवार 2^4 के अर्धच्छेद करने पर $2^{4-3} = 2^1 = 2$ प्रमाण विष्कम्भसूची आ जाती है।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके भाजित करने पर विष्कम्भसूचीका

कारणेण ? घण उवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणगुलो आगच्छदि । पुणो वि पदरंगुलेण घणगुले भागे हिदे सूचिअंगुलं आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । गहिदो गदो । सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुल पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण [1]घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण च विक्खंभसूचिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुव्वं व वत्तव्वो ।

संपहि णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स भागहारुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । सुत्ते अवुत्तो भागहारो कधमुप्पाइज्जदे ? ण, सुत्तवुत्तविक्खंभसूईदो तदुप्पत्तिसिद्धीदो । तं जहा–

प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुल आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{(२)^{१}}{\frac{१}{२ \times २ \times २^{८}}}$ = $\frac{२^{११}}{२^{१} \times २^{८}}$ = $\frac{२^{११}}{२^{१०}}$ = २ विष्कंभसूची

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्पका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $२^{११}$ के अर्धच्छेद ११ होते हैं, अतः इतनीवार $२^{१२}$ के अर्धच्छेद करने पर $२^{१२-११}$ = $२^{१}$ = २ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये ।

अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके भागहारके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

शंका— भागहारका कथन सूत्रमें नहीं किया है फिर यहां वह कैसे उत्पन्न किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सूत्रोक्त विष्कंभसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पत्ति बन जाती है । वह इसप्रकार है—

१ प्रतिषु 'पुणो घण' इति पाठः ।

जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे एगसेढी आगच्छदि। जगसेढीदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेढीओ आगच्छंति। जगसेढितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेढीओ आगच्छंति। एवमेगादि-एगुत्तरकमेण सेढीए भागहारो वड्ढावेयव्वो जाव णेरइयविक्खंभसूचिमेत्तं पत्तो त्ति। पुणो ताए विक्खंभसूचीए सेढिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे विक्खंभसूचीमेत्तसेढीओ आगच्छंति। एवमण्णत्थ वि विक्खंभसूईदो अवहारकालो साधेयव्वो। एदेण भागहारेण सेढीए उवरि खंडिदादिवियप्पा वत्तव्वा। तत्थ ताव वग्गट्ठाणे पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि अवहारकालं वत्तइस्सामो। तस्स पमाणं केत्तियं? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। पमाणं गदं। केण कारणेण? सेढिपढमवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे सेढिपढमवग्गमूलं आग-

---

जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक जगश्रेणीका प्रमाण आता है (४२९४९६७२९६ ÷ ६५५३६ = ६५५३६)। जगश्रेणीके द्वितीय भागसे जगप्रतरमें भाग देने पर दो जगश्रेणियां लब्ध आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२)। जगश्रेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ २१८४५⅓ = १९६६०८)। इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए जबतक वह नारक विष्कम्भसूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये। अनन्तर उस विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणीको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे जगप्रतरके भाजित करने पर जितना विष्कम्भसूचीका प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां लब्ध आती हैं। इसीप्रकार अन्यत्र भी विष्कम्भसूचीसे अवहारकाल साध लेना चाहिये।

उदाहरण—जगश्रेणी ६५५३६। जगप्रतर ४२९४९६७२९६; ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८;
४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२ नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि

अब इस भागहारका आश्रय करके जगश्रेणीके ऊपर खण्डित आदि विकल्पोंका कथन करना चाहिये। उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा अवहारकालका प्रमाण बतलाते हैं—

शंका—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके लानेके लिये जो भागहार कहा है उसका प्रमाण कितना है?

समाधान—उस भागहारका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—अवहारकाल ३२७६८; जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल २५६; ३२७६८ ÷ २५६ = १२८ (यहां १२८ को असंख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल २५६ का जोड़ ३२७६८ होता है)

शंका—जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाल किस कारणसे है?

समाधान—क्योंकि जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर

णदि। सेडितिदियवग्गमूलेण सेडिम्हि भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि
रूवाणि तत्तियाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। सेडितिदियवग्गमूलेण सेडिम्हि
भागे हिदे सेडिविदियतदियवग्गमूलाणं अण्णोण्णब्भासे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि
तत्तियाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं
असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेडिम्हि
भागे हिदे असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो कायव्वो।
कारणं गदं। णिरुत्तिं वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेडिपढमवग्गमूले भागे
हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण
सेडिविदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि
तत्तियाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण सेडितदियवग्गमूले भागे
हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणेऊण तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि

जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल आता है (६५५३६ – २५६ = २५६)। जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे
जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने जगश्रेणीके
प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ – १६ = ४०९६ = १६ × २५६)। जगश्रेणीके तृतीय
वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर, श्रेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर
गुणा करने पर वहां जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६
– ४ = १६३८४ = १६ × ४ × २५६)। इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके अस
ख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित
करने पर जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये।
इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण—घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल २, ६५५३६ – २ = ३२७६८ अथ

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम
वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं।

उदाहरण—२५६ – २ = १२८ (इतने प्रथम वर्गमूल अवहारकालमें होते हैं)।

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके
भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने
पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें
लब्ध आते हैं।

उदाहरण—१६ – २ = ८, १६ × ८ = १२८

अथवा उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके
भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । अणेण विहाणेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण तस्सुवरिमवग्गमवहारिय लद्धेण घणंगुलस्स वग्गमूलं गुणिय तेण च गुणियरासिणा घणंगुलो गुणेयव्वो । एदेण कमेण उवरि उवरि अवट्ठिदवग्गट्ठाणाणि सेढिविदियवग्गमूलंताणि सव्वाणि गुणेयव्वाणि । तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति । एवं णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, जगसेढिसमाणदुरूववग्गस्स पढमवग्गमूलं केण वि भागहारेण अवहिरिज्जंते अवहारकालस्स अणुप्पत्तीदो । ण च जगसेढिसमाणदुरूववग्गं अस्सिऊण अवहारकालुप्पत्ती वोत्तुं सक्किज्जदे, हेट्ठिम-उवरिमवियप्पेसु णिरुद्धेसु मज्झिमवियप्पस्स असंभवादो । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणसेढिपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स

तदनन्तर उस लब्धसे द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर यहां जितना प्रमाण आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं ।

उदाहरण—४ ÷ २ = २; ४ × २ = ८; १६ × ८ = १२८

इसी विधिसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे उसके उपरिम वर्गको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलको गुणित करना चाहिये । इसी क्रमसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये । इसप्रकार गुणा करनेसे यहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—४ ÷ २ = २ ४ × २ = ८; १६ × ८ = १२८

विशेषार्थ—यहां दृष्टान्तके स्पष्ट करनेके लिये जो अंकसंदृष्टि ली है उसमें जगश्रेणीका द्वितीय वर्गमूल और घनांगुलका प्रमाण एक पड़ आता है जो १६ है । अतः निरुक्तिका कथन करते हुए जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलतक ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते जाना चाहिये । इस कथनके अनुसार अंकसंदृष्टिमें वहां तक (१६ तक) गुणा करनेसे वह संख्या लब्ध आ जाती है जितने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहारकालमें पाये जाते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे यहां प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गके प्रथम वर्गमूलको किसी भी भागहारसे अपहृत करने पर अवहारकाल नहीं उत्पन्न हो सकता है । यदि जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका आश्रय करके अवहारकालकी उत्पत्ति कही जावे सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विकल्पके अधस्तन और उपरिम विकल्पसे निरुद्ध हो जाने पर मध्यम विकल्प नहीं बन सकता है । यहां अष्टरूपमें भी अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है,

बहुगुवलंभादो। अहवा अवहारकालाणयणणिमित्तभागहारेण णिरुद्धरासीदो हेट्ठा जत्थ तत्थ वग्गमूलमोवट्टिय णिरुद्धरासिम्हि हेट्ठिमवग्गमूलाणि एयवारं गुणिदे जत्थ इच्छिदरासी उप्पज्जदि तत्थ वि हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदलद्धेण सेढिपढमवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि। अहवा तेणेव भागहारेण सेढिविदियवग्गमूलमवहारिय तत्थागदेण लद्धेण तं चेव विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण पढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि। अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूलमवहारिय तत्थ लद्धेण तं चेव तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि। अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणमसंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणि पुध णिरुंभणं करिय अवहारगुणगारविहिं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विवक्षमान राशि जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे अवहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया जाता है। अथवा, अवहारकालके लानेके लिये निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगश्रेणीसे नीचे किसी भी वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे निरुद्धराशिके अधस्तन वर्गमूलोंको एकबार गुणित करने पर जहां पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहां पर भी अधस्तन विकल्प पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर यहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित कर देने पर अवहारकालका प्रमाण होता है।

उदाहरण—२५६ ÷ २ = १२८, २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

अथवा, उसी भागहारसे अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके यहां जो लब्ध आवे उससे उसी जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—१६ ÷ २ = ८, १६ × ८ = १२८, २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको भाजित करके यहां जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—४ ÷ २ = २, ४ × २ = ८, १६ × ८ = १२८, २५६ × १२८ = ३२७६८ अव.

इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थानोंको पृथक् रूपसे रोककर और घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम आदि स्थानोंको

साधेयव्वो । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुलं गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवट्ठिदाणि वग्गट्ठाणाणि सेढिपढमवग्गमूलपच्छिमाणि णिरंतरं गुणेयव्वाणि । एवं गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठि अवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुव्वं परूविदो तो वि हेट्ठिमवियप्पमवघण मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं पुणरवि परूविदो ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कधं ? सेढिपढमवग्गमूलेण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अवहारकालो साहेयव्वो । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुणिदे अवहार-

भाजित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यन्त गुणनक्रिया करके अवहारकाल साध लेना चाहिये। उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे घनांगुलको गुणित करके पुनः जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यन्त ऊपर ऊपर स्थित वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करना चाहिये। इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उत्तरोत्तर वर्गस्थानके गुणित करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण आता है। इस अर्थका प्रकरण यद्यपि पहले कर आये हैं तो भी मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अधस्तन विकल्पके संबन्धसे इसका फिरसे प्रकरण किया है।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण—घनलोकका प्रथम वर्गमूल [illegible]

अथवा यहां पर द्विगुणादिक्रमसे अवहारकाल साध लेना चाहिये। अथवा घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी घनांगुलके द्वितीय

कालो होदि । एवं हेट्ठा वि जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कधं ? सेढिसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहारकालो विगुणादिकमेण वड्ढावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयसहियसेढिसमाणवेरूववग्गस्स अद्धच्छेदणयमेत्ता ।

घनमूलसे गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय वर्गमूल १६³, २१६ × २ = ५१२, १६³ – ५१२ = ८; १६³ × ८ = ३२७६८ अव.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा, द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण—६५५३६ × २ = १३१०७२; ६५५३६² – १३१०७२ = ३२७६८ अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १६ + १ = १७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलकी अर्धच्छेद शलाकाएं मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगश्रेणी समान द्विरूपवर्ग ६५५३६ के अर्धच्छेद १६; घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १; १६ + १ = १७ अ. ।

उवरि सव्वत्थ चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासि
तिरूवेण सेडिपमाणेण्णवग्गस्स अद्धच्छेदणाए गुणिय घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स
अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वा
वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। घणंगुलबिदियवग्गमूलेण सेडिम्हि भा
हिदे अवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छे
दणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि। अहवा घणंगुलबिदियवग्गमूलेण सेडिं गुणिऊण
जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण? जगसेडीए जगपदरे
भागे हिदे सेडी आगच्छदि। पुणो वि घणंगुलबिदियवग्गमूलेण सेडिम्हि भागे हिदे
अवहारकालो आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अहवा
अवहारकालो विउणादिकरणेण उप्पाएयव्वो। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जावें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड हो उतने विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार द्विरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ भ.ह.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकाल आता है।

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल उत्पन्न करना चाहिये।

उदाहरण—६५५३६ × २ = १३१०७२; ४२९४९६७२९६ ÷ १३१०७२ = ३२७६८ भ.ह.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उवरि सव्वत्थ चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि तिरूवूणेण सेढिसमाणविरूववग्गस्स अद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं। विरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि। अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण? जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अहवा अवहारकालो तिउणादिकरणेण वड्ढावेयव्वो। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जावें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार द्विरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ अव

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अत इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकाल आता है।

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुन घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया। अथवा त्रिगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये।

उदाहरण—६[illegible]३६ × २ = १३१०७२, ४२९४९६७२९६ ÷ १३१०७२ = ३२७६८ अव

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि। एत्थ चडिदद्धाणमेत्तागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण जगसेढिअद्धछेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धछेदणया हवंति। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं। अट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि त्ति तहा गुणेऊण भागग्गहणं कदं। अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। केण कारणेण? घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि। पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि। पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि

उदाहरण—उक्त भागहारके १६ + १ = १७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर ३२७६८ प्रमाण अवहारकालराशि आता है।

यहां पर जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी शलाकाओंका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है। इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि जगप्रतरसे घनलोकके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार अवहारकाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागग्रहण किया।

उदाहरण—६५५३६ × २ = ८५८९९३४५९२। ६५५३६³ ÷ ८५८९९३४५९२ = ३२७६८ अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि घनलोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनलोक आता है, पुनः जगप्रतरका घनलोकमें भाग देने पर जगश्रेणी आती है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है। इसप्रकार

भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागाणमाणयणविही वुच्चदे- चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण सेढिअद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिदपरूवणा गदा । सेढिपमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण सेढीए असंखेज्जदिभागेण घणलोगपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवमवहारकालपरूवणा समत्ता।

एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि।

अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया।

उदाहरण— $\frac{६५५३६'}{६५५३६' \times ६५५३६' \times २}$ = ३२७६८ अव

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८१ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकालका प्रमाण आता है।

अब यहां भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंके लानेकी विधि कहते हैं— जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके लब्ध राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विवक्षित अवहारकालके अर्धच्छेद होते हैं। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतप्ररूपणा समाप्त हुई।

उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसलिये $\frac{२}{१}$ = २ × ३ = ६ − १ = ५ × १६ = ८० + १ = ८१ अर्ध।

जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका जो उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। इसप्रकार अवहारकाल प्ररूपणा समाप्त हुई।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२)। यहां पर खण्डित, भाजित,

सेढीए असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तं कधं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूलमवहरिय तेण तं चेव गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं हेट्ठा जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तं कधं ? जगपदरसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे

$$२५६ \times \frac{१}{१२८} = २,\ ६५५३६ \times २ = १३१०७२$$ ना. मि.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि जगश्रेणीसे घनलोकके भाजित करने पर जगप्रतर आता है। पुनः भागहारसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^{३}}{६५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२$ ना. मि.

अथवा, अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो प्रमाण आवे उससे उसी घनलोकके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है। इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर कथन करना चाहिये। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उदाहरण— $\frac{२५६^{३}}{६५५३६ \times ३२७६८} = १२८,\ २५६^{३} \times १२८ = १३१०७२$ ना. मि.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालसे जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे उस द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है। पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण— $\frac{४२९४९६७२९६^{२}}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२$ ना. मि.

जगपदरसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण घणलोगस्स असंखेज्जदिभागेण च णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणा समत्ता ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १८ ॥

ओघम्मि वुत्ततिण्णिगुणट्ठाणरासी सव्वा वि णेरइयाणं तिण्णिगुणट्ठाणरासि-सेसा चेव होदि त्ति वुत्ते सेसगदीसु तिण्हं गुणट्ठाणाणमभावो पसज्जदे ? ण एस दोसो, णेरइयाणं तिण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणस्स ओघतिगुणट्ठाणपमाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागत्तं पडि विसेसाभावादो एयत्ताविरोहा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि दोण्हमत्थि भेदो, सेसतिगदितिण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणाणमुवरि उच्चमाणसुत्ताण

जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गधाराके जितना उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप जगप्रतरके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके असंख्यातवें भागरूप नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपणाके समान हैं ॥ १८ ॥

शंका — गुणस्थानोंमें कही गई तीन गुणस्थानसम्बन्धी जीवराशि सभी नारकियोंके तीन गुणस्थानसम्बन्धी जीवराशिके बराबर ही होती है, ऐसा कहने पर शेष तीन गतियोंमें तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नारकियोंके तीन गुणस्थानसम्बन्धी जीवराशिके प्रमाणका सामान्यसे कही गई तीन गुणस्थानसम्बन्धी जीवराशिके प्रमाणके साथ पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये इन दोनोंको समान मान लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है । परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर इनमें भेद है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो शेष तीन गतिसम्बन्धी सासादनादि तीन गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफलता नहीं बन सकती है । अब

१ [illegible]
[illegible]

गदन्नसण्णहाणुववत्तीदो । तस्स भेदस्स परूवणट्ठं सासणसम्माइट्ठिआदिगुणपडिवण्णाणं अवहारकालो परूविज्जदे । तं जहा—

ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि रूवस्स असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । देवगदिं मोत्तूण सेसतिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासी सामण्णअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जा भागा देवासंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । कुदो ? देवेसु बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमुवलंभादो । देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे ? जिणबिंबिद्धिमहिमादंसण-जाइस्सरण-महिड्ढिदंसण-जिणपादमूलधम्मसवणादीणि[१] । णिरिक्खणेरइया पुण बहुपाव

उस भेदके प्ररूपण करनेके लिये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— $\overset{१६३८४}{१}$ $\overset{१६३८४}{१}$ $\overset{१६३८४}{१}$ $\overset{१६३८४}{१}$ एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ।

इसमेंसे देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

शंका— शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप लानेके लिये प्रतिभागका प्रमाण क्या है ?

समाधान— आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण देवोंसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, क्योंकि देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारण पाये जाते हैं ।

शंका— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान— जिनबिम्बसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन, जातिस्मरणका होना, महर्द्धिक इन्द्रादिकका दर्शन और जिनेंद्रदेवके पादमूलमें धर्मका श्रवण आदि देवोंमें सम्यक्त्वोत्पत्तिके कारण हैं । परंतु तिर्यंच और नारकी गुरुतर पापोंके भारसे लदे और बंधे होनेसे अतिशय

१ देवानां केषांचि जातिस्मरणं केषांचिद्धर्मश्रवणं केषांचिज्जिनमहिमदर्शनं केषांचिद्देवर्द्धिदर्शनम् । स. सि. १

भावेण णत्थणड्ढत्तादो संकिलिट्ठपरत्तादो[1] मंदबुद्धित्तादो बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमभावादो च सम्माइट्ठिणो थोवा हवंति । तदो तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिणा उवरिमेगरूवधरिद ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वमवहारिय तत्थागदमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे हेट्ठिमविरलणरूवं पडि सेसतिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि । तप्पमाणं उवरिमविरलणाए उवरिमरूवं पडि ट्ठिदओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वम्हि अवणेयव्वं । एवमवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता चेव देवअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ च भवंति । पुणो उवरिमविरलणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणेण कस्सामो । तं जहा—

रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि ट्ठिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं लब्भदि, अवहारकालम्हि एगं

संक्लिष्ट परिणामी होनेसे, मन्दबुद्धि होनेसे और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका अभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि थोड़े होते हैं।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति रक्खी हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके यहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये। इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमात्र देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां होती हैं।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६।

१६३८४/४०९६ = ४; ४०९६ / १   ४०९६ / १   ४०९६ / १   ४०९६ / १ ।

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६३८४ में घटा देने पर १२२८८ आते हैं। यहां देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, और ४०९६ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है।

अब आगे उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुदित कर देने पर एक देव

१ प्रतिषु 'मंदबुद्धित्तादो ' इति पाठः ।

मेव पक्खेवसलागा। पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेव उवरिमविरलणम्हि तिगदिअसंजद-सम्माइट्ठिदव्वेसु समुदिदेसु देवअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं लब्भदि, अवहारकालम्हि विदिया य पक्खेवसलागा। एवं पुणो पुणो कीरमाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति, हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणाए असंखेज्जगुणत्ता। एदासिमवहारकालपक्खेवसलागाणमेगवारेण आगमणविहिं वत्तइस्सामो। हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु केत्तियाओ पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरिं विरलिदओघअसंजदसम्माइट्ठिस्स अवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति। ताओ ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि, असंजदसम्माइट्ठिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छाइट्ठिउवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता। तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो

असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। फिर भी एक कम अधस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं, क्योंकि, अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है। अब इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंके एकवारमें लानेकी विधिको बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार (त्रैराशिक करके) एक कम अधस्तन विरलनका ऊपर विरलित ओघ असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें भाग देने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं। उन प्रक्षेपशलाकाओंको ओघ असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है।

उदाहरण— एक कम अधस्तन विरलन [illegible] उपरिम विरलन ४, ४ [illegible]

[illegible] देव असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य।

[illegible] ४०९ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य।

देव असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा हीन है। देव

परूवणाए सामण्णणेरइयपरूवणादो विसेसाभावादो। पुणो पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा विदियादिपुढवीसु जीवाभावप्पसंगादो। तं विसेसं वत्तइस्सामो। तं जहा— पढमपुढविणेरइयाणं दव्व-कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व-कालपमाणाणि चेव असंखेज्जदिभागहीणाणि हवंति। तहा खेत्तपमाणं पि ओघखेत्तपमाणादो असंखेज्जदिभागूणं भवदि। तं कधं जाणिज्जदे? 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो' इदि पुरदो वुच्चमाणसुत्तादो णव्वदे जहा ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वादो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढीए असंखेज्जदिभागेण हीणमिदि। एदं सुत्तमवलंबिय पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूइं उप्पाइस्सामो। तं जहा— ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिरासीदो एगसेढिअवणयणं पडि जदि विक्खंभसूचिम्हि एगसलागाए अवणयणं लब्भदि तो किंचूणबारसवग्गमूलभजिदसेढिम्हि किं लभामो त्ति सेढीए फलगुणिदिच्छामोवट्टिदे किंचूणबारसवग्गमूलभजिदेगरूवमागच्छदि। एदं

प्ररूपणामें सामान्य नारकियोंकी प्ररूपणासे कोई विशेषता नहीं है। परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणासे प्रथम पृथिवीसंबन्धी प्ररूपणामें विशेषता है ही। यदि ऐसा न माना जाय तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंके अभावका प्रसंग आ जायगा। आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको असंख्यातवें भाग न्यून कर देने पर पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है। उसीप्रकार पहली पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे असंख्यातवां भाग न्यून है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— 'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग हीन है।

अब आगे हम द्वितीयादि पृथिवियोंके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाले सूत्रका अवलम्बन लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची उत्पन्न करते हैं। वह इसप्रकार है— जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जगश्रेणी कम करने पर विष्कम्भसूचीमें एक शलाका कम होती है, तो कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीके विष्कम्भसूचीमें कितनी कमी प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशिभूत कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीको फलराशिसे गुणित करके जगश्रेणीसे अपवर्तित करने पर, एकमें कुछ कम बारहवें वर्गमूलका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना आता है।

सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स विक्खंभसूई होदि[1]। एदीए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४; किंचित् ऊन बारहवां वर्गमूल $\frac{१२८}{६३}$।

१ १३६ − $\frac{१२८}{६३}$ = ३ ८ ९। ३८० ६ × ३ = ३८२१६।

३८८ ६ − ६ १३६ = $\frac{६३}{१२८}$ = १ − $\frac{१२८}{६३}$।

इस किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलभाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिकी विष्कंभसूची होती है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—२ − $\frac{६३}{१२८}$ = $\frac{१९३}{१२८}$, $\frac{६५५३६}{१}$ − $\frac{१९३}{१२८}$ = $\frac{८३८८६०८}{१९३}$। प्र पृ मि अव।

विशेषार्थ—जगश्रेणीके बारहवें, दशवें, आठवें छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य आता है। और इन छहों नरकोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण बतलाते समय उनकी विष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण बतलाई है। अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगश्रेणियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रदेशप्रमाण सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। अब यदि प्रथम नरकके नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूची लाना हो तो द्वितीयादि नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगश्रेणीका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सामान्य विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरककी विष्कंभसूची आ जाती है। उदाहरणार्थ— दूसरे नरकका १६३८४ तीसरेका ८१९२, चौथेका ४०९६, पांचवेंका २०४८, छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य मान लेने पर इनमें जगश्रेणी ६५५३६ का भाग देने पर क्रमसे $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{८}$, $\frac{१}{१६}$, $\frac{१}{३२}$, $\frac{१}{६४}$ और $\frac{१}{१२८}$ आता है जिनका जोड़ $\frac{६३}{१२८}$ होता है। इसे सामान्य विष्कंभसूची २ मेंसे घटा देने पर $\frac{१९३}{१२८}$ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूल भाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ तम्हा पुव्विल्लविक्खंभसूचा (सामण्णणेरइयविक्खंभसूचा) एगादसस अणंतरअदिभागूणा पढम पु विणेरइयाण विक्खंभसूची होदि। म. प्रति पत्र ५१८ अ

अहवा अण्णेण पयारेण अवहारकालो उप्पाइज्जदे। तं जहा- सामण्णअवहारकालं विरलेऊण रूवं पडि जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि। पुणो तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि छपुढविमिच्छाइट्ठिरासिणा भागे हिदे किंचूणबारसवग्गमूलगुणिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची आगच्छदि। एदं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरि एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि। तं उवरिमविरलणाए ट्ठिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि पुध पुध अवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ भवंति। छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ वि तत्तिया चेव।

लानेके लिये विष्कम्भसूची होती है। यहां किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलमें द्वितीयादि नरकोंके मिथ्यादृष्टि राशिका सम्मिलित अवहारकाल अभिप्रेत है।

अथवा, दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं। वह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः उस विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी विष्कम्भसूची आती है। इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आ जाता है। उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलनका जितना प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां होती हैं। द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां भी उतनी ही होती हैं।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि राशि ३२७६;

$\frac{१३१०७२}{१}$ $\frac{१३१०७२}{१}$ ३२७६८ बार;

$१३१०७२ - ३२७६ = \frac{२१६}{६३} = २ \times \frac{१०८}{६३}$।

$\frac{३२७६}{१}$ $\frac{३२७६}{१}$, $\frac{३२२५६}{१}$ $\frac{३२७६}{१}$ $\frac{२०४८}{४}$ / ६३ इस ३२७६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त

१३१०७२ मेंसे घटा देने पर १२७७९६ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं और शेष ३२७६ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं।

पुणो उवरिमविरलणमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा- रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । तत्थ एगा अवहारकालसलागा लब्भइ । पुणो वि उवरिमविरलणम्हि तत्तियमेत्तेसु चेव छप्पुढविदव्वेसु समुदिदेसु अवरेगं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भइ । एवं पुणो पुणो कीरमाणे रूवूणहेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति कट्टु सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । तासिमेगवारेणाणयणविही वुच्चदे । तं जहा- रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वस्स जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि, तो सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स केत्तियाओ लभामो त्ति सरिसमवणिय रूवूणहेट्ठिमविरलणाए सामण्ण अवहारकालम्हि भागे हिदे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ सरिसच्छेदं काऊण सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालम्हि [1]पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

अब उपरिम विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहां एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है। इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं। आगे उन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंको एकवार लानेकी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिकमें सदृशका अपनयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकालको भाजित करने पर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं। इनको समान छेद करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

१ प्रतिषु 'भागे हिदे पक्खित्ते ' इति पाठः ।

वग्गमूलभजिदएगरूवं विक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेढिं गुणिदे विदियपुढविदव्वेण विणा सेसछप्पुढविदव्वमागच्छदि। पुणो ताए चेव ऊणविक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे विदियपुढविवदिरित्तछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि। पुणो तम्हि चेव छप्पुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिदसमवग्गमूलेण खंडिय तत्थ एगखंडमवणीए विदिय-तदियपुढविवदिरित्तसेसपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि। पुणो ताए चेव विक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि। पुणो तम्हि चेव पंचपुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिअट्ठमवग्गमूलेण खंडिय एगखंडमवणिदे विदिय तदिय चउत्थपुढविवदिरित्तचत्तारिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि। पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छा-

जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एक संख्याको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विष्कंभसूचीमेंसे घटाकर शेष प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर द्वितीय पृथिवीगत द्रव्यके विना शेष छह पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है। तथा उसी ऊन विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है।

उदाहरण—१ - ४ = $\frac{१}{४}$; २ - $\frac{१}{४}$ = $\frac{७}{४}$; ६५५३६ × $\frac{७}{४}$ = ११४६८८ दूसरी पृथिवीके द्रव्यके विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य। ६५५३६ - $\frac{७}{४}$ = $\frac{२६२१४[illegible]}{७}$ [illegible] विना शेष छह पृथिवियोंका अवहारकाल [illegible]

दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंका [illegible] जो एक खण्ड [illegible]

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड [illegible] आवे उसे पूर्वोक्त उसी छह पृथिवीसम्बन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी [illegible] तीसरी पृथिवीके विना शेष पांच पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती [illegible] पुनः उसी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर (दूसरी और तीसरीके विना) [illegible] पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—[illegible] $\frac{७}{४}$ - $\frac{१}{८}$ = $\frac{१३}{८}$ दूसरी और तीसरीके विना शेष [illegible] पृथिवियोंकी विष्कंभसूची। ६५५३६ × $\frac{१३}{८}$ = $\frac{५२४२८८}{१३}$ दूसरी और [illegible]

विना शेष पांच पृथिवियोंका अवहारकाल।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक [illegible] उसे पूर्वोक्त उसी पांच पृथिवीसम्बन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी [illegible] [illegible] चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभ[illegible]

इट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव चउपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि एगरूव सेढिछट्ठवग्गमूलेण खंडिऊण तत्थ एगखंडमवणिदे विदिय तदिय चउत्थ पंचम पुढविवदिरित्तसेसतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे तिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो सेढि-तदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एग खंड तिण्हं पुढवीणं विक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई आगच्छदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढम सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अनन्तर उस विष्कम्भसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—१ ÷ १६ = $\frac{१}{१६}$; $\frac{१३}{८} - \frac{१}{१६} = \frac{२५}{१६}$ दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीके बिना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची । ६५५३६ ÷ $\frac{२५}{१६} = \frac{१०४८५७६}{२५}$ पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे उन्हीं पूर्वोक्त चार पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कम्भसूची होती है । अनन्तर उस विष्कम्भसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त तीन पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—१ ÷ ३२ = $\frac{१}{३२}$; $\frac{२५}{१६} - \frac{१}{३२} = \frac{४९}{३२}$ पहली, छठी और सातवीं पृथिवीसम्बन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची । ६५५३६ ÷ $\frac{४९}{३२} = \frac{२०९७१५२}{४९}$ पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीमेंसे घटा देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कम्भसूची आती है । अनन्तर उस विष्कम्भसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—१ ÷ ६४ = $\frac{१}{६४}$; $\frac{४९}{३२} - \frac{१}{६४} = \frac{९७}{६४}$ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची । ६५५३६ ÷ $\frac{९७}{६४} = \frac{४१९४३०४}{९७}$ पहली और सातवीं

करिय दिण्णे रूव पडि एद पढमपुढविदव्वपमाण होदि । पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचि-गुणिदसेढिछट्ठमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे पंचमपुढविपक्खेवअवहार-कालो आगच्छदि । तं पुव्विल्लचउण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तपढम-पुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि । पुणो पढम-पुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढितदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे छट्ठपुढवि-पक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । एदं पि पुव्विल्लपंचण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअव

मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—३२७६८ × ४०९६ = १३४२१७७२८;

$$१३४२१७७२८ - \frac{२६२१४४}{१०३} = ०१८८६ \text{ प्र पृ मि द्रव्य}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर पांचवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं ।

उदाहरण—$३२ \times \frac{१०३}{१२८} = \frac{१०३}{४}$; $३२७६८ - \frac{१०३}{४} = \frac{१३१०७२}{१०३}$ पांचवीं पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारशलाकाएं ।

पांचवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त चारों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित पांचवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—३२७६८ × २०४८ = ६७१०८८६४;

$$६७१०८८६४ - \frac{१३१०७२}{१०३} = ०८८१६ \text{ प्र पृ मि द्रव्य}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं ।

उदाहरण—$२४ \times \frac{१०३}{१२८} = \frac{१०३}{२}$; $३२७६८ - \frac{१०३}{२} = \frac{६ ३६}{१०३}$ छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त पांच विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको

अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जदे। तं जहा– छट्ठमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि। पुणो तत्थ एगरूवधरिदछट्ठपुढविदव्वं सत्तमपुढविदव्वेण भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलमागच्छदि। तं विरलेऊण छट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वं पावदि। तं कमेण उवरिमविरलण-छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ठसत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि। पुणो उवरिमअणंतरछट्ठपुढविदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि। तं घेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं पडि छट्ठसत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि। हेट्ठिमविरलणरूवाहिय

इस और भागहाररूप संदृष्टिका अपवर्तन करने पर उस उदाहरणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{२५६}{१९३} \times ३२७६८ = \frac{८३८८६०८}{१९३}$$ प्र पृ मि अ

अथवा प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वह इसप्रकार है– छठवीं पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहां तक सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

अहवा पढमपुढविविक्खंभसूईए सामण्णणेरइयविक्खंभसूईमोवट्टिदे एगरूवस्स-रूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। तस्स एगरूवासंखेज्जदिभागस्स को पडिभागो? किंचूणसेढिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूची पडिभागो। पुणो एदाओ दो रासीओ पुध मज्झे ठविय तेरासियं कायव्वं। तं जहा- सामण्णणेरइयरासिम्हि जदि एगरूव एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो लब्भदि तो सामण्णणेरइयअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि किं लभामो त्ति सरिस-मवणिय सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभाग गुणिद पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि।

-

$$\frac{२८६}{६३} - \frac{२५६}{६३} = \frac{३८६}{७०६},\ ६ \ ' \ ३६ - \frac{३८६}{७२६} = \frac{८३८८६०८}{१०३}\ \text{प्र पृ मि अव}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है।

उदाहरण—$२ - \frac{१९३}{१२८} = \frac{२' ६}{१९३} = १\frac{६३}{१०३}$

शंका—उस एकके असंख्यातवें भागके लानेके लिये प्रतिभाग क्या है?

समाधान—जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची एकके असंख्यातवें भागके लानेके प्रतिभाग है।

उदाहरण—$\frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{६३} = \frac{१९३}{६३}$ प्रतिभाग।

अनन्तर इन दो राशियोंको पृथक्‌रूपसे मध्यमें स्थापित करके त्रैराशिक करना चाहिये। वह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल यदि एक और एकका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सदृश राशि अंश और हरका सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अपवर्तितका अपनयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे एक और एकके असंख्यातवें भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालका भाग आता है।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है, १११ फलराशि है और सामान्य अवहारकाल ३२७६८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२ इच्छाराशि है। इसलिये इच्छाराशि और फलराशिका गुणा करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आ जाता है। यथा—

$$\frac{३२७६८ \times १३१०७२ \times २' ३}{१३१०७२ \times १०३} = \frac{८३८८६०८}{१०३}\ \text{प्र पृ मि अ}$$

अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जदे । तं जहा- छट्ठमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदछट्ठपुढविदव्वं सत्तमपुढविदव्वेण भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलमागच्छदि । तं विरलेऊण छट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वं पावदि । तं कमेण उवरिमविरलण-छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ठ सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । पुणो उवरिमअणंतरछट्ठपुढविदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि । तं घेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तरूवं पडि छट्ठ सत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि हेट्ठिमविरलणरूवाहिय

इस और अवहरण सब्दका अपनयन करने पर उक्त उदाहरणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{५५६}{१९३} \times ३६०३६८ = \frac{८१८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं । वह इसप्रकार है- छठवीं पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है । आगे उस लब्ध राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है । उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है । पुनः उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहां तक सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

मेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिम विरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ पुण हेट्ठिम उवरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमवि रूवं ण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्तियं परिहायदि त्ति वुच्चदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलण रूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि किं परिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूले भागे हिदे एग रूवस्स असंखेज्जभागा आगच्छंति त्ति किंचूणेगरूवं सरिसच्छेदं काऊण तदियवग्ग मूलम्हि अवणिदे सेढितिदियवग्गमूलं रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण खंडिदेगभागो छट्ठ-सत्तमपुढवीमिच्छाइट्ठिदव्वाणं भागहारो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे छट्ठ सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

पुणो सेढिछट्ठमवग्गमूलं विरलिय जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम विरलन समाप्त होवे तब तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । परन्तु यहां अधस्तन और उपरिम विरलन समान हैं इसलिये एक भी विरलनाककी हानि नहीं होती है । फिर भी यहां इतनी हानि होती है आगे उसीको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है- उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एकके असंख्यात बहुभाग प्राप्त होते हैं, इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक भाग लब्ध आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है । उस भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१०२४ १०२४ ६४ बार; यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात्
१ १
१०२४ ÷ १२ = २
६४ १६
१ १
६ ६६ − १५/१६ = २ २

२ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर ४२ है की हानि प्राप्त होती है । इसे उपरिम विरलन ६४ मेंसे घटा देने पर ४२ है आते हैं । इसका जग श्रेणीमें भाग देने पर १० ४+ १ = १ ३२ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक

१ प्रतिषु ... । २ ... ।

तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो तं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमच
पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेण ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण तदियपुढविदव्वमुवरिमविरलण
रूवोवरि ट्ठिदं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं रूवं पडि पा
पुणो एदं उवरिमविरलणट्ठिदतदियपुढविदव्वम्हि दाऊण पुव्वं व समकरणं करिय
हाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि
रूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति प
हेट्ठिमविरलणाए सेढिदसमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अ
तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? तदि
पंचपुढवीणं सत्तमपुढविदव्वस्स सलागाहि सेढिविदियवग्गमूलम्हि ओवट्टिदे ज

तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः उस तीसरी पृ
मिथ्यादृष्टि द्रव्यको नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे अपवर्तित
जो लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उ
विरलनके प्रथम अंकके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको ग्रहण करके
समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी आदि चार पृथि
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त
उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देकर पहलेके समान समीकरण
हानिरूप विरलन अंक ले आना चाहिये । जैसे– उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन वि
मात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी
प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जगश्रेणीके
वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके जगश्रेणीके उसी
वर्गमूलमेंसे अपनयन करने पर तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भ
काल होता है ।

उदाहरण— $\frac{८१९२}{१}$ $\frac{८१९२}{१}$ ८ बार ।

$८१९२ - ७६८० = \frac{१६}{१०}$

$\frac{७६८०}{१}$ $\frac{\frac{५१२}{१}}{१}$

अधस्तन विरलन $\frac{१६}{१०}$ में १ मिला दें
$२\frac{६}{१०}$ होते हैं । यदि इतने स्थान जाक
रिम विरलनमें १ की हानि प्राप्त होत
उपरिम विरलनमात्र ८ स्थान आगे
कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रै
करने पर $\frac{८०}{२६}$ की हानि आ जाती है

उपरिम विरलन ८ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{२६}$ शेष रहते हैं ।

शंका— तृतीयादि पांच पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान— तृतीयादि पांच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी
की गई शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके अपवर्तित करने पर जितना लब्ध

तत्तियमेत्तं। तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। पुणो सेढिबारसवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि। हेट्ठिमपंचपुढविदव्वेण तमोवट्टिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलणपढमरूवोवरि ट्ठिदबिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि। तमुवरिमविरलणोवरि ट्ठिदबिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेयव्वाणि। तेसिं पमाणमेगवारेणाणिज्जदे। तं जहा- रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सेढिबारसवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे

तन्मात्र उक्त भागहारका प्रमाण है। उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

उदाहरण—१६ + ८ + ४ + २ + १ = ३१; १२८ – ३१ = $\frac{१२८}{३१}$;

६५५३६ – $\frac{१२८}{३१}$ = १५८७२ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य।

अनन्तर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उस दूसरी पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके दे देने पर अधस्तन विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर प्रक्षिप्त करके पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप अंक ले आना चाहिये। आगे उन्हीं हानिरूप अंकोंका एकवारमें प्रमाण लाते हैं। जैसे—

उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके उसी जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल प्राप्त होता है।

तिभागेसु एगतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण तदणंतरहेट्ठ ठविय[1] एगरूवतिभागधरिदेगरूवं तत्थ पक्खित्ते एत्थ वि सतिभाग छ रूवाणि हवंति, बिदियरूवपरिहाणी च लब्भदि। पुणो तदणंतररूवोवरि ट्ठिद सोलसरूवाणि घेत्तूण हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। तत्थ वेरूवधरिद-तिण्णि रूवाणि घेत्तूण तदणंतरवेरूवधरिदसोलसरूवेसु पक्खित्तेसु एगूणवीसरूवाणि हवंति। तेण दोण्हं रूवाणमंते पुव्वमवणिदएगरूवतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण ठविय तत्थ हेट्ठिमविरलणाए एगरूवतिभागोवरिट्ठिदएगरूवे पक्खित्ते सतिभाग छ रूवाणि हवंति। सेसाणि तिण्णिरूवधरिदरूवाणि तहा चेव अवचिट्ठंते। तेसिं विरलणरूवमुप्पा

एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको लाकर पहले रक्खे हुए एक त्रिभागसहित छह के अनन्तर स्थापित करके और उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एकको मिला देने पर यहां भी एक त्रिभागसहित छह अंक हो जाते हैं और दूसरे विरलन अंककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उसके (अर्थात् उपरिम विरलनमें तीन अंक दिये गये हैं उसके) अनन्तरके विरलन अंकके ऊपर स्थित सोलह संख्याको ग्रहण करके और अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति समान खंड करके दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं। उनमेंसे दो विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन अंकोंको ग्रहण करके उन्हें उपरिम विरलनमें पहले अर्थात् तीन अंक दिये जा चुके हैं उसके अनन्तरके दो उपरिम विरलनोंके प्रति प्राप्त सोलह संख्यामें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संख्या प्राप्त होती है। तथा पहले निकाले हुए एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच संख्याको उन दो अंकोंके अन्तमें लाकर स्थापित करके उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक संख्याको मिला देने पर एक त्रिभागसहित छह होते हैं। अधस्तन विरलनके शेष तीन अंकोंके प्रति प्राप्त भी अंक उसीप्रकार स्थित रहते हैं।

उदाहरण—
    ३ ३ ३ ३ ३   ३ ३ ३ ३ ३   ३ ३
× १६ १६ १६ १६ १६ * × १६ १६ १६ १६ १६ × १६ १६
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

$५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३}$ $५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३}$ $५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३} = १९$

$\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$

यहां सातवें विरलनके तीन भाग किये और उस पर १६ को बांटा तब $५\frac{१}{३}$ हुआ। अनन्तर अधस्तन विरलनके $\frac{१}{३}$ के प्रति प्राप्त एक जोड़ा तब $६\frac{१}{३}$ हुआ।

तीसरीवार अधस्तन विरलन १ १ १ १ १ १ (३ ३ ३ = ९ शेष रहे)

(जिन अंकों पर × ऐसा चिन्ह है उनका द्रव्य अधस्तन विरलनमें बांटा गया है। जिस पर * ऐसा चिन्ह है उसके तीन भाग करके उसका द्रव्य उन तीनों भागोंमें बांटा है

१ अ आ प्रत्योः 'तदणंतरहेट्ठविय' इति पाठः।

हेट्ठिमविरलणाए तिण्णि रूवाणि ओवट्टिदे एगरूवं तेरहखंडाणि कदे तत्थ णव खंडाणि हवंति। एदं पुव्विल्लतिण्हं रूवाणं पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूवाणि दादव्वाणि। अहवा सव्वपक्खेवरूवाणि एगवारेण आणिज्जंते। तं जहा– रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केत्तियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सव्वाओ पक्खेवसलागाओ लब्भंति। एदाओ उवरिमविरलणम्हि पक्खित्ते इच्छिदअवहारकालो होदि। एवं सव्वत्थ रासिपरिहाणीम्हि आणिऊण समकरणं कायव्वं।

अहवा सामण्णअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि। तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइय-

राशि क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक कम अधस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित करने पर एकके तेरह खंड करने पर उनमेंसे नौ खण्ड लब्ध आते हैं। इसे पूर्वोक्त तीन विरलन अंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ अंक दे देना चाहिये।

उदाहरण— $५\frac{१}{३} - १ = ४\frac{१}{३}$ प्रमाणराशि; १ फलराशि; ३ इच्छाराशि।

$३ \times १ = ३ \div \frac{१३}{३} = \frac{९}{१३}$ तीन विरलनोंके प्रति सान तीन रूपसे दिये हुए ९ अंकोंका अवहारकाल।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं। जैसे— एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक कम अधस्तन विरलन मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं। इनको उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सर्वत्र राशिकी हानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये।

उदाहरण—प्रमाणराशि $४\frac{१}{३}$; फलराशि १; इच्छाराशि १६;

$१६ \times १ = १६$; $१६ \div \frac{१३}{३} = \frac{४८}{१३}$ प्रक्षेप अवहारकाल।

$१६ + \frac{४८}{१३} = १९\frac{९}{१३}$ इच्छित अवहारकाल।

अथवा सामान्य अवहारकालका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि प्राप्त होती है।

हिंतो जदि एगा अवहारकालसलागा लब्भदि तो सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयखंडसलागाणं किं लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाहि सामण्णअवहारकालमोवट्टिय लद्धेण छप्पुढविखंडसलागा गुणिदे पक्खेवअवहारकालो होदि। अहवा लद्धं छप्पडिरासिं काऊण छण्हं पुढवीणं सग सगखंडसलागाहि गुणिदे सग सगपक्खेवअव-

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंकी कितनी खंडशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीसंबंधी खंडशलाकाओंसे इच्छाराशि सामान्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९३, फलराशि १, इच्छाराशि ३२७६८ × २५६;

$$\frac{३२७६८ \times २५६}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र पृ मि अ}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंके गुणित करने पर प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$३२७६८ \div १९३ = \frac{३२७६८}{१९३}$; $\frac{३२७६८}{१९३} \times ६३ = \frac{२०६४३८४}{१९३}$ प्र अ का

अथवा, प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आया उसकी छह प्रतिराशियां करके छह पृथिवियोंकी अपनी अपनी शलाकाओंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

उदाहरण—$\frac{३२७६८}{१९३} \times १ = \frac{३२७६८}{१९३}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times २ = \frac{६५५३६}{१९३}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१०७२}{१९३}$ पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ८ = \frac{२६२१४४}{१९३}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times १६ = \frac{५२४२८८}{१९३}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,

$\frac{३२७६८}{१९३} \times ३२ = \frac{१०४८५७६}{१९३}$ दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा प्र अवहारकाल

१२८, दव्व ५१२¹। विदियादिछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वसमूहो ३२२५६।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स आदेसोघदव्वपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स आदेसोघकालपमाणपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं। एदाओ दव्वकालपरूवणाओ थूलाओ। कुदो ? सोदाराणं णिण्णयाणुप्पायणादो। दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा, असंखेज्जासंखेज्जसरूवाणिमेसिददव्वणिरूवणादो। इदाणिं दव्वकालपरूवणाहिंतो सुहुमखेत्तपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

द्रव्य ५१२ है। दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका समूह ३२२५६ है।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ २० ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये। यहां यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और कालप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा की है वह स्थूल है, क्योंकि आचार्योंको इस प्ररूपणासे निर्णय नहीं हो सकता है। फिर भी द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है, क्योंकि, कालप्ररूपणाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या विशिष्ट द्रव्यका प्ररूपण किया गया है। अब द्रव्य और काल इन दोनों ही प्ररूपणाओंसे सूक्ष्म क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१ [illegible]

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं संखेज्जाणं अण्णोण्णब्भासेण[2] ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा- दव्वकालपमाणसुत्तेहि बिदियादि-छप्पुढविमिच्छाइट्ठिजीवाणं पमाणं परूविदमसंखेज्जमिदि। तं च असंखेज्जं पल्ल-सायरंगुल-जगसेढि-पदर-लोगादिभेदेण अणेयवियप्पमिदि इदं होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो सेढि-जगपदरादिउवरिमसंखाणियत्तावणट्ठमिदमाह 'सेढीए असंखेज्जदिभागो' त्ति। सेढीए असंखेज्जदिभागो वि पल्ल-सायर-सूचिअंगुलादिभेएण अणेयवियप्पो त्ति सूचिअंगुलादि-हेट्ठिमवियप्पपडिसेहट्ठं 'तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ' त्ति वुत्तं। सेढीए असंखेज्जदिभागो त्ति पुरिसलिंगणिद्देसो तिस्से त्ति इत्थीलिंगणिद्देसो, तदो दोण्हं

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीव जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप जो श्रेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका प्रमाण, जगश्रेणीके संख्यात प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण उत्पन्न हो, उतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है— द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रोंद्वारा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण 'असंख्यात है' ऐसा कह आये हैं। परंतु वह असंख्यात पल्य, सागर, अंगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये इनमेंसे यहां यह असंख्यात लिया गया है, यह कुछ नहीं जाना जाता है। अतः जगश्रेणी और जगप्रतर आदि उपरिम संख्याका निराकरण अर्थात् निवारण करनेके लिये 'द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं' यह कहा। जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग भी पल्य, सागर, कल्प और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये सूच्यंगुल आदि अधस्तन विकल्पोंका निषेध करनेके लिये 'उस श्रेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है' यह कहा।

शंका— 'सेढीए असंखेज्जदिभागो' इसमें पुल्लिंग निर्देश है और 'तिस्से' यह

---

१ द्वितीयादिषु सप्तम्यन्तेषु मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः। स चासंख्येयभागः असंख्येया योजनकोट्यः। स. सि. १, ८. [illegible] गो. जी. १५३. [illegible] सेसासु [illegible] पंचसं. २, १३.

२ प्रतिषु 'अब्भासो' इति पाठः। किंतु मूलप्रतौ 'अब्भासेण' इति लभ्यते।

सवग्ग कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्ठीणं दव्वपमाणं होदि त्ति कधं जाणिज्जदे ? आइरियपरंपरागय अविरुद्धोवदेसादो जाणिज्जदि ।

बारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं च[1] णिरएसु ।
[2]एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासिं अवहारकालपरूवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे ।

एदासिं पुढवीणं दव्वमाहप्पजाणावणट्ठं किंचि अप्पबहुत्तपरूवणं कस्सामो । तं जहा– विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो तारं उप्पाइज्जदे । बारस-

दृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आचार्य परंपरासे आये हुए अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा—

नारकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है और देवोंमें सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकालोंके प्ररूपण करनेवाले इस गाथा सूत्रसे जाना जाता है । अथवा, परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि जगश्रेणीके प्रथमादि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य आता है ।

विशेषार्थ— एक वर्गात्मक राशिके प्रथम आदि जितने वर्गमूल होंगे उनमेंसे जिस वर्गमूलका उक्त वर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आयगा वह, जिस वर्गमूलका भाग दिया उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी, उतना ही होगा । उदाहरणार्थ ६५५३६ में उसके चौथे वर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ लब्ध आते हैं। अब यदि प्रथमादि चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होगी। ६५५३६ का पहला वर्गमूल २५६ दूसरा १६, तीसरा ४ और चौथा २ है। अब इनके परस्पर गुणा करनेसे २५६ × १६ × ४ × २ = ३२७६८ हो आते हैं। पर नरकोंमें जो अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा राशियां बतलाई हैं उनके निकालनेमें कल्पित वर्गमूल लिये गये हैं, इसलिये ही यहां यह नियम नहीं घटाया जा सकता है।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके महत्वका ज्ञान करानेके लिये किंचित् अल्पबहुत्वप्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है— उनमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ प्रतिषु ' च ' इति पाठः । इयं गाथा पूर्वमपि ६६ कमाङ्कागता ।
२ तत्तो (देवेसु) एगार-णव-सग-पण चउणियमूलभाजिदा सेढी । गो. जी. १६२

वग्गमूलेण एक्कारसवग्गमूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । तस्स गुणगारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं दुगुणिदे[1] बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । अहवा गुणगारद्धच्छेदणयमत्तागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदव्वादो बिदियपुढविदव्वमुप्पाइदं तहा सेसचउपुढविदव्वेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि बिदियपुढविदव्वमुप्पादेदव्वं । एवमुप्पादिदे पण्णारस भंगा लद्धा भवंति ।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं— जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारके (बारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो लब्ध आया उसके) जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका विरलन करके और उनको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। यहां जिसप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार चौथी आदि शेष चार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये। इसप्रकार उत्पन्न करने पर पन्द्रह भंग प्राप्त होते हैं।

विशेषार्थ—चौथी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलसे बारहवें वर्गमूलतक चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे चौथी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पांचवीं पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके पांचवें वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। गुणकार संबंधी अर्धच्छेदोंका विरलनादि करने समय

१ क प्रतौ 'दुगुणिदे' इति पाठः ।

संपहि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स उप्पादण-विहाणं वुच्चदे– पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिबारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाइट्ठि-दव्वम्हि भागे हिदे बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदण-यमेत्ते पढमपुढविदव्वस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। सेढिबारसवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणाओ पढमपुढविविक्खंभसूचीअद्धच्छेदणयसहिदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि। एदे तिण्णि भंगा पुव्विल्लपण्णारसभंगेसु पक्खित्ते बिदियपुढवीए अट्ठारस भंगा हवंति। एवं सव्वासिं पुढवीणं पत्तेगं पत्तेगं अट्ठारस भंगा उप्पाएदव्वा। सव्वभंगसमासो सदं छत्तीसुत्तरं[1]।

भी जहां जितने वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि लाई गई हो उसी राशिके अर्धच्छेदोंका विरलन करके और उस विरलित राशिको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये। अथवा, इसी क्रमसे अर्धच्छेद लाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये। इसप्रकार करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न करनेकी विधि बतलाते हैं— पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

उदाहरण—$४ \times \frac{१०३}{१२८} = \frac{१०३}{३२}$; $९८८१६ - \frac{१०३}{३२} = १६३८४$ द्वि. पृ. मि. द्र.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार भज्यमान राशि प्रथम पृथिवीके द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

अथवा जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीके अर्धच्छेद मिला देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है। इन तीन भंगोंको पूर्वोक्त पन्द्रह भंगोंमें मिला देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं। इसीप्रकार सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन सब भंगोंका जोड़ एकसौ छत्तीस होता है।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य जिसप्रकार

---

१ प्रतिषु 'सेदं च तीसुत्तरं' इति पाठः।

आता है, इसका थोडासा विवेचन मूलमें ही किया है। और यहां यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेमें कुल १२६ भंग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भंगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भंगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर शेष १०८ भंग रहते हैं। इसलिये आगे उन्हीं १०८ भंगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूलसे, तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा दशवें वर्गमूलसे, चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें वर्गमूलसे, पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूलसे, छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूलसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूलसे पहले नरकके मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पृथक् पृथक् गुणित करने पर क्रमशः द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे पृथक् पृथक् दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो जो लब्ध आवे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा क्रमशः तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवेंसे लेकर बारहवें तक चार वर्गमूलोंका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर बारहवें तक छह वर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर बारहवें तक नौ वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर बारहवें तक दश वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आवे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर क्रमशः दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर दशवें तक सात वर्गमूलोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर दशवें तक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवें और आठवें वर्गमूलका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर आठवें तक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य लाते समय चौथे, पांचवे और छठे वर्गमूलका तथा सातवीं

पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर छठे तक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पांचवीं पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरे वर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी, पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथीकी अपेक्षा आठवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवींकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पांचवीं, छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय पांचवींकी अपेक्षा सातवें और आठवें वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यको तीसरे वर्गमूलसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहां ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार कह आये हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करने पर भी नीचेका पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। अथवा अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाते समय जहां जो गुणकार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार ये कुल भंग १०८ हुए इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भंग मिला देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निकालनेके १२६ भंग होते हैं।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ॥ २१ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो विदियादिपुढविगुणपडिवण्णाणं परूवणा ओघमिदि वुत्ता दव्वट्ठियणयसिस्साणुग्गहट्ठं। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा एगपुढविगुणपडिवण्णाणं सत्तसमाणत्तं च दुप्पडिसेज्झा पसज्जदे। तं गुणपडिवण्णजीवविसेसं पुव्वाइरियाणमविरुद्धवक्खाणेण आइरियपरंपरागदेण वत्तइस्सामो। तं जहा– पुव्वमुप्पाइदसामण्णणेरइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पढम

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २१ ॥

विशेषार्थ—इस सूत्रमें 'दव्वपमाणेण केवडिया' अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं' यह पृच्छावाक्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसंख्या २ की टीकामें जो उक्त पृच्छावाक्यका फल स्वकर्तृत्वनिराकरणपूर्वक आप्तकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी यहां आकांक्षा रह जाती है। तथापि सूत्र सदैव संक्षेपार्थ हुआ करते हैं और उनमें यह सामान्य नियम है कि 'सूत्रेष्वदृष्ट पद सूत्रान्तरादनुवर्तनीय सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी अन्य सूत्रोंसे अनुवृत्ति सदैव कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छा पदकी अनुवृत्ति हो जाती है। आगे भी जहां कहीं उक्त पद न पाया जाय वहां इसी नियमका अधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, ये राशियां पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति समान हैं, इसलिये द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा रखनेवाले शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपणाके समान है, ऐसा कहा। पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या एकसी हो जायगी जिसके निषेधके दुष्कर होनेका प्रसंग आ जाता है। अब गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके उस विशेषको आचार्य परंपरासे आये हुए पूर्वाचार्योंके अविरुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल जो पहले उत्पन्न करके बतला आये हैं, उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी नारक सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंयत

पुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे[1] सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति अवहारकाला परिवाडीए उप्पाएदव्वा। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमसुवरि खंडिदादीणं ओघभंगो।

भागाभागं दव्वपमाणविसयणिण्णयजणणट्ठं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा होंति। सेसस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सिद्धा होंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा देवा होंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा णेरइया होंति। सेसेगभागो मणुसा हवंति। पुणो णेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढवि

सम्यग्दृष्टि नारकियोंका अवहारकाल होता है। उस पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोंका अवहारकाल होता है। उस पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। पहले नरकके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। उस दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटीक्रमसे उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन अवहारकालोंके द्वारा पल्योपमके ऊपर खण्डित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है।

अब द्रव्यप्रमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करानेके लिये भागाभागको बतलाते हैं— संपूर्ण जीवराशिके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यंच होते हैं। शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं। शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं। पुनः नारक जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव

१ प्रतिषु [illegible] असंखे– इति पाठः।

मिच्छाइट्ठी होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढवि-मिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदिय चउत्थ पंचम-छट्ठ सत्तमपुढवीणं अप्पप्पणो भागभागो णायव्वो । पुणो सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सत्तमाए पुढवीए असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसासणसम्माइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तत्थतणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तत्थतणसासणसम्माइट्ठिणो हवंति । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपडिवण्णाणं भागाभागो णायव्वो । एवं भागाभागो समत्तो ।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे । सव्वत्थोवा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सूचिविक्खंभ

होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार तीसरी, चौथी, पांचवीं छठी और सातवीं पृथिवीके जीवराशिका स्वस्थानमें भागाभाग कर लेना चाहिये। पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सातवीं पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागाभाग करना चाहिये।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व। उनमेंसे पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची सबसे स्तोक है। सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार

१ प्रतिषु 'खंडेसु' इति पाठः । २ प्रतिषु 'असंखेज्जेसु' इति पाठः ।

। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को
भागो ? सगविक्खंभसूचीवग्गो घणंगुलपढमवग्गमूलं वा । सेढी असंखेज्जगुणा ।
गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई ।
मसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
। सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो । एवं चेव
ाए पुढवीए । विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव दव्वम-
ज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग
ारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि ।
पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो सेढिएक्कारसवग्गमूलं वा । सेढी असंखेज्जगुणा । को
ारो ? सेढिबारसवग्गमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । लोगो

है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूची
ाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात
वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा,
गुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
णी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे
न्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची
ार है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा
गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सामान्य नारक सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य
ादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके
न जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें स्वस्थान अल्पबहुत्व है । दूसरी पृथिवीमें
ादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण
रकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग
ार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा जगश्रेणीका
ख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
अपने अवहारकालका (बारहवें वर्गमूलका) वर्ग अथवा जगश्रेणीका ग्यारहवां वर्गमूल
ाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या
जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है । जगश्रेणीसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है ।
ार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार

१ प्रतेः पदम । (अ) पदम (आ) पदम (क) इति पाठः ।

असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो । तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति एवं चेव सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण भाणिदव्वं ।

परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वं । पलिदोवमादो उवरि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? पलिदोवमगुणिदसूइअंगुलबिदियवग्गमूलं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । बिदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? बारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि

क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने अवहारकालको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका, उससे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल, इसप्रकार अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपम तक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कम्भसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । इस विष्कम्भसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण वत्तव्वं ।

सत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलि-याए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तदो बिदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं जाव सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो त्ति णेदव्वो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्ज-गुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तमिदि । तदो पलि-दोवममसंखेज्जगुणं । तदो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । तदो बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

विशेष है कि अपना अपना अवहारकाल जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं- पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । सम्यग्मिथ्या दृष्टियोंके अवहारकालसे पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या दृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार सातवीं पृथिवीतक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्य ग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर प्रतिलोम पद्धतिसे जब पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तब तक ले जाना चाहिये । पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । उक्त विष्कंभसूचीसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूचीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? तदियवग्गमूलं। पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? चउत्थ-पंचम-छट्ठवग्गाणि अण्णोण्णगुणिदाणि। अहवा तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिचउत्थवग्गमूलाणि। को पडिभागो? छट्ठमवग्गमूलं। चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिसत्तम-अट्ठमवग्गमूलाणि। अहवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? अट्ठमवग्गमूलं। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिणवम-दसमवग्गमूलाणि। अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? दसमवग्गमूलं। बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णसमब्भत्थेक्कारस-बारसवग्गमूलाणि। अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? बारसवग्गमूलं। सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है। छठवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पांचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके चौथे, पांचवें और छठे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है। पांचवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात सातवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके नौवें और दशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है। अथवा जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है। तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तत्प्रमाण गुणकार है। अथवा जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारकियोंका मिथ्यादृष्टि

१ प्रतिषु 'अट्ठ' इति पाठः।

गुणगारो ? बारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? घणंगुलबिदियवग्गमूलं । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागभूदपक्खेवअवहारकालमेत्तेण । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वस्स असंखेज्जभागभूदबिदियादिछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं णिरयगई समत्ता ।

अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारकियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य अवहारकालके असंख्यातवें भागरूप प्रक्षेप अवहारकालरूप विशेषसे अधिक है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके असंख्यातवें भागरूप दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है ।

विशेषार्थ — सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय ऊपर गुणस्थानप्रतिपन्न असंयतसम्यग्दृष्टि आदि सामान्य नारकियोंका अल्पबहुत्व नहीं कहा गया है । यदि इनके

१ प्रतिषु सूची असंख अगुणगारो इति पाठः ।

२ [illegible] सत्तमपुढवीनारया पुव्विल्लदव्वविसेसेण, [illegible] असंखेज्जगुणा । [illegible] पुढवीए नारया पुव्विल्लदव्वविसेसेण [illegible] असंखेज्जगुणा । [illegible] पुव्विनारएहिंतो [illegible] पुढवीए नारया पुव्विल्लदव्व [illegible] असंखेज्जगुणा [illegible] असंखेज्जगुणा । [illegible] पुढवीनारएहिंतो [illegible] पुव्विल्लदव्वविसेसेणं असंखेज्जगुणा [illegible] असंखेज्जगुणा । [illegible] पुढवीए नारया पुव्विल्लदव्वविसेसेणं असंखेज्जगुणा, [illegible] असंखेज्जगुणा । [illegible]

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अवहार[1] परूविय णिरओघकालपरूवणा-सुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं। एत्थ मिच्छाइट्ठिणिद्देसो किमट्ठं ण कदो? ण, अणंतरादीद-सुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टमाणत्तादो।

अध सिया असंखेज्जासंखेज्जासु ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीसु अदिक्कंतासु तिरिक्ख-गईए पंचिंदियतिरिक्खाणं वोच्छेदो हवदि, पंचिंदियतिरिक्खट्ठिदीए उवरि तत्थ अवट्ठाणाभावादो त्ति? ण एस दोसो, एइंदिय-विगलिंदिएहिंतो देव-णेरइय-मणुस्सेहिंतो च पंचिंदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणजीवसंभवादो। आयविरहिय-सव्वयरासीए[2] वोच्छेदो हवदि। एसा पुण सव्वया आयसहिया चेदि ण वोच्छिज्जदे। सम्मामिच्छाइट्ठिरासीव किं ण भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदिकालादो अंतरकालस्स बहुत्तुवलंभादो। ण च एत्थ पंचिंदियतिरिक्खेसु भवट्ठिदिकालादो विरहकालस्स बहुत्तणमत्थि, अंतरकालस्स अणा-

इस सूत्रका भी दोनों प्रकारसे अवहारका प्ररूपण करके सामान्य नारकियोंके काल-प्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १६)।

शंका—इस सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश क्यों नहीं किया?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अनन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे 'मिथ्यादृष्टि' इस पदकी अनुवृत्ति चली आ रही है।

शंका—कदाचित् असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके निकल जाने पर तिर्यंचगतिके पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी स्थितिके ऊपर तिर्यंचगतिमें उनका अवस्थान नहीं रह सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमेंसे तथा देव, नारकी और मनुष्योंमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संभव हैं। जो राशि व्ययसहित और आयरहित होता है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है। परंतु यह पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशि तो व्यय और आय इन दोनों सहित है, इसलिये इसका विच्छेद नहीं होता है।

शंका—जिसप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार यह राशि भी क्यों नहीं होती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाल बड़ा है, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका कदाचित् विच्छेद हो जाता है। परन्तु यहां पंचेन्द्रिय तिर्यंचके भवस्थितिके कालसे विरहकाल बड़ा नहीं है, क्योंकि, आगममें पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका अन्तर

---

१ अ प्रतौ 'अवहार' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सव्वयरासीण' इति पाठः।

मुहुत्तुवएसादो। भवट्ठिदिकालस्स सादिरेयतिण्णिपलिदोवमोवदेसादो। 'णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा' त्ति सुत्तादो वा विरहाभावो णव्वदे। एवं कालपरूवणा गदा।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव-अवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धेण देवअवहारकालेण कधं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो साहिज्जदे? ण एस दोसो, अणाइणिहणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुववत्तीदो। आगमो असिद्धत्तमिदि चे ण, वक्खाणादो तदवगमसिद्धीदो। संपहि वेसदछप्पण्णंगुलवग्गं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण वेसदछप्पण्णमेत्तसूचिअंगुलेसु भागे हिदेसु तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा पुव्विल्ल आवलियाए असंखेज्जदिभागं वग्गिऊण पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसमेत्तपदरंगुलेसु भागे

कालका अन्तर्मुहूर्तमात्र उपदेश पाया जाता है, और भवस्थिति कालका कुछ अधिक तीन पल्योपमका उपदेश दिया है। इसलिये पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशिका विच्छेद नहीं होता है। अथवा, 'नाना जीवोंकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते हैं' इस सूत्रसे भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका विरहाभाव जाना जाता है। इसप्रकार काल प्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

शंका — देवोंका प्रमाण लानेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह असिद्ध है, इसलिये असिद्ध देव अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे साधा जाता है?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि अनादिनिधन आगम असिद्ध नहीं हो सकता है।

शंका — आगमका ज्ञान नहीं होता, इसलिये आगमको असिद्धत्व है?

समाधान — नहीं, क्योंकि व्याख्यानसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है।

अब बतलाते हैं कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। अथवा आवलीके असंख्यातवें भागसे दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसका वर्ग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। अथवा पहले स्थापित आवलीके असंख्यातवें भागका वर्ग करके जो प्रमाण आवे उससे पैंसठ हजार पांचसौ,

१ [illegible]

हिदेसु पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि[१]। अहवा पण्णट्ठिसहस्स-पंच-सय-छत्तीसरूवोवट्टिदआवलियाए असंखेज्जदिभागस्स वग्गेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि।

एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो। तं जहा- पदरंगुले असंखेज्ज-खंडे कए एय-खंडं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। खंडिदं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। भाजिदं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। विरलिदं गदं। तमवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणेण पदरंगुलादो अवहिरिज्जदि सलागाहिंतो एगरूवमवणिज्जदि। एवं पुणो पुणो अवणिज्जमाणे सलागाओ पदरंगुलं च जुगवं णिट्ठिदं[२]। तत्थ आदीए वा अंते वा मज्झे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्ख

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलोंके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है। अथवा पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीससे आवलीके असंख्यातवें भागके वर्गको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है। अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ। आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ। आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ। उस आवलीके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके प्रमाणको प्रतरांगुलमेंसे घटा देना चाहिये। पश्चात् घटाया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमेंसे अवहारकालके प्रमाणको और शलाकाराशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि और प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं। यहां पर आदिमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार जितना प्रमाण घटाया उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार

१ [illegible]

२ [illegible]

मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। पमाणं गदं। केण कारणेण? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि। सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलपढमवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि लब्भंति। एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि आगच्छंति। कारणं गदं। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि। अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमवहरिय लद्धेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए लद्धेण आवलियं गुणिय तदो पदरावलियं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं ति णिरंतरं सव्ववग्गाणं अण्णोण्णब्भत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अवहृतका कथन समाप्त हुआ। उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण होता है। इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ।

शंका—पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूच्यंगुल किस कारणसे है?

समाधान—सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर एक सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुल लब्ध आते हैं। इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर असंख्यात सूच्यंगुल लब्ध आते हैं। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है। अथवा, आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है। इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यन्त सम्पूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुल आते हैं और वही पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा– घणंगुलपढमवग्गमूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि। पुणो सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं हेट्ठिमवियप्पो गदो।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ बेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स छेदणए कदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एसो मज्झिमवियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्ठिम उवरिमवग्गसमभवादो। एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो ...

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है। पुनः सूच्यंगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर प्रतरांगुलका प्रमाण आता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार। उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। वास्तवमें यह मध्यम विकल्प है और इसीकी अपेक्षा करके ही अधस्तन और उपरिम सब संभव है, इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकल्प कहा जाता है।

विशेषार्थ — विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब वह अधस्तन विकल्प कहलाता है और जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते हैं। इस नियमके अनुसार प्रकृतमें भाजक आवलीका असंख्यातवां भाग और भाज्य प्रतरांगुल, इन दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर जब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

त्ति वुच्चदे। संपहि अणुवयारेण उवरिमवियप्पं वत्तइस्सामो। तं जहा– आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदपदरंगुलेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं चिंतिय वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण[1] पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि

लाया जायगा, तब इस प्रक्रियाको अधस्तन विकल्प कहेंगे, और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर उक्त अवहारकाल लाया जायगा, तब उसे उपरिम विकल्प कहेंगे। आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको भाजित करके पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवहारकालके लानेकी जो प्रक्रिया है वही वास्तवमें अधस्तन या उपरिम विकल्प नहीं कही जा सकती है, क्योंकि, अधस्तन और उपरिम विकल्पके निश्चित करनेके लिये यहां वही आधार है। अतः वास्तवमें वह मध्यम विकल्प ही है, उपरिम नहीं।

अब अनुपचारसे उपरिम विकल्पको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है। यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका विचार कर कथन करना चाहिये। इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है। वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

1 प्रतिषु 'असंखेज्जासंखेज्जदिभागेण ' इति पाठः ।

भाजिद विरलिद अवहिद पमाण-कारण-णिरुत्ति वियप्पा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिपरूवणाए परूविदा तहा परूवेयव्वा।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरिक्खोघं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोघगुणपडिवण्णपमाणपरूवणसुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं। तिरिक्खेसु पंचिंदिए मोत्तूण अण्णत्थ गुणपडिवण्णजीवाण समभावादो। एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता।

संपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खपमाणपरूवणं कुणदि—

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिंदियगहणं एइंदिय-विगलिंदियवुदासट्ठं। तिरिक्खणिद्देसो देव णेरइय मणुसवुदासट्ठो। पज्जत्तणिद्देसो अपज्जत्तवुदासट्ठो। मिच्छाइट्ठिणिद्देसेण सेसगुणट्ठाण

द्रव्यका प्रमाण आता है। खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पका प्ररूपण जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर आये हैं उसीप्रकार यहां पर उन सबका प्ररूपण करना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यंचोंके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥२८॥

जिसप्रकार सामान्य तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं उसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंचोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव संभव नहीं हैं। इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका उदय पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पदका ग्रहण किया है। देव, नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यंच पदका निर्देश किया है। अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पदका निर्देश किया है। सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

---

१ ×× मणुस्सा तिरियदियिणया ×× पंचिदियपुण्णतेरिक्खा । गो. जी. १५४

वुदासो कदो हवदि । दव्वपमाणेणेत्ति णिद्देसेण खेत्त-कालवुदासो कदो हवदि । केवडिया इदि पुच्छासुत्तणिद्देसेण छदुमत्थाण कत्तारत्तमवणिदं हवदि । असंखेज्जा इदि णिद्देसेण संखेज्जाणंताणं वुदासो कदो । किमिदि दव्वपमाणमेव पढमं परूविज्जदि ? ण एस दोसो, अदीवथूलत्तादो दव्वपरूवणा पढमं परूविज्जदे । कधमेदिस्से थूलत्तणं ? असंखेज्जमेत्त-विसेसिदजीवोवलंभणणिमित्तादो । खेत्त कालेहिंतो दव्वं थोवेत्ति वा पुव्वं परूविज्जदे । दव्वथोवत्तणं कध जाणिज्जदे ? 'बहुदि जीव पोग्गल-कालागासा अणंतगुणा' एदम्हादो गाहासुत्तादो णव्वदे । सेसपरूवणा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणपरूवणसुत्तस्स उत्ता तहा वत्तव्वा ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३० ॥

पदके निर्देशसे शेष गुणस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कालप्रमाणका निराकरण हो जाता है । 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप सूत्रके निर्देशसे छद्मस्थकर्तृत्वका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात हैं' इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

शंका — पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्ररूपण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्ररूपणा अतीव स्थूल है, इसलिये उसका पहले प्ररूपण किया जाता है ।

शंका — यह द्रव्यप्ररूपणा स्थूल कैसे है ?

समाधान — क्योंकि, यह द्रव्यप्ररूपणा केवल असंख्यात विशेषणसे युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है, इसलिये स्थूल है ।

अथवा क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है, इसलिये उक्त दोनों प्ररूपणाओंके पहले द्रव्यप्ररूपणाका कथन किया जाता है ।

शंका — क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'जीवोंकी अपेक्षा आगे पुद्गल काल और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं' इस गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काल और क्षेत्रसे द्रव्य स्तोक है ।

शेष प्ररूपणा जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रमें कह आये हैं उसप्रकार कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३० ॥

१ प्रतिषु ... [illegible]

पचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ जाणिय भाणियव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठि दव्वपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं, विसेसाभावादो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिंदियणिद्देसो सेसिंदियपडिसेहट्ठो । तिरिक्खणिद्देसो सेसगदिपडिसेहट्ठो । जोणिणीणिद्देसो पुरिस-णवुंसयलिंगपडिसेहट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणपडिवण्णपडिसेहट्ठो ।

है । अथवा, तद्योग्य संख्यातका वर्ग करके और उस वर्गित राशिका प्रतरांगुलमें भाग देने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके खंडित आदिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इसप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं, उसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पचेन्द्रिय पदका निर्देश शेष इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यंच पदका निर्देश शेष गतियोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुरुषलिंग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश

1 असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ । अनु. सू. १४१ पृ. १७९

केवडिया इदि पुच्छाणिद्देसो सुत्तस्स पमाणपडिवायणट्ठो। असंखेज्जा इदि णिद्देसो संखेज्जाणंताणं पडिसेहफलो। सेसं पुव्वं व परूवेदव्वं।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुव्वसुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टावेयव्वं, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो। सेसं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिकालपमाणसुत्तम्हि वुत्तविहाणेण वत्तव्वं।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं कीरदे। तं जहा– तिण्णिसयसहस्स-चउवीससहस्स-कोडिरूवेहि देवअवहारकालं गुणिदे तत्तो संखेज्जगुणो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा छज्जोयणसदंगुलं काऊण वग्गिदे इगवीससकोडाकोडि-सयाणि तेत्तीसकोडाकोडीओ छत्तीसकोडिसयसहस्साणि चउसट्ठिकोडिसहस्साणि पदरंगुलाणि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा इगवीसकोडा-

शेष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके निवारण करनेके लिये किया है। 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप पदका निर्देश सूत्रकी प्रमाणताके प्रतिपादन करनेके लिये किया है। 'असंख्यात' इस पदके निर्देश करनेका फल संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध करना है। शेष व्याख्यान पहलेके समान करना चाहिये।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३४ ॥

यहां पहलेके सूत्रसे मिथ्यादृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति कर लेना चाहिये, अन्यथा सूत्रार्थ नहीं बन सकता है। शेष कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणका कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके अनुसार करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे संख्यातगुणे अवहारकालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३५ ॥

आगे इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं। वह इसप्रकार है– तीन लाख चौबीस हजार करोड़ संख्यासे देवोंके अवहारकालके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे भी संख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल है। अथवा, छहसौ योजनके अंगुल करके वर्ग करने पर इक्कीससौ कोड़ाकोड़ी, तेतीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख और चौंसठ कोड़ी हजार प्रतरांगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

१ कस्सयजोयणकदिहिदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं। गो. जी. १५५

वीससद-तेवीसकोडाकोडीहि छत्तीसकोडिलक्ख चउसट्ठिकोडिसहस्सरूवेहि पदरंगुलमोवट्टिऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदं केसिंचि आइरियवक्खाणं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिजोणिणीअवहारकालपडिबद्धं ण घडदे। कुदो? पुरदो वाणवेंतरदेवाणं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तअवहारकालो होदि त्ति वक्खाणदंसणादो। इदं वक्खाणं असच्चं वाणवेंतरअवहारकालपमाणवक्खाणं सच्चमिदि कधं जाणिज्जदे? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयंतो, किंतु दोण्हं वक्खाणाणं मज्झे एक्केण वक्खाणेण असच्चेण होदव्वं। अहवा दोण्णि वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाण पइज्जा। कधमेदं जाणिज्जदे? 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा,

है। अथवा इक्कीससौ कोड़ाकोड़ी, तेईस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ा लाख, और चौसठ करोड़ी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विशेषार्थ—एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके चार हाथ और एक हाथके चौबीस अंगुल होते हैं, इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर १ × ४ × २००० × ४ × २४ = ७६८००० प्रमाण अंगुल आते हैं। ७६८००० को ६०० से गुणा कर देने पर ६०० योजनके ४६,०८,००००० प्रमाण अंगुल हो जाते हैं। ४६०८००००० संख्याका वर्ग कर लेने पर २१,२३,३६,६४,०००००००००० प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं। इसका भाग जगप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालसे संबन्ध रखनेवाला यह कितने ही आचार्योंका व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यन्तर देवोंका अवहारकाल होता है, ऐसा आगे व्याख्यान देखा जाता है।

शंका—यह पूर्वोक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य है और वाणव्यन्तर देवोंके अवहारकालके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीसंबन्धी अवहारकालका व्याख्यान असत्य ही है और व्यन्तर देवोंके अवहारकालका व्याख्यान सत्य ही है, ऐसा कुछ हमारा एकान्त मत नहीं है, किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे कोई एक व्याख्यान असत्य होना चाहिये। अथवा उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं यह हमारी प्रतिज्ञा है।

शंका—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं अथवा उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे एक

१ [illegible]

तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ ' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो णाणिज्जदे। ण च सुत्त
प्पमाणं काऊण वक्खाणं पमाणमिदि वोत्तुं सक्किज्जदे, अइप्पसंगादो। ण च एक्केक्क
देवस्स एक्का चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियाणं भूओदेवीणमागमम्मि
वलमादो देवेहिंतो देवीओ बत्तीसगुणाओ त्ति वक्खाणदंसणादो च। तम्हा ज
वाणवेंतरदेवअवहारकालो तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिच्छओ अत्थि
जोणिणीअवहारकालमुप्पायणट्ठं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गम्हि बत्तीसोत्तरसदपहुडि जि
दिट्ठमागो गुणगारो पवेसेयव्वो। अध जोणिणीअवहारकालो छज्जोयणसदअंगुलवग्गम
त्ति णिण्णओ अत्थि तो वाणवेंतरअवहारकालमुप्पायणट्ठं छज्जोयणसदअंगुलवग्गो तेत्ती
पहुडि जिणदिट्ठभावसंखेज्जरूवेहि ओवट्टेयव्वो। अहवा उभयत्थ वि पदरंगुलस्स तप्प
ओग्गो गुणगारो दादव्वो।

एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो। तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गे पदरंगुल

व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— ' पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं और उनकी देवियां वाणव्यन्तर देवोंसे संख्यातगुणी हैं' इस खुद्दाबंधके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना जाता है। सूत्रको अप्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है, अन्यथा, अतिप्रसंग दोष आ जायगा। यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है, यह युक्ति दी जाय सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भवनवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आगममें उल्लेख देखा पाया जाता है। और 'देवोंसे देवियां बत्तीसगुणीं होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देखा जाता है। इसलिये वाणव्यन्तरदेवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है, यदि ऐसा निश्चय है तो पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनसौ योजनके अंगुलोंके वर्गमें जो राशि जिनदेवने देखी हो तदनुसार बत्तीस अधिक सौ आदि रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये। अथवा, ' पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है ' यदि ऐसा निश्चय है तो वाणव्यतर देवोंका अवहारकाल उत्पन्न करनेके लिये तेतीस आदि जो संख्या जिने द्रदेवने देखी हो उससे छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गको अपवर्तित करना चाहिये। अथवा, वाणव्यन्तर और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती इन दोनोंके अवहारकालोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रतरांगुलके उसके योग्य गुणकार देना चाहिये।

अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र खंड करने पर उनमेंसे एक खंड प्रमाण

१ प्रतिषु ' भणादियाणं ' इति पाठः।

२ इगिपुरिसे बत्तीसं देवी। गो. जी. १७

३ प्रतिषु ' तिण्णिजोयण ' इति पाठः।

संखेज्जदिभागमवणिदे एग सलेयखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहार
होदि। खंडिदं गदं। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे
पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। भाजिदं गदं। पदरंगुल
संखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दि
तत्थ एगखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। विरलिदं गदं
पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिंदियतिरिक्ख
जोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणमवणिय सलागादो एगरूवमवणेयव्वं। एवं पुणो
पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ। तत्थ
आदीए अंते मज्झे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहार-
कालो होदि। अवहिदं गदं। तस्स पमाणं पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो
संखेज्जाणि पदरंगुलाणि। तं जहा— पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुल-
मागच्छदि। पदरंगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे दोण्णि पदरंगुलाणि
आगच्छंति। पदरंगुलस्स तिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे तिण्णि पदरंगुलाणि

पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसप्रकार खंडितका वर्णन
समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर
पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसप्रकार भाजितका
वर्णन समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके
प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर
वहां एक खंडमात्र पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता
है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूप
स्थापित करके प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल घटा देना चाहिये। एकवार घटाया इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक कम कर
देना चाहिये। इसप्रकार प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि
योंका अवहारकाल और शलाकाराशिमेंसे एक पुनः पुनः घटाते जाने पर प्रतरांगुलका उपरिम
वर्ग और शलाकाराशि एकसाथ समाप्त हो जाती है। यहां आदिमें अन्तमें अथवा मध्यमें
एकवार जितना प्रमाण घटाया जाय उतना पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अव
हारकाल होता है। इसप्रकार अवहृतका वर्णन समाप्त हुआ। उस पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती
मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है जो संख्यात
प्रतरांगुलप्रमाण है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलका प्रतरांगुलके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरांगुल आता है। प्रतरांगुलके दूसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। प्रतरांगुलके तीसरे भागका प्रतरांगुलके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। इसीप्रकार क्रमसे आगे आकर

आगच्छदि। एवं कमेण गंतूण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे संखेज्जाणि पदरंगुलाणि आगच्छंति। पमाण-कारणाणि गदाणि। तस्स का णिरुत्ती? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पदरंगुलाणि हवंति। णिरुत्ती गदा।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्ठिमपदरंगुल पेक्खिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठि अवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो। ण च थोवरासिमवहरिय तत्तो बहुवरासी उप्पादेदुं सक्किज्जदे, विरोहा[1]। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं जहा- पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठि

प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संख्यात प्रतरांगुल लब्ध आते हैं। इसप्रकार प्रमाण और कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

शंका— इसकी क्या निरुक्ति है?

समाधान—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर लब्ध जो प्रमाण आवे उतने प्रतरांगुल योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं। इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसीके अर्थात् प्रतरांगुलके गुणित कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, भज्यमान राशिकी अपेक्षा अधस्तन प्रतरांगुलको देखते हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बहुत बड़ा है। कुछ स्तोक राशिको अपहृत करके उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलसे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच

---

1 प्रतिषु 'विरोहायभावा' इति पाठः।

अवहारकालो आगच्छदि। अट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलं गुणेऊण तेण पदरंगुलघणस्स पढमवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तं जहा– घणंगुलेण घणाघणंगुले भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलुवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। हेट्ठिमवियप्पो गदो।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो। तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिण्णयजणणट्ठं समासिदो[1]। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी

योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं– प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है– घनांगुलसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है। उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं– प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये बतलाया गया है। प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। इसीप्रकार

१ प्रतौ 'समासिदो' इति पाठः।

वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। एवमुवरि जाणिऊण णेदव्वं। पदरंगुलउवरिमवग्गस्स घणंगुलउवरिमवग्गस्स घणाघणंगुलस्स च असंखेज्जदिभाएण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो। एदेण अवहारकालेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि। तेणेव जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३६ ॥

दव्वट्ठियणयमस्सिऊण ओघपरूवणा हवदि। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघपरूवणाए पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तोघपरूवणाए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णपरूवणा समाणा ण हवदि, तिवेदरासीदो इत्थिवेदरासिस्स समाणत्ताणुव-

प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है। पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। उस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उस भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। इसीप्रकार ऊपर जानकर ले जाना चाहिये। प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साध लेना चाहिये। इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची आती है। और उसी अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीव तिर्यंच-सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३६ ॥

द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान है। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तिर्यंच सामान्य प्ररूपणा अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त सामान्य प्ररूपणाके समान पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा नहीं होती है, क्योंकि, तीन वेदवाली राशिसे एक स्त्रीवेदी जीवराशिकी समानता नहीं बन

मणुसगदीदो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसाहिओ किं विसेसहीणो त्ति णत्थि संपहियकाले उवएसो।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि। किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा घेत्तव्वा। पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्ता वि पज्जत्ता चेव, णोकम्मणिव्वत्तिअवेक्खाभावादो।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालम्मावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि। अवसेसा खंडिदादि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं व णेदव्वा।

या संख्यातगुणा हीन है, या असंख्यातगुणा हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं। किंतु यहां पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये। तथा जिसके पर्याप्त नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही है, क्योंकि यहां पर नोकर्मकी निर्वृत्तिकी अपेक्षा नहीं है।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलमात्र देवोंके अवहारकालमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाल होता है। अवशिष्ट खंडित आदि विकल्पोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके कथनके समान करना चाहिए।

संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसाहिओ विसेसहीणो वा त्ति णत्थि संपहियकाले उवएसो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा घेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्ता वि पज्जत्ता चेव, णोकम्मणिव्वत्तिमवेक्खाभावादो ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंडिदादि-वियप्पा पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं व भाणिदव्वा ।

है, या संख्यातगुणी हीन है, या असंख्यातगुणी हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन है, इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सूत्र सुगम हैं । किंतु यहां पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिनके पर्याप्त नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही है, क्योंकि यहां पर नोकर्मकी निर्वृत्तिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलमात्र देवोंके अवहारकालमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अवशिष्ट खंडित आदि विकल्पोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिके कथनके समान करना चाहिये ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतखंडे कदे तत्थ बहुखंडा एइंदिय विगलिंदिया होंति । सेस संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खलद्धिअपज्जत्ता होंति । सेस संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेस संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसेगखंडा संजदासंजदा होंति ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे भण्णमाणे तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो धुवरासिस्स बहुत्तुवलंभादो । सासणादीणं सत्थाणमोघं । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे । सव्वत्थोवो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— तिर्यंच राशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है । शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । शेष एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले संयतासंयत हैं ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने पर तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है । अब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे थोड़ा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कम्भसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा,

अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडि-भागो? सगअवहारकालवग्गो। अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सग-अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीण पि। णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीण हि। णवरि जम्हि सूचि-अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जसूचिअंगुलमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तसत्थाणप्पाबहुगं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णाणं सत्थाणं तिरिक्खगुण-पडिवण्णसत्थाणभंगो।

परत्थाणे पयदं। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति

जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है। वे कितने हैं? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं। विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। पर इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये। इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व होता है। इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात सूच्यंगुलमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तिर्यंच गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे

१ [illegible]

पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जा समया। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पुव्वभणिदो। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण विसेसो? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जा समया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि-

जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कम्भसूचीको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करने पर जितना लब्ध आवे तन्मात्र अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच [illegible]दृष्टियोंका द्रव्य

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स सुहुमत्तुवलंभादो असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि विसेससंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तं वत्तव्वं। सेसपरूवणा पुव्वं व परूवेयव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा-वियप्पाणं सव्वेसिं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पदीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं। असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी सूक्ष्मता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके समान करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव राशि है। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम) असंख्यात करोड़ योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक (अर्थात् एकाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे संख्यात योजन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये असंख्यात करोड़ योजन पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए उस श्रेणीका आयाम इस पदमें उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता ऐसा संबन्ध

[illegible]
[illegible]
[illegible]

दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिदसेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो । खेत्त-कालपमाणवुदासट्ठं दव्वग्गहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियग्गहणं । संखेज्जाणंताणं वुदासट्ठं असंखेज्जग्गहणं । जडथूलपरूवणं पडुच्च सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि —

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया गया है । 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध कर दिया है । 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है । क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका प्रकटन करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है । संख्यात और अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है । अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्रकाशन करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्रकाशन करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं —

---

१ [illegible]

२ [illegible]

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तागमादो असंखेज्जासंखेज्जदिमाम... णि उस्सप्पिणिविसेसमखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तणं वत्तव्वं। सेसपरूवणा ... च वत्तव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जदिजोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा... पत्ताए सव्वस्सि गहणे संते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से ... ढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पदीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं। असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों ... र उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण ... संख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे ... णकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके ... मान करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव ... ते हैं। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम) असंख्यात करोड़ योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके ... तीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक ... अर्थात् एकाधिक तरह गुणकारगत राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा ... श्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण इसप्रकार सामान्य कथन करनेसे संख्यात ... जन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके ... लिये असंख्यात करोड़ योजन पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए उस श्रेणीका आयाम ... पदका उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका पंक्तिका आयाम ... ऐसा संबन्ध

१ ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिद सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कओ । खेत्त-कालपमाणउदासट्ठं दव्वग्गहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियग्गहणं । संखेज्जाणंताण उदासट्ठं असंखेज्जग्गहणं । अइथूलपरूवणं परूविय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया गया है। 'मनुष्योंमें' इस प्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध कर दिया है। 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है। क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है। सूत्रकी प्रमाणताका प्रकाशन करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है। संख्यात और अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है। अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ [illegible]

२ [illegible]

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तावलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओसप्पिणि-उस्सप्पिणिविसेसणावरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तण वत्तव्वं। सेसपरूवणा पुव्वं व परूवेयव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाद्जोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा-वियप्पाणं सव्वेसिं गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पदीए आयामो दीहत्तणमिदि सबंधेयव्वं। असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेषण संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके समान करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव राशि है। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम) असंख्यात करोड योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक (अर्थात् एकाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४[illegible] ॥

सूत्रमें जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण इसप्रकार सामान्य वचन कहनेसे संख्यात योजन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये असंख्यात करोड योजन पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए 'उस श्रेणीका आयाम' इस पदसे उस श्रेणीके असंख्यातवें भागकी पंक्तिका आयाम अर्थात् लम्बाई ऐसा संबन्ध

१ मनुष्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण । पदरम संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिद सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो । खेत्त कालपमाणवुदासट्ठं दव्वग्गहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियग्गहणं । संखेज्जाणंताण वुदासट्ठं असंखेज्जग्गहणं । अइथूलपरूवणं पच्चिय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया गया है । 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध कर दिया है । 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है । क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका प्ररूपण करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है । संख्यात और अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है । अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१ [illegible]

२ [illegible]

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तावलंभादो असंखेज्जासंखेज्जादिओसप्पिणि-उस्सप्पिणिविसेससंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तं वत्तव्वं। सेसपरूवणा व च परूवेयव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो संखेज्जादिजोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि ढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसव्व पप्पाण सव्वमि गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से ढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पदीए आयामो दीहत्तणमिदि मवधेयव्वं। असंखेज्जादि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों र उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण संख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे की (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके न करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव ते हैं। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका याम) असंख्यात करोड़ योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके य वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक र्थात् रूपाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा श्रेणी अपहृत होती है ॥ ४ ॥

सूत्रमें जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण इसप्रकार सामान्य वचन कहनेसे संख्यात न आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है अतः उसका प्रतिषेध करनेके असंख्यात करोड़ योजन पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए उस श्रेणीका आयाम पद्स उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता ऐसा संबन्ध

दव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो। मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिद-सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ। मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो। खेत्त-कालपमाणणुदासट्ठं दव्वगहणं। सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियगहणं। संखेज्जाणंताण-मुदासट्ठं असंखेज्जगहणं। अइथूलपरूवणं परूविय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया गया है। 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध कर दिया है। 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है। क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है। सूत्रकी प्रमाणताका प्ररूपण करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है। संख्यात और अनन्तका निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है। अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ [illegible] ' इति पाठः ।

२ [illegible] । [illegible] १४२ पृ. १४०

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तावलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओस [प्पि]णि उस्सप्पिणिविसेसमंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तण वत्तव्वं। सेसपरूवणा [पुव्वं] व वत्तव्वा।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो [अ]संखेज्जादिजोयणकोडीओ। मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि [से]ढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा[वि]यप्पाण सव्वेसि गहणे मपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं। तिस्से [से]ढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पतीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं। असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों [औ]र उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण [अ]संख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे [इस]की (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये। शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके [सम]ान करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव [हो]ते हैं। उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका [आ]याम) असंख्यात करोड योजन है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके [तृत]ीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक [अ]थात् एकाधिक तरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा [जग]श्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे संख्यात [योज]न आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अत उसका प्रतिषेध करनेके [लि]ये असंख्यात करोड योजन पदका ग्रहण किया। सूत्रमें आये हुए 'उस श्रेणीका आयाम' [इस] पदसे उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता ऐसा संबन्ध

१ मनुष्याणा मन ॥ मिथ्यादृष्ट्य असंख्येयभागप्रमिता ॥ स कालस्वयमाण अतस्त्वा पञ्जन [...] । स मि १ ८ स । श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिता ॥ [...] । गो जी १५७
[...]सेणिपदं मणुसा सूची रूवाहिया अवहरति । तदियमूलाहयाहिं अंगुलमूलप्पमाणेहिं । पंचस २, २१

जोयणकोडीओ त्ति वयणे पदरंगुल घणंगुलादीण गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठं अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति' वयणं । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं गहेयव्वं । तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलतदियवग्गमूलस्स गहणं । कुदो ? सूचि-अंगुलसहचारादो अणुवट्टणादो वा । सूचिअंगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेव पढमवग्गमूले गुणिदे मणुसमिच्छाइट्ठीण अवहारकालो होदि । अहवा सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण तदिय-वग्गमूलं गुणिय सूचिअंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि । तस्स पमाणं सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । तं जहा– सूचिअंगुलपढम-वग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेव लब्भदि । विदियवग्गमूलेण सूचि-अंगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लब्भंति । विदिय तदियवग्गमूलमण्णोण्णब्भत्थं करिय सूचिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि लब्भंति त्ति ण संदेहो । तस्स णिरुत्ती तदियवग्गमूल-

करना चाहिये । 'असंख्यात करोड़ योजन' इसप्रकारका वचन रहने पर प्रतरांगुल और घनांगुल आदिका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित' इसप्रकारका वचन दिया है । यहां पर 'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । 'तृतीय वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । क्योंकि, यहां पर सूच्यंगुलका साहचर्य संबन्ध है । अथवा, ऊपरसे उसकी अनुवृत्ति है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इस अवहारकालके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतको जानकर उनका कथन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्त होता है । सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी संख्या हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ [illegible]

बिदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि। तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो। बिदियतदियवग्गमूलं अण्णोण्णगुणं करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि। अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, सूचिअंगुलपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। सूचिअंगुलबिदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि। तं जहा- सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि। बिदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। घणाघणे वत्तइस्सामो। बिदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलबिदियवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुलबिदियवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि। तं जहा- घणंगुलबिदियवग्गमूलेण घणाघणंगुल-

अवहारकालकी निरुक्ति इसप्रकार है— सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प। उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आया उससे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। जैसे, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है। पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। जैसे, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते घणाघणंगुलस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि। सूचिअंगुल-घणंगुलपढमवग्गमूल-घणाघणंगुलबिदियवग्गमूलाणं असंखेज्जदिभागेण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो। एदेण भागहारेण जगसेढिम्हि भागे हिदे रूवाहिओ मणुसरासी आगच्छदि। तं कधं जाणिज्जदि त्ति वुत्ते 'मणुसगदीए मणुसेहि रूव पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि सुत्तावयवादो। एत्थ रासी दुविहो भवदि, ओजं जुम्मं चेदि। ओजं दुविहं, तेजोजं कलिओजं चेदि। तं जहा- जम्हि रासिम्हि चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णि हवंति सो तेजोजं। चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि एगं ठादि तं कलिओजं। जुम्मं दुविहं, कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि। तं जहा- चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि रासिम्हि चत्तारि हवंति तं कदजुम्मं। जम्हि रासिम्हि दोण्णि हवंति तं बादरजुम्मं। जम्हा मणुस्सरासी तेजोजं तम्हा लद्धम्मि कदजुम्मम्हि एगरूवमवणेयव्वं। अवसेसिद-

हारकाल आता है। उस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उस भज्यमान राशि घनाघनांगुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है। सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साध लेना चाहिये।

उस भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है। यह कैसे जाना जाता है, ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिमें सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकाराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है, अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिको जगश्रेणीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाकाराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये। इसप्रकार करनेसे शलाकाराशिके साथ जगश्रेणी समाप्त हो जाती है'। इस सूत्रावयवके सूत्रसे जाना जाता है कि उस भागहारसे जगश्रेणीके अपहृत करने पर एक अधिक मनुष्यराशि लब्ध आता है।

राशि दो प्रकारकी है, ओजराशि और युग्मराशि। उनमेंसे ओजराशि दो प्रकारकी है, तेजोज और कलिओज। आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिको चारसे भाजित करने पर तीन शेष रहते हैं वह तेजोजराशि है। जिस राशिको चारसे भाजित करने पर एक शेष रहता है वह कलिओजराशि है। युग्मराशि दो प्रकारकी है, कृतयुग्म और बादरयुग्म। आगे इन्हीं युग्मराशियोंका स्पष्टीकरण करते हैं— जिस राशिको चारसे भाजित करने पर चार शेष रहते हैं, अर्थात् जिसमें चारका पूरा भाग जाता है वह कृतयुग्म राशि है। तथा चारसे भाजित करने पर जिस राशिमें दो शेष रहते हैं वह बादरयुग्मराशि है। प्रकृतमें पर्याप्त मनुष्यराशि तेजोजरूप है, इसलिये जगश्रेणीमें सूच्यंगुलके प्रथम

मणुसरासिपरूवणादो जुत्त खुद्दाबंधम्हि भागलद्धादो एगरूवम्म अवणयण, जीवट्ठाणम्हि मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरूवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगु अवणयणरासिणा होदव्वमिदि । तं कधं जाणिज्जदे ? 'मणुसमिच्छाइट्ठीहि रू वएहि सेढी अवहिरिज्जदि' त्ति सुत्तम्हि रूवा इदि बहुवयणणिद्देसादो । अहवा वएहिं त्ति बहुव्रीहिसमासेण लक्खणविसेसेण कयपुव्वणिवाएण अवणिद बहुत्तोवलद्धी होज्ज । रूव पक्खित्तएहि त्ति एगवयणमवि कहिं दिस्सदे तो वि बहूण जीवाण जादिदुवारेण एयत्तदंसणादो । का एत्थ जाई णाम ? चेदण परिणामो । तदो भागलद्धादो रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुम

और तृतीय वर्गमूलके गुणनफलरूप भागहारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध कृतयुग्मरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये।

खुद्दाबंधमें मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशि होनेसे यहां पर सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप जगश्रेणीमें भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसमेंसे एक संख्याका कम करना युक्त यहां जीवस्थानमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लानेके लिये उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपनयनराशि होन

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'रूपाधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगश्रेणी होती है' इस सूत्रमें 'रूवा' यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है, जिससे जाना यहां पर उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे ए तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपनयनराशि है। अथवा, 'रूवपक्खित्तएहिं' इस प विशेषसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुव्रीहि समास होनेके कारण रूप वचनसे रहित होनेके कारण भी उससे बहुत्वकी उपलब्धि हो जाती है। कहीं पक्खित्तएहि' इसप्रकार एकवचन भी कहीं देखा जाता है, तो भी कोई दोष नहीं आता है, बहुत जीवोंका जातिद्वारा एकत्व देखनेमें आता है।

शंका—यहां पर जातिसे क्या अर्थ अभिप्रेत है ?

समाधान—यहां पर चेतना आदि समान परिणाम जातिसे अभिप्रेत है।

इसलिये उक्त भागहारका जगश्रेणीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उस अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मि

-----

१ 'जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम्' १. २. ५८ पाणिनि । एकोऽप्यर्थो वा भवति । वृत्ति

रासी होदि त्ति सिद्धं । एदस्स खंडिदादओ विदियपुढविमिच्छाइट्ठीणं जहा वुत्ता तहा वत्तव्वा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । सव्वत्थ रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणमवणेयव्वं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा [१] ॥ ४३ ॥

एत्थ पहुडिसद्दो आदिसद्दत्थे वट्टदे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा एदेसु गुणट्ठाणेसु मणुसरासी संखेज्जा चेव होदि त्ति जं वुत्तं होदि । संखेज्जा इदि सामण्णेण वुत्ते बावण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हवंति । तदो दुगुणा सम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सत्तसयकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । संजदा-

जीवराशिका प्रमाण होता है, यह सिद्ध हो गया।

विशेषार्थ—सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है। अतएव लब्धमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण होता है। परंतु प्रकृतमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लाना है, अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये तब मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशिका प्रमाण होगा।

जिसप्रकार दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिका कथन कर आये हैं उसी प्रकार इस मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये। इतना विशेष है, कि यहां पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण होता है। तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण लानेके लिये सर्वत्र एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द आदि शब्दके अर्थमें आया है, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिसे प्रारंभ करके संयतासंयत गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात ही होती है यह इस सूत्रका अभिप्राय है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात है ऐसा सामान्यरूपसे कथन करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य बावन करोड़ हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूने हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सातसौ करोड़ प्रमाण हैं। संयतासंयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.
२ प्रतिषु [illegible] तदो दुगुणा [illegible] हवंति [illegible] ।

संखेज्जदिभागो संखेज्जाणि छट्ठवग्गाणि ।¹ तं जहा- छट्ठमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे छट्ठवग्गो आगच्छदि । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे संखेज्जा छट्ठवग्गा आगच्छंति । कारणं गदं । णिरुत्ती वियप्पो य चिंतिय वत्तव्वो । एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो—

तेरस कोडी देसे बावण्णं सासणे मुणेयव्वा ।
मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ७० ॥

एदीए गाहाए वुत्तगुणपडिवण्णरासीओ एयत्त करिय पमत्तादि-उवरिम-संजदरासिं च तत्थेव पक्खिविय अवणिदे मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासी होदि ।

पंचमवग्गं चदुहि रूवेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तअवहारकालो होदि । तेण सत्तम वग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तदुवेदरासी आगच्छदि । मणुसपज्जत्ता नायालवग्गस्स घण

पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण द्विरूपके सातवें वर्गका संख्यातवां भाग है जो संख्यात छठवें वर्गप्रमाण है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— द्विरूपके छठवें वर्गका उसीके सातवें वर्गमें भाग देने पर छठवां वर्ग आता है। पांचवें वर्गसे सातवें वर्गके भाजित करने पर संख्यात छठवें वर्ग आते हैं। इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ। निरुक्ति और विकल्पका विचार कर कथन करना चाहिये। इस मनुष्य पर्याप्त राशिमेंसे—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य होते हैं ॥ ७० ॥

इस गाथाके द्वारा कही गई गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको एकत्रित करके और प्रमत्त संयत आदि नौ संयतराशिको उसी पूर्वोक्त एकत्र की हुई राशिमें मिलाकर जो जोड़ हो उसके घटा देने पर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है।

द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करने पर दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है। उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त दो वेदवाले जीवोंकी राशि आती है।

विशेषार्थ—किसी भी विवक्षित वर्गात्मक राशिको चारसे गुणित करके लब्ध उस वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्ग राशिके घनका चौथा भाग लब्ध आता है। तदनुसार प्रकृतमें द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करके उसका सातवीं वर्गराशिमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशिका चौथा भाग लब्ध आता है। स्त्रीवेदियोंको छोड़कर द्विवेदी मनुष्योंका यही प्रमाण है।

¹ प्रतिषु 'छट्ठवग्ग' इति पाठः ।

² [illegible] पंचक्कं [illegible] ॥ १९८००००४०६२८५९१०८४१९८१८५९८०५९८४ [illegible] १९०

एचियमेत्तपदरंगुलेण सम्माएज्ज । मणुसखेत्तपदरंगुलं आणिज्जमाणं—

सत्त णव सुण्ण पंच छक्क णव चदु एक्क च पच सुण्ण च ।
जंबूदीवस्सेद गणिदफलं हादि णादव्वा ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० एदम्हि तेरसंगुलं च किंचूणअद्धंगुलं च पक्खिवि यव्व । किंचूणपमाण—

सत्तसहस्सट्ठासीदेहि खंडिदे पंचवण्णाम्हाणि ।
अद्धंगुलस्स हीणं करेह अद्धगुलं णियद ॥ ७३ ॥

१ ७०३२/१४१७६ एदाणि जंबूदीवपदरजोयणाणि माणुसखेत्तजंबूदीवसलागाहि वं सलागूणाहि गुणिय पदरंगुलाणि कायव्वाणि ।

आठ, खर अर्थात् छह, द्रव्य अर्थात् छह, छयालीस, आठ, शून्य, अचल अर्थात् सात अर्थात् नौ, च द्र अर्थात् एक, और ऋतु अर्थात् छह,— ॥ ७१ ॥

इतने प्रतरांगुलोंके द्वारा समा जाना चाहिये। मनुष्यक्षेत्रमें प्रतरांगुलोंके लाने

सात, नौ, शून्य, पांच, छह, नौ, चार, एक, पांच, शून्य, अर्थात् सात अ करोड छप्पन लाख चौरानवे हजार एक सौ पचास योजन, यह जम्बूद्वीपका गणितफल क्षेत्रफल है, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० इस सख्यामें तेरह अंगुल और कुछ कम आधा अंगुल मनुष्य क्षेत्रके प्रतरांगुल ले आना चाहिये । आधे अंगुलमें कुछ कमका प्रमाण—

अर्धांगुलके पचपन खडोंको अर्थात् ५५/२ को सात हजार अठासीसे खंडित भाजित करने पर जो लब्ध आवे उतना हीन अर्धांगुल निश्चित करना चाहिये ॥ ७३ ॥

यथा $\frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$

उदाहरण— $\frac{१}{२} - \left(\frac{१}{२} \text{ का } \frac{५५}{७०८८}\right) = \frac{१}{२} - \frac{५५}{१४१७६} = \frac{७०३३}{१४१७६}$ हीन अर्धां

जम्बूद्वीपसम्बन्धी इन प्रतर योजनोंको लवण और कालोद समुद्रकी शलाक न्यून मनुष्यक्षेत्रकी जम्बूद्वीप प्रमाणसे की गई शलाकाओंके द्वारा गुणित करके पुन प्रत कर लेना चाहिये ।

१ जम्बूद्वीपस्य गणितपदं वक्ष्ये च तत्त्वत ॥ ३५ ॥ शतानि सप्तकोटीनां नवति कोट्य लक्षाणि षट्पंचाशत् चतुःसहस्राणि नवतिश्च ॥ ३६ ॥ सार्द्ध शतं योजनानां पादानमाशयावल्प् । धनूंषि सार्द्ध करदय तथा ॥ ३७ ॥ अंकतो वि या ७९०५६९४१५० को १ धनु १५१५ कर २ अ १२ लो १५ पत्र १६५

एदम्हि सुत्तम्हि मणुसेसु जं चउण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणं वुत्तं तं चेव पमाणं वत्तव्वं, संगहिदतिवेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्हं विसेसाभावादो।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि त्ति ओघं ॥ ४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति ण वुच्चदे।

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया? कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं मणुसपज्जत्तसुत्तवक्खाणेण तुल्लं। णवरि पंचमवग्गस्स तिभागे पंचमवग्गम्हि चेव पक्खित्ते मणुसिणीणमवहारकालो होदि। तेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसिणीणं दव्वमागच्छदि। लद्धादो सगतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुसिणीमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि।

सामान्य मनुष्य राशिका प्रमाण कहते समय सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका जो प्रमाण कह आये हैं, इस सूत्रका व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, संगृहीत त्रिवेदत्वकी अपेक्षा और पर्याप्तपनेकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४७ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है।

मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे मध्यकी संख्याप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी संख्याके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके तुल्य है। इतनी विशेषता है कि पांचवें वर्गके त्रिभागको पांचवें वर्गमें प्रक्षिप्त कर देने पर मनुष्यनियोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होता है। उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्यनियोंके द्रव्यका प्रमाण आता है। इसप्रकार जो मनुष्यनियोंकी संख्या लब्ध आवे उसमेंसे अपने तेरह गुणस्थानके प्रमाणके घटा देने पर मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है।

१ सा पण सग दुग छक्क सग पण इगि पंच णवा णव। तिय पण दुग अड छप्पण अट्ठ दुग दुगई। इगि ... चउ नव पण य मणुसिणिसासिस परिमाण। ९९४२११२२८८५६९८२५१११५१८३९११२७०४ (?) वृं १९० पर पज्जत्तमणुस्सा तिचउत्थो माणुसीण परिमाण ॥ गो. जी. १५९.

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४१ ॥

मणुस्सोघे वुत्तसासणादीणं संखेज्जदिभागो सासणादीणं गुणपडिवण्णाणं पमाणं मणुसिणीसु हवदि । कुदो ? अप्पसत्थवेदोदएण सह पउरं सम्मद्दंसणलंभाभावादो । त कधं जाणिज्जदे ? 'सव्वत्थोवा णउंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा ।' इदि अप्पाबहुअसुत्तादो कारणस्स थोवत्तं जाणिज्जदे । तदो सासणसम्माइट्ठिआदीण वि थोवत्तं सिद्धं

विशेषार्थ — किसी भी विवक्षित वर्गमें उससे उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्गके घनका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । तदनुसार पांचवें वर्गमें उसीका त्रिभाग ओड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनरूप मनुष्य राशिका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है। यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण है। इसमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यादृष्टि स्त्रियोंका प्रमाण होता है, यह जो सूत्रमें कहा है इससे मत न होता है कि उपर्युक्त प्रमाण स्त्रियोंका भाववेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यस्त्रियोंका होता तो सूत्रमें 'इसमेंसे सासादनादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका प्रमाण होता है । परंतु गोम्मटसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपेक्षा बतलाया है'।

मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४१ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी जो संख्या कही गई है उसके संख्यातवें भाग मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण है क्योंकि अप्रशस्त वेदके उदयके साथ प्रचुर जीवोंको सम्यग्दर्शनका लाभ नहीं होता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । और पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि उनसे असंख्यातगुणे हैं । इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे स्त्रीवेदियोंके अल्प होनेका कारण स्तोकपना जाना जाता है । इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टि आदिकके भी स्तोकपना सिद्ध हो

[illegible]

भवदि। एत्थ पुण संभवो णत्थि इदि। परिहारो उच्चदे। सुत्तेण विणा सेढी असंखेज्ज-जोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढिपमाण-मिदि जाणावणट्ठमिदं वयणं। परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढीए पमाण-मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपउत्तीदो। अहवा सेढीए असंखेज्जदि-भागो वि सेढी वुच्चदे, अवयविणामस्स अवयवे पउत्तिदंसणादो। जहा गामेगदेसे दड्ढे गामो दड्ढो इदि। अहवा एवं संबंधो कायव्वो। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो दीहत्तणं असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति। अपज्जत्तएहिं रूवपक्खित्तएहिं रूवा पक्खित्तएहि रूव पक्खित्तएहिं ति तिसु वि पाढेसु रूवाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो। पुणो लद्धम्हि रूवाहियमणुसपज्जत्तरासिम्हि अवणिदे मणुसअपज्जत्ता होंति। अंगुलवग्गमूलं च तदियवग्गमूलगुणिदं च अंगुलवग्गमूलतदियवग्गमूलगुणिदं तेण सलागभूदेण सेढी अवहिरिज्जदि त्ति उत्तं होदि।

है। व्यभिचारकी संभावना होने पर ही विशेषण सार्थक होता है। परन्तु यहां पर तो उसकी संभावना ही नहीं है?

समाधान—आगे उक्त शंकाका परिहार करते हैं। सूत्रके बिना 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणी असंख्यात करोड़ योजनप्रमाण है' यह नहीं जाना जाता है, अतः जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका प्रमाण असंख्यात करोड़ योजन है इसका ज्ञान करानेके लिये उक्त वचन दिया है।

शंका—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है यह परिकर्मसे जाना जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रके बलसे परिकर्मकी प्रवृत्ति हुई है।

अथवा, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागको भी श्रेणी कहते हैं, क्योंकि, अवयवीके नामकी अवयवमें प्रवृत्ति देखी जाती है। जैसे, ग्रामके एक भागके दग्ध होने पर ग्राम जल गया ऐसा कहा जाता है। अथवा, इसप्रकारका संबन्ध कर लेना चाहिये कि उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अर्थात् लंबाई असंख्यात करोड़ योजन है। 'अपज्जत्तएहिं रूवपक्खित्तएहिं रूवा पक्खित्तएहि रूव पक्खित्तएहिं' इन तीनों ही स्थानोंमें किसी भी वचनसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रक्षेप करना चाहिये। पुनः लब्धमेंसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिके घटा देने पर लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण होता है। सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे तत्प्रमाण शलाकारूप उस राशिसे जगश्रेणी अपहृत होती है यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

विशेषार्थ—सामान्य मनुष्यराशिके प्रमाणमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण शेष रहता है। सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उससे जगश्रेणीके भाजित करके लब्ध

पालवग्गो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। केत्तिय-मेत्ताणि? विदियवग्गमूलमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। एवं मणुसअपज्जत्ताणं पि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। सासणादीणं सत्थाणं णत्थि। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं पि णत्थि सत्थाणप्पाबहुगं।

परत्थाणे पयदं– सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदासंजदा संखेज्जगुणा। सासणसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा। तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंजदसम्माइट्ठिणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। मणुसपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। एवं जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति। तदो मिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को

गुणकार है जो प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है? सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है। मनुष्यमिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। इसीप्रकार मनुष्य लब्ध्यपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है। उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यनियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका आश्रय लेकर प्रकृत विषयका वर्णन करते हैं– चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोक हैं। पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक संख्यातगुणे हैं। सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण प्रतिभाग है। उन्हीं मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। मनुष्य मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। मनुष्य पर्याप्तकोंमें चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे थोड़े हैं। पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। इसीप्रकार उत्तरोत्तर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अल्पबहुत्व समझना चाहिये। असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं चेव मणुसिणीसु वि परत्थाणं वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं– सव्वत्थोवा अजोगिकेवलिणो । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि जाव लोगो त्ति ताव जाणिऊण वत्तव्वं । मणुसिणीगुणपडिवण्णाणं पमाणमेत्तियमिदि णावहारिदं, तम्हा सव्वपरत्थाणप्पाबहुए तेसिं परूवणा ण कदा ।

एवं मणुसगई समत्ता ।

देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ५३ ॥

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार मनुष्यनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है– अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोक हैं । चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत मनुष्य सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत मनुष्य अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य अपर्याप्तकोंका अवहारकाल मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंसे असंख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तकोंका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर लोक तक जानकर अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनियोंका प्रमाण इतना है, यह निश्चित नहीं है, इसलिये सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की ।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ ।

देवगतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५३ ॥

एत्थ देवगइग्गहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि। देवेसु त्ति वयणेण तत्थट्ठिददव्वपडिसेहो कदो हवदि। मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो हवदि। दव्वपमाणेणेत्ति वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि। केवडिया इदि वयणेण सुत्तस्स पमाणत्तं सूचिदं हवदि। असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती कदा हवदि।

किमसंखेज्जं णाम? जो रासी एगेगरूवे अवणिज्जमाणे णिट्ठादि सो असंखेज्जो। जो पुण ण समप्पइ सो रासी अणंतो। जदि एवं तो वयसहिदअक्खयअद्धपोग्गलपरियट्टकालो वि असंखेज्जो जायदे? होदु णाम। कधं पुणो तस्स अद्धपोग्गलपरियट्टस्स अणंतववएसो? इदि चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो। तं जहा— अणंतस्स केवलणाणस्स विसयत्तादो अद्धपोग्गलपरियट्टकालो वि अणंतो होदि। केवलणाणविसयत्तं पडि विसेसाभावा सव्वसंखाणमणंतत्तणं जायदे? चे ण, ओहिणाणविसयवदिरित्तसंखाणे अणंतविसयत्तणेण उवयारपवुत्तीदो। अहवा जं संखाणं पंचिंदियविसओ तं संखेज्जं

सूत्रमें देवगति पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'देवोंमें' ऐसा वचन देनेसे देवलोकमें स्थित अन्य द्रव्योंका प्रतिषेध हो जाता है। 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे अन्य गुणस्थानोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इस वचनसे क्षेत्र आदि प्रमाणोंका प्रतिषेध हो जाता है। 'कितने हैं' इस वचनसे सूत्रकी प्रमाणता सूचित हो जाती है। 'असंख्यात हैं' इस वचनसे संख्यात और अनन्त संख्याकी निवृत्ति हो जाती है।

शंका— असंख्यात किसे कहते हैं, अर्थात् अनन्तसे असंख्यातमें क्या भेद है?

समाधान— एक एक संख्याके घटाते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह असंख्यात है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है।

शंका— यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशको प्राप्त होनेवाला अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी असंख्यातरूप हो जायगा?

समाधान— हो जाओ।

शंका— तो फिर उस अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको अनन्त संज्ञा कैसे दी गई है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त संज्ञा दी गई है वह उपचारनिमित्तक है। आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— अनन्तरूप केवलज्ञानका विषय होनेसे अर्धपुद्गल परिवर्तनकाल भी अनन्त है ऐसा कहा जाता है।

शंका— केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशेषता न होनेसे सभी संख्याओंको अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो संख्याएं अवधिज्ञानका विषय हो सकती हैं उनके अतिरिक्त ऊपरकी संख्याएं केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो सकती हैं, अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तत्वके उपचारकी प्रवृत्ति हो जाती है। अथवा जो संख्या पांचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है। उसके ऊपर जो संख्या अवधिज्ञानका विषय

संखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवममुवरि मादादओ पुव्वं व वत्तव्वा।

भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

असंखेज्जासंखेज्जाहिं[2] ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो चेव।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तेसिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठसुत्तस्स विवरणं कुणदे। असंखेज्जासंखेज्जमणेयवियप्पं। तत्थ

आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उस देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंके द्वारा पल्योपमके ऊपर खण्डित आदिकका कथन पहलेके समान कहना चाहिये।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण किया जाता है—

---

1 असंखेज्जा असुरकुमारा जाव असंखेज्जा थणियकुमारा। अनु. द्वा. सू. १४१ पृ. १७९.
प्रतिषु 'असंखेज्जासंखेज्जाहि' इति पाठः।

2 घणअंगुलपढमपदं ×× सेढिगुणं ××। भवण ×× देवाण होदि परिमाणं। गो. जी. १६१.

असंखेज्जाओ सेढीओ इदि वुत्ते जगपदरमाइं काऊण उवरिम असंखेज्जासंखेज्जवियप्प पडिसेहट्ठं। पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो इदि कट्टु तं णिण्णयट्ठं सेढीणं विक्खंभसूई उत्ता। तिस्से पमाणं वुच्चदे। अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदं भवणवासिय मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई हवदि त्ति सम्बंधेयव्वं। घणंगुलपढमवग्गमूलमिदि जं वुत्तं होदि। अंगुलवग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिद्देसो कधं घडदे? पढमाविहत्तीए अट्ठे एसो तइयाणिद्देसो दट्ठव्वो। अण्णत्थ ण एवं दिस्सदीदि चे ण, 'वेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागेण' इच्चादिसु सुत्तेसुवलंभा। अहवा णिमित्ते एसा तइयाविहत्ती दट्ठव्वा। अंगुलवग्गमूल गुणगारणेण जमुप्पण्णंगुलं सा विक्खंभसूई होदि त्ति जं वुत्तं होदि। एदाए विक्खंभ सूईए जगसेढिं गुणिदे भवणवासियमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि--असंजदसम्माइट्ठिपरूवणा ओघं ॥ ६० ॥

असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये जगप्रतरको आदि करके उपरिम असंख्याता संख्यातके विकल्पोंका प्रतिषेध करनेके लिये भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण कहा है। यह जगप्रतरका असंख्यातवां भाग भी अनेक प्रकारका है ऐसा समझकर उसका निर्णय करनेके लिये उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही। आगे उस विष्कंभसूचीका प्रमाण कहते हैं— सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उतनी भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है, ऐसा इस कथनका संबन्ध करना चाहिये। जो विष्कंभसूची घनांगुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, यह इस कथनका अभिप्राय है।

शंका—'अंगुलवग्गमूलगुणिदेण' इसप्रकार यहां तृतीया विभक्तिका निर्देश कैसे बन सकता है?

समाधान—प्रथमा विभक्तिके अर्थमें यह तृतीया विभक्तिका निर्देश जानना चाहिये।

शंका—दूसरी जगह ऐसा नहीं देखा जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'वेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागेण' इत्यादिक सूत्रोंमें प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति देखी जाती है। अथवा निमित्तरूप अर्थमें यह तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणकारपनेसे जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके गुणित करने पर भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ६० ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे ओघेण सह एगत्तदंसणादो । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं पुरदो भणिस्सामो ।

वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ६१ ॥

एदस्स थूलत्थस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुहुमत्थसुत्तस्स अत्थो पच्चदे ।

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण[1] ॥ ६३ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठपरूवणट्ठमागदसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । पदरस्सेदि णिद्दिज्जमाण रासिणिद्देसो । संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेत्ति लद्धणिद्देसो । पदरस्स संखेज्जजोयण

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ओघ प्ररूपणाके साथ गुणस्थानप्रतिपन्न भवनवासी प्ररूपणाकी एकता अर्थात् समानता देखी जाती है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो उन दोनों प्ररूपणाओंमें विशेषता है ही । उस विशेषताको आगे बतलायेंगे ।

वानव्यन्तर देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ६१ ॥

स्थूल अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा वानव्यन्तर देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप प्रतिभागसे वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि राशि आती है, अर्थात् संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतने वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं ॥ ६३ ॥

अति सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये आये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— सूत्रमें ' पदरस्स ' इस पदसे अपहियमाण राशिका निर्देश किया है । ' संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ' इस पदसे भागहार राशिके प्रतिपादनपूर्वक लब्ध राशिका निर्देश किया है ।

१ [illegible] । अनु. द्वा. सू. १४१ पत्र १७९

२ [illegible]

सयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि । पडिभागो इदि किं वुत्तं हवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्स भागेसु एगभागो पडिभागो णाम। पडिभागसद्दो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोवयारेण लद्धम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्ठे तदिया दट्ठव्वा। अहवा एस णिद्देसो पढमाविहत्ती चेव जहा हवदि तहा साहेयव्वो। संखेज्जजोयणेत्ति वुत्ते तिण्णिजोयणसयपमाणंगुलं काऊण वग्गिदे जो उप्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो। तस्स पमाणं पंच कोडाकोडिसयाणि तीसकोडा-कोडीओ चउरासीदिकोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि। जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसंखेज्जरूवगुणिदछज्जोयणसयपमाणंगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो एत्तियपदरंगुलमेत्तो हवदि। अध जदि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो छज्जोयणसयअंगुलवग्गमेत्तो, तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण तिण्णिजोयणसयंगुलवग्गस्स संखेज्जदिभागेण होदव्वं, अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो। एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरमें संख्यातसौ योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग आवे उतना वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण है।

शंका — प्रतिभाग इस पदसे यहां क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसौ योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो उतने जगप्रतरके भाग करने पर उनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है। अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहां लब्धरूप अर्थ लिया गया है। यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे यहां लब्धमें उसका ग्रहण करना चाहिये।

यहां प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। अथवा 'पडिभाएण' यह निर्देश प्रथमा विभक्तिरूप जिसप्रकार होय उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये। सूत्रमें 'संख्यात योजन' ऐसा कहने पर तीनसौ योजनोंके अंगुल करके वर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न हो वह ग्रहण करना चाहिये। उन अंगुलोंके प्रमाण पांचसौ तीस कोड़ाकोड़ी चौरासी लाख कोड़ी और सोलह हजार कोड़ी = ५३०८४१६०००००००००००० है। यदि तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल तत्प्रायोग्य संख्यातसे गुणित छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र होता है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल इतने प्रतरांगुलप्रमाण होता है। और यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गमात्र है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गके संख्यातवें भाग होना चाहिये, अन्यथा अल्पबहुत्व सूत्रके साथ विरोध आता है।

वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ६४ ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे केण वि अंसेण विसेसाभावादो ओघत्तमिदि वुच्चदे । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो भणिस्सामो ।

- - - -

उक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है।

विशेषार्थ—वाणव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है। तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुल ५३०८४१६०००००००००० होते हैं और छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल २१२३३६६४०००००००००० होते हैं। किसी विवक्षित राशिके वर्गसे उस राशिसे दूनी राशिका वर्ग चौगुना होता है। जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का वर्ग ६४ चौगुना है। तथा किसी एक भाज्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो लब्ध आयगा, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त लब्धसे चौगुना ही लब्ध आयगा। इसीप्रकार यहां तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल चौगुने होते हैं, अतएव छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग देनेसे तिर्यंच योनिमतियोंका जितना प्रमाण लब्ध आयगा, उससे, तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका उसी जगप्रतरमें भाग देने पर वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण, चौगुना ही लब्ध आता है। पर अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें तिर्यंच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे कहे हैं और उन्हींकी देवियां देवोंसे संख्यातगुणी कही हैं। देवगतिमें निकृष्ट देवके भी बत्तीस देवियां होती हैं। इसप्रकार आगमानुसार तिर्यंच योनिमतियोंके प्रमाणसे वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुणेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार चौगुना ही आता है। इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है। यदि वाणव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतियोंका भागहार छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे संख्यातगुणा होना चाहिये और यदि तिर्यंच योनिमतियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो वाणव्यन्तरोंका भागहार तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका संख्यातवां भाग होना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वाणव्यन्तर देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६४ ॥

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणा और गुणप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणाके समान कही। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही। उस विशेषताका कथन आगे करेंगे।

रूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलिय दव्वमिच्छाइट्ठिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वाणवेंतरप्पहुडिमिच्छाइट्ठिरासी पावेदि। तमुवरिमरूवोवरिट्ठिदासामण्णदेवमिच्छाइट्ठिरासिम्हि अवणिदे जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिरासी होदि। एवं समकरणं करिय रूवूणहेट्ठिमविरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि। तं देवअवहारकालम्हि पक्खित्ते जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। सेस देवमिच्छाइट्ठिभंगो। सासणादिगुणट्ठाणगदविसेसं पुरदो वत्तइस्सामो।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अवगदो त्ति पुणो ण उच्चदे।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुगमो चेय। सव्वत्थ सुहुम सुहुमदर सुहुमतमभेएण तिविहा परूवणा किमट्ठं परूविज्जदे? ण एस दोसो, तिव्व मंद मज्झिमबुद्धिसत्ताणुग्गहट्ठत्तादो। अण्णहा

संख्यात लब्ध आते हैं। उनको (संख्यातको) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिको समान खंड करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वाणव्यन्तर आदि मिथ्यादृष्टि देवराशि प्राप्त होती है। उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है। इसप्रकार समीकरण करके एक कम अधस्तन विरलनसे देव अवहारकालके भाजित करने पर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग लब्ध आता है। उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। शेष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्ररूपणाके समान है। सासादन आदि गुणस्थानगत विशेषताको आगे बतलायेंगे।

सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अवगत है, इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है।

शंका—सब जगह सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमके भेदसे तीन प्रकारकी प्ररूपणा किसलिये कही जा रही है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीव्र बुद्धिवाले, मंद बुद्धिवाले और मध्यम बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्ररूपणा कही है। यदि ऐसा न माना जाय तो

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओ
॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवट्टदे। एसा द
ट्ठियणयमस्सिऊण परूवणा उत्ता। पज्जवट्ठियणयमस्सिऊण एदेसिं पर
पुरदो भणिस्सामो।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार सहस्सारकप्पवासियदेवेसु ज
सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि वुत्ते त जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तव्वो किं तु उवमत्थे ज
सद्दो घेत्तव्वो। जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं पमाणं परूविदं तहा सणक्कुमार
देवाणं पमाणं परूवेदव्वं। णवरि आइरियपरंपरागदोवदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो
तं जहा—

सणक्कुमार माहिंदे जगसेढीए भागहारो सेढीए हेट्ठा एक्कारसवग्गमूलं। बम्ह बम्
त्तरकप्पे णवमवग्गमूलं। लांतव काविट्ठकप्पे सत्तमवग्गमूलं। सुक्क महासुक्कप्पे पंचमव

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐश
कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६९ ॥

'सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए' इन दो शब्दोंकी यहां अनुवृत्ति होती
यहां द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है। पर्यायार्थिक नयका आश्रय क
इनकी प्ररूपणा आगे करेंगे।

जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्र
सनत्कुमारसे लेकर शतार और सहस्रार तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि देवो
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

सूत्रमें 'जहा' इसप्रकार कहने पर 'तं जहा' इसका अर्थ नहीं कहना चाहिये, कि
यहां उपमारूप अर्थमें 'जहा' शब्दका ग्रहण करना चाहिये। इससे यह अभिप्राय हुआ
जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार आ
देवोंके प्रमाणका कथन करना चाहिये। अब आगे आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेश
अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं। वह इसप्रकार है—

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीके नीचे ग्यारहवां व
मूल है। ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल है। लांतव और
कापिष्ठ कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल है। शुक्र और महाशुक्र कल्

मूलं । सदार सहस्सारकप्पे चउत्थवग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणादीणं पमाणपरूवणा वि सत्तमपुढविपरूवणाए समाणा । विसेसपरूवणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-त्तेण ॥ ७१ ॥

सुहुमत्तादो कालसाधी खेत्, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । दव्वपमाणपरूवणाए चेव अत्थणिच्छओ जादो त्ति एत्थ खेत्त-कालेहि परूवणा ण कदा । 'पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो' इदि सामण्णेण उत्ते दव्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो त्ति तत्थ णिच्छयउप्पायणट्ठं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' त्ति भागहारपरूवणा विहज्ज-माणपरूवणा च कदा । एत्थ आइरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खाणं पुरदो भणिस्सामो ।

अणुद्दिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका चौथा वर्गमूल है । सानत्कुमारसे लेकर सहस्रारतक सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा भी सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके समान है । विशेष प्ररूपणाको आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

सूक्ष्म होनेसे क्षेत्र कालसाधी होता है, इसलिये सूत्रमें पृथक्रूपसे कालपदका ग्रहण नहीं किया । द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है, इसलिये यहां पर क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा प्ररूपणा नहीं की । 'पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणका अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है, इसलिये इस विषयमें निश्चय उत्पन्न करानेके लिये 'इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' इस प्रकार भागहारप्ररूपणा और विभज्यमानराशिकी प्ररूपणा की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्यान आगे करेंगे ।

अनुदिश विमानोंसे लेकर अपराजित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य

एत्थ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपरूवणं सेसगुणट्ठाणाणं तत्थाभावं सूचेदि। ण च संतं ण परूवेंति जिणा, तेसिमजिणत्तप्पसंगादो। एत्थ आइरिओवएसेण सव्वेसिं गुणपडिवण्णाणं विसेसपरूवणं भणिस्सामो। तं जहा– देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुणपडिवज्जमाणरासिविसेसादो वा। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सणक्कुमार माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो ? सुहकम्माहियजीवबहुत्ताभावादो। एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति। तस्स सासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जोइसियदेवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

ग्दृष्टि देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदिश आदि विमानोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा यहां पर शेष गुणस्थानोंके अभावको सूचित करती है। यदि कोई कहे कि यहां पर शेष गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की होगी सो बात नहीं है, क्योंकि, जिनदेव विद्यमान अर्थका प्ररूपण नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग आ जाता है। अब यहां आचार्योंके उपदेशानुसार संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी विशेष प्ररूपणाको करते हैं। वह इसप्रकार है— देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको उसी देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है। अथवा, इन दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें विशेषता है। सौधर्म और ऐशान सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सानत्कुमार और माहेन्द्र असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं। इसीप्रकार शतार सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिए। इस शतार-सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि

कुदो? तत्थ थोग्गाहिदादिमिच्छत्तेण सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिकूलेसु बहूण सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमभावादो। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं वाणवेंतर भवणवासियदेवेसु णेयव्वं। कुदो? मिच्छत्तोच्छाइददिट्ठीसु भूओसम्मद्दंसणुप्पत्तिसंभवाभावादो। भवणवासिय-सासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद पाणदअसंजद सम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो? सुहकम्माणं दीहाऊणं बहूणमसंभवा। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कारणं उवरिम उवरिमकप्पेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउजीवेहिंतो हेट्ठिमहेट्ठिमकप्पेसु थोवपुण्णेण इदरभवट्ठिदीसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तोवलंभादो। होंता वि असंखेज्जगुणा चेव। कारणं बीजीभूदमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जसुवलंभादो। एवं णेयव्वं जाव उवरिम उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-

यहां पर स्तुद्गाहित आदि मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न हुए और जिन शासनके प्रतिकूल देवोंमें सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले बहुत जीवोंका अभाव है। उन असंयतसम्यग्दृष्टि ज्योतिषी देवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है। यहां पर उत्तरोत्तर संख्याहानि या अवहारकालकी वृद्धिके कारणका कथन पहलेके समान कर लेना चाहिये। इसीप्रकार वाणव्यन्तर और भवनवासी देवोंमें क्रमसे अवहारकाल ले जाना चाहिये, क्योंकि, जिनकी दृष्टि मिथ्यात्वसे आच्छादित है उनमें बहुत सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति संभव नहीं है। भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतकल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, शुभ कर्मवाले दीर्घायु जीव बहुत नहीं होते हैं। इस असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युत कल्पवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपरिम उपरिम कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले शुभ कर्मोंकी अधिकतासे दीर्घायुवाले जीवोंसे नीचे नीचेके कल्पोंमें स्तोक पुण्यसे स्तोक भवस्थितिमें उत्पन्न होनेवाले जीव अधिक पाये जाते हैं। नीचे नीचे अधिक जीव होते हुए भी वे असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बारहवें कल्पसे लेकर ऊपरके कल्पोंमें जीव मनुष्य राशिसे आकर ही उत्पन्न होते हैं। इसलिये ऊपरके कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके लिये मनुष्यराशि बीजीभूत है और मनुष्य राशि संख्यात ही होती है, अतः ऊपर ऊपरके कल्पोंसे नीचेके कल्पोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं। यही क्रम उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका

हारओ जाणिय वत्तव्वा । सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो इदि भणिय आणदादि उवरिमगुणपडिवण्णाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' इदि विसेसिय किमट्ठं वुच्चदे ? एवं भणंतस्स अहिप्पाओ परूविज्जदे । तं जहा— ओघभंगो इच्चेदेण आणदादीणं सुत्तमिदमणत्थयं । अणत्थयं पि णाणावयं होदि । किमेदेण जाणाविज्जदि ? सोहम्मअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तत्थतणसासणसम्माइट्ठीणमवहारकालो संखेज्जावलियमेत्तो । एदे दो वि अवहारकाले मोत्तूण अवसेसगुणपडिवण्णाणं सव्वे अवहारकाला असंखेज्जावलिमेत्ता विउलवाइणो अंतोमुहुत्तमिदेण वुच्चंति त्ति जाणाविदं, तेण णाणत्थयमिदं सुत्तं ।

विशेषके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा खंडित आदिका कथन जान कर करना चाहिये ।

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है ऐसा कथन करके 'गुणस्थानप्रतिपन्न इन आनत आदि देवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है' इतनेसे विशेषित करके गुणस्थानप्रतिपन्न आनतादि देवोंका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण किसलिये कहा ? आगे ऐसा कथन करनेवालेके अभिप्रायका प्ररूपण करते हैं । वह इसप्रकार है—

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण 'सामान्य प्ररूपणाके समान है' इतनेमात्रसे सबंधित होनेके कारण यह सूत्र अनर्थक है, फिर भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी स्वतन्त्र नियमका ज्ञापक होता है ।

शंका—इससे क्या ज्ञापन होता है ?

समाधान—सौधर्म असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग है । वहींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवलीमात्र है । इन दो अवहार कालोंको छोड़कर शेष गुणस्थानप्रतिपन्नोंके संपूर्ण अवहारकाल असंख्यात आवलीमात्र हैं, अवहारकालकी विपुलताको माननेवाले आचार्य अन्तर्मुहूर्त का ऐसा अर्थ करते हैं, यह इस सूत्रसे ज्ञापित होता है, इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है ।

सासणहारमसंखेज्ज य संखेज्जगुणिदं । उवरिं अविरद विरदस्स सासणस्साण अवहारा ॥ सोहम्मादासारं जोइसि वण भवण तिरिय पुढवीसु । अविरद मिस्से सण्ण संखावलगुण सासणे देसे ॥ सामण्णावालहारा आणदसम्माण अंतरपहुदि । अंतमुहुत्तेगहिदं सम्माणमसंखगणहारा ॥ तत्तो ताणुत्ताणं वामाणमणुदिसाण विजयादि । सम्माणं संखेज्जा आवलिहिदम असंखगुणा ॥ तत्तो संखेज्जगुणा सासणसम्माण होदि संखगुणो । उत्तट्ठाणे कमसो पणछस्सत्तदुचदुर संदिट्ठी ॥ गो. जी. ६६५–६७

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणीरासीदो तिउणमेत्ता हवंति ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वदेवरासिमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा जोइसियदेवमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा वाणवेंतरमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । एवं जाव सदार सहस्सारमिच्छाइट्ठि त्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं सणक्कुमार माहिंदप्पहुडि जाव सहस्सारो त्ति णेयव्वं । तदो जोइसिय वाणवेंतर भवणवासिएत्ति णेयव्वं । पुणो सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ७३ ॥

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनियोंके प्रमाणसे तिगुणे हैं ।

आगे भागाभागको बतलाते हैं— सर्व देवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहु भागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पके मिथ्यादृष्टि देवों तक ले आना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टि प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहींके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार *सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतक ले आना चाहिये ।* सहस्रार कल्पसे आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवों तक यही क्रम ले आना चाहिये । पुनः भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं ।

जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जा त्ति। सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुदिस-असंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जा त्ति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिममज्झिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठि त्ति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति। एगखंडं सव्वट्ठसिद्धिअसंजदसम्माइट्ठी होंति। एवं भागाभागं समत्तं।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयक तक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टिप्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि होते हैं। शेषके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयक तक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये। उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक खंडप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। इस प्रकार भागाभाग समाप्त हुआ।

सव्वत्थोवो देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? अवहारकालवग्गो। अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसवग्गसूचिअंगुलमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। सासणादीणं मूलोघभंगो। एवं जोइसिय-वाणवेंतराणं पि णेयव्वं। भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? विक्खंभसूई। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? विक्खंभसूचिवग्गो। अहवा घणंगुल। मेत्ता

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व। इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं- देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कम्भसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है। वे कितने हैं? पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसके वर्गरूप सूच्यंगुलप्रमाण हैं। देव विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है। देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगत्प्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगत्प्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है। इसीप्रकार ज्योतिषी और वाणव्यन्तरोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व ले जाना चाहिये। भवनवासियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वमें सबसे स्तोक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची है। उससे अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? विष्कम्भसूची प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपनी विष्कम्भसूचीका वर्ग प्रतिभाग है। अथवा घनांगुल गुणकार है। जगश्रेणी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोघभंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो त्ति सत्थाणप्पाबहुगं जाणिय णेदव्वं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाणभंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचि-अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि

है ? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? विष्कम्भसूची गुणकार है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका मूलोघके समान स्वस्थान अल्पबहुत्व है । सौधर्मसे लेकर उपरिम ग्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग उनका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । भवनवासियोंमें परस्थानका कथन करने पर असंयत सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कम्भसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुल प्रमाण है । वे कितने हैं ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर वाणव्यन्तरोंसे लेकर उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक अपने

सगसत्थाणभंगो (आणदादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति ।) उवरि परत्थाणं णत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो । सव्वट्ठे सत्थाणं पि णत्थि एगपदत्तादो ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा । सोहम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवसम्माइट्ठि त्ति । तस्सेव सम्मा-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो सणक्कुमार माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव सदर-सहस्सारो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियाणं पि कमेण णेयव्वं । भवणवासिय

स्वस्थानके समान है । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर शेष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । सर्वार्थसिद्धिमें एक पदार्थ होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व भी नहीं है ।

विशेषार्थ—प्रतियोंमें देवोंके स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके पाठ गड़बड़ और कुछ छूटे हुए प्रतीत होते हैं । परंतु कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अल्पबहुत्वके विभागानुसार यहां भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतियोंमें पहले सामान्य देवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार वाणव्यन्तर और ज्योतिषियोंका है, ऐसा कहा है । तदनन्तर भवनवासियोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कह कर सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्वको समझकर लगा लेनेकी सूचना की है । अनन्तर अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण और सर्वार्थसिद्धिमें दोनोंके अभावका कारण बतलाया है ।

इन अल्पबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक परस्थानकी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण बतलाया है, पर स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— सर्वार्थसिद्धि विमान वासी देव सबसे स्तोक हैं । उनसे सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके सम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वहीं पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । सौधर्म और ऐशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासियोंका भी क्रमसे ले जाना चाहिये ।

सासणाणं अवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो उवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं

प्रथमपर्याप्ता सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। उससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इससे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके [illegible] अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। इससे आरण और अच्युतके [illegible] ले जाना चाहिये। [illegible] इस प्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। [illegible] सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल। [illegible] उपरिम उपरिम [illegible] [illegible] है। इसीप्रकार [illegible]

अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तं ति । तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । तदो उवरि सोहम्मीसाणविक्खंभसूची असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो । अहवा सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो । भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलमेत्ताणि । को पडिभागो ? सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई च । मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पडिभागो । जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सणक्कुमार माहिंदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।

सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होने तबतक ले जाना चाहिये । सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमके ऊपर सौधर्म और ऐशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । सूच्यंगुलके उन असंख्यात द्वितीय वर्गमूलोंका प्रमाण कितना है ? तीसरे वर्गमूलके असंख्यातवें भाग है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । उन असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूलमात्र है । प्रतिभाग क्या है ? सौधर्म और ऐशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके प्रतिभागके समान प्रतिभाग है । सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची प्रतिभाग है । इस देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग विशेष है । ज्योतिषियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे वाणव्यन्तरोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार

को गुणगारो? सेढिएक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि बारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो पडिभागो। तस्सुवरि बम्ह-बम्होत्तर-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढिणवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि। लांतव-काविट्ठमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सत्तमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि अट्ठमवग्गमूलाणि। सुक्क-महासुक्कमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पंचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि छट्ठमवग्गमूलाणि। सदार-सहस्सार-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पंचमवग्गमूलं। तदो सदार-सहस्सारदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालपडिभागो। एवं णेयव्वं पडिलोमेण जाव सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिदव्वमिदि। तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? तस्सेव विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो एक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि

क्या है? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है। सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण है। ब्रह्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे लान्तव और कापिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है। लान्तवद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शुक्र और महाशुक्रके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके पांचवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात छठवें वर्गमूलप्रमाण है। शुक्रद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल गुणकार है। शतारद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। इसीप्रकार प्रतिलोमक्रमसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये। सानत्कुमारद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? उन्हीं वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। अथवा, जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके

वारसवग्गमूलाणि वा। को पडिभागो? सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिदव्वपडिभागो। जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण। भवणवासिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? विक्खंभसूई। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? भवणवासिविक्खंभसूइगुणिदसगअवहारकालपडिभागो। जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो

असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण प्रतिभाग है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे ज्योतिषियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्रसे अधिक है? ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। देव मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? विष्कम्भसूची गुणकार है। जगश्रेणीसे उन्हीं सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है। सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं। भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पहले कह आये हैं जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है। जिस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल है। प्रतिभाग क्या है? भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे अपने अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र अधिक है? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको खंडित करके एक खंड लब्ध

अगरेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेढी ।

चउग्गइभागाभाग वत्तइस्सामो । तं जहा– सव्वजीवरासिमणंतर
बहुखंडा एइंदिय विगलिंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा हो
मसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेस संखे
बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेस संखेज्जखंडे क
जोइसियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा भवणवासियमि
होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसं
कए बहुखंडा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा
अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बिदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति ।
मसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार माहिंदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदियपुढ
बम्होत्तर चउत्थपुढवि लांतवकाविट्ठ पंचमपुढवि सुक्कमहासुक्क सदारसहस्सार छट्ठ
सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि त्ति णेयव्वं । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणअ

मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अगणतर असंख्यातगुणा है । गुणकार
है ? असंख्यात गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अ
श्रेणी गुणकार है ।

अब चतुर्गतिसंबन्धी भागाभागको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— सर्व जीवराशि
अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव
हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त हैं । शेष एक
भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्या
दृष्टि हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि
देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भवनवासी
मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके
मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लांतव
और कापिष्ठ, पांचवीं पृथिवी, शुक्र और महाशुक्र, शतार और सहस्रार, छठी पृथिवी और
सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण जानना चाहिये । सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण लाने के अनन्तर शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुखंडप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइट्ठिणो होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तम्हि चेव सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेस असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति। तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिय-तिरिक्ख-पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति णेयव्वं। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठि त्ति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदमिच्छाइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठि त्ति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्ठि त्ति। सेस संखेज्जखंडे कए

संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहां सौधर्म और ऐशान कल्पके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और ऐशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये। इसके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर, भवनवासी, तिर्यंच और प्रथमादि सातों पृथिवियोंतक ले जाना चाहिये। सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युत कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे

बहुखंडा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव उवरिममज्झिमसासणेत्ति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवरिमउवरिमसासणसम्माइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसअसंजदसम्माइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठी होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सजोगिजिणा। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हं खवगा। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हमुवसामगा। सेसेगखंडं अजोगिकेवली होंति। एवं चउगइभागाभागं समत्तं।

एत्तो चउगइअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा। सव्वत्थोवा अजोगिकेवलिरासी।

बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। इसीप्रकार उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवली जिन हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके क्षपक हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक हैं। शेष एक खंडप्रमाण अयोगिकेवली जिन हैं।

इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी भागाभाग समाप्त हुआ।

अब इसके आगे चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्व बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

चउण्हमुवसामगा संखेज्जगुणा । चउण्हं खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मणुससंजदासंजदा संखेज्जगुणा । मणुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा तिउणा सत्तगुणा वा[1] । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियदेवेसु त्ति णेयव्वं । तदो तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेवली जीवराशि सबसे स्तोक है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य संयतासंयत प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि मनुष्यनी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सर्वार्थसिद्धिके देवोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी, वानव्यन्तर और भवनवासी देवियों तक ले जाना चाहिये । भवनवासी देवियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे तिर्यंचोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा

---

१ त्रिगुणा सप्तगुणा वा भवन्ति मानुषीप्रमाणात् । गो. जी. १६२

संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं विदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति। तदो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अपराजिदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो

है। इनसे उन्हींका संयतासंयत अवहारकाल असंख्यातगुणा है। तिर्यंच संयतासंयतोंके अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है। इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक ले जाना चाहिये। सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन अनुत्तरवासी देवोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार

संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं[1]। को गुणगारो? अवहारकालो। सोहम्मीसाणविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि। केत्तियमेत्ताणि? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमपडिभागो। मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं। णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं। भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। पंचिंदिय

उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे उन्हींका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। इससे उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे जब सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य आवे तबतक ले जाना चाहिये। सौधर्मद्विकके असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। पल्योपमसे सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है। वे असंख्यात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं? सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागमात्र हैं। प्रतिभाग क्या है? पल्योपम प्रतिभाग है। सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है। मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है। नारक मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? नारक

१ प्रतिषु 'पलिदोवम संखेज्जगुणं' इति पाठः।

तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढम-
मूलस्स असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । के-
त्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमि-
च्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्ज-
भागो । देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जो-
दिसियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंड-
मेत्तेण । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।
पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्ज-
समया । विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढिबारहवग्ग-
मूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? जोणिणीअव-

मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय
तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम
वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके
जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त
अवहारकालसे देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
संख्यात समय गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक
है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके अव-
हारकालसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके
असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग

१ प्रतिषु ... [illegible]

संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति । तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । सोहम्मीसाणविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पंचिंदिय

उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे उन्हींका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम ग्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे अब सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य आने तकतक ले जाना चाहिये । सौधर्मद्विकके असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । पल्योपमसे सौधर्म और ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है । वे असंख्यात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागमात्र हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

१ [illegible]

तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? घणंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। जोइसियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंडमेत्तेण। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जसमया। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? बारहवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? जोणिणीअव

मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त अवहारकालसे देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? देव मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग

---

१ प्रतिषु 'संखे' अ० असंखेज्ज० इति पाठः।

हारकालपडिभागो । तदो सणक्कुमार-माहिंद-तदियपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतव-काविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्क-महासुक्क-सदार-सहस्सार-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिअवहारकाला कमेण असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेढिबारस-एक्कारस-दसम-णवम-अट्ठम-सत्तम-छट्ठम-पंचम-चउत्थ-तदियवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा । तदो सत्तमपुढविअवहारकालस्सुवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमवग्गमूलं । तदो छट्ठपुढवि-सदार-सहस्सार-सुक्क-महासुक्क-पंचमपुढवि-लांतव-काविट्ठ-चउत्थपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-तदियपुढवि-सणक्कुमार-माहिंद-बिदियपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वं कमेण असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढितदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठम-णवम-दसम-एक्कारस-बारसमवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा । तदो बिदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? बारसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसमय-

---

है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार माहेन्द्र, तीसरी पृथिवी, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लान्तव कापिष्ठ, पांचवीं पृथिवी, शुक्र महाशुक्र, शतार सहस्रार, छठवीं और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां, ग्यारहवां, दशवां, नौवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथा और तीसरा वर्गमूल क्रमसे गुणकार है । तदनन्तर सातवीं पृथिवीके अवहारकालके ऊपर उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । इससे छठी पृथिवी, शतार सहस्रार, शुक्र महाशुक्र, पांचवीं पृथिवी, लान्तव कापिष्ठ, चौथी पृथिवी, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर, तीसरी पृथिवी, सानत्कुमार माहेन्द्र और दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दशवां, ग्यारहवां और बारहवां वर्गमूल क्रमसे गुणकार है । अनन्तर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । इससे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? संख्यात समयोंसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे पंचेन्द्रिय

खंडिदएगखंडमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिद-एगखंडमेत्तेण । भवणवासियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? णेरइयविक्खंभसूई । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सोहम्मीसाणविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखे-

---

तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इससे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है। मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और ऐशानके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है। सौधर्मादिकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? विष्कंभसूची गुणकार है। जगश्रेणीसे सौधर्म और ऐशानके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। सौधर्मादिकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? सौधर्म और ऐशानकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है। भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

ज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? असंखेज्जाणि घणंगुलाणि पडिभागो। केत्तियमेत्ताणि? संखेज्जसूचिअंगुलपढमवग्गमूलमेत्ताणि। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया। जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जरूवखंडिदेगखंडमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदमेत्तेण। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढी। सिद्धा अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? लोगपडिभागो। एइंदिय विगलिंदिया अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स

असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यात घनांगुल प्रतिभाग है। उन असंख्यात घनांगुलोंका प्रमाण कितना है? सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंका जितना प्रमाण हो उतना है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यको खंडित करने जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। लोकसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? लोक प्रतिभाग है। सिद्धोंसे एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त

वि अणंतगुणा। सव्वसिद्धिपजीवाणमणंतिमभागो। को पडिभागो? सिद्धपडिभागो। एवं चदुगदिअप्पाबहुगं समत्तं।

एवं गदिमग्गणा समत्ता।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया? [1] अणंता ॥ ७४ ॥

एत्थ एइंदियग्गहणेण सेसिंदियाणं पडिसेहो कदो भवदि। सुहुमपडिसेहट्ठं बादरग्गहणं। बादरपडिसेहफलो सुहुमणिद्देसो। अपज्जत्तपडिसेहफलो पज्जत्तणिद्देसो। पज्जत्तपडिसेहफलो अपज्जत्तणिद्देसो। एइंदिया बादरेइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च एदे सव्वे वि रासीओ दव्वपमाणेण केवडिया इदि पुच्छिदं होदि। किमट्ठं सव्वत्थ पण्हपुव्वं परिमाणं वुच्चदे? ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहणट्ठत्तादो। अणंता इदि परिमाणणिद्देसो संखेज्ज-असंखेज्जपरिमाणपडिसेहफलो। सेसं जहा मूलोघम्मि वुत्तं तहा वत्तव्वं।

बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सिद्धराशि प्रतिभाग है। इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ ७४ ॥

इस सूत्रमें एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे शेषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है। सूक्ष्म जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये बादर पदका ग्रहण किया है। बादर जीवोंका निषेध करनेके लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है। अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका ग्रहण किया है। और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया है। एकेन्द्रिय जीव, बादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन राशियां तथा ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त, इसप्रकार कुल नौ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं, यहां ऐसा पूछनेका अभिप्राय है।

शंका—सर्वत्र प्रश्नपूर्वक परिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये ऐसा कहा गया है।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूत्रमें अनन्तरूप परिमाणका निर्देश

---

१ एकेन्द्रिया मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः। स. सि. १, ८. तसहीणो संसारी एयक्खा ताण संखगा भागा। पुण्णाणं परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णाणं ॥ गो. जी. १७६.

अणिंदियाण रासिं सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स चेव वग्गं एइंदियभाजिदं तत्थेव पक्खित्ते एइंदियधुवरासी होदि। तं संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते एइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि। एइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे एइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि। पुणो एइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण गुणिदे बादरेइंदियधुवरासी होदि। तमसंखेज्जलोएण गुणिदे बादरेइंदियपज्जत्ताणं धुवरासी होदि। तमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरेइंदियअपज्जत्ताणं धुवरासी होदि। सामण्णेइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियधुवरासी होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि। सामण्णसुहुमेइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि। सग-सगधुवरासीहि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे खंडिदाओ ओघमिच्छाइट्ठीणं व वत्तव्वा। उवरि पमाणं भण्णमाणे एइंदियाणं ओघभंगो। एइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो। बादरेइंदियाण

राशिमें ऊपर प्रक्षिप्त करके और उन्हीं द्वीन्द्रियादि जीवोंके प्रमाणसे वर्गको एकेन्द्रिय जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें मिला देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। एकेन्द्रिय जीवसम्बन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। पुनः एकेन्द्रिय जीवसम्बन्धी ध्रुवराशिको असंख्यात लोकसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। इसे असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। इसमें असंख्यात लोकोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। सामान्य एकेन्द्रियसम्बन्धी ध्रुवराशिमें असंख्यात लोकोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसम्बन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसम्बन्धी ध्रुवराशि होती है। इन अपनी अपनी ध्रुवराशियोंके द्वारा सम्पूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके खंडित करने आदिका कथन [illegible] मिथ्यादृष्टियोंके कथनके समान करना चाहिए। इतना विशेष है कि उपरिम कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान कहना चाहिए। एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं। उन्हीं एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके संख्यातवें भाग है। बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो। सुहुमेइंदिया सव्व-जीवरासिस्स असंखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियापज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो। कारणमेइंदियाणं ताव वुच्चदे। सेसिंदियाणिंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेयखंडं सेसिंदियाणिंदिया च होंति। सेसबहुखंडा एइंदिया हवंति। सेसिंदियाणिंदिय-एइंदियापज्जत्तेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा एइंदियपज्जत्ता होंति। एइंदियअपज्जत्तेहि चेव सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं एइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसिंदिय-अणिंदिय-बादरेइंदिएहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धमसं-खेज्जलोगाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया होंति। बि-ति-चदु-पंचिंदिय-बादरेइंदियसहिदसुहुमेइंदिअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्हि

और अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातवें भाग है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं। अब एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं– शेषेन्द्रिय अर्थात् द्वीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके दे देने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव हैं। द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो संख्यात लब्ध आवे उसका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते हैं। एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं। उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव-राशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं। उसका

भागे हिदे संखेज्जरूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सुहुमेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थेगखंड सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। बादरेइंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदिया होंति। बादरेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंड करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। एसा चेव णिरुत्ती हवदि। कुदो? एत्थ कारणादो णिरुत्तीए भेदाणुवलंभादो।

बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंड प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये। और यही निरुक्ति है, क्योंकि, यहां पर कारणसे निरुक्तिमें भेद नहीं पाया जाता है।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं॥ ७७॥

---

१ [illegible] ॥ गो. जी. १७५ [illegible]
[illegible]

खेत्तेण बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥७९॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा– 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पुव्वुद्दिट्ठबि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुद्दिट्ठमेव भवदि। मज्झिल्लं मज्झम्हि समुद्दिट्ठपज्जत्ताणं भवदि। अंतिल्लं पि अंतुद्दिट्ठ तेसिमपज्जत्ताणं हवदि। एदेहि सामण्णविगलिंदिएहि तेहि चेव पज्जत्तेहि विगलिंदियअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरिज्जदि। अंगुलस्स पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो पदरंगुलमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेयभागो। तस्स वग्गो सारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो। एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि णिद्देसव्वं। एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खाणेयव्वं। णवरि पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है। तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इसप्रकार है— 'उद्देशके अनुसार निर्देश किया जाता है' इस न्यायके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया ही है। मध्यमें कहे गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा गया है। और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है। इनके द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है। यहां पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यंगुलका और उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यंगुलको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उससे है। उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग, इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर दो। ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहां पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है। इसीप्रकार अपर्याप्त सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये। इतना विशेष है कि सूच्यंगुलके संख्यातवें भागका वर्गित करके हर

घग्गिदे पज्जत्ताणमवहारकालो होदि। तेण पडिभाएण। पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाग सलागभूदं ठविय विगलिंदियअपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जग-पदरं समप्पदि। पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियपज्जत्तेहि जग-पदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि त्ति जं वुत्तं होदि।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा[1] ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभाग वग्गपडिभाएण[2] ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है। इस प्रतिभागसे। प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागको शलाका रूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोंके द्वारा जगप्रतरके पुन पुन अपहृत करने पर अर्थात् घटाने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है। तथा प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतरके पुन पुन अप-हृत करने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ ×× चउरक्खादिगा तभेदा ज। जगपदरमसंखेज्जा ॥ गो. जी. १७५

२ पंचेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येया श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८. प्रतिषु 'संखे ज्जदिभागपडिभाएण' इति पाठः।

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिंदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि। सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिंदियपज्जत्ताणं। पडिभागो भागहारो त्ति एयट्ठो। विगलिंदियसुत्तेण सह पंचिंदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिंदियत्ताणुवट्टावणट्ठत्तादो पुध पंचिंदियसुत्तं वुच्चदे। तत्थ ट्ठियपंचिंदियणिद्देसो किमिदि णाणुवट्टाविज्जदे? ण, एगजोगणिद्दिट्ठाणमेगदेसस्स अणुवट्टणाभावादो।

संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगअणियोगद्दारसुत्तबलेण पुव्वाइरिओवएसबलेण य एदेण सुत्तेण सूचिदविगल-सयलिंदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो। तं जहा- आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे बेइंदियाणमवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बेइंदियअपज्जत्तअवहारकालो होदि। तं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव

'उद्देशके अनुसार निर्देश होता है' इस न्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है, और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है। प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं।

शंका— विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि आगे कहे जानेवाले गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक्‌रूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा।

शंका— विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर वहां स्थित पंचेन्द्रिय पदके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है।

अब आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके सूत्रके बलसे और पूर्वाचार्योंके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं। वे इसप्रकार हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको वर्गित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित

पक्खित्ते तेइंदियअवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । एवं चउरिंदिय चउरिंदियअपज्जत्त पंचिंदिय पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयखंडेण अवहारकाला अहिया कायव्वा । तदो पंचिंदियअपज्जत्तअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेइंदियपज्जत्ताणं अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बेइंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो होदि । एत्थ सव्वत्थ रासिविसेसेण रासिमोवट्टिय लद्धं रूवूणं करिय भागहारभूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाएदव्वो । एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वपमाणाणि भवंति । एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तव्वा ।

करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । पुनः इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहां सर्वत्र राशि विशेषसे राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके भागहाररूप आवलीका असंख्यातवें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है । यहां पर खंडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ८३ ॥

पहुडिसद्दो किरियाविसेसणं। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि आइं करिएवि। एत्थ पुव्व सुत्तादो पंचिंदिय इदि अणुवट्टदे। तेण सव्वं गुणपडिवण्णा पंचिंदिया चेव। सजोगि अजोगिकेवलीणं पणट्ठासेसिंदियाणं पंचिंदियववएसो कधं घडदे? ण, पंचिंदियजादिणाम कम्मोदयमवेक्खिय तेसिं पंचिंदियववएसादो। एदेसिं पमाणपरूवणा मूलोघपरूवणाए तुल्ला। कुदो? पंचिंदियवदिरित्तजादीसु गुणपडिवण्णाभावादो।

पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक [गुणस्]थानमें पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके [असंख्या]तवें भाग हैं ॥ ८३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण है। जिससे सासादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ [सासाद]नसम्यग्दृष्टिको आदि लेकर होता है। यहां पर पूर्व सूत्रसे पंचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती [है, इस]लिये संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पंचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है।

[शं]का — सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके संपूर्ण इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं, अतएव [उनके पं]चेन्द्रिय यह संज्ञा कैसे घटित होती है?

समाधान — नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और [अयोगिकेव]लियोंके पंचेन्द्रिय संज्ञा बन जाती है।

[इ]न गुणस्थानप्रतिपन्न पंचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान [है, क्योंकि] पंचेन्द्रियजातिको छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं [पाये जाते] हैं।

[पंचे]न्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ८४ ॥

[इस सूत्र]का अर्थ सुगम है।

[काल]की अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों [और उत्सर्पिणि]योंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

[इस सूत्र]का भी अर्थ सुगम है।

[illegible]

खेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव। एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडिबद्धाणि विगलिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाइट्ठिसुत्तम्हि चेव किण्ण वुत्ताणि त्ति वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणट्ठत्तादो पुध सुत्तारंभस्स। अपज्जत्तकाले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगसु सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो। इदि चे, होदु णाम णिव्वत्तिं पडि अपज्जत्तएसु गुणपडिवण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्ठाणविरोहा।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जलोगमेत्तखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

यह सूत्र भी सुगम ही है। ये पूर्वोक्त तीनों भी सूत्र पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे प्रतिबद्ध हैं।

शंका — जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र स्वतन्त्र न होकर विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निबद्ध है, उसीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निबद्ध करके क्यों नहीं कहे?

समाधान — ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक्‌रूपसे आरंभ पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अभावके प्ररूपण करनेके लिये किया है।

शंका — अपर्याप्त कालमें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा दर्शनकी उपलब्धि पाई जाती है?

समाधान — यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका सद्भाव रहा आवे, परंतु अपर्याप्त नामकर्मके उदयके साथ सम्यग्दर्शन आदि गुणोंका सद्भाव माननेमें विरोध आता है।

अब भागाभागको बतलाते हैं — सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात लोकप्रमाण खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त

बादरइंदियपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणिंदिया होंति । समगसीदो पलिदोवमअसंखेज्जदिभागमवणेऊण सेसरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाए खंडिदे पि पुणो पुध ट्ठविय सेसबहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ट्ठवेयव्वा । पुणो आव लियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते बेइंदिया होंति । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण दिण्णे सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुभागं बिदियपुंजे पक्खित्ते तेइंदिया होंति । पुव्व विरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, विसेसाहिया, विसूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो । पुणो वि तप्पाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडं तदियपुंजे पक्खित्ते चउरिंदिया होंति । सेसेगखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते पंचिंदियमिच्छाइट्ठी होंति । बेइंदियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बेइंदिय पज्जत्ता होंति । सेसेगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति । तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमसंखेज्जखंडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं। शेष राशिमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण खंड करके बहु भागमेंसे एक भागको भी पुनः पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको लेकर चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके पर प्रथम पुंजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। पूर्व विरलनसे यह दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है या क्या न्यून है? ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है। पुनः भी तद्योग्य आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर शेष एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देकर अनन्तर उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुंजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। द्वीन्द्रिय जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये। पहले घटा कर पृथक् रक्खे

१ प्रतिषु पलिदोवमस्सेअसंखेज्ज इति पाठः । [illegible]

२४०। बादरेइंदियरासी सोलसमेत्तो १६। सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिमेत्ता १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति। बादरेइंदियअपज्जत्ता बारस १२ हवंति। तत्थ पज्जत्ता चत्तारि ४।

संपहि बेइंदियपज्जत्तरासीदो तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि वुत्ते असंखेज्जगुणो हवदि। तं जहा। वुच्चदे— तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो बेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कधं जाणिज्जदे? आइरिओवदेसादो भागाभागम्हि परूविदवक्खाणादो च जाणिज्जदे। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुओ। तं कधं णव्वदे? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो त्ति सुत्तअप्पाबहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण बेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणा। तं कधं णव्वदे? एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। तदो जाणिज्जदे जहा बेइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुदरतेइंदिय-चउरिंदिय

है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अन्तर क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है। आगे बतलाते हैं— त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवराशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— आचार्योंके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पबहुत्वके सूत्रमें कहा है, अतएव उससे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— यह भी अल्पबहुत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बहुत है, त्रीन्द्रिय

रासिविसेसादो असंखेज्जगुणो। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो तेइंदियपज्जत्तरासिणा असंखेज्जगुणो त्ति।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण। एत्थ ताव सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो? सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता। तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? सगअपज्जत्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा बेइंदियअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो। सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्ज-

---

और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है, उसीप्रकार त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

स्वस्थान, परस्थान और सर्व परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे यहां पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? अपनी पर्याप्त राशिको प्रक्षिप्त करने रूप विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। अवहारकालसे विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। यह प्रतिभाग भी सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे द्वीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है। जगश्रेणी

गुणा । को गुणगारो ? सूची । एवं बेइंदियअपज्जत्ताण पि वत्तव्वं । एवं पज्जत्ताण पि ।
णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि पदरंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचि-
अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं । ति-चदु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताण
पि जहाकमेण बेइंदिय-तेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताण भंगो । सामण्णादीणं मूलोघसत्थाणभंगो ।

परत्थाणे पयदं । तत्थ ताव एइंदियपरत्थाणं वुच्चदे— सव्वत्थोवा बादरेइंदिया ।
सुहुमेइंदिया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असं-
खेज्जा लोगा । एवं चत्तारि इंदियवियप्पा । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । अहवा
सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा
लोगा । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं
छेदणा वि असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज
समया । चउत्था वियप्पा एवं चेव । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरे-
इंदियमादिं कादूण सुहुमेइंदियअपज्जत्तसमत्तेण । सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता

गार है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये । इसीप्रकार
न्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके
संख्यातवें भागमात्र प्रतरांगुल कहे हैं वहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र प्रतरांगुल
कहना चाहिये । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त
स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय
जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमार्गणामें सामान्य
आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्प-
कथन करते हैं— बादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
ख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी अस-
ख्यात लोक हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । अथवा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एके-
न्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात
लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं । सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके
प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र
विशेषसे अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो ? पुव्वं भणिदो। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो ? पुव्वं भणिदो। छट्ठो वियप्पो एवं चेव। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियमेत्तेण। अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। सुहुमेइंदिय-अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदिय

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है विशेषका प्रमाण उतना है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। विशेष क्या है ? पहले कहा जा चुका है, अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है उतना विशेष है। छठा विकल्प इसीप्रकार है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय

पज्जत्तविरहिदसुहुमेइंदियापज्जत्तमेत्तेण। एवं चेव अट्ठमा वियप्पा। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। सव्वत्थोवो बेइंदियअवहारकालो। तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तेण। पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि। बेइंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। बेइंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? बेइंदियअवहारकालो। बेइंदियपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई।

पर्याप्तकोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसप्रकार आठवां विकल्प है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। असंख्यात घनांगुल कितने हैं? सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है। उस विशेषका कितना प्रमाण है? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये। द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)

केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं अवहारकाला कमेण विसेसाहिया । तदो तेइंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । बेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतेइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो । पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । पंचिंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिआ । तेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया । पंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूचिमेत्तेण । एवं सेसपज्ज-

अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी क्रमसे विशेष अधिक हैं । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उन्हींकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कम्भसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कम्भ-

१ प्रतिषु 'पंचिंदिय' इति पाठो नास्ति ।

जाव चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-बेइंदियअपज्जत्त-बेइंदियाणं विक्खंभसूईओ त्ति । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? बीइंदियअवहारकालो । चउरिंदियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । बेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पंचिंदियअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तदव्वमेत्तेण । एवं चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-बेइंदियअपज्जत्त-बेइंदियाणं दव्वाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि । तदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? बेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । अणिंदिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगो । बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि

सूचीको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कम्भसूची आनेतक ले जाना चाहिये। द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। जगश्रेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यको खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्ध जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनिन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्यसिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी

ति अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अणंतिमभागो। को पडिभागो ? अणिंदिया। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। एइंदिया विसेसाहिया।

एवं इंदियमग्गणा समत्ता।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा लोगा[1] ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भागका अनन्तवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। इनसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबंधी अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा इन्हीं चार सूक्ष्मसंबंधी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥ ८७ ॥

१ [illegible] पुढवीकाइया आउ तेउकाइया वाउकाइया जीवा असंखेज्जा [illegible] । स. सि. १, ८. आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्णसंगुणे तेऊ। भूजलवाऊ अहिया पडिभागो [illegible] ॥ गो. जी. २०४. [illegible] असंखेज्जलोगप्रमाणाः [illegible] । तथा पृथिव्यादयश्चत्वारः [illegible] । गो. जी. २०५. [illegible] । पञ्चसं. १, ९. [illegible] अंगुलअसंख [illegible] । [illegible] ॥ पञ्चसं. २, १०-११. [illegible]

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया त्ति ण वत्तव्वं, विग्गहगईए वट्टमाणाणं जीवाणमकाइयत्तप्पसंगादो। पुणो कधं वुच्चदे? पुढविकाइयणामकम्मोदयवंता जीवा पुढविकाइया त्ति वुच्चंति। पुढविकाइयणामकम्मं ण कहिं वि वुत्तमिदि चे ण, तस्स एइंदियजादिणामकम्मंतब्भूदत्तादो। एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे। ण सुत्ते कम्माणि अट्ठेव अट्ठेदालसयमेवेत्ति, संखंतरपडिसेहविधायय-एवकाराभावादो। पुणो केत्तियाणि कम्माणि होंति? हय-गय-विय-पुल्लुव-सलह-मक्कुणुद्देहि-गोभिंदादीणि जेत्तियाणि कम्मफलाणि लोगे उवलब्भंते कम्माणि वि तत्तियाणि चेव। एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं। बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ बादरा। थूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण वुच्चदे? ण, बादरेइंदियओगाहणादो

यहां पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथिवीकाय जीव कहते हैं, ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका ऐसा अर्थ करने पर विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके अकायित्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वके अभावका प्रसंग आ जाता है।

शंका—तो फिर पृथिवीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथिवीकायिक कहते हैं, इसप्रकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये।

शंका—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके भीतर अन्तर्भूत है।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा एकसौ अड़तालीस ही नहीं कहे हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अड़तालीस संख्याको छोड़कर दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है।

शंका—तो फिर कर्म कितने हैं?

समाधान—लोकमें घोड़ा, हाथी, वृक (भेड़िया) भ्रमर, शलभ, मत्कुण, उद्देहिका (दीमक), गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने ही होते हैं।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये। उनमें बादर नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव बादर कहलाते हैं।

शंका—स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर क्यों नहीं कहा जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनक्षेत्रविधानसे बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे

पुढविकाइया जे य समग्गिआ बाउकाइया। अनु. सू. १४१, प. १७१

सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभा। तदो पडिहम्ममाणसरीरो बादरो। अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहम्ममाणसरीरो जीवो सुहुमो त्ति घेत्तव्वो। एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः। एत्थ पत्तेयसरीरणिद्देसो साहारणसरीरवणप्फइकाइयपडिसेहफलो। पुढविकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चेव। तेसिं पत्तेयवयणमो सुत्ते किण्ण कदो? तत्थ पत्तेयसरीरस्स संभवो चेव असंभवो णत्थि त्ति ण तेण ते विसेसिज्जंते 'सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति' इति न्यायात्। सुहुमणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ जीवा सुहुमा हवंति। थोवसरीरोगाहणाए वट्टमाणा जीवा सुहुमा त्ति ण घेप्पंति, सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणाखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा। अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ अपज्जत्ता त्ति घेत्तव्वा ण अणिप्पण्णसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पण्णसरीराणं पि गहणप्पसंगादो। तहा पज्जत्तणामकम्मोदयवंतो जीवा पज्जत्ता। अण्णहा णिप्पण्णसरीरजीवाणमेव गहणप्प-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अवगाहना बड़ी पाई जाती है, इसलिये स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर नहीं कह सकते हैं। अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे बादर हैं और अन्य पुद्गलोंसे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहां पर बादर और सूक्ष्म शब्दसे लेना चाहिये।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं। जिन जीवोंका प्रत्येकशरीर होता है वे *प्रत्येकशरीर जीव हैं।* यहां सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पदका निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिकायिकके प्रतिषेधके लिये किया है। पृथिवीकायिक आदि जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं।

शंका — सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है?

समाधान — उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संभव ही है असंभव नहीं है इसलिये प्रत्येक पदसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है, क्योंकि, व्यभिचारके होने पर, अथवा उसकी संभावना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा न्याय है।

सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं। यहां शरीरकी स्तोक अवगाहनामें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं, ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है, क्योंकि वेदनाक्षेत्रविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अवगाहनाकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहना भी स्तोक पाई जाती है। अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त बादर पृथिवीकायिक आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां पर लेना चाहिये। किंतु जिनका शरीर अभी निष्पन्न नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां नहीं लेना चाहिये, क्योंकि ऐसा अर्थ लेने पर पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए भी जिनका शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पदसे उनके भी ग्रहणका प्रसंग आ जाता है। उसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीव पर्याप्त हैं, प्रकृतमें पर्याप्त पदसे ऐसा अर्थ लेना चाहिये, अन्यथा जिन जीवोंका शरीर निष्पन्न हो चुका है पर्याप्त पदसे उनका ही ग्रहण होगा।

संखा । बादर-सुहुमजीवेसु पंच-चउ-भेएसु तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कधं घडदे ? ण, तेसिं जादीए एगत्तमब्भुवगमादो ।

एत्थ चोदगो भणदि । विग्गहगदीए वट्टमाणवणप्फइकाइया किं पत्तेयसरीरा आहो साहारणसरीरा इदि ? किं चातः ? ण पत्तेयसरीरा, कम्मइयकायजोगे वट्टमाणवणप्फइकाइया अणंता त्ति वट्टु वणप्फइकाइयपत्तेयसरीराणमणंतत्तप्पसंगा । ण च एवं सुत्ते, तेसिं असंखेज्जलोगमेत्तपमाणपदुप्पायणादो । ण ते साहारणसरीरा वि, तत्थ—

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ ७४ ॥

इच्चादिगाहाहि वुत्तसाहारणलक्खणाणुवलंभादो । ण च पत्तेय-साहारणसरीरवदिरित्ता वणप्फइकाइया अत्थि, तहाविहोवएसाभावादो । तस्मात्प्रत्येकं शरीरं देहो येषां ते प्रत्येकशरीरा इत्येतन्न घटत इति ?

शंका—बादर जीव पांच प्रकारके और सूक्ष्म जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूत्रमें 'तस्सेव' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उन पांच प्रकारके बादर और चार प्रकारके सूक्ष्म जीवोंके जातिकी अपेक्षा एकत्व समझ है, इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं ? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते, क्योंकि, कार्मणकाययोगमें रहने वाले वनस्पतिकायिक जीव अनन्त होनेसे वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अनन्तत्वका प्रसंग आ जाता है । परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं क्योंकि, सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका असंख्यात लोकमात्र प्रमाण कहा है । उसीप्रकार वे जीव साधारणशरीर भी नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, यहां पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण श्वासोच्छ्वासका ग्रहण होता है । इसप्रकार आगममें साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ ७४ ॥

इत्यादि गाथाओंके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका लक्षण नहीं पाया जाता है । और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यतिरिक्त वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं, क्योंकि, इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इसलिये 'जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं' यह कथन घटित नहीं होता है ?

---

१ प्रतिषु 'संखेज्ज' इति पाठः ।

२ गो. जी. १९२

एत्थ परिहारो वुच्चदे। जेण जीवेण एक्केण चेव एगसरीरट्ठिएण सुह दु क्खमणुभवेदव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो जीवो पत्तेयसरीरो। जेण जीवेण एगसरीरट्ठियबहुहि जीवेहि सह कम्मफलमणुभवेयव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो साहारणसरीरो। ण च अच्छिण्णाउअस्स तव्ववएसो, तत्र प्रत्यासत्तेरभावात्। विग्गहगईए पुण पच्चासत्ती अत्थि त्ति हवदि एसो ववएसो तम्हा ण पुव्वुत्तदोसस्स संभवो। अहवा पत्तेयसरीरणामकम्मोदयवंतो वणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा। साहारणणामकम्मोदयवंतो साहारणसरीरा त्ति वत्तव्वं। सरीरगहिदपढमसमए दोण्हं सरीराणमेगदरस्स उदओ हवदीदि विग्गहगईए वट्टमाणजीवाणं पत्तेयसाहारणसरीरववएसो ण पावदि त्ति वुत्ते, ण एस दोसो, तत्थ वि पच्चासत्ती अत्थि त्ति उवयारेण तम्हि पत्तेय साहारणसरीरववएससंभवादो। विग्गहगईए वट्टमाणाणंतजीवाणं साहारणकम्मोदयपरवसाणमण्णोण्णाणुगयत्तणेण एयचमुरगयएयसरीरम्मि वट्टमाणत्तादो वा

समाधान – यहां पर उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं। जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर अकेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है वह जीव प्रत्येकशरीर है। तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख दुःखरूप कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है, वह जीव साधारणशरीर है। परंतु जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है अर्थात् जो अभी अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक व साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यपदेश नहीं हो सकता है, क्योंकि वहां प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है। विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये वहां पर यह व्यपदेश होता है, अतएव यहां पूर्वोक्त दोष संभव नहीं है। अथवा, प्रत्येकशरीर नाम कर्मके उदयसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव प्रत्येकशरीर हैं और साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव साधारणशरीर हैं, ऐसा कथन करना चाहिये।

शंका – शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उदय होता है, इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोई भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये उपचारसे उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा साधारणशरीर संज्ञा संभव है। अथवा, साधारण नामकर्मके उदयके आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अनन्त जीव परस्परके संबन्धसे एकपनेको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहते हैं, इसलिये वे प्रत्येकशरीर ...

विशेषार्थ – वर्तमान आयुके समाप्त होने पर वर्तमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं। यहां विग्रहका अर्थ शरीर है। विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं। ... पाणिमुक्तागति लांगलिकागति और गोमूत्रिकागति इसप्रकार चार भेद हैं।

ण ते पत्तेयसरीरा। एदे छव्वीसरासीओ दव्वपमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ता हवंति। एत्थ विसेस-पदुप्पायणोवायाभावादो काल-खेत्तेहि परूवणा ण कदा।

संपहि सुत्ताविरुद्धेणाइरियपरंपरागदोवएसेण तेउक्काइयरासिउप्पायणविहाणं वत्तइस्सामो। तं जहा— एगं घणलोगं सलागभूदं ठविय अवरेगं घणलोगं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स एक्केक्कं घणलोगं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। ताधे एक्का अण्णोण्णगुणगारसलागा[1] लद्धा हवदि। तस्सुप्पण्णरासिस्स पलिदोवमस्स

इनमेंसे प्रथम गतिको छोड़कर शेष तीन गतियां विग्रह अर्थात् मोड़ेवाली हैं। जब वनस्पति-कायिक जीव ऐसी मोड़ेवाली गतिसे नूतन शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्येक या साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर होता है। इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शंकाकारने यह शंका की है कि जबतक वनस्पतिकायिक जीव विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गणना नहीं हो सकती है। इस शंकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है। एक तो यह कि यद्यपि विग्रह अर्थात् मोड़ेवाली गतिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है, यह ठीक है, फिर भी प्रत्यासत्तिसे ऐसे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कह सकते हैं। अर्थात् ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त होनेवाला है, अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है। दूसरे विग्रहका अर्थ मोड़ा न लेकर शरीर ले लेने पर ऋजुगतिकी अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् नूतन शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही जाता है, क्योंकि, ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव आहारक ही होता है।

ये पूर्वोक्त छव्वीस जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात लोकप्रमाण हैं। यहां पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है, इसलिये काल और क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा इन छव्वीस जीवराशियोंकी प्ररूपणा नहीं की।

अब सूत्राविरुद्ध आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कायिक जीव राशिके प्रमाणके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— एक घनलोकको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरे घनलोकको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर और परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब एक अन्योन्य गुणकार शलाका प्राप्त होती है। परस्पर

[1] क [illegible] । [illegible] । [illegible] गो जी पृ ३३१ (संदृष्टि)

असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गसलागा हवंति। तस्सद्धच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा। रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादो। पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूवस्स उट्ठिदमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अवरेग रूवमवणेयव्वं। ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि। वग्गसलागा अद्धच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव लोगमेत्तसलागरासी समत्तो त्ति। ताधे अण्णोण्ण-गुणगारसलागपमाणं लोगो। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलऊण त वेव सलागभूदं ठविय विरलिय-एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिद-संवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोगो रूवाहिओ। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। पुणो उप्पण्णरासिं विरलिय रूवं पडि उप्पण्ण रासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अण्णेगरूवमवणेयव्वं। तदो अण्णोण्ण-गुणगारसलागाओ[1] लोगो दुरूवाहिओ। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई उस राशिकी वर्गशलाकाएं पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं, उस उत्पन्न राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यातलोकप्रमाण होती हैं और वह उत्पन्न राशि भी असंख्यात लोकप्रमाण होती है। पुनः इस उत्पन्न हुई महाराशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिको देय रूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक कम करना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो होती हैं और वर्गशलाकाएं अर्धच्छेदशलाकाएं, वा उत्पन्नराशि असंख्यात लोकप्रमाण होती है। इसीप्रकार लोकप्रमाण शलाकाराशि समाप्त तक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण लोक होगा शेष तीन राशियां अर्थात् उस समय उत्पन्न हुई महाराशि और उसकी वर्गशलाकाएं अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होंगी। पुन इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिको त करके और इसी राशिको शलाकारूपसे स्थापित करके विरलित राशिके प्रत्येक प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर वर्गितसंवर्गित करके राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं एक अधिक ाण होती हैं। शेष तीनों राशियां अर्थात् उत्पन्न हुई महाराशि वर्गशलाकाएं और शलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। पुन उत्पन्न हुई महाराशिको विरलित र उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिको देकर गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक घटा देना चाहिये। उस समय अन्योन्य लाकाएं दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं। शेष तीनों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण

[1] प्रतिषु ' -सलागाए ' इति पाठ ।

गुणगारसलागा चउत्थवार ट्ठविदसलागरासिपमाणं होदि ।

के वि आइरिया सलागरासिस्स अद्धे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि त्ति भणंति । के वि तं णेच्छंति । कुदो ? अद्धुट्ठरासिसमुदयस्स वग्गसमुट्ठिदवाभावादो । तेउक्काइय अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा त्ति कधं जाणिज्जदे ? परियम्मवयणादो । के वि आइरिया एवं भणंति । जहा– एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाणं ण भवदि । पुणो को होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे– गुणिज्जमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूवेण पविसमाणलोगाणं जाओ सलागाओ ताओ तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा वुच्चंति । एदाओ वग्गसमुट्ठिदाओ ण पुव्विल्लाओ त्ति । तम्हा अद्धुट्ठगुणगारसलागोवएसो णिरुज्झदे, एसो ण णिरुज्झदे इदि । एवं पि ण घडदे । कुदो ? लोगद्धछेयणएहिं तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणए भागे हिदे जं लद्धं तं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण्णोण्णब्भत्थे कदे तेउक्काइय-रासी उप्पज्जदि । हेट्ठिमविरलिदरासी वि तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं भवदि ।

राशि उत्पन्न होती है। उस तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिप्रमाण है।

कितने ही आचार्य चौथीवार स्थापित शलाकाराशिके आधे प्रमाणके व्यतीत होने पर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है, ऐसा कहते हैं। परंतु कितने ही आचार्य इस कथनको नहीं मानते हैं, क्योंकि, साढ़े तीनवार राशिका समुदाय वर्गधारामें उत्पन्न नहीं है।

शंका—यह ठीक है कि हूठवार (साढ़े तीनवार) राशिका समुदाय वर्गोत्पन्न नहीं है, पर तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गधारामें उत्पन्न हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उक्त आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (हूठवार राशि) तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है। फिर कौनसी राशि तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान लोकके गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों उतनी तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं कही जाती हैं। ये अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गमें उत्पन्न हुई हैं पहलेकी अर्थात् साढ़े तीनवार राशिरूप नहीं, इसलिये हूठवार राशिप्रमाण गुणकार शलाकाओंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है, यह उपदेश नहीं।

परंतु इसप्रकारका कथन भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, लोकके अर्धच्छेदोंसे तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है और अधस्तन विरलित राशि भी तेजस्कायिक राशिकी

णवरि अण्णोण्णगुणगारसलागा तेउक्काइयरासिवग्गसलागाहिंतो असंखेज्जगुणत्तं पत्ताओ। कुदो ? तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणत्तादो। ण च एदमिच्छिज्जदे। कुदो ? तेउक्काइयरासिवग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो। तं कथं णव्वदे ? परियम्मवयणादो। तं जहा— तेउक्काइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गिज्जमाणा वग्गिज्जमाणा असंखेज्जे लोगे वग्गे हेट्ठादो उवरिमसंखेज्जगुणं गंतूण तेउक्काइयरासिस्स वग्गसलागं पावदि त्ति। एस विरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो वि। कुदो ? लोगद्धछेदणयच्छिण्णतेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणयमेत्तत्तादो। विरलिद-दिण्णमाणरासीणं समाणत्तणेण तेउक्काइयरासिस्स घणाघणधारासमुप्पण्णत्तणेण च तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्ठिदाओ त्ति ? ण एदं, इट्ठत्तादो। ण च परियम्मेण सह विरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो। एत्थ पुण अद्धुट्ठवारमेत्ताओ चेव तेउक्का-

---

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विशेष है कि अन्योन्य गुणकार शलाकाएं तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाएं उत्पन्न होती हैं वे तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं। लेकिन यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि असंख्यातगुणी हीन है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मके वचनसे जाना जाता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरोत्तर वर्गित करते हुए असंख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाएं प्राप्त होती हैं।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों वह राशि, वर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, वह लोकके अर्धच्छेदोंसे छिन्न तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदप्रमाण है।

शंका—विरलितराशि और देयराशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघन धारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं भी तो वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है। और इसतरह परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देशमात्रके प्रतिपादन करनेमें व्यापार होता है। यहां पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य

---

१ 'तेउक्काइयरासिस्स' इति पाठः।

तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणाघणे[1] वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउवरिमवग्गसमाणघणवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गसमाणरूवघणवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अवचिट्ठदे । विरलणपमाणवग्गाणं असंखेज्जदिभागेण गहिदं गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवं तेउक्काइयपरूवणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिमसंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुढविकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आउक्काइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वाउक्काइयरासी होदि । एदेसिं तिण्हं रासीणं अवहारकालुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है।

अब घनाघनमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुनः तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उससे उपरिम वर्गके समान द्विरूप घनको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोड़कर उससे उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है। विरलनरूप वर्गोंके असंख्यातवें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। इसप्रकार तेजस्कायिक जीवराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

तेजस्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है। इस पृथिवीकायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिमें मिला देने पर अप्कायिक राशिका प्रमाण होता है। इस अप्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिमें मिला देने पर वायुकायिक राशिका प्रमाण होता है।

अब इन तीनों राशियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते

१ प्रतिषु 'वेदे' इति पाठः ।

विहाणं उच्चदे। तं जहा— तेउक्काइयरासिं पुढविकाइयरासिम्हि सोहिय सेसेण तेउक्काइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण तेउक्काइयरासिमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे पुढविकाइयअवहारकालो होदि। पुणो पुढविकाइयरासिं आउक्काइयरासिम्हि सोहिय सेसेण पुढविकाइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण पुढविकाइयअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे आउक्काइयअवहारकालो होदि। पुणो आउक्काइयरासिं वाउक्काइयरासिम्हि सोहिय तत्थावसिट्ठरासिणा आउक्काइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी लब्भदि। तेण रूवाहिएण आउक्काइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे वाउक्काइयअवहारकालो होदि। एत्थुवउज्जंती गाहा—

रासिविसेसेणवहिदरासिम्हि य ज हिये[1] समुवलद्धं।
रूवूणहिएणवहिदहारो ऊणाहिओ तेण ॥ ७९ ॥

है। वह इसप्रकार है— तेजस्कायिक राशिको पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे तेजस्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाणराशिसे तेजस्कायिक राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसम्बन्धी अवहारकाल होता है। पुनः पृथिवीकायिक राशिको जलकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे पृथिवीकायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाणराशि आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर जलकायिक राशिसम्बन्धी अवहारकाल होता है। पुनः अप्कायिक राशिको वायुकायिक राशिमेंसे घटा कर यहां जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अप्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आती है। एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अप्कायिक राशिके अवहारकालके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसम्बन्धी अवहारकाल होता है। यहां पर उपयुक्त गाथा दी जाती है—

राशिविशेषसे राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे यदि एक कम करके शेष राशिसे भागहार भाजित किया जाय तो उस लब्धको उसी भागहारमें मिला देवे और यदि लब्ध राशिमें एक अधिक करके उससे भागहार भाजित किया जाय तो भागहारके भाजित करने पर जो लब्ध राशि आवे उसे भागहारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७९ ॥

---

[1] प्रतिषु ' जं हिये ' इति पाठः ।

एसा दिसिया इंदिय-कसाय-जोगमग्गणासु विसेसाहियरासीणं विसेसहीणरासीणं च णिरवयवा कायव्वा। एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अवहारकाले विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं चउण्हं विरलणाणं पुध पुध समखंडं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाणं पावदि। पुणो सगसगबादररासीहिं सगसगविरलणाए एगरूवोवरि ट्ठिदसगसगरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवूणेण सगसगअवहारकालेसु ओवट्टिदेसु लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमाणं अवहारकाला भवंति। पुणो एदे चत्तारि वि सुहुमजीवअवहारकाले पुध पुध विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सगसगसुहुमपमाणं पावेदि। पुणो सगसगविरलणाए एगरूवोवरिट्ठिदसुहुमरासिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सगसगसुहुमअवहारकालं ओवट्टिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमपज्जत्ताणमवहारकाला भवंति। पुव्वं भागलद्धसंखेज्जरूवेहिं सगसगसुहुमजीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगसुहुमअपज्जत्तअवहारकाला भवंति। चउण्हं बादराणं पुव्वुप्पाइदाई असंखेज्जलोगमेत्त

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष हीन राशियोंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह विधि करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको विरलित करके और तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पृथक् पृथक् समान खंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी अपनी बादरकायिक जीवराशिके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक एक ऊपर स्थित अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है। एक कम उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके अपवर्तित करने पर जो जो लब्ध आवे उसे उसी अपने अपने अवहारकालमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंबन्धी इन चारों ही अवहारकालोंको पृथक् पृथक् विरलित करके और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको समान खंड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक विरलन अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त जीवराशिके प्रमाणसे भाजित करने पर वहां जो संख्यात लब्ध आवें एक कम उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं अवहारकालोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। पहले भाग देने पर जो संख्यात लब्ध आये थे उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। चारों बादरोंके

१ प्रतिषु 'ण्णाओ' इति पाठः।

गुणगारेहिं सगसगसामण्णअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगबादराणमवहारकाला भवंति।

पुणो सुत्ताविरुद्धेण आइरियोवएसेण सुत्तं व पमाणभूदेण बादराणमद्धच्छेदणए वत्तइस्सामो। तं जहा— एगसागरोवमादो एगं पलिदोवमं घेत्तूण तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेगखंडं पुध ट्ठविय सेसबहुभागे तम्हि चेव पक्खित्ते बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागा हवंति। जं पुध ट्ठविदेयखंडं तं पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे पुव्वरासिं दुप्पडिरासिं काऊण पक्खित्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणं अद्धच्छेदणयसलागा हवंति। एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढवि-बादरआऊणं च वत्तव्वं। अंते अवणिदएगखंडं बादरआउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागासु पक्खित्ते बादरवाउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागा सायरोवममेत्ता जादा[1]। बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे बादरतेउक्काइयरासी उप्पज्जदि। अहवा घणलोयछेदणएहिं बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि

जो पहले असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार उत्पन्न किये थे उनसे अपने अपने सामान्य अवहार कालोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके अवहारकाल होते हैं।

अब आगे सूत्रके समान प्रमाणभूत सूत्राविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्धच्छेद बतलाते हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पल्योपमको ग्रहण करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात् पल्यकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं। जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि अर्थात् बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंकी दो प्रतिराशियां करके और उनमेंसे एकमें मिला देने पर बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक और बादर अप्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका कथन करना चाहिये। अन्तमें घटाये हुए एक खंडको बादर अप्कायिक जीवोंकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकायिक जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं हो जाती हैं।

बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है। अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके

---

१ [illegible]

घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि। अहवा बादरतेउअद्धच्छेदणए बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरद्धछेदणएहिंतो सोहिय अवसेसरासिं विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि। अहवा बादरवणप्फइपत्तेयरासिस्स अहियद्धच्छेयणयमेत्ते[1] अद्धच्छेयणए कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि। अहवा घणलोगछेदणएहि अहियद्धछेदणएसु ओवट्टिदेसु तत्थ लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए जो रासी तेण बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी होदि। एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवाउकाइयाणं अप्पप्पणो अद्धच्छेदणएहिंतो बादरतेउकाइयरासी उप्पादेदव्वा। एवं बादरतेउकाइयरासिस्स सत्तारसविहा परूवणा कदा।

भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देकर परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है। अथवा, बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंको बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है। अथवा, बादर वनस्पति प्रत्येकराशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है। अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि आवे उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि आती है। इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये। इसप्रकार बादर तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणा की।

विशेषार्थ—ऊपर पांच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न करके बतला आये हैं। प्रथमवार तेजस्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका और दूसरीवार घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई है। अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशिके उत्पन्न करनेमें बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंकी मुख्यता

1 प्रतिषु 'अद्धच्छेदणयमत्ते' इति पाठः।

बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीररासिस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णो-ण्णब्भत्थे कदे बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगछेदणयं बादरवणप्फइपत्तेयसरीरअद्धछेयणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । बादरतेउकाइय-रासीदो बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे अहियद्धच्छेयणमेत्ते[1] बादरतेउकाइय-रासिम्मि दुगुणगुणगारे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा अब्भहिय-

---

है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि बड़ी है, अतएव तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे इस राशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों, उतनीवार दो रखकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके भाजित कर देने पर, अथवा जितने अर्धच्छेद अधिक हैं उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके आधित करने पर, बादर तेजस्कायिक जीव राशि उत्पन्न होती है । बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय करके बादर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करनेके दो प्रकार तो ये हुए । तीसरे प्रकारमें घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय और ले लिया गया है । अर्थात् घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीव राशिके बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित कर देने पर जो लब्ध आवे उतनीवार घनलोकके परस्पर गुणित करने पर आई हुई राशिका बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । इन्हीं तीनों प्रकारोंसे बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करने पर बारह प्रकारसे तेजस्कायिक राशिका प्रमाण उत्पन्न होता है । इन बारह भेदोंमें पूर्वोक्त पांच भेदोंके मिला देने पर तेजस्कायिक राशिकी प्ररूपणा सत्रह प्रकारसे हो जाती है ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर अधिक अर्धच्छेदप्रमाण बादर तेजस्कायिक राशिके दुगुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको विरलित करके और

---

१ प्रतिषु 'अद्धच्छेयणमेत्त' इति पाठः ।

सामण्णसंखेज्जाणं गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव। एदेण अवगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण सादिणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण[1] ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं घेत्तव्वं। तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो तेण पडिभागेण भागहारेण। एत्थ णिमित्ते तइया दट्ठव्वा। एदेण अवहारकालेण बादरपुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि त्ति उत्तं होदि।

सामान्य वचन देनेसे सौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है। यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात अवगत हो गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये। उस प्रमाणांगुलके असंख्यातवें भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे। यहां निमित्तमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। इस अवहारकालसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

विशेषार्थ—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका है। आठ यवका एक उत्सेधांगुल होता है। पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है।

---

१ पदरासंखेज्जदिहिदपदरअसंखानदे अणपदरे। जलभूणिपबादरया पुण्णा आवलिअसंखभजिदकमा॥ गो. जी. १ १

जोणीभूदसरीरा तव्विवरीदसरीरा चेदि। तत्थ जे बादरणिगोदाणं जोणीभूदपत्तेयसरीरजीवा ते बादरणिगोदपदिट्ठिदा भणंति। के ते ? मूलयद्दु-मल्लय सूरण-गलोइ-लोगमादओ। उत्तं च—

> बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा।
> जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥ ७६ ॥

सुत्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमेव गहणं कदं, (ण तब्भेदाणं)? ण, बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरजीवेसु चेव तेसिमंतब्भावादो। एदेसिं बादरपज्जत्ताणं पमाणाणं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे। असंखेज्जा इदि सामण्णवयणे

तो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उनसे विपरीत शरीरवाले अर्थात् बादरनिगोद जीवोंके अयोनिभूत प्रत्येकशरीर जीव। उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं।

शंका—वे बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूली, मदरक (?) मल्लक (अद्रक), सूरण, गलोइ (गुडूची या गुरबेल) लोकेभ्वरप्रभा ? आदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं। कहा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है, अथवा दूसरा कोई जीव उत्पन्न होता है। वह और जितने भी मूली आदिक सप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक ही हैं ॥ ७६ ॥

शंका—सूत्रमें बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है, उनके भेदोंका क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका अन्तर्भाव हो जाता है।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं। सूत्रमें 'असंख्यात हैं' ऐसा

---

१ आ प्रतौ 'गलोई' इति पाठः।

२ गो. जी. १८७ बीए जोणिभूए जीवो वक्कमइ सो व अन्नो वा। जो वि य मूले जीवो सो वि य पत्ते पढमयाए ॥ प्रज्ञापना १, ४५, गा. ९२, पृ. ११९

३ प्रतिषु 'गहणं कधं ण' इति पाठः। ४ प्रतिषु 'बादरआउक्काइय' इति पाठः नास्ति।

पयण्हमसंखेज्जाणं गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव। एदेण अवगद असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण तद्दिढिणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइय पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग पडिभागेण[1] ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं घेत्तव्वं। तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो तेण पडिभागेण भागहारेण। एत्थ णिमित्ते तइया दट्ठव्वा। एदेण अवहारकालेण बादरपुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि त्ति अत्थो होदि।

सामान्य वचन देनेसे सभी प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है। यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात अवगत हो गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये। उस प्रमाणांगुलके असंख्यातवें भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे। यहां निमित्तमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। इस अवहारकालसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है।

विशेषार्थ—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका है। आठ यवका एक उत्सेधांगुल होता है। पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है।

---

[1] [illegible]

गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे असंखेज्जाओ पदरावलियाओ लब्भंति । कारणं गदं । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियाए ओवट्टिदाए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ पदरावलियाओ हवंति । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वेरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमोवट्टिय लद्धेण तं चेव पदरावलियं गुणिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय पदरावलियघणे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय तेण पदरावलियघणपढमवग्गमूलं गुणिय पदरावलियघणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे बादर

आती है । प्रतरावलीके तृतीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसीप्रकार नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर असंख्यात प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके भाजित करने पर यहां जितना प्रमाण लब्ध आवे तत्प्रमाण प्रतरावलियां बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे द्विरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी प्रतरावलीको गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवराशि होती है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर बादर

तेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियघणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे पदरावलियघणो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि ।

उवरिमवियप्पो तिविहो गहिदादिभेएण । दुरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अहवा पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । (एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी आगच्छदि ।) अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्ग-स्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा– पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण

तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर प्रतरावलीका घन आता है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । अथवा, प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता

१ प्रतिषु ' त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदं ' इत्यधिकः पाठः ।

पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदि भागेण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सु वरिमवग्गं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । तं जहा— पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण तम्हि भागे हिदे पदरावलिय उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिम वग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । पदरावलिय उवरिमवग्गस्स घणावलियउवरिमवग्गस्स घणाघणा (-वलियउवरिमवग्गस्स) च असंखेज्जदि

है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आता है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावलीके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनावलीके उपरिम वर्गके

भागेण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो। एत्थ सुत्तगाहा—

आवलियाए वग्गो आवलियासंखभागगुणिदो दु।
तम्हा घणस्स अंतो बादरपज्जत्ततेऊण ॥ ७७ ॥

बादरवाउकाइयपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ९२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो। असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण णवविहासंखेज्जस्स गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो णिक्खेवादीहि पुव्वं व परूवेदव्वो। एदम्हादो सुत्तादो सेसअट्ठविहअसंखेज्जस्स पडिसेहे जादे वि असंखेज्जासंखेज्जाणि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणेयवियप्पाओ तदो तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

असंख्यातवें भागरूप और घनावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये। यहां सूत्रगाथा दी जाती है—

चूंकि आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है, इसलिये वह प्रमाण घनावलीके भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है। सूत्रमें 'असंख्यात हैं' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निक्षेप आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलेके समान प्ररूपण करना चाहिये। इस सूत्रसे शेष आठ प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां घनलोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी हैं, इसलिये उनका प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण हैं,

१ × आ आ × ४४ × × आ ३ ५। २ [illegible] गो. जी. २१ [illegible]

असंखेज्जाणि त्ति णिद्देसो जगपदरादिहेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो। घण- लोगादिउवरिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठं लोगस्स संखेज्जदिभागवयणं। खेत्तेण इदि वयणे तइया दट्ठव्वा। सेसं सुगमं। संखेज्जरूवेहि घणलोगे भागे हिदे बादरवाउपज्जत्त- दव्वमागच्छदि त्ति उत्तं होदि। एत्थ गाहा—

जगसेढीए वग्गो जगसेढीसंखभागगुणिदो दु।
तम्हा घणलोगंतो बादरपज्जत्तवाऊणं ॥ ७८ ॥

वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पतिः कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, वनस्पतिकाया एव वनस्पति-

---

जो असंख्यात जगप्रतरप्रमाण लोकके संख्यातवें भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन जगप्रतर आदि अधस्तन असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है। घनलोक आदि उपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके लिये 'लोकके संख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन दिया है। 'खेत्तेण' इस पदमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये। शेष कथन सुगम है। संख्यातसे घनलोकके भाजित करने पर बादर वायु- कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य आता है, यह इस कथनका तात्पर्य है। यहां गाथा दी जाती है—

चूंकि जगश्रेणीके वर्गको जगश्रेणीके संख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर वायु- कायिक पर्याप्त राशि आता है। इसलिये उक्त प्रमाण घनलोकके भीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पति- कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय अर्थात् शरीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकाय कहलाते हैं।

---

१ [illegible]

काइया । ण च विग्गहगदीए वट्टमाणाणं वणप्फइकाइयत्तं ण पावदि त्ति चे, ण एस दोसो, वणप्फइकाइयसंबंधेण सुहदुक्खाणुहवणणिमित्तकम्मेणेयत्तमुवगयजीवाणमुवयारेण वणप्फइकाइयत्ताविरोहा । वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्गहगईए वट्टमाणा वि वणप्फइकाइया भवंति । जेसिमणंताणंतजीवाणमेक्कं चेव सरीरं भवदि साधारणरूवेण ते णिगोदजीवा भण्णंति । संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो अणंतणिद्देसो । सेसं सुगमं । अणंता इदि सामण्णवयणेण णवविहस्स अणंतस्स गहणे पत्ते अविवक्खियस्स अट्ठविहाणंतस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तथा वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक कहलाते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो विग्रहगतिमें स्थित जीवोंके वनस्पतिकायिकपना नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वनस्पतिकायके संबन्धसे सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपचारसे विग्रहगतिमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है। जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उदय पाया जाता है वे विग्रहगतिमें रहते हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं।

विशेषार्थ—यहां पर शंकाकारका यह अभिप्राय है कि जो जीव विग्रहगतिमें रहते हैं उनके एक दो या तीन समयतक नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक आदि नहीं कह सकते हैं। इस शंकाका समाधान यह है कि विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या त्रसकाय नामकर्मका उदय हो जाता है। स्थावरकायके पृथिवीकायिक आदि पांच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंको छोड़कर स्वतन्त्र नहीं पाया जाता है, इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय, वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उदय विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही हो जाता है, यह सिद्ध हुआ। अब यदि एक, दो या तीन समयतक उसके नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं भी होता है, तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है, इसलिये उसे उपचारसे वनस्पतिकायिक आदि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है।

जिन अनन्तानन्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें निगोद जीव कहते हैं। सूत्रमें संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्देश किया है। शेष कथन सुगम है। सूत्रमें 'अनन्त हैं' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके अनन्तोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित आठ प्रकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

गुणंच जाणाविज्जदे। तं जहा– पुव्विल्लसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तत्तो असंखेज्जगुणो लोगो त्ति वुत्तो। कप्पस्स गुणगाररासीदो घणलोगगुणगारो अणंतगुणो। कुदो? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसोलसपदियअप्पाबहुगवयणादो जाणिज्जदे। तम्हा सफलो एस सुत्तारंभो त्ति घेत्तव्वं।

संपहि एत्थ धुवरासी उप्पाइज्जदे। तं जहा– पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चेव पमाणं वग्गं वणप्फइकाइयभाजिदं च सव्वजीवरासिम्हि पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि। वणप्फइकाइयवदिरित्तसेसरासिणा[1] सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धरूवूणेण भजिदसव्वजीवरासिं तम्हि चेव पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि त्ति वुत्तं भवदि। एदेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फइकाइयरासी आगच्छदि। वणप्फइकाइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासी होदि। एदेण पुव्वुत्तअसंखेज्जलोगवणप्फदिकाइयधुवरासिभागहारेण रूवाहिएण वणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयधुवरासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परन्तु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा लोक गुण्यमान राशि कहा गया है। तथा कल्पकी गुणकार राशिसे घनलोकका गुणकार अनन्तगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— इस सूत्रके अवयवभूत सोलहपदिक अल्पबहुत्वके वचनसे यह जाना जाता है।

इसलिये इस सूत्रका आरंभ सफल है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये।

अब यहां ध्रुवराशि उत्पन्न की जाती है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, त्रसकायिक और अकायिक, इन जीवराशियोंके प्रमाणको तथा वनस्पतिकायिक जीवराशिके प्रमाणसे भाजित उक्त राशियोंके प्रमाणके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है। वनस्पतिकायिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस ध्रुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वनस्पतिकायिक जीवराशि आती है। वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है। ऊपर जो असंख्यात लोकप्रमाण वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिका भागहार कह आये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशि होती है। पुन

[1] प्रतिषु 'सेसरासी' इति पाठः।

होदि । पुणो सुहुमवणप्फइअपज्जत्तरासिणा सुहुमवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे जं लद्धं तं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो पुधट्ठविदपडिरासिम्हि संखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सुहुमवणप्फदिकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्तधुवरासी होदि । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तएहि बादरवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे लद्धं असंखेज्जलोगं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तधुवरासी होदि । पुध ट्ठविदरासिणा रूवूणेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । एवं चेव णिगोदाणं पि धुवरासी उप्पादेदव्वो । णवरि पत्तेयसरीरेहि सह सव्वपक्खेवरासीओ भवंति । सेसविहाणं वणप्फइकाइयभंगो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया असंखेज्जा ॥ ९८ ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवराशिसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिके भाजित करने पर यहां जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिके द्वारा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुन पृथक् स्थापित पूर्वोक्त प्रतिराशिके संख्यात प्रमाणमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके भाजित करने पर जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उनकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिसे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है । पुन पृथक् स्थापित प्रतिराशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसीप्रकार निगोद जीवोंकी भी ध्रुवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इतना विशेष है कि प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंके साथ सात प्रक्षेपराशियां होती हैं । शेष विधि वनस्पतिकायिकके कथनके समान है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९८ ॥

१ प्रतिषु '[illegible]' इति पाठः ।
२ [illegible] । त. सि. १, ८

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अणेयसो परूविदो त्ति ण वुच्चदे। असंखेज्जा इदि सामण्ण-वयणेण णाणाविहअसंखेज्जाणं गहणे पत्ते अविवक्खिदे अवणिय विवक्खियपरूवणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उत्तो त्ति ण उच्चदे। तं च असंखेज्जासंखेज्जयमणेय-वियप्पमिदि तस्स विसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदेण सुत्तेण जगपदरादो जगसेढीदो च उवरिम-हेट्ठिमअसंखेज्जवियप्पा अवणिदा भवंति। 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण'[1] इमेण वयणेण जगपदरस्स अंतब्भूद-

इस सूत्रका अर्थ कईवार कह चुके हैं, इसलिये यहां नहीं कहते हैं। 'सूत्रमें असंख्यात हैं' इस सामान्य वचनके देनेसे नाना प्रकारके असंख्यातोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित असंख्यातोंका अपनयन करके विवक्षित असंख्यातके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ अनेकवार कहा जा चुका है, इसलिये नहीं कहते हैं। वह असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये उसके विशेषके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा त्रसकायिकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रसे जगप्रतर और जगश्रेणीसे ऊपर और नीचेके असंख्यात विकल्प अपनीत होते हैं। 'अंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे' इस वचनसे जगप्रतरके अन्तर्भूत

१ प्रतिषु 'असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण' इति पाठः।
२ प्रतिषु 'असंखेज्जदिभागपडिभागेण' इति पाठः।

सेसवियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्ठव्वा । जगपदरं कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं पदरंगुलं पि कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं चेव । तेसिं दुविदमच्चभागहारा वि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्मं चेदि जाणावणट्ठं अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गावयणं । अण्णहा तस्स फलाणुवलंभादो । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता च भवंति त्ति वुत्तं भवदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १०१ ॥

एत्थ तसकाइय तसकाइयपज्जत्ता इदि पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे । कुदो ? उवरि पुध अपज्जत्तसुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ १०२ ॥

शेष विकल्प प्रतिषिद्ध हो जाते हैं, ऐसा समझना चाहिये । जगप्रतर कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । प्रतरांगुल भी कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । उसीप्रकार उनके स्थापित भागहार भी वर्गसमुत्थित और कृतयुग्मरूप हैं, इसका ज्ञान करानेके लिये 'अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग' यह वचन दिया, अन्यथा उसकी दूसरी कोई सफलता नहीं पाई जाती है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागसे और प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर यथाक्रमसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव होते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' इस वचनकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, क्योंकि आगेके लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ पृथक्‌रूपसे अन्यथा बन नहीं सकता था । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—चूंकि आगे त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन करनेवाला सूत्र पृथक्‌रूपसे रचा गया है, इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' पदकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है । इस कथनका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामान्य त्रसकायिक जीवोंमें लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव हो जाता है फिर भी लब्ध्यपर्याप्तक जीव गुणस्थानप्रतिपन्न नहीं होते हैं, अथात् मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । अतएव इस विषयका ज्ञान करानेके लिये त्रसकायिकोंके प्रमाणके अनन्तर बीचमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण कह कर अनन्तर लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण कहा ।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके प्रमाणके समान है ॥ १०२ ॥

बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तेहिंतो[1] एगट्ठे कदे तसकाइयअपज्जत्ता हवंति। कधं तेसिं परूवणा पंचिंदियअपज्जत्तपरूवणाए समाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं पेक्खिऊण तहोवएसादो। अत्थदो पुणो तेसिं विसेसो गणहरेहि वि ण वारिज्जदे।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदअपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदअपज्जत्ता होंति। सेसं अणंतखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपज्जत्ता होंति। सेसे अणंतखंडे कए बहुखंडा अकाइया होंति। सेसरासीदो असंखेज्जलोगपमाणमवणेऊण पुध ठविय पुणो सेसरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिय एयखंडमवणेऊण तं पि पुध ठविय पुणो सेसरासिं चत्तारि समपुंजे काऊण अवणिदएयखंडं असंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते सुहुमवाउकाइया होंति। सेसेगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडा

शंका—जब कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंको एकत्र करने पर त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभयत्र अर्थात् पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त और त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त, इन दोनोंका प्रमाण लानेके लिये प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप भागहारको देखकर इस प्रकारका उपदेश दिया। अर्थकी अपेक्षा तो उन दोनोंकी प्ररूपणामें विशेष है उसका गणधर भी निवारण नहीं कर सकते हैं।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकायिक जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे असंख्यात लोकप्रमाण राशिको निकालकर पृथक् स्थापित करके पुनः शेष राशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड आवे उसे निकालकर और उसे भी पृथक् स्थापित करके पुनः जो शेष बहुभाग राशि है उसके चार समान पुंज करके निकाले हुए पृथक् स्थापित एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित

१ प्रतिषु 'अपज्जत्ताणंहितो' इति पाठ।

खंडे कए बहुखंडा तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति। सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो होंति। एवं णेयव्वं जाव संजदासंजदा त्ति। सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति। सेसे संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। सत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरपुढविकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता। तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जसमया। सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया। एवं आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयाणं च सत्थाणं वत्तव्वं। सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता। तेसिं

असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। इसीप्रकार संयतासंयतोंका प्रमाण आने तक भाग भागका कथन ले जाना चाहिये। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमाण बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत जीव हैं। इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक भाग भागका कथन करना चाहिये।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। इसीप्रकार जलकायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवो तसकाइयअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। एवं बादरवणप्फइपज्जत्त-पत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरपुढविपज्जत्त-बादरआउपज्जत्त-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-तसकाइयअपज्जत्ताणं च वत्तव्वं। सासणादीणमोघसत्थाणभंगो। एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं।

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। पुढविकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा बादरपुढविपज्जत्ता। तस्सेव अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। त्रसकायिक जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कम्भसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। त्रसकायिक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कम्भसूची गुणकार है। जगप्रतर त्रसकायिक जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त, त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि और त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। कायमार्गणामें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। अथवा, बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म

मेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तपरिहीणसुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । एगुत्तरवड्ढिकमेण एत्तिया चेव अप्पाबहुग-वियप्पा । अवहारकाल-विक्खंभसूई-सेढि-पदर-लोगे कमेण पवेसिय अप्पाबहुगे कीरमाणे वि वियप्पा लब्भंति त्ति ? ण, ताण कमप्पवेसस्स कारणाभावा । पुढविकाइयरासिस्स सगहभेयपदुप्पायणट्ठं पुढविकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अवहारकालादिसु कमेण पवेसिज्जमाणेसु पुढविकाइयरासी भिज्जदे । तदो एत्तिया चेव एगुत्तरवड्ढिवियप्पा होंति त्ति ट्ठिदं । अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो बादरपुढविकाइयपज्जत्तअव-हारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अवहारकालवग्गो । सेढी असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई ।

उतने प्रमाणसे अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक और पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितने प्रमाणसे अधिक हैं? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उतनेसे अधिक हैं। इसप्रकार आठवां विकल्प है। इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे अल्पबहुत्वके इतने ही विकल्प होते हैं।

शंका — अवहारकाल, विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक इनमें क्रमसे प्रवेश कराके अल्पबहुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं?

समाधान — नहीं, क्योंकि, इन अवहारकाल आदिकके क्रमप्रवेशका कोई कारण नहीं है। स्वगत पृथिवीकायिक राशिके भेदोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक राशिका क्रमसे भेद किया है। परंतु अवहारकालादिकके क्रमसे प्रविष्ट कराने पर पृथिवीकायिक राशि भेदको प्राप्त नहीं होती है। इसलिये एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे विकल्प इतने ही होते हैं यह बात निश्चित हो जाती है।

अब अंतिम विकल्पको बतलाते हैं — बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यात-गुणी है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यात गुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। जगप्रतर (बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। [illegible]

१ [illegible]

पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता[१] विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं आउ-तेउ-वाऊणं परत्थाणं जाणिऊण वत्तव्वं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अप्कायिक तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वको समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमको बतलानेवाला कोष्ठक

बा पृ	बा पृ	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प	बा पृ प
सू पृ	सू पृ	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अप	बा पृ अ	बा पृ अ
	पृ सा	सू पृ अप	सू पृ अप	बा पृ	बा पृ	बा पृ	बा पृ
		सू पृ प	सू पृ प	सू पृ अप	सू पृ अप	सू पृ अ	सू पृ अ
			पृ सा	सू पृ प	सू पृ प	पृ अ	पृ अ
				सू पृ	सू पृ	सू पृ प	सू पृ प
					पृ सा	पृ प.	पृ प.
						सू पृ	सू पृ
							पृ सा.

१ प्रतिषु 'पज्जत्त' इति पाठः ।

काइयपज्जत्ता। बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा। वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तविरहिदसुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण। एवमट्ठमं पि। णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया।

वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसीप्रकार आठवां विकल्प भी है। इसमें इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं।

वनस्पतिकायिक जीवोंके पदोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक

बा व सू व	बा व सू व व	बा व प बा व अ सू व अ सू व प	बा व प बा व अ सू व अ सू व प व	बा व प बा व अ बा व सू व अ सू व प सू व	बा व प बा व अ बा व सू व अ सू व प सू व व	बा व प बा व अ बा व सू व अ व अ सू व प व प सू व	बा व प बा व अ बा व सू व अ व अ सू व प व प सू व व

संपहि एदेसु णवपदेसु णिगोदछप्पदाणि पविसिय पण्णारसपदअप्पाबहुगं वत्त-
इस्सामो। सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया।
केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण।
उवरि अट्ठपदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फदिकाइय-
पज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा
लोगा। बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिकाइय-
पत्तेयसरीरअपज्जत्तअसंखेज्जलोगमेत्तेण। उवरि सत्तपदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा
बादरणिगोदपज्जत्ता। बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता
असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदा विसेसाहिया।
केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण। बादर-
वणप्फदिकाइया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण। उवरि

अब इन पूर्वोक्त नौ स्थानोंमें निगोदसम्बन्धी छह स्थानोंका प्रवेश कराके पन्द्रह स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, जो कि जगप्रतरके असंख्यातवें भाग हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसके ऊपर आठ स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, जो कि असंख्यात लोकप्रमाण हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसके ऊपर सात स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादरनिगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरवणप्फइकाइयमेत्तेण ।

अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर निगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं। निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं।

सव्वहि बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्त बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्त बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुव्विल्लपण्णारसपदेसु पक्खिविय एक्कवीसपद अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपज्जत्तदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्जदि

पूर्वोक्त भी राशियोंमें निगोदकी छह राशियां मिला देने पर अल्पबहुत्वके क्रमको बतलानेवाला कोष्ठक

बा नि प	बा नि प	बा नि प	बा नि प	बा नि प	बा नि प
बा व प	बा व प	बा व प	बा व प	बा व प	बा व प
बा व अ	बा नि अ	बा नि अ	बा नि अ	बा नि अ	बा नि अ
बा व	बा व अ	बा व अ	बा व अ	बा व अ	बा व अ
सू व अ	बा व	बा नि	बा नि	बा नि	बा नि
व अ	सू व अ	बा व	बा व	बा व	बा व
सू व प	व अ	सू व अ	सू व अ	सू व अ	सू व अ
व प	सू व प	व अ	नि अ	नि अ	नि अ
स व	व प	सू व प	व अ	व अ	व अ
व	सू व	व प	स व प	सू व प	सू व प
	व	स व	व प	नि प	नि प
		व	सू व	व प	व प
			व	सू व	सू व
				व	नि
					व

अब बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोदप्रतिष्ठित इन छह स्थानोंको पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें मिलाकर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोद पर्याप्तोंका द्रव्य उससे अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग

तिसु बादरवणप्फदि पत्तयसरीर— बादरवणप्फदि पत्तयसरीर इति पाठः ...

भागो। को पडिभागो? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं पडिभागो। उवरि चोद्दसपदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। को पडिभागो? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वपडिभागो[1]। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण। बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा। को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरदव्वपडिभागो। उवरि चोद्दस पदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फइ-

क्या है? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है। इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है। इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

१ क-प्रतौ 'असंखेज्जा लोगा। को पडिभागो? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वपडिभागो' इति पाठो [illegible]।

२ अ-प्रतौ 'को गुणगारो [illegible] दव्वपडिभागो' इति पाठो नास्ति।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व। अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण। उवरिमपण्णारस पदाणि पुव्वं व।

अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं। अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुणा है। बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे चौथे आदिमें क्या अन्तर है। यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है तो भी इनसे अल्पबहुत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है। विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा सकता है। वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नौ भेदोंकी मुख्यतासे, दूसरेमें उन नौ भेदोंमें ६ और मिलाकर पन्द्रह भेदोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपर्युक्त पन्द्रह भेदोंमें छह भेद और मिलाकर इक्कीस भेदोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है। जहां 'ऊपर सात स्थान पहलेके समान हैं, पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि प्रारम्भके जितने स्थानोंमें विशेषता कहनी थी वह कह दी। आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि स्थान पहलेके कहे हुए जान लेना चाहिये।

संपहि बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरप
अवहारकालो तस्सेव विक्खंभसूई बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई सेढी जगपदर
इदि सत्त पदाणि एक्कवीसपदेसु पक्खिविय अट्ठावीसपदप्पाबहुगं वत्तइस्सा

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वके क्रमका ज्ञान करानेवाला कोष्टक

बा व प्र प	बा व प्र प	बा व प्र प	बा व प्र प	बा व प्र
बा नि प	बा नि प्रति प	बा नि प्रति प	बा नि प्रति प	बा नि प्रति
बा व प	बा नि प	बा व प्र अ	बा व प्र अ	बा व प्र
बा नि अ	बा व प	बा व प्र	बा व प्र	बा व प्र
बा व अ	बा नि अ	बा नि प	बा नि प्रति अ	बा नि प्रति
बा नि	बा व अ	बा व प	बा नि प	बा नि प्रति
बा व	बा नि	बा नि अ	बा व प	बा नि प
सू व अ	बा व	बा व अ	बा नि अ	बा व प
नि अ	सू व अ	बा नि	बा व अ	बा नि अ
व अ	नि अ	बा व	बा नि	बा व अ
सू व प	व अ	सू व अ	बा व	बा नि
नि प	सू व प	नि अ	सू व अ	बा व
व प	नि प	व अ	नि अ	सू व अ
सू व	व प	सू व प	व अ	नि अ
नि	सू व	नि प	सू व प	व अ
व	नि	व प	नि प	सू व प
	व	सू व	व प	नि प
		नि	सू व	व प
		व	नि	सू व
			व	नि
				व

अब बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल, बादर वनस्पतिकायिक
प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल, इसीकी विष्कंभसूची, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तों की
विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक, इन सात स्थानोंको पूर्वोक्त इक्कीस स्थानों में
मिलाकर अट्ठाइस स्थानोंमें अल्पबहुत्वका बतलाते हैं— यहां ये सातों स्थान क्रमशः मिल

तदो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव संजदासंजदअवहारकालो त्ति। तदो बादरतेउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। तदो संजदासंजददव्वमसंखेज्जगुणं। एवं जाणिऊण णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति। तदो बादरआउपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। बादरपुढविपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तसकाइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तसकाइयअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेगखंडेण। तसकाइयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। तदो तसकाइयपज्जत्त-

---

उपदेश नहीं पाया जाता है। बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार समझकर संयतासंयतोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये। संयतासंयतोंके अवहारकालसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त असंख्यातगुणे हैं। इनसे संयतासंयतोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार जानकर पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे बादर जलकायिक जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर जलकायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। बादर निगोदप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको भाजित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। त्रसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे त्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कम्भसूची

१ [illegible]

विसेसाहिया। सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया। वाउपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमतेउकाइया विसेसाहिया। तेउकाइया विसेसाहिया। सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया। पुढविकाइया विसेसाहिया। सुहुमआउकाइया विसेसाहिया। आउकाइया विसेसाहिया। सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया। वाउकाइया विसेसाहिया। अकाइया अणंतगुणा। बादरणिगोदपज्जत्ता[1] अणंतगुणा। बादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया। बादरणिगोदा विसेसाहिया। बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया[2]। सुहुमवणप्फइअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया। वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइपज्जत्ता संखेज्जगुणा। णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया। वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया।

सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अप्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। तेजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म अप्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अप्कायिक जीव सूक्ष्म अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वायुकायिक जीव अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वायुकायिक जीव सूक्ष्म वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। अकायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे हैं। बादर निगोद पर्याप्त जीव अकायिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। बादर वनस्पति पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं। बादर वनस्पति अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं। निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वनस्पति अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं। निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म वनस्पति

१ प्रतिषु 'अणंत' इति पाठः।

२ आ-कप्रत्योः 'सुहुमवणप्फइ विसे' इति अधिकः पाठः।

णिगोदा विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एत्थ तिण्हं चेव वचिजोगाणं संगहो किमट्ठो कदो ? ण एस दोसो । कुदो ? वचिजोग-असच्चमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगाणं दव्वालावं पडि समाणत्ताभावादो । समाणालावाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालावाणं । देवाणं जाणि दव्व-काल-खेत्तपमाणाणि पुव्वं परूविदाणि तेसिं संखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठण्हं रासीणं पमाणं होदि । कुदो ? जदो एदे अट्ठ वि जोगा सण्णीणं चेव भवंति, णो असण्णीणं, तत्थ पडिसिद्धत्तादो । सण्णीसु वि पहाणा[२] देवा चेव, सेसगदिसण्णीणं देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ वि देवेसु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कधं जाणिज्जदे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक और निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगियों और तीन वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग हैं ॥ १०३ ॥

शंका — यहां तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्यालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समानालापोंका ही एक योग होता है, भिन्नालापोंका नहीं । देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा जो प्रमाण पहले कह आये हैं उससे संख्यातवें भाग इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि, ये आठों योग संज्ञियोंके ही होते हैं असंज्ञियोंके नहीं, क्योंकि, असंज्ञियोंमें ये आठों योग प्रतिषिद्ध हैं । संज्ञियोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, शेष तीन गतिके संज्ञी जीव देवोंके संख्यातवें भाग ही हैं । वहां देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि, काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यातगुणा है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

१ मनोयोगिनः ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिषु 'पहाण ' इति पाठः ।

जोगद्धप्पाबहुगादो। तं जहा- 'सव्वत्थोवा मणजोगद्धा। वचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। कायजोगद्धा संखेज्जगुणा त्ति।' पुणो एदेसिमद्धाणं समासं काऊण तेण तिण्हं जोगाणं सण्णिरासिमोवट्टिय अप्पप्पणो अद्धाहि पुध पुध गुणिदे मण वचि कायजोगरासीओ हवंति। तदो द्विदमेदं एदे अट्ठ वि मिच्छाइट्ठिरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो त्ति।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि उत्तं। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तेहिंतो एदेसिं अत्थि महंतो भेदो। कुदो? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो। तं पि कधं णव्वदे? गुणगुणद्धप्पाबहुगादो। सेसं सुगमं।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान— योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है। वह इसप्रकार है— 'मनोयोगका काल सबसे स्तोक है। वचनयोगका काल उससे संख्यातगुणा है। काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी संज्ञी जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है। इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशियां देवोंके संख्यातवें भाग हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १०४ ॥

पल्योपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीवराशियोंकी समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो सासादनादि संयतासंयतान्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशियां ओघराशिके संख्यातवें भाग हैं।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— पूर्वोक्त योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है। शेष कथन सुगम है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

---

१ प्रतिषु 'असंखेज्जा' इति पाठः।

एत्थ ओघरासिणा संखेज्जत्तं पडि एदेसिं रासीणं समाणत्ते संते किमिदि ओघमिदि ण परूविदं सुत्ते? ण, एत्थ पज्जवट्ठियणयावलंबणादो। सो वि एत्थ किमिदि अवलंबिज्जदे? जोगद्धप्पाबहुगमस्सिऊण रासिविसेसपदुप्पायणट्ठं। तत्थ जोगद्धप्पाबहुगमिदि वुत्ते वुच्चदे— 'सव्वत्थोवा सच्चमणजोगद्धा। मोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। सच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। असच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा। मणजोगद्धा विसेसाहिया। सच्चवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। मोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। सच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। असच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा। वचिजोगद्धा विसेसाहिया। कायजोगद्धा संखेज्जगुणा' त्ति[1]।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त आठ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं? संख्यात हैं ॥ १०५॥

यहां पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओघराशिके साथ इन राशियोंकी समानता रहने पर सूत्रमें 'ओघ' ऐसा किसलिये नहीं कहा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, अतः सूत्रमें 'ओघ' ऐसा नहीं कहा।

शंका—यह पर्यायार्थिक नय भी यहां पर किसलिये ग्रहण किया गया है?

समाधान—योगकालका आश्रय लेकर राशिविशेषका प्रतिपादन करनेके लिये यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है।

योगकालके आश्रयसे अल्पबहुत्व किसप्रकार है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं— सत्य मनोयोगका काल सबसे स्तोक है। मृषामनोयोगका काल उससे संख्यातगुणा है। उभयमनोयोगका काल मृषामनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगका काल उभय मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। इससे मनोयोगका काल विशेष अधिक है। सत्य वचनयोगका काल मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है। मृषा वचनयोगका काल सत्य वचन योगके कालसे संख्यातगुणा है। उभय वचनयोगका काल मृषा वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है। अनुभय वचनयोगका काल उभय वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है। वचनयोगका काल अनुभय वचनयोगके कालसे विशेष अधिक है। काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है।

वचनयोगियों और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ॥ १०६ ॥

---

१ अंतोमुहुत्तमेत्ता चउमणजोगा कमेण संखगुणा। तज्जोगा सामण्णं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा॥ तज्जोगो सामण्णं काओ संखाहदा तिजोगमिदं। गो. जी. २६२, २६३.

एगट्ठं करिय वचिजोग-कायजोगद्धासमासेण खंडिय एगखंडं वचिजोगद्धाए गुणिय पंचिंदियअसच्चमोसवचिजोगरासिं पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगरासी होदि। एत्थ मणादि-सेसवचिजोगरासिं पक्खित्ते वचिजोगरासी होदि। अद्धासमासस्स आवलियाए गुणगारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवेहिंतो पदरंगुलस्स हेट्ठा भागहारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवाणि जेण संखेज्ज-गुणाणि तेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो भागहारो भवदि।

सेसाणं मणजोगिभंगो[1] ॥ १०९ ॥

जधा मणजोगरासी ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो, तहा वचिजोगि-असच्चमोस-वचिजोगीसु सासणादओ ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो। सेसं सुगमं।

संपहि अप्पाबहुगबलेण पुव्विल्लसुत्तेसु वुत्तरासीणमवहारकालो परूविज्जंते। तं जहा- संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धं वग्गिदे वचिजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो

और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवराशिको एकत्रित करके और उसे वचनयोग और काययोगके कालके जोड़रूप प्रमाणसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उसे वचनयोगके कालसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसमें पंचेन्द्रिय अनुभय वचनयोगी राशिके मिला देने पर अनुभय वचनयोगी जीवराशि होती है। इसमें सत्यवचनयोगी जीवराशि आदि शेष वचनयोगी जीवराशियोंके मिला देने पर वचनयोगी जीवराशि होती है। यहां पर अद्धासमासके लिये आवलीके गुणकाररूपसे स्थापित संख्यातसे प्रतरांगुलके नीचे भागहाररूपसे स्थापित संख्यात चूंकि संख्यातगुणा है, इसलिये प्रकृतमें प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग भागहार है।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती वचनयोगी और अनुभय वचन-योगी जीव सासादनसम्यग्दृष्टि आदि मनोयोगिराशिके समान हैं ॥ १०९ ॥

जिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है, उसीप्रकार वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है। शेष कथन सुगम है।

अब अल्पबहुत्वके बलसे पूर्वोक्त सूत्रोंमें कही गई राशियोंके अवहारकाल कहे जाते हैं। वे इसप्रकार हैं— संख्यातसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसके वर्गित करने पर वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी वचनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिक काययोगियोंका अवहारकाल

---

१ [illegible] सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८.

पक्खित्ते कायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि। (तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि।) तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओरालियकायजोगि

लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस उभय वचनयोगी असंयतसम्य-सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषावचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगी असंयतग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी मनोयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस अनुभय मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस उभय मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषामनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस मृषामनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है। इस सत्यमनोयोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिक

असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स। णवरि वेउव्वियमिस्स-कम्मइए च छोड्डिय वत्तव्वं। ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि। एवं मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगिअवहारकालाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तदो सच्चमोसमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल कहना चाहिये। परंतु इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगको छोड़कर ही कथन करना चाहिये। ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये क्रमसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये। सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसके आगे

असच्चमोसमणजोगरासीओ हवंति । एवं वचिजोगरासिस्स वि वत्तव्वं ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अणंता । अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । खेत्तेण अणंताणंता लोगा इदि वुत्तं होदि । सेसं सुगमं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति जहा मणजोगि-भंगो ॥ १११ ॥

एदं सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासिविहाणं वुच्चदे । तं जहा– सगुणपडिवण्णमण-जोगि-वचिजोगिरासिं सिद्धअजोगिरासिं च कायजोगिरासिं च एदेसिं वग्गं च सव्वजीव-रासिम्हि पक्खित्ते कायजोगिधुवरासी होदि । तं पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुभय मनोयोगी जीवराशियां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिका भी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों भी राशियां अनन्त हैं । कालकी अपेक्षा काययोगी और औदारिक काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं और क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है ।

सामान्यसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक काययोगी और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब यहां पर ध्रुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है– गुणस्थानप्रतिपन्न मनोयोगिराशी, वचनयोगिराशी, सिद्धराशि और अयोगि राशिको तथा इन चारों राशियोंके वर्गमें काययोगिराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर काययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है । अनन्तर इसकी प्रतिराशि करके उनमेंसे एक राशिमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर औदारिककाययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि

---

१ काययोगिषु मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । स. सि. १, ८. इदुगे सवत्ती एइन्दिया हु ।
गो. जी. २६१

सासणादीणं मग-सगअवहारकाले सखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणादिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाला भवंति । एदे अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणादीणमवहारकाला भवंति । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सगुणपडिवण्णरासीणं देवगुणपडिवण्णरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो । संजदासंजदाणं पुण कायजोगिअवहारकालो चेव ओरालियकायजोगिअवहारकालो होदि, तत्थ तव्वदिरित्तकायजोगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ॥ ११२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासी उच्चदे । ओरालियकायजोगिधुवरासिं पुव्वपरूविदं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिधुवरासी होदि । कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं जहा– तिरिक्ख-मणुसअपज्जत्तद्धादो पज्जत्तद्धा संखेज्जगुणा । ताणमद्धाणं समासेण तिरिक्खरासिं खंडिय

आदि गुणस्थानोंके अपने अपने अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं । इन अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच और मनुष्य राशियां गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भागमात्र हैं । औदारिककाययोगकी अपेक्षा संयतासंयतोंका अवहारकाल ही औदारिककाययोगियोंका अवहारकाल है, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें औदारिककाययोगको छोड़कर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है । अब यहां ध्रुवराशिका कथन करते हैं– पहले जो औदारिककाययोगियोंकी ध्रुवराशि कह आये हैं उसे संख्यातसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगियोंकी ध्रुवराशि होती है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है– तिर्यंच और मनुष्योंके अपर्याप्त कालसे पर्याप्त काल संख्यातगुणा है । पुनः उन कालोंके जोड़से तिर्यंच राशिको खंडित करके

१ [illegible]

२ [illegible]

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेणेदेसिं पमाणपरूवणा ओघं, ओघेण समाणा त्ति वुत्तं होदि। एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा– ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। ओरालियकायजोगिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। किं कारणं? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदो। केण कारणेण वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणेहिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा? ण एस दोसो, कुदो? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणत्तादो।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, चदुवण्णं[1] ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११८ ॥

चूंकि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य देवोंमें उत्पन्न होते हुए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं, इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघ अर्थात् ओघप्ररूपणाके तुल्य होती है, यह इसका अभिप्राय है। अब इनके अवहारकालकी उत्पत्तिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। असंयतसम्यग्दृष्टि औदारिककाययोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि तिर्यंचोंके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव देवोंमें उत्पन्न होते हैं।

शंका— वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं।

आहारककाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं?

१ [illegible]

आहारसरीरमण्णगुणट्ठाणेसु णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तग्गहणं कदं। सेसं सुट्ठु सुगमं।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १२० ॥

एत्थ आइरियपरंपरागदोवएसेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवंति। अहवा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठभावा संखेज्जजीवा हवंति, ण सत्तावीस, सुत्ते संखेज्जणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं संखेज्जगुणत्तादो च। ण च दोण्हमेत्थ गहणं, अजहण्णअणुक्कस्ससंखेज्जस्स सव्वगहणादो, सव्वअपज्जत्तद्धाहिंतो पज्जत्तद्धाणं जहण्णाणं पि संखेज्जगुणत्तदंसणादो।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलोघं[2] ॥ १२१ ॥

चौवन हैं ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारशरीर नहीं पाया जाता है, इसका ज्ञान करानेके लिये प्रमत्तसंयत पदका ग्रहण किया। शेष कथन सुगम है।

आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिश्रकाययोगमें सत्ताईस जीव होते हैं। अथवा, आहारमिश्रकाययोगमें जिनदेवने जितनी संख्या देखी हो उतने संख्यात जीव होते हैं, सत्ताईस नहीं, क्योंकि, सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है। तथा मिश्रयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव संख्यातगुणे हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी जीव संख्यात हैं, सत्ताईस नहीं। कदाचित् कहा जाय कि दो भी तो संख्यात हैं। परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी उसका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, सबके द्वारा अजघन्यानुत्कृष्टरूप संख्यातका ही ग्रहण किया है। अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्त काल भी संख्यातगुणा है, इससे भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी सत्ताईस नहीं लेना चाहिये।

कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२१ ॥

---

१ आहारमिस्सा खलु सत्तावीसा दु उक्कस्सं ॥ गो. जी. २७

२ गो. जी. २६४-२६५

मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुव्वाइरिओवएसेण सट्ठी जीवा हवंति । कुदो ? पदरे वीस, लोगपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमाणा पदरे वीस चेव भवंति त्ति ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणमिच्छा

करके मरनेवाली राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिके असंख्यातवें भागमात्र पाई जाती है ।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व आचार्योंके उपदेशानुसार सयोगिकेवलियोंमें कार्मणकाययोगी जीव साठ होते हैं, क्योंकि, प्रतर समुद्घातमें बीस, लोकपूरण समुद्घातमें बीस और उतरते हुए प्रतर समुद्घातमें पुनः बीस जीव होते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं — सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिक काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग उभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी

इट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे असच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचि

मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय वचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर

जोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। ओघसासणरासीदो ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासी संखेज्जगुणो त्ति सुत्तसिद्धो। संपहि ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासिस्स संखेज्जदिभागो सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी कधं ओघसासणरासीदो संखेज्जगुणो होदि त्ति उत्ते वुच्चदे– जोगद्धागुणगारादो[1] सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिरासिस्स गुणगारो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी सेसस्स संखेज्ज-भागो[2]। तं कधं णव्वदे सुत्तेण विणा ? णत्थि सुत्तं वक्खाणं वा, किंतु आइरियवयणमेव केवलमत्थि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि संख्यातगुणी है यह सूत्र सिद्ध है। अब ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिके संख्यातवें भागप्रमाण सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे संख्यातगुणी कैसे है, ऐसा इसी विषयके पूछने पर कहते हैं— योगकालके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका गुणकार बहुत है, इसलिये सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि भागाभागमें मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहता है उसका संख्यातवां भाग है।

शंका—सूत्रके विना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है, किंतु आचार्योंके वचन ही केवल पाये जाते हैं, जिससे यह कथन जाना जाता है।

सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि

---

१ आ प्रतौ 'सासणद्धागुण-' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'असंखेज्जा भागा' इति पाठः ।

सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सच्चमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेस संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोस-

है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिककाययोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषावचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यवचनयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि

मणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि। सुत्तेण विणा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि तीहिं वि रासीहिंतो असंखेज्जगुणहीणो त्ति कधं णव्वदे? आइरियवयणादो। आइरियवयणमणेयंतमिदि चे, होदु णाम, णत्थि मज्झेत्थ अग्गहो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं जाणिऊण णेयव्वं।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। पंचमणजोगि तिण्णिवचिजोगि

है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है।

शंका—सूत्रके विना वैक्रियिकमिश्र काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे लेकर तीनों राशियोंसे असंख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यह कथन आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

शंका—आचार्योंके वचनोंमें अनेकान्त है, अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं?

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाओ, इसमें हमारा आग्रह नहीं है।

सत्यमनोयोगी संयतासंयत राशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्र काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है। शेष कथन समझकर ले जाना चाहिये।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है। पांचों मनोयोगी, तीन वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका

वेउव्विय वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं सत्थाणस्स देवगइभंगो । वचिजोगि असच्चमोस वचिजोगीणं सत्थाणस्स पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि । सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं सत्थाणस्स ओघभंगो ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उवसामगा । असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवली[1] संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी और अनुभयवचनयोगियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । शेष काययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । अनुभय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोक हैं । अनुभय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीव उक्त अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभयमनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभय मनोयोगी संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनो

१ प्रतिषु 'अजोगिकेवली' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

या । कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिणो । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असं- खेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । कम्मइयकायजोगिमिच्छा- इट्ठिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगि जीवा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सव्वेसिम- संजदसम्माइट्ठीणं अवहारकाला असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । किमट्ठमेवं जाणिज्जदे ? वेउव्वियमिस्स ओरालियमिस्स कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्मा- इट्ठि असंजदसम्माइट्ठिरासीणं माहप्पं ण जाणिज्जदि त्ति । पुव्वं किमिदं परूविदं ? ण, आइरियाणं तस्स अभिप्पायंतरदरिसणट्ठत्तादो । पलिदोवमादो उवरि वचिजोगिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो विसेसाहिओ । वेउव्वियकायजोगि

अनन्तगुणे हैं । आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगमें स्वस्थान अथवा परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कार्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सयोगियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । सासादन सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । कार्मणकाय योगी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व कहते हैं । आहारमिश्रकाययोगी जीव सबसे स्तोक हैं । आहारककाययोगी जीव आहारमिश्र जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाय योगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सभीका असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये ।

शंका—ऐसा किसलिये समझें ?

समाधान—वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगियोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि राशियोंका माहात्म्य अर्थात् परस्पर अल्पबहुत्व नहीं जाना जाता, इसलिये ऐसा समझना चाहिये ।

शंका—तो फिर इनके अल्पबहुत्वका पहले प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां दूसरे आचार्योंका अभिप्रायान्तर दिखलाना उनके कथनका प्रयोजन था ।

पल्योपमके ऊपर वचनयोगियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । अनुभयवचनयोगि अवहारकाल वचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । वैक्रियिककाययोगियोंका

अवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं सच्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि-मणजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो विसेसाहिओ । सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं मोसमणजोगि-सच्चमणजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सच्चमणजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगीणं । तदो मणजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सच्चवचिजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसवचिजोगि (सच्चमोसवचिजोगि) वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचिजोगिविक्खंभसूचीओ संखेज्जगुणाओ । वचिजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सेढी असंखेज्जगुणा । तदो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । सच्चमणजोगिदव्वं संखेज्जगुणं । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि । मणजोगिदव्वं विसेसाहियं । सच्चवचिजोगिदव्वं

अवहारकाल अनुभयवचनयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उभयवचनयोगी, मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगियोंका अवहारकाल सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल अनुभयमनोयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, सत्यमनोयोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । उन्हींकी अर्थात् वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची भी समझना चाहिये । अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे मनोयोगियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्कंभसूची मनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचियां भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगियोंकी विष्कंभसूची अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । जगश्रेणी वचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणीसे वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभयमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुभयमनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका

---

१ प्रतिषु [illegible] इति पाठः ।

जेणेदे चदुगुणट्ठाणिणो[1] जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तेणेदेसिं परूवणा ओघं होदि। ओघपमाणादो ऊणइत्थिवेदगुणपडिवण्णाणं कधमोघत्तं जुज्जदे ? ण, ओघमिव ओघमिदि उवयारेण तिस्से ओघत्तसिद्धीदो। ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। कुदो ? परिग्गहिदमसाणग्गि धगधगेदेण दज्झतहिययाणमित्थीणं सणिदाणाणं[2] पउरं सम्मत्तपरिणामा संभवादो। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग सगरासीओ भवंति।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२६ ॥

स्थानमें स्त्रीवेदी जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२५ ॥

चूंकि ये चार गुणस्थानवर्ती जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिये इनकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान होती है।

शंका— गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपन्न स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहा जाता है, इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओघत्व सिद्ध हो जाता है।

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपलेकी अग्निके समान स्त्रीवेदसे जिनका हृदय जल रहा है और जो कामाभिलाष सहित हैं, ऐसी स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्यक्त्वपरिणाम संभव नहीं है। अर्थात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं। उस स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण आता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिबादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक और

१ प्रतिषु चदुगुणट्ठाणाणि इति पाठः।   २ प्रतिषु सण्णधाणाणं इति पाठः।

॥ प्रमत्तसंयतादयो निवृत्तिबादरान्ताः संख्येयाः। स. सि. १, ८

पमत्तादीणं ओघरासिं संखेज्जखंडे कए एयखंडमिदि खवगप्पमत्तादओ भवंति। इत्थिवेदउवसामगा दस १०, खवगा वीस २०।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीओ संखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवंति। तेसु देवेसु पक्खित्तेसु देवेहि सादिरेय पुरिसवेदरासिपमाणं होदि।

एत्थ अवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। देवअवहारकालं तेत्तीसरूवेहि गुणिय तत्तो एक्कपदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं काऊण तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे तत्थेव पक्खित्ते पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १२८ ॥

क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानसंबन्धी ओघराशिको संख्यातसे खंडित करने पर एक खंडप्रमाण स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती जीव होते हैं। स्त्रीवेदी उपशामक दश और क्षपक बीस हैं।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२७ ॥

देवलोकमें देवियोंसे संख्यातवें भागमात्र देव हैं। पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके संख्यातवें भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं। इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है।

अब यहां उक्त जीवोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको तेतीससे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको घटाकर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है। इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि राशि होती है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति बादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक

१ वेदानुवादेन ×× पुंवेदाश्च मिथ्यादृष्टयः असंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८. देवेहि सादिरेया पुरिसा। गो. जी. २७९.

इत्थिवेद-णवुंसयवेदरासिपरिहीणो ओघरासी पुरिसवेदस्स भवदि । कधं तस्स ओघत्तं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओघमिव ओघमिदि तस्स ओघत्तसिद्धीदो ।

एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघपमत्तादिसु अप्पणो संखेज्ज-भागभूदइत्थि-णवुंसयवेदरासिपमाणमवणिदे पुरिसवेदपमत्तादओ भवंति ।

णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १२९ ॥

और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२८ ॥

ओघराशिमेंसे स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिको कम कर देने पर जो लब्ध रहे उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

शंका— इस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहते हैं, इसलिये उस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिके ओघपना सिद्ध हो जाता है ।

अब पुरुषवेदियोंके अवहारकालको कहते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशियोंमेंसे उन्हींके संख्यातवें भागभूत स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीव होते हैं ।

नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदा मिथ्यादृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. थी-पुंवेद-विहीणो सव्वो रासी संढाणं परिमाणं ॥ गो. जी. २७९.

णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिणो अणंतत्तणेण ओघमिच्छाइट्ठीहि समाणा। सासणादओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति ओघत्तमेदेसिं जुज्जदे। एत्थ अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा– इत्थि-पुरिसवेदसगुणपडिवण्णे अवगदवेदरासिं च णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासिभजिदसव्वजीवरासिम्मि सव्वजीवरासिम्हि पक्खित्ते धुवरासी होदि। एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १३० ॥

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तत्वकी अपेक्षा ओघमिथ्यादृष्टियोंके समान हैं और नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघ गुणस्थानप्रतिपन्नोंके समान हैं, इसलिये नपुंसकवेदी इन राशियोंके ओघपना बन जाता है। अब इन नपुंसकवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं। वह इसप्रकार है— गुणस्थान प्रतिपन्न स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव राशिको तथा अपगतवेदी जीवराशिको तथा नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित हुई स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है। इससे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहार काल होता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिबादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशामक और क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १३० ॥

---

१ प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिबादरान्ताः संख्येयाः। स. सि. १, ८.

मसंखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव असंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं। एवं चेव णवुंसयवेदस्स। णवरि पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा त्ति वत्तव्वं।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा णवुंसयवेदउवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदउवसामगा तत्तिया चेव। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। पुरिसवेदउवसामगा संखेज्जगुणा। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। पुरिसवेदअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसप्रकार प्रतिलोमरूपसे स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्य आने तक ले जाना चाहिये। स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है। पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे स्त्रीवेदियोंकी विष्कम्भसूची असंख्यातगुणी है। स्त्रीवेदियोंकी विष्कम्भसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है। जगश्रेणीसे स्त्रीवेदियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है। द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है। जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पुरुषवेदका भी परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। तथा इसीप्रकार नपुंसकवेदका भी। परंतु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदियोंका कहते समय पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं, यह कहना चाहिये।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व कहते हैं— नपुंसकवेदी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। नपुंसकवेदी क्षपक जीव संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदी उपशामक जीव नपुंसकवेदी क्षपकोंका जितना प्रमाण है उतने ही हैं। स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी उपशामक जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी क्षपक जीव पुरुषवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदमें अप्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। स्त्रीवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यात

चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्ज-गुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्ज-गुणो। पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। पुरिसवेदमिच्छाइट्ठि

—

गुणे हैं। पुरुषवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-गुणा है। पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे संख्यातगुणा है। पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि-योंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार प्रति-लोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिए। पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे संख्यातगुणा है। पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभ-सूचीसे संख्यातगुणी है। जगश्रेणी स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है।

दव्वमसंखेज्जगुणं । इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अवगतवेदा अणंतगुणा । णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । वेदगुणपडिवण्णगुणगारो णं णव्वदि त्ति के वि आइरिया भणंति । तेसिमभिप्पाएण सत्थपरत्थाणं वुच्चदे । सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा तिवेदगदा । (पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदा) तिवेदा विसेसाहिया । तिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमं त्ति । उवरि इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदुवरि पुव्वं व वत्तव्वं ।

एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं[1] ॥ १३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– अणंतवयणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदि

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पुरुषवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगप्रतर स्त्रीवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । अपगतवेदी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अपगतवेदियोंसे अनन्तगुणे हैं । वेद गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालका गुणकार ज्ञात नहीं है, ऐसा कितने ही आचार्योंका कथन है । आगे उन्हींके अभिप्रायानुसार स्वस्थान परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । तीनों वेदोंसे युक्त अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । तीन वेदवाले संयत जीव विशेष अधिक हैं । त्रिवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । इससे ऊपर स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है– अनन्तवचनकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव और पल्योपमके असंख्यातवें भागवचनकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपन्न जीव ओघ मिथ्यादृष्टि और

---

१ [illegible]

२ [illegible]

कालो वुच्चदे—

चउकसाइगुणपडिवण्णपमाणमकसाइपमाणं च चदुकसाइमिच्छाइट्ठिरासिभजिद तव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते चदुकसाइधुवरासी होदि। तं चदुहि गुणिदे कसायरासिचदुब्भागस्स भागहारो होदि। पुणो तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइधुवरासी होदि। पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण कसायचदुब्भागभागहाररासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइधुवरासी होदि। पुणो कोधकसाइभागहारमब्भहियं काऊण पुव्विल्लधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइधुवरासी होदि। कसायचदुब्भागधुवरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइधुवरासी होदि। एदेहि अवहारकालेहि सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति। तिण्हं कसायमिच्छाइट्ठिपमाणं सव्वजीवरासिस्स चदुब्भागो देसूणो। लोभकसाइमिच्छाइट्ठिपमाणं चदुब्भागो सादिरेगो। गुणपडिवण्णेसु देवरासी पहाणो। कुदो? सेसगदिरासिस्स तदसंखेज्जदि

गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं। इस अर्थपदको समझकर चार कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशिका अवहारकाल कहते हैं—

गुणस्थानप्रतिपन्न चारों कषायवाले जीवोंके प्रमाणको और कषाय रहित जीवोंके प्रमाणको तथा चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। उसे चारसे गुणित करने पर कषायराशिके चौथे भागका भागहार होता है। पुनः इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मानकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पुनः इस भागहारको अभ्यधिक करके उसका कषायराशिके चौथे भागकी भागहारराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी भागहार राशिमें मिला देने पर क्रोधकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पुनः क्रोधकषायके भागहारको अभ्यधिक करके उसका पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर मायाकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। कषायराशिके चौथे भागकी ध्रुवराशिको (भागहारको) आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी ध्रुवराशिमेंसे निकाल देने पर लोभकषायी जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इन अवहारकालोंसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं। क्रोध, मान, और माया, इन तीनों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण सर्व जीवराशिका कुछ कम चौथा भाग है। लोभकषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ अधिक चौथा भाग है। गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतिसंबन्धी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भाग है।

भागत्तादो। देवेसु चउक्कसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तम्हि अद्धाणं समाणत्ताभावादो। तं जहा- देवेसु सव्वत्थोवा कोधद्धा। माणद्धा संखेज्जगुणा। मायद्धा संखेज्जगुणा। लोभद्धा संखेज्जगुणा। णेरइएसु सव्वत्थोवा लोभद्धा। मायद्धा संखेज्जगुणा। माणद्धा संखेज्जगुणा। कोधद्धा संखेज्जगुणा[1]। एत्थ देवगदिअद्धाणं समासं काऊण ओघअसंजद-रासिं खंडिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवाडीए कोधादि[2]अद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं पि वत्तव्वं। संजदासंजदाणं पुण तिरिक्खगइअद्धासमासं काऊण ओघसंजदासंजदरासिं खंडिय चदुप्पडिरासिं करिय कमेण कोधादिअद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति। एदेण बीजपदेण पुव्वुत्तरासीणमवहार-कालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा- ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते लोभकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्ज-रूवेहि गुणिदे मायकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि

देवोंमें चारों कषायवाली गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि समान नहीं है, क्योंकि, उन चारों कषायोंके काल समान नहीं हैं। आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं- देवोंमें क्रोधका काल सबसे स्तोक है। मानका काल उससे संख्यातगुणा है। मायाका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है। लोभका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है। नारकियोंमें लोभका काल सबसे स्तोक है। मायाका काल लोभके कालसे संख्यातगुणा है। मानका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है। क्रोधका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है। यहां देवगतिके कषायसम्बन्धी कालका योग करके उससे देवोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं। इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंका भी कथन करना चाहिये। संयतासंयतोंका प्रमाण लाते समय तो तिर्यंचगतिसम्बन्धी कषायोंके कालका योग करके और उससे ओघसंयतासंयत राशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके क्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं। इस बीजपदके अनुसार इन पूर्वोक्त राशियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर लोभकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस लोभ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मायाकषायवाले असंयत

१ [illegible] दुसु कसायकाला णिरये [illegible] ॥ [illegible] समासेण [illegible] । [illegible] १९९ १९०

२ प्रतिषु 'कोधाओ' इति पाठः।

गुणिदे माणकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे कोधकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं पि वत्तव्वं। ओघसंजदासंजदअवहारकालं चदुहि गुणिय चदुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगरासिमसंखेज्जेहि रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि। पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणियभागहारं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि। पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणिदअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि। चदुगुणभागहारमसंखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अभणिय संखेज्जा इदि किमट्ठं उच्चदे? ण एस दोसो, कुदो? ओघ

सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस मायाकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मानकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस मानकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंका भी कथन करना चाहिये। ओघ संयतासंयतोंके अवहारकालको चारसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक राशिको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी राशिमें मिला देने पर मानकषायवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित भागहारको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। चतुर्गुणित भागहारको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी चतुर्गुणित भागहारमेंसे घटा देने पर लोभकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १३६ ॥

शंका—सूत्रमें 'ओघ' पदका ग्रहण न करके 'संखेज्जा' इसप्रकार किसलिये कहा है?

---

१ [illegible] । स. सि. १, ८

खवगोवसामगसुहुमसांपराइएसु सुहुमलोभकसायवदिरित्तसांपराइयाभावादो ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १३८ ॥

एत्थ भावकसायाभावं पेक्खिऊण उवसंतकसाया अकसाइणो ण दव्वकसायाभावं पडि, उदओदीरणोकड्डणुक्कड्डण-परपयडिसंकमादिविरहिददव्वकम्मस्स तत्थुवलंभादो । चउव्विहदव्वकम्मभेएण चउव्विहत्तो मूलो उवसंतकसायरासी कधं पत्तेक्कं मूलोघपमाणं पावदे ? ण एस दोसो, कुदो ? वुच्चदे– ण ताव दव्वकसायविसेसणमेत्थ संभवइ, तेण अहियाराभावा । ण भावकसायविसेसणं पि संभवइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसंतकसायरासी ण चदुव्विहो विहज्जदे तो चेव मूलोघत्तं पि तस्स ण विरुज्झदि त्ति ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ १३९ ॥

क्षपक और उपशामक सूक्ष्म सांपरायिक जीवोंमें सूक्ष्म लोभ कषायसे व्यतिरिक्त कषाय नहीं पाई जानेके कारण सूक्ष्म लोभियोंके प्रमाणको ओघपनेका प्रतिपादन करना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कषायका अभाव देखकर उपशान्तकषाय जीवोंको अकषायी कहा है, द्रव्य कषायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय, उदीरणा, अपकर्षण, उत्कर्षण और परप्रकृतिसंक्रमण आदिसे रहित द्रव्य कर्म वहां उपशान्तकषाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

शंका — द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोघ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है । दोष क्यों नहीं है, आगे इसीका कारण कहते हैं — द्रव्यकषायरूप विशेषण तो यहां संभव नहीं है, क्योंकि, उसका यहां अधिकार नहीं है । भावकषाय विशेषण भी संभव नहीं है, क्योंकि, भावकषाय यहां पाया नहीं जाता है । अतएव उपशान्तकषाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोघपना भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३९ ॥

---

१ [illegible]

एत्थ समुच्चयट्ठं च सद्दोवादाणं कायव्वं ? ण, च सद्देण विणा वि तदट्ठोवलद्धीदो। एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणमेगजोगकरणं किमट्ठमिदि चे, ण एस दोसो, दव्वपमाणं पडि एदेसिं गुणट्ठाणाणं पच्चासत्तिं पेक्खिय एगत्तविरोहाभावादो[1]। ण च ओघत्तं विरुज्झदे, णिव्विसेसणत्तादो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि-अजोगिकेवलीणमेगमेव सुत्तं किण्ण कीरदे, केवलित्तं पडि पच्चासत्तिसंभवादो ? ण, दोण्हं पमाणगदपहाणपच्चासत्तीए अभावादो। कधं पमाणस्स पहाणत्तं ? तेणेत्थ अहियारादो। सेसं सुगमं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा चउकसाय-मिच्छाइट्ठिणो भवंति। एगखंडमकसाइणो गुणपडिवण्णा च। पुणो चदुकसायमिच्छाइट्ठि-रासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेगखंडं पुध ट्ठविय सेसबहुखंडे चत्तारि

शंका—इस सूत्रमें समुच्चयार्थ च शब्दका ग्रहण करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, च शब्दके विना भी समुच्चयरूप अर्थकी उपलब्धि हो जाती है।

शंका—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्रमाणके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

ओघत्व भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, ये दोनों गुणस्थान निर्विशेषण हैं।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है, क्योंकि, केवलित्वके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाणगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया।

शंका—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहां उसका अधिकार है। शेष कथन सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग चार कषाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न जीव हैं। पुनः चार कषाय मिथ्यादृष्टि राशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् करके शेष बहुभागके चार समान पुंज करके स्थापित करना

---

१ अ प्रतौ 'णाणत्तविरोहाभावादो' इति पाठः।

समपुंजे धरिय ट्ठवेदव्वं । पुणो अवणिदएयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेऊण तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेऊण बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोधकसाइमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकसाया होंति । एत्तो उवरि कसायगुणगारेहिंतो सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिगुणगारो संखेज्जगुणो त्ति उवएसमवलंबिय भागाभागो वुच्चदे । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी

चाहिये । पुनः निकालकर पृथक् रक्खे हुए एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे बहुभाग पहले पुंजमें मिला देने पर लोभकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषाय मिथ्यादृष्टि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अनन्त खंडोंमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न बतलाये थे उस एक खंडके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अकषाय जीव होते हैं । अब आगे कषायके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रति सासादन सम्यग्दृष्टिका गुणकार संख्यातगुणा है । इसप्रकारके उपदेशका अवलम्बन लेकर भागाभागका कथन करते हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीव राशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा कोधकसाइउवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं त्ति। कोधकसाइमिच्छाइट्ठिरासी अणंतगुणो। एवं माण-माय-लोभाणं पि परत्थाणं वत्तव्वं। अकसाईसु सव्वत्थोवा उवसंतकसाया। खीणकसाया संखेज्जगुणा। अजोगिकेवली तत्तिया चेव। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। सिद्धा अणंतगुणा।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा माणकसायउवसामगा। कोधकसायउवसामगा विसेसाहिया। मायकसायउवसामगा विसेसाहिया। लोभकसायउवसामगा विसेसाहिया। माणकसाइखवगा विसेसाहिया। कोधकसाइखवगा विसेसाहिया। मायकसाइखवगा विसेसाहिया। लोभकसाइखवगा विसेसाहिया। एवं जम्हि गुणट्ठाणे चत्तारि कसाया संभवंति तमस्सिऊण भणिदं। अप्पणो उवसामगेहिंतो खवगा दुगुणा चेव। कसायरहिदा अकसाया संखेज्जगुणा। माणकसायअपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। कोधकसायअपमत्तसंजदा विसे-

---

परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— क्रोधकषायी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। क्रोधकषायी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण अनन्तगुणा है। इसीप्रकार मान, माया और लोभकषायके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय जीव सबसे स्तोक हैं। क्षीणकषाय जीव उपशान्तकषाय जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। अयोगिकेवली जीव उतने ही हैं। सयोगिकेवली जीव अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं। सिद्ध जीव सयोगियोंसे अनन्तगुणे हैं।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मानकषायी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। क्रोधकषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषायी उपशामक जीव मायाकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। मानकषायी क्षपक जीव लोभकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं। क्रोधकषायी क्षपक जीव मानकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषायी क्षपक जीव क्रोधकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषायी क्षपक जीव मायाकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं। इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों कषाय संभव हैं उनका आश्रय करके कथन किया। अपने उपशामकोंसे क्षपक दूने हैं। कषाय रहित अकषायी जीव लोभकषायी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। मानकषाय अप्रमत्तसंयत जीव कषाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे हैं। क्रोधकषाय अप्रमत्तसंयत

साहिया। मायकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया।
माणकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। कोधकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। मायकसाय
पमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअसंजद
सम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज
गुणो। माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। कोधकसायअसंजदसम्मा
इट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो।
मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहार-
कालो संखेज्जगुणो। कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसाय
सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। मायकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-
गुणो। (माणकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो।) कोधकसायसासणसम्मा
इट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो।

जीव मानकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषाय अप्रमत्तसंयत जीव क्रोधकषाय
अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय अप्रमत्तसंयत जीव मायाकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष
अधिक हैं। मानकषाय प्रमत्तसंयत जीव लोभकषाय अप्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं।
क्रोधकषाय प्रमत्तसंयत जीव मानकषाय प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। मायाकषाय प्रमत्तसंयत
जीव क्रोधकषाय प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय प्रमत्तसंयत जीव मायाकषाय
प्रमत्तोंसे विशेष अधिक हैं। लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय
प्रमत्तोंसे असंख्यातगुणा है। मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय
असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषायी
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यात
गुणा है। लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय
सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहार-
काल मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्या
दृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है।
लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
संख्यातगुणा है। मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल लोभकषाय सासादन
सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। क्रोधकषाय सासादनसम्य
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। लोभ
कषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यात

सम्मादिट्ठिणो अत्थि त्ति ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहिंतो मदि-सुदअण्णाणमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो ऊणा होंति त्ति ओघपमाणमेदेसिं णत्थि त्ति चे ण, मदि-सुदअण्णाणिविरहिदविभंगणाणीणमणुवलंभादो। तदो ओघमिदि सुट्ठु घडदे। एत्थ मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिस्स धुवरासी वुच्चदे। तं जहा— सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि। ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

विभंगणाणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं ॥ १४२ ॥

देवमिच्छाइट्ठिणो णेरइयमिच्छाइट्ठिणो च सव्वे विहंगणाणिणो, विहंगणाणस्स भवपच्चयत्तादो। तिरिक्खविहंगणाणिणो वि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंति त्ति

शंका—विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं, इसलिये ओघमिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कम हो जाते हैं, इसलिये इनके ओघप्रमाणका निर्देश नहीं बन सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंको छोड़कर विभंगज्ञानी जीव पृथक् नहीं पाये जाते हैं, इसलिये इनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान भलीभांति बन जाता है।

अब यहां पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशिका तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थान प्रतिपन्न राशिके वर्गमें मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देने पर जितना लब्ध आवे उसको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। ओघसासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल ही मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १४२ ॥

देव मिथ्यादृष्टि जीव और नारक मिथ्यादृष्टि जीव ये सब विभंगज्ञानी होते हैं, क्योंकि, वे जीव भवप्रत्यय विभंगज्ञानसे युक्त होते हैं। तिर्यंच विभंगज्ञानी जीव जगप्रतरके

---

१ विभंगणाणिमिच्छाइट्ठी [illegible] ... [illegible] गो. जी. ४६१

कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे (मिस्समदि-सुद-अ
सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हि
चेव पक्खित्ते मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवे
मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्ज
भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते विहंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो
तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिसंज
अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओहिणाणिसंज
अवहारकालो होदि । अहवा ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि आवलियाए अस
भागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो
तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवह
होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आ
याए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आव
असंखेज्जदिभागेण गुणिदे मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि स
रूवेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखे

इस अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे
करने पर मिश्र दो ज्ञानी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके
ख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला दे
मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित
पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आ
असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला दे
विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असं
भागसे गुणित करने पर आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहा
होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिज्ञानी संयतासं
अवहारकाल होता है। अथवा, ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आव
असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्य
अवहारकालमें मिला देने पर तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है
आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन अज्ञानवाले सासादनसम्य
योंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दो ज्ञान
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित क
पर मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गु

भवंति, लद्धिसंपण्णरासीणं बहूणमसंभवादो। ते च एत्तिया इदि सम्मं ण णव्वंति, वट्टमाणकाले उवएसाभावादो। णवरि मणपज्जवणाणिणो उवसामगा दस १०, खवगा २०।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥

सुगममिदं सुत्तं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो भवंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो भवंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे ओहिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि

ज्ञानवाले जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, लब्धिसंपन्न राशियां बहुत नहीं हो सकती हैं। फिर भी वे इतने ही होते हैं यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वर्तमानकालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है। इतना विशेष है कि मनःपर्ययज्ञानी उपशामक दश और क्षपक बीस होते हैं।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इन्हीं आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है। शेष एक भागके संख्यात खण्ड करने पर बहुभाग मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। उन्हीं मिश्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिषु [illegible] इति पाठः।

२ [illegible] । त. सि. १, ८. [illegible] गो. जी. ४६१

पए बहुगा तिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । मदि-सुदअण्णाणीसु सत्थाणं णत्थि । कारणं पुव्वं भणिदं । सासणसम्माइट्ठिसत्थाणप्पाबहुगं ओघभंगो । विभंगणाणिमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणस्स देवमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणभंगो । तिणाणीसु मदि-सुदणाणीसु च असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदेसु सत्थाणमोघं । सत्थाणप्पाबहुगं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । सव्वत्थोवो विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । (सेढी असंखेज्जगुणा ।) दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । सव्वत्थोवा मदि-सुदणाणिणो[1] चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा

करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । शेषको जानकर कथन करना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें तथा मति और श्रुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है । विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कम्भसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । (जगश्रेणी विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी है ।) जगश्रेणीसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी चार गुणस्थानोंके उपशामक सबसे स्तोक हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव

---

१ प्रतिषु ' मदि सुदणाण ' इति पाठः ।

तेसिं दुण्णयत्तावत्तीदो। तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेव छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति। जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेव सामाइयसुद्धिसंजदा होंति त्ति। तदो दोण्हं रासीणमोघत्तं जुज्जदे।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा [1] ॥ १५० ॥

ओघपमत्तपमाणं ण पावेंति त्ति भणिदं होदि। तो वि ते कत्तिया त्ति भणिदे उच्चदे, तिण्णूण सत्तसहस्समेत्ता हवंति।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५१ ॥

एत्थ पढमसुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारपदुप्पायणट्ठं, अवरेग गुणट्ठाणणिद्देसो। तेसिं पमाणं तिण्णूण-णवसदमेत्तं। वुत्तं च—

ऐसा नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है। इसलिये जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं। तथा जो छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं। अतएव उक्त दोनों राशियोंके ओघपना बन जाता है।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयमसे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओघसंयतोंके प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है। तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात हजार होते हैं।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारके प्रतिपादन करनेके लिये किया है। और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्देश किया है। उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ ( ) है। कहा भी है—

---

१ परिहारविशुद्धिसंयत [illegible]

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धि [illegible]

ण ताव अक्कमेण[1], विरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगवं समाहागमुववत्तीदो। अह कमेण, ण सामाइयसुद्धिसंजदा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा भवंति, एगसंजमसायाए भेदसंजमसायाए विरोहादो। छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ण सामाइयसुद्धिसंजदा तक्काले भवंति, भेदसंजमसायाए अभेदसंजमसायाए विरोहादो। तदो अक्कमेण दोहि णएहि पडिवण्णसंजदरासी णयेण मग्गेण ओघपमाणं ण पावेदि त्ति ओघत्तं ण जुज्जदे। अह कमेण संजदो संजदरासी अक्कमेण एक्कं णियणयमवलंबिऊण जदि चिट्ठदि त्ति इच्छिज्जदि, तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ हवंति। ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरत्तुवलंभादो। एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा- दव्वट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं एक्को चेव जमो होदि त्ति सामाइयसुद्धिसंजदाणं ओघसंजदपमाणं होदि। पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं पंच पंच जमा हवंति त्ति छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ओघसंजदरासिपमाणं पावेंति तेण दोण्हमोघत्तं जुज्जदे। ण च एगा चेव जादिसंजमसाया एयंतेण अप्पणो पडिवक्खणिरवेक्खा,

है या अक्रमसे? अक्रमसे तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भेद और अभेद इनके द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है। यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, एकस्वरूप परिणामोंका भेदरूप परिणामोंके साथ विरोध है। उसीप्रकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव भी उसी समय सामायिकशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके साथ विरोध है। इसलिये अक्रमसे दोनों नयोंकी अपेक्षा ओघसंयतराशि संयममार्गणामें एक मार्गके द्वारा ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतों और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंका प्रमाण ओघप्रमाणपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है। कदाचित् संयतराशि अक्रमसे एक ही नयका अवलम्बन लेकर यदि रहती है ऐसा आप चाहते हैं, तो ये दोनों संयतराशियां सान्तर हो जाती हैं। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, कालानुयोगमें ये राशियां निरन्तर हैं, ऐसा पाया जाता है?

समाधान—यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं। वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सर्व संयमियोंके एक एक ही यम होता है, इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतोंके ओघसंयतोंका प्रमाण बन जाता है। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो सर्व संयमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं, इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत भी ओघसंयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं, अतएव, इन दोनों संयतोंके ओघपना बन जाता है। कुछ एक जातिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं,

१ प्रतिषु 'अक्कमे' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सघो' इति पाठः।
३ अ-आप्रत्योः 'एग चद-', क प्रतौ 'एग चद-' इति पाठः।

तेसिं दुब्भावप्पसंगादो। तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेय छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति। जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसंजदा होंति त्ति। तदो दोण्हं रासीणमोघत्तं जुज्जदे।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥ १५० ॥

ओघपमत्तादिरासिं ण पावेंति त्ति भणिदं होदि। तो वि ते केत्तिया त्ति भणिदे उच्चदे तिण्णूणसत्तसहस्समेत्ता हवंति।

सुहुमसापराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसापराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं[2] ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारसंभालणट्ठं, अवरेगं गुणट्ठाणणिद्देसो। तेसिं पमाणं तिण्णूणणवसदमेत्तं। वुत्तं च—

ऐसा नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने पर उनको दुर्भावपनेकी आपत्ति आ जाती है। इसलिये जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं। तथा जो छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं। अतएव उक्त दोनों राशियोंके ओघपना बन जाता है।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयमसे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओघसंयतोंके प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है। तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात हजार होते हैं।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके लिये किया है। और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया है। उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है। कहा भी है—

---

१ परिहारविशुद्धिसंयताः प्रमत्ताश्चाप्रमत्ताश्च संख्येयाः। स. सि. १, ८. कमेण सेसतिए सत्तसहस्सा णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा। गो. जी. ४८

२ सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८.

सत्तादी छक्कंता दोणवमज्झा य होंति परिहारा ।
सत्तादी अट्ठंता णवमज्झा सुहुमराया दु ॥ ७९ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चउट्ठाण ओघं ॥

चउट्ठाणमिदि कथमेगवयणणिद्देसो ? ण, चउण्हं पि जा
वयोवदेसादो । सेसं सुगमं ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १

सुगममिदं सुत्तं ।

असंजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइ
पमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५४ ॥

चदुण्हमसंजदगुणट्ठाणाणं ओघचदुगुणट्ठाणेहिंतो अनिसिद्धाणमोघ

जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें छह और मध्यमें दोबार नौ हैं उ
हजार नौसौ सत्तानवें परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं । तथा जिस संख्याके
अन्तमें आठ और मध्यमें नौ है उतने अर्थात् आठसौ सत्तानवें सूक्ष्मरागवाले जीव

यथाख्यात विहारशुद्धिसंयतोंमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौ
स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५२ ॥

शंका—सूत्रमें ' चउट्ठाण ' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है

समाधान—नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर
स्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है । शेष कथन सुगम है ।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके
पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतसंबन्धी चारों गुणस्थान ओघ चारों गुणस्थानोंके समान हैं, इसलिये असं
चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके आधपना बन जाता है । अब यहां पर अवहारकालकी उत्प

१ यथाख्यातविहारशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ संयतासंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पल्योपमासंख्येयभागप्रमिता ...
गो. जी. ४८१

३ असंयताश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. ...
गो. जी. ४८२

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदउवसामगा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । संजदासंजदेसु परत्थाणं णत्थि । असंजदेसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा । परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं संजममग्गणा गदा ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व कहते हैं— सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । उन्हींके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । ये ही अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । ये ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । प्रमत्तसंयत जीव इनसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यात संयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयतोंमें परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व कहते हैं— सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । परिहारविशुद्धिसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यातशुद्धिसंयत जीव परिहारविशुद्धिसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव दोनों समान होते हुए यथाख्यातसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल इन दोनों संयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे ऊपर मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो वक्खाणिदत्तादो।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १५६ ॥

अइथूल-थूल-सुहुमपरूवणाओ तिण्णि वि परिवाडीए किमट्ठं वुच्चंति, सुहुमपरूवणमेव किण्ण वुच्चदे ? ण, मेहाविमदाइमंदमेहाविजणाणुग्गहकारणेण तहोवएसा। सेसं सुगमं।

खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १५७ ॥

सूचिअंगुलं संखेज्जखंडेहि खंडिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीणं पडिभागो होदि। एदेण पडिभागेण चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवहिरदि। एत्थ किं चक्खुदंसणावरणकम्मक्खओवसमा जीवा चक्खुदंसणिणो वुच्चंति, आहो चक्खु

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, अनेकबार व्याख्यान हो गया है।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका— अतिस्थूल, स्थूल और सूक्ष्म ये तीनों प्ररूपणाएं परिपाटीक्रमसे किसलिये कही जाती हैं, केवल एक सूक्ष्म प्ररूपणा क्यों नहीं कही जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मेधावी, मन्दबुद्धि और अतिमन्दबुद्धि जनोंका अनुग्रह करनेके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है। शेष कथन सुगम है।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूच्यंगुलके संख्यातवां भाग करने पर वहां जो लब्ध आवे उसे वर्गित करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है। इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है।

शंका—यहां पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनानु [illegible] [illegible] द्रव्यप्रमाणेन कियन्तः [illegible] स. सि. १, ८.
[illegible]

दंसणोवजोगसहिदजीवा त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण होदव्वं, चदु-पंचिंदियापज्जत्तरासीणं पाहण्णादो । ण बिदियपक्खो वि, चक्खुदंसणट्ठिदीए[1] अंतोमुहुत्तप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । असंखेज्जदिभाए चक्खिंदियपडिभागे[2] चक्खुदंसणुवजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओवसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण वुच्चंति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहणं ण भवदि, तेसु चक्खिंदियणिप्पत्तिविरहिदेसु चक्खुदंसणोवजोगसहिदखओवसमाभावादो । संखेज्जसागरोवममेत्ता चक्खुदंसणिट्ठिदी[3] त्ति ण विरुज्झदे, खओवसमस्स पहाणत्तब्भुवगमादो । तदो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि त्ति सिद्धं, चदु-पंचिंदियपज्जत्तरासीणं पहाणत्तब्भुवगमादो ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनकी स्थितिको अन्तर्मुहूर्तमात्रका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान — आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं — चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुदर्शनोपयोगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहां पर लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिसे रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहां पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ [illegible]
२ [illegible]
३ [illegible]

णाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तधाविधत्तादो। जदि सरूवसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थित्तं पसज्जदे चेय, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात्। ण च केवलिम्हि एसो कमो, तत्थ अक्कमेण णाण-दंसणपउत्तीदो। ण च छदुमत्थेसु दोण्हमक्कमेण वुत्ती अत्थि, 'हदि दुवे णत्थि उवजोगा' त्ति पडिसिद्धत्तादो। ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुव्वं णाणं, ण णाणपुव्वं तु दंसणमत्थि' इदि वयणादो।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा अचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठी होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि। तत्थ तस्सेव असंखेज्जदिभागमवणिदे ओहिदंसणिदव्वं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए

शंका—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंवेदन है, तो इन दोनों ज्ञानोंके भी दर्शनके अस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेदनको दर्शन माना है। परन्तु केवलीमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि वहां पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है। छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध किया जाता है। ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है ऐसा आगमवचन है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है। इसमेंसे इसीका असंख्यातवां भाग कम कर देने पर शेष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्यप्रमाण होता है। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

ओहिदंसणविरहिदओहिणाणीणमभावादो। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। जो ओघ असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो सो चेव अचक्खुदंसणि-चक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागं हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओहिदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो[1] ॥ १६१ ॥

केवलणाणविरहिदकेवलदंसणाभावादो। सुद-मणपज्जवणाणाणं[2] किमिदि ण दंसणं? वुच्चदे- ण ताव सुदणाणस्स दंसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुव्वत्तादो। ण मणपज्जव-

चूंकि अवधिदर्शनको छोड़कर अवधिज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये दोनोंका प्रमाण समान है। अब यहां पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— जो ओघ असंयत सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुदर्शनी और चक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इस अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है।

केवलदर्शनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

चूंकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है, इसलिये दोनों राशियोंका प्रमाण समान है।

शंका— श्रुतज्ञान और मनःपर्ययज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है?

समाधान— श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक होता है। उसीप्रकार मनःपर्ययज्ञानका भी दर्शन नहीं है, क्योंकि, मनःपर्ययज्ञान भी उसीप्रकारका है, अर्थात् मनःपर्ययज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिये उसका दर्शन नहीं पाया जाता है।

1 केवलदर्शनिनः केवलज्ञानिवत्। स. सि. १, ८. आदिकेवलपरिमाणं ताणं णाणं च ॥ गो. जी. ४८७.

2 प्रतिषु 'सुद मणप जवणाण ' इति पाठः।

चदुखंडा ओहिदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठि-सत्थाणस्स तसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो । सासणादीणं सत्थाणस्स ओघसत्थाणभंगो ।

परत्थाणे पयदं । अचक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि ओघपंचिंदियं व वत्तव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । एवं चेव चक्खुदंसणिपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि पलिदोवमादो उवरि चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणिभंगो ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा ओहिदंसणउवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिउवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । ओहिदंसण-अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्ज-

---

अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्य होता है। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।

स्वस्थानादिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व त्रस पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अचक्षुदर्शनियोंमें सबसे स्तोक उपशामक जीव हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर पल्योपमतक ओघ पंचेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार चक्षुदर्शनियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इतना विशेष है कि पल्योपमके ऊपर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनवालोंका अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। केवलदर्शनवालोंका केवलज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अवधिदर्शनी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं। अवधिदर्शनी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी उपशामक जीव अवधिदर्शनी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही क्षपक जीव अपने उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनी अप्रमत्तसंयत जीव चक्षु और अचक्षुदर्शनवाले क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले अप्रमत्तसंयत जीव अवधिदर्शनी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो

---

१ [illegible]

अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण च ओघेण साधम्ममत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं। विसेसे अवलंबिज्जमाणे पुण णत्थि समाणत्तं, सेसलेस्सोवलक्खिय जीवाणं पयदगुणट्ठाणेसु असंभवादो। एत्थ धुवरासी वुच्चदे। तं जहा— सिद्ध-तेरसगुणपडिवण्ण-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सिय-मिच्छाइट्ठिरासिं किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिरासिम्हि मेलिय तिगुणं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते हि किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि। तं तीहि रूवेहि गुणेऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काउलेस्सियधुवरासी होदि। पुव्वभागहारमसंखेज्जगुणं काऊण तिगुणधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सियधुवरासी होदि। तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे किण्हलेस्सियधुवरासी होदि। काउ-णीललेस्सियरासीओ सव्वजीवरासिस्स तिभागो देसूणो। किण्हलेस्सियरासी तिभागो सादिरेगो। गुणपडिवण्णाणमवहारकालो पुव्वं व भणिदव्वो।

इन तीन लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अनन्तत्वकी अपेक्षा, और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती जीवोंकी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघप्रमाणके साथ समानता पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है। विशेष अर्थात् पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो इन तीन लेश्यावाले जीवोंके प्रमाणकी ओघप्रमाणप्ररूपणाके साथ समानता नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर शेष लेश्याओंसे उपलक्षित जीवोंका प्रकृत गुणस्थानोंमें रहना असंभव मानना पड़ेगा। अब यहां पर ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्धराशि, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशि और पीत, पद्म और शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंकी राशिको, तथा इन सर्व राशियोंके [illegible] कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि राशिका [illegible] सर्व जीवराशिमें [illegible] देने पर कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले गुण[illegible] मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कापोतलेश्यावाले गुण[illegible] जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। पूर्वोक्त भागहारको असंख्यातगुणा करके और उसका तिगुणित ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तिगुणित ध्रुवराशिमें मिला देने पर नीललेश्यावाले गुण[illegible] जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे [illegible] घटा देने पर कृष्णलेश्यावाले गुण[illegible] जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। कापोतलेश्यावाले गुण[illegible] [illegible] सब जीवराशिका [illegible] त्रिभागप्रमाण है। [illegible] भाग प्रमाण है। इन तीन [illegible]। [illegible]

[illegible]

लेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । सेसं जोइसियभंगो ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेस्सासु ट्ठिदओघअसंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीहि सरिसो एकाए तेउलेस्साए ट्ठिदरासी कध होदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण सरिसत्तमवेक्खिय ओघत्तुवएसादो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा[1] ॥१६५॥

ओघरासिपमाणं ण पूरेदि त्ति ज उत्तं होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल होता है। शेष कथन ज्योतिषी देवोंके कथनके समान है।

तेजोलेश्यासे युक्त जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १६४ ॥

शंका— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशि, ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टिराशि छहों लेश्याओंमें स्थित है, अतएव उसके साथ केवल तेजोलेश्यामें स्थित असंयतसम्यग्दृष्टिराशि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टिराशि समान कैसे हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें समानता देखकर तेजोलेश्यासे युक्त सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशिका ओघरूपसे उपदेश किया है।

तेजोलेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

उक्त दो गुणस्थानोंमें तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशि ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करती है, यह इस सूत्रमें संख्यात पदके देनेका अभिप्राय है।

पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १६६ ॥

---

1 प्रमत्ताप्रमत्तसंयताः संख्येयाः । स. सि. १, ८

सुगममेदं सुत्तं । एदस्स अवहारकालो वुच्चदे । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअवहार-कालं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया संखेज्जा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सियाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । कुदो ? पम्मलेस्साए सह संजदाणं पउरं संभवाभावादो ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अवहारकालका कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

पद्मलेश्यावाले जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है ।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, पद्मलेश्याके साथ प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक [illegible]

१ [illegible]

२ [illegible]

[illegible]

एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागवयणं सासणादीणमोघपमाणपडिसेहट्ठं। कुदो णव्वदे ? संगहणयपरिहारेण पज्जवट्ठियणयावलंबणादो। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। सग-सगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सग-सगसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। ते

गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इन जीवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण इस वचनका प्ररूपण ओघप्रमाणके प्रतिषेध करनेके लिये दिया है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संग्रहनयका परिहार करके पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेनेसे यह जाना जाता है।

अब यहां पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर तेजोलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पद्मलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कापोतलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कृष्णलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर नीललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्ललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अपने अपने असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इन अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको

कुदो ? अण्णलेस्साभावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेवणिमित्त जोग कसायाभावा । जोगस्स कधं लेस्साववएसो ? ण, लिंपदि त्ति जोगस्स वि लेस्सा-ववएससिद्धीदो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा तिलेस्सिया होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिया होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तेउलेस्सिया होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पम्मलेस्सिया । सेसेगभागो सुक्कलेस्सिया । तिलेस्सियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थेगखंडं तं पुध ट्ठविय सेसे बहुभागे घेत्तूण तिण्णि समपुंजे करिय अवणिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते किण्हलेस्सिया । सेसेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते णीललेस्सिया । सेसेगखंडं तदियपुंजे पक्खित्ते काउलेस्सिया । तदो काउलेस्सियरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए

चूंकि अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें शुक्लेश्याको छोड़कर दूसरी लेश्या नहीं पाई जाती है, इसलिये अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें ओघप्रमाण ही शुक्लेश्यावालोंका प्रमाण है। अयोगी जीव लेश्यारहित हैं, क्योंकि, अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपका कारणभूत योग और कषाय नहीं पाया जाता है।

शंका — केवल योगको लेश्या यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'जो लिंपन करती है वह लेश्या है' इस निरुक्तिके अनुसार योगके भी लेश्या संज्ञा सिद्ध हो जाती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग प्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग लेश्यारहित जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तेजोलेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मलेश्यावाले जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण शुक्लेश्यावाले जीव हैं। कृष्ण नील और कापोत इन तीन लेश्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके अनन्तर पृथक् रक्खे हुए एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुंजमें मिला देने पर कृष्णलेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीललेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर कापोतलेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। अनन्तर कापोतलेश्यावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसेगखंडं सासणसम्माइट्ठिणो। एवं णील किण्हलेस्साण वि भागाभागं कायव्वं। तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। सुक्कलेस्सियरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। किण्ह णील-काउलेस्सिय-

---

जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भाग प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार नील और कापोतलेश्यावालोंका भी भागाभाग कर लेना चाहिये। तेजोलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। पद्मलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। शुक्ललेश्यावाली राशिके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत आदि जीव हैं।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व

मिच्छाइट्ठीण सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा । सासणादीणमोघभंगो । सव्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । सासणादीणमोघं । एवं चेव पम्म-सुक्कलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं । सत्थाणं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । एवं णील-किण्हाणं । सव्वत्थोवा तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो तेउ

प्राप्त है— कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि कृष्ण नील और कापोतलेश्यक राशियोंसे उनके भागहार स्तोक नहीं हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कम्भसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगश्रेणी विष्कम्भसूचीसे असंख्यातगुणी है। द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसीप्रकार पद्मलेश्या और शुक्ललेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे कापोतलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार नील और कृष्णलेश्यक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे

तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थाणभंगो । एवं पम्मलेस्साए । सुक्कलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुक्कलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउ-लेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसंजदसम्मा-इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मा-

---

तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्प-बहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पद्मलेश्याके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । शुक्ललेश्यामें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अव-हारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व कहते हैं- चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्ललेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव शुक्ललेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या-

सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। अलेस्सिया अणंतगुणा। काउलेस्सिया अणंतगुणा। णीललेस्सिया विसेसाहिया। किण्हलेस्सिया विसेसाहिया। एसो सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरूवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तवुत्ती वक्खाणं वा।

एवं लेस्साणुवादो गदो।

अवहारकाल पद्मलेश्यावाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यावाले संयतासंयतोंका अवहारकाल उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य पल्योपमसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूची पद्मलेश्यावाले जीवोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है। जगश्रेणी तेजोलेश्यावाले विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है। जगत्प्रतर तेजोलेश्यावाले द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगत्प्रतरसे असंख्यातगुणा है। लेश्यारहित जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं। कापोतलेश्यावाले जीव लेश्यारहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। नीललेश्यावाले जीव कापोतलेश्यावाले जीवोंसे विशेष अधिक हैं। कृष्णलेश्यावाले जीव नीललेश्यावाले जीवोंसे विशेष अधिक हैं। यह सर्व परस्थान अल्पबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है। परन्तु इस विषयमें सूत्रवृत्ति अथवा व्याख्यान नहीं पाया जाता है।

इसप्रकार लेश्यानुवाद समाप्त हुआ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-केवलि त्ति ओघं[1] ॥ १७२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो। णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिभजिद तेसिं वग्ग च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता[2] ॥ १७३ ॥

एत्थ अणंतवयणं संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं। एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण वुत्तं? ण एस दोसो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा। वयाभावो वि[3] तेसिं मोक्खाभावादो अवगम्मदे।

खेत्तपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडीकरणट्ठ

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है। इतना विशेष है कि अभव्यसिद्धिक जीवराशिसहित सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उन राशियोंके वर्गमें भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि होती है।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अनन्त यह वचन संख्यात और असंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है।

शंका — यहां भव्य मार्गणामें अभव्योंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा प्रमाण क्यों नहीं कहा?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अभव्यसिद्धोंका व्यय नहीं होता। उनका व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है।

शंका — अभव्योंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

---

१ [illegible] । स. सि. १, ८. [illegible] गो. जी. १५०.

२ [illegible] । स. सि. १, ८. [illegible] गो. जी. ५६०.

३ प्रतिषु ' [illegible] ' इति पाठः ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १७४ ॥

केण कारणेण? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादो। ण हि सामण्णवदिरित्तो तव्विसेसो अत्थि। तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तव्वा।

खइयसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ १७५ ॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्ठिरासी ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो, तो वि ओघपरूवणं लभदे, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तं पडि विसेसाभावा।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १७६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

शंका—सम्यक्त्वी जीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं?

समाधान—क्योंकि, यहां पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है। सामान्यको छोड़कर उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं। इसलिये ओघप्ररूपणा ही निर्दोष यहां पर कहना चाहिये।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥

यद्यपि यह क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके असंख्यातवें भागमात्र है तो भी यह ओघप्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

कुदो ? खइयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा।

वेदगसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं[1] ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चेव थोवूणो[2] वेदगरासी होदि त्ति ओघत्तं ण विरुज्झदे।

उवसमसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा ओघं[3] ॥ १८० ॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता जदि वि होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं। सेसं सुगमं।

विभक्तिका निर्देश नहीं बन सकता है। अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'खउण्ह' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप है, षष्ठी नहीं, इसलिये गुणस्थानोंका विशेषण नहीं हो सकता है। शेष कथन सुगम है।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७८ ॥

चूंकि सयोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशियां ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण होती हैं, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत सम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके साथ समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है। शेष कथन सुगम है।

---

१ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्ट्यादयो ऽप्रमत्तान्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. तत्तो य वेदगुवसमया। आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥ गो. जी. ६५८.

२ प्रतिषु 'त्थोवूणा' इति पाठः।

३ औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासंयताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः। स. सि. १, ८.

असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे असंजदउवसमसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति। सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणरासिं मिच्छाइट्ठिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगअसंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअसंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमअसंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं असंखेज्जखंडे कए

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर वेदक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असंयत सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर असंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है। इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित उन राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदा। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसंजदा। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सव्वेसिं सत्थाणमोघं। परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। उवसमसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। उवरि वेदगपरत्थाणभंगो। खइयसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदासंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वम-

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे सभीका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघप्ररूपणाके समान है। अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। इनसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं। इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे संयतासंयतोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उनसे संख्यातगुणे हैं। इनसे अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे संयतासंयत संख्यातगुणे हैं। इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

संखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा उवसमसम्माइट्ठिणो चत्तारि उवसामगा । तत्थेव खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदउवसमसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । कारणं, चारित्तमोहणीयखवणकालादो उवसमसम्मत्तकालस्स संखेज्जगुणत्ता । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्ता संखेज्जगुणा । खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदाणं संखेज्जभागमेत्त-पमत्तसंजदवेदगसम्माइट्ठीहिंतो कधं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं संखेज्जगुणत्तं ? ण, सव्वसम्मत्तेसु संजदेहिंतो देससंजदाणं देससंजदेहिंतो असंजदाणं बहुत्तुवलंभादो । तं पि कुदो ? चारित्तावरणखओवसमस्स सव्वसम्मत्तेसुप्पायण

है । इससे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे पल्योपम असंख्यातगुणा है । इससे केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं । उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, चारित्र मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।

शंका— प्रमत्तसंयतोंके संख्यातवें भागमात्र प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे देशसंयत और देशसंयतोंसे असंयत जीव बहुत पाये जाते हैं, इसलिये मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव प्रमत्तसंयतोंके संख्यातवें भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे बन जाते हैं ।

शंका— सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत बहुत होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

सम्भवाभावादो। 'तेरसकोडी देसे' एदीए गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होउ णाम। कथं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भद्दत्तं ? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागयस्स एदीए गाहाए णाभद्दत्तं काउण सक्किज्जदि, अइप्पसंगादो। वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो खइयसम्माइट्ठिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा। मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा।

एवं सम्मत्तमग्गणा गदा।

समाधान—चूंकि चारित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्यक्त्वोंमें प्रायः संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत जीव अधिक होते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो 'देशसंयतमें तेरह करोड़ मनुष्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायगा ?

समाधान—यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होओ।

शंका—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंसे असंख्यातगुणा है। क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है। वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं। मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेय ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय । तेसिं संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि सादिरेया । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । तं जहा– देवअवहारकालादो पदरंगुलमेगं घेत्तूण संखेज्जखंडे करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसबहुखंडे तम्हि चेव पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठि-अवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १८६ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी ही होते हैं । तथा उनके संख्यातवें भागप्रमाण तीन गतिसंबन्धी संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसलिये संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अब यहां पर अवहारकालका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— देव अवहारकालमें एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकालकर शेष बहुखंड उसीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

---

१ [illegible] । स. सि. १, ८. [illegible] ॥ गो. जी. १६६.

२ [illegible] । स. सि. १, ८. [illegible] ॥ गो. जी. १६६.

तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि।

अजोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥

सुगममेदं।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-मिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। सेसेगखंडं अप्पमत्तसंजदादओ होंति।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणं मूलोघभंगो। परत्थाणे पयदं।

असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग आहारक मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक बन्धक जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अबन्धक जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं। शेष एक भाग प्रमाण अप्रमत्तसंयत आदि जीव हैं।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

१ अयोगकेवलिनः सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १, ८. २ प्रतिषु ' वत्तइस्सामो ' इति पाठः।

हारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। आहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। अणाहारि-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो अबंधगा अणंतगुणा। अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। तदो आहारिणो मिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा।

एवं दव्वाणिओगद्दारं समत्तं।

असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणे हैं। अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं। इनसे आहारक बन्धक जीव असंख्यातगुणे हैं।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ।

परिशिष्ट

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	ढिया, संखेज्जा ।	२५१
४४	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि केवलि त्ति ओघं ।	२५२
४५	मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्व पमाणेण केवडिया, कोडाकोडा कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा कोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ।	२५३
४६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज दासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	२५९
	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि केवलि त्ति ओघं ।	२६०
	मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमा णेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे- ट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ।	२६०
	मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहु डि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्व पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२६१
	मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केव डिया, असंखेज्जा ।	२६२
	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६२
	खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुसअपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तेहि सेढिमवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणि देण ।	२६२
५३	देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२६६
५४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६८
५५	खेत्तेण पदरस्स बेछप्पण्णंगुलसय वग्गपडिभागेण ।	२६८
५६	सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं ।	२६९
५७	भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७०
५८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७०
५९	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पद रस्स असंखेज्जदिभागो । तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुल वग्गमूलगुणिदेण ।	२७०
६०	सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठिपरूवणा ओघं ।	२७१
६१	वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७२
६२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७२
६३	खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसद वग्गपडिभाएण ।	२७२
६४	सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठी ओघं ।	२७४
६५	जोइसियदेवा देवगईए भंगो ।	२७५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	२७६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	२७६
६८	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण।	२७७
६९	सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं।	२८०
७०	सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो।	२८०
७१	आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण।	२८१
७२	अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण।	२८१
७३	सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा।	२८६
७४	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व-	
७५	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण।	३०६
७६	खेत्तेण अणंताणंता लोगा।	३०७
७७	बेइंदिय-तीइंदिय चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१०
७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	३१२
७९	खेत्तेण बेइंदिय तीइंदिय चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त अपज्जत्तेहि पदरं अवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण।	३१३
८०	पंचिंदिय पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१४
८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	३१४
८२	खेत्तेण पंचिंदिय पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण।	३१४
८३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं।	३१७
८४	पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा।	३१७

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ।	४४७
१४९	सामाइय छेदोवट्ठावणसुद्धिसजदेसु पमत्तसजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसापराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघ।	४४७
१५०	परिहारसुद्धिसजदेसु पमत्तापमत्त सजदा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा।	४४९
१५१	सुहुमसापराइयसुद्धिसजदेसु सुहुमसापराइयसुद्धिसजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघ।	४४९
१५२	जहाक्खादविहारसुद्धिसजदेसु चउट्ठाण ओघ।	४५०
१५३	सजदासजदा दव्वपमाणेण केव डिया, ओघ।	४५०
१५४	असजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमा णेण केवडिया, ओघ।	४५०
१५५	दसणाणुवादेण चक्खुदसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव डिया, असखेज्जा।	४५३
१५६	असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।	४५३
१५७	खेत्तेण चक्खुदसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण।	४५३
१५८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघ।	४५४
१५९	अचक्खुदसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघ।	४५५
१६०	ओहिदसणी ओहिणाणिभगो।	४५५
१६१	केवलदसणी केवलणाणिभगो।	४५६
१६२	लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय काउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदसम्माइट्ठि त्ति ओघ।	४५९
१६३	तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसिय देवेहि सादिरेय।	४६१
१६४	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति ओघ।	४६२
१६५	पमत्त अप्पमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा।	४६२
१६६	पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीण सखेज्जदिभागो।	४६२
१६७	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति ओघ।	४६३
१६८	पमत्त अप्पमत्तसजदा दव्वपमाणेण केवडिया, सखेज्जा।	४६३
१६९	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति	

२ अवतरण गाथा सूची ।

४ ग्रन्थोल्लेख ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पाबहुग सुत्त

१ 'उवसमसम्माइट्ठी थोवा। खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा। वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा' त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे। ३ ६८

२ 'तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो' त्ति सुत्तअप्पाबहुग सुत्तादो। ××× एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। ३ ३२१

३ 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा। पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुग सुत्तादो कारणस्स थोवत्तं जाणिज्जदे। ३ २६१

४ अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो। ३ २७३

२ कसायपाहुड, पाहुडसुत्त

१ कसायपाहुडउवएसो पुण अट्ठकसाएसु खीणेसु पच्छा अंतोमुहुत्तं गंतूण सोलस कम्माणि खविज्जंति त्ति। १ २१७

२ आइरियकहियाणं ×× कसायपाहुडाणं। १ २२१

३ ' अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं ' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो। २ ४९६

३ कालसुत्त (कालानुयोग)

१ कालसूत्रेण सह विरोधः किन्न स्यादिति चेन्न तत्र सर्वोपशमस्य प्राधान्यात्। १ ३४२

२ तो एदाओ दुविहसलागरासीओ सांतराओ होंति। ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरत्तुवलंभादो। ३ ४५८

४ खुद्दाबंध

१ 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा, तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे। ३ २३१

२ 'मणुसगईए मणुसेहि रूवा पक्खित्तएहि सेडी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्दाबंधसुत्तादो। ३ २४९

३ 'ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि सणक्कुमारे चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा। तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा। भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा।

क्रम न, भाग पृष्ठ

१२ वियाहपण्णत्ति

१ लोगो वादपदिट्ठिदो त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो। ३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाक्षेत्रविधान

१ जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घादेण समुहदो काउलेस्सियाए लग्गो त्ति वयणेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो ३ ३७

२ तदुक्तोऽप्यसौ एव इति वेदनाक्षेत्रविधानसूत्रात्। तद्यथा । १ २११

३ ण, बादरेइंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेयणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभा। ३ ३२०

४ सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेयणखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा। ३ ३३१

१४ सन्मतिसूत्र

१ णाम ठवणा दवियं त्ति एस दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो।
२ भावो दु पज्जवट्ठियपरूवणा एस परमत्थो।
३ अणेण सम्मइसुत्तेण सह कथमिदं वक्खाणं ण विरुज्झदे ? १ ११

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काऊण××× सोलस पयडीओ खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पच्चक्खाणापच्चक्खाणावरणकोध माण माया लोभे अकमेण खवेदि। एसो संतकम्म १ २१७
२ पाहुडउवएसो
३ आइरियकहियाणं संतकम्म कसायपाहुडाणं १ २२१

१६ सतसुत्त (परूवणा)

१ अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्तपदुप्पायणसंतसुत्तरसणादो २ १ ९

५ पारिभाषिक शब्दसूची।

सूचना— जो शब्द ग्रन्थमें अनेकबार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक या दो पृष्ठांक ही दिये गये हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
१५१	४	श्रद्धानमनुरक्तता	श्रद्धानमुत्कता
१७९	१	अवधरण	अवधारण
१७१	८	जायदि	जादि
१७१	९	समिलियद	समल्यिद
१७१	२४	वेदक सम्यक्त्वसे मेल कर लेता है	वेदक सम्यक्त्वको प्राप्त होता है
१९४	६	सहार्पायवयस्य	सहास्यापायवयस्य
१९६	६	अपौरुषेयत्वस्य	अपौरुषेयस्य
१९८	७	पुनर्नैवोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२०१	७	पातयति	यातयति
,,	२३	गिराता है	यातना देता है
२०३	८	द्रव्य	दिव्य
२०३	२२	द्रव्य और भावरूप	दिव्य स्वभाववाले
२१२	८	अणेणेव	अणेण
२१७	४	सचेज्जदि	सवेज्जे
२२०	६	परिमाणत्ताद्दो	परिणामत्ताद्दो
२४३	७	उत्तिरग-	उत्तिंग (उत्तिंग)
,,	८	प्राणमिति	प्राणमिति चेत्
२४८	२	भयेदिति	भवति
२ ९	६	संज्ञिन इति	संज्ञिन , अमनस्का असंज्ञिन इति
,,	१९	कहते हैं	और मनरहित जीवोंको असंज्ञी कहते हैं
२६०	२	निप्पत्ती	निप्पत्ते
२७०	१	कर्मस्कन्धे	नोकर्मस्कन्धे
,,	१४	कर्मस्कन्धोंके	नोकर्मस्कन्धोंके
२८१	२	सच्चमोसं ति	सच्चमोस ति
२८७	१	प्रयत्ना	सप्रयत्ना
,,	१०	प्रयत्न और	प्रयत्नसहित
२९३	१	तत्परित्यक्ता	परित्यक्ता
२९५	६	को हां	केष्वां
३१८	५	भूतपूर्वगत	भूतपूर्वगति
३२०	७	गम्या	पगम्या
३२१	४	चादि	जांति
,,	,,	जादि	जांति

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
३२१	५	आदि	आति
३३१	११	नपुंसकमुभया	नपुंसक उभया
३४५	३	अभिलापे	अभिलापो
३४९	८	गद्दा	गृद्धी
३४९	३०	गर्हा	गृद्धि
३६०	१	भेय च	भेयगय
३७३	७	सचित्त	सचित्त
३७४	६	म,	च
३७७	३	निषधनायेयामविष्यता	निषधनायमाविष्यता
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्पाणमिव	अप्पाण विव
३९०	४	रायद्दोसो	रायद्दोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यविरोधात्	एकदेशात्सत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदश रहनेमें	एकदशकी उत्पत्तिमें

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
४१५	४	मिच्छाइट्ठी सिद्धा० त्ति	मिच्छाइट्ठी० सिद्धा त्ति
४१९	४	परदियादी	अत्थि परदियादी
४२७	२	भण्णमाणे	ओघे भण्णमाणे
४४४	१	सिद्धमपज्जत्ते	सिद्धमपज्जत्ता
४४४	२	सरीर पहुवण	सरीराइवण (सरीराइवण)
४६२	६	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
४६३	४	तिण्णि सम्मत्त	तिण्णि सम्मत्ताणि
५१३	५	इत्थिवेदो	इत्थिवेदा पुण
५१४	[illegible]	असुद तिरिक्खसाण गउरयण्णा भायापर्त्ताशो।	असुद तिरिक्खसाण [illegible] कम्मभूमिमिच्छाइट्ठी [illegible] असुद तिरिक्खसाण गउरयण्णा[illegible]पर्त्ताशो।
५१४	२६	भोगभूमियाँ मनुष्योंके और [illegible]	[illegible] बाउने हैं। [illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
५३५	९	तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ भवंति। पंच वण्ण रस-कागस्स	तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ भवंति। बहुवण्णस्स जीवसरीरस्स कधमेक्कलेस्सा जुज्जदे ? ण, पाधण्णपदमासेज्ज ' कसणो कागो ' त्ति पंच वण्णरस कागस्स
५३५	२५	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं। जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले कागके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त काकके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं। शंका—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेश्या कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' काक कृष्ण है ' इसप्रकार पांचों वर्णोंसे युक्त काकके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५६८	६	एव देवगदी	एव देवगदी समत्तो (चा)
५८९	३	तिरिक्खगदीओ त्ति	तिरिक्खगदि त्ति
५९०	१०	एव पिंदियमग्गणा	एवमिंदियमग्गणा
५९८	४	अपज्जत्ता दुविहा	अपज्जत्तभेयेण दुविहा
६०९	१२	आयारभावे मट्टियाए	आयारभूमिमट्टियाए
६१०	१२	आधारके होनेपर मट्टीके	आधारभूत भूमिरूप मट्टीके
६११	३	बादरकाइयाण	बादरतेउकाइयाणं
६४८	८	केवलीण	सजोगकेवलीण
६४८	२०	केवली जिनके	सयोगिकेवली जिनके
६५३	३	भावगद पुव्वगदि च	भूदपुव्वगदि च
६५३	१७	भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके	भूतपूर्वगति न्यायसे
६५७	४	मिच्छाइट्ठीण	मिच्छाइट्ठीण वा[1]
६ ९	२	समणा भवदि	संभवो भवदीदि
६५९	७	प्राणोंका सद्भाव हो जाता है,	प्राणोंका होना संभव है,
६६०	४	वा इंदिय जीव-पदेस ण	वा इंदियजीवपदेसाण
६६०	१६	स्पर्शन जीवके	भिन्न जीवके

१ देखो पृष्ठ ६५७ का अर्थ और टिप्पणी।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
६६०	■	एप बधहरस्स	एप वद्दरस्स (इद्दरस्स)
,,	१८	विशिष्ट मधको धारण करनेवाले नारीके	इस छोटे शरीरके
८२१	२	घडमाणा	घम्भाणाण
८२१	३	उवसमसम्मत्तेण	उवसमसम्मत्ते
,,	१५	श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहारशुद्धिसंयमके नष्ट हो जाने पर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमका	श्रेणिसे उतरनेके पश्चात् ही उपशमसम्यक्त्वके नष्ट हो जाने पर परिहारविशुद्धिसंयमीका।
८४६	२	पज्जत्तापज्जत्ता आलावा	पज्जत्तापज्जत्ता वे आलावा
,,	११	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसम्बन्धी दो आलाप

भाग ३

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
१४	३	घनुर्धृतायामेणाय	घनुर्धृतावस्थायामेयाय
२०	३	पुणो	पुणो वि
२६	९	अथद्धाणादो	अप्पयद्धाणादो
,,	२५	यह पदार्थ प्रमाणसे अबाधित है।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुनः प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है।
२८	१०	ण अवहिरिज्जंति	मा अवहिरिज्जतु
३०	७	कयसदपुधत्त	कयवस्सपुधत्त, कयत्तसमपुधत्त
,,	२६	शतपृथक्त्वरूप	दशपृथक्त्वरूप
३४	४	पति	रासी
,,	१५	यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है।	यह राशि जगच्छ्रेणीके सातवें भागप्रमाण है।
३६	५	पदरस्स समवट्ठाणादो।	पदरस्स पमाणरस्स समवट्ठाणादो।
३९	१	णाणपमाणमिदि	णाण पमाणमिदि

१ प द। प ठ दो भिन्न भिन्न ताडपत्रीय प्रतियोंके हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है।	पाठ चाहिये।
४२७	४	देवगदिअन्नाण	देवगदिक्साइअन्नाण
४३०	६	मूले उचसवकसायरासी	मूलेाुवसतकसायरासि
४३६	१० ११	दुविहणाणविरहिय	दुविहण्णाणविरहिय
४३६	२८	दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे	दोनों प्रकारके अज्ञानोंसे
४४०	३	चेय	तम्हि चेय
४४०	१	लद्धिसपण्णरासीण	लद्धिसपण्णरिसीण
,,	१२	राशिया बहुत नहीं हो सकता हैं।	राशि बहुत नहीं हो सक
४४२	६	सेसमसखेज्जखंडे	सेसमणतखंडे
,,	२०	असख्यात खड	अनन्त खड
४४४	२	मदि सुदअण्णाणीसु	मदि सुदअण्णाणमिच्छा
,,	१४	ज्ञानी जीवोंमें	ज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंमें
४४५	९	विसेसाहिया २८।	विसेसाहिया २८। आभि सखेज्जगुणा। अनगा सखे
,,	२५	अट्ठाईस हैं। मन पर्ययज्ञानी अप्रमत्तसयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंमे	अट्ठाईस हैं। आभिनिबोधि शामक जीव अवधिज्ञानी हैं। मतिज्ञानी और श्रुतज् उपशामकोंसे सख्यातगुणे अप्रमत्तसयत जीव उक्त क्ष
४४६	३	सुणाणिअसजद	आभिणिबोहि सुदणाणिअ उजगुणा। तत्थेव पमत्त सुणाणि असजद-
,,	१६	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे	अवधिज्ञानी प्रमत्तसयतोंसे श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसयत इन्हीं दो ज्ञानोंमें प्रमत्तसय सयतोंसे सख्यातगुण हैं।
४४८	३	चक्खुदसणमिच्छादिट्ठीण	चक्खुदंसणमिच्छादिट्ठि
,,	१५	चक्षुदर्शनी	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंकी
,,	३	असखेज्जदिभाए चखिदियपडिभागे	अनते चखिदियपडिभाए

मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलान

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
७	१	पुष्फयत	पुप्फयत
"	३	भूयबलि	भूयबलि
"	५	हेऊ	हेउं
"	६	आइरियो	आइरिओ
५	२	"	"
९	१	पयत्थ	पयट्ठ
११	२	भणिओ	भणिदो
१२	१	पज्जय	पज्जय
१५	२	सुत्तुक्ति	सुयवुक्ति (त्रिव)
१६	८	मोली	मउलि
१८	७	अण्ण णिमित्ततर	अण्णं णिमित्ततर
२१	१	णिपदरि	णिपदरि
२६	२	घादेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२	आदायसाण	आदि अवसाण
५१	३	मादर	मादय
६२	७	वसप्पिणीए	उवसप्पिणीये
६४	२	वसण णाणं चरित्ते	वसण-णाण चरित्ते (णाणदचरित्ते)
६६	१	अपूसामी य	अपूसामी य
	२	णिच्छुहकरे ति	णिच्छुहकरेति
	७	जिणपालिदस्स	जिणपालिदस्स
	१०	पय	पदं
	२	द्रमिल	द्रविल
	१०	आणुग	आणग
	३	पण्हवायरणं	पण्हवाहरण
	३	किरिंबिल	किम्भबिल
	८	दिट्ठिवादो	दिट्ठिवादो
		सव्वेहिं	सव्वहि
		उप्पाय	उप्पाद
		पगूण	पऊण
		अणियोग	-णियाग
		सुत	सुद
		सद	वि सय
		सद	दु सय

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
७	१	पुप्फदंत	पुप्फयंत
"	३	भूयबलिं	भूयबलि
"	५	हेऊ	हेउं
"	६	आइरियो	आइरिओ
५	२	"	"
९	१	पयत्थ	पयट्ठ
११	२	भणिओ	भणिदो
१२	१	पज्जय	पज्जय
१५	२	सुदुक्खि	सुयदुक्खि (क्खि)
१६	८	मोली	मउलि
१८	७	अण्ण णिमित्ततर	अण्णं णिमित्ततर
२५	१	णियदहि	णिपदहि
२६	२	घादेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२	आइरियसाण	आदि मयसाण
५१	३	मादद	माम्प
६२	७	वसप्पिणीए	उयसप्पिणीये
६४	२	दसण णाणं चरित्ते	दसण-णाण चरित्ते (णाणच्चरित्ते)
६६	१	जंपूसामी य	जंयूसामी य
७०	३	णिम्बुदकरे ति	णिम्बुदकरेत्ति
७१	७	जिणपालिदस्स	जिणपालिदस्स
"	१०	पय	पर्इ
७७	२	द्रामिल	द्रविल
८१,९	१०	आणुग	आणग
९९	३	पण्हवायरणं	पण्हवाहरण
१०३	३	किरिंयविल	किण्हविल
१०८	८	दिट्ठियादादो	दिट्ठिवायादो
११२	५	सव्वेहिं	सव्वेहि
"	१३	उप्पाय	उप्पाद
११४	१	पगूण	पऊण
"	८	भवियोग	-यणियोग
११९	६	सुख	सुह
१२१	८	वि सद	वि सय
१२२	३	वि सद	दु सय

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४४८	२	मूलोघालावा समत्ता	मूलोघालावो समत्तो
"	८	सुद्ध कसेदेसि	सुद्ध कसणेदेसि
४५२	५	असंजम	असजमो
४५३	३	असजम	असजमो
४५६	४	वाऊ वाऊ वाऊ	वाउ वाउ सह वामो
४७१	३	पंच पेया भवंति	पचविहा हवति
४९१	२	आहारिणी अणाहारिणी	आहारिणीओ अणाहारिणीओ
४९७	७	तासिं चेव	तासिं
५०१	२	पविखऊण	पेक्खियूण
५२८	७	मणुसिणीसु	मणुसिणी
५ ०	७	परिणमिय	परिणामिय
५६१	८	वाविट्ठ	वाविट्ठ
५६६	७	मणुस्साण य	मणुसाण य
६०	२	अट्ठारपञ्जत्तीओ	अट्ठारपञ्जत्तीओ
००	९	अणिंदियाण	अणिंदिया
९१	२	ठाणा	ठाणं
"	" "		"
९३	६	अट्ठारस	अट्ठारह
०७	१	घत्तूण	×
०८	१०	पज्जायण	पज्जायण्ण
००	१	पर	पए
०४	२	मूलोघम्भुत्त	मूलोघम्मि उत्त
४०	१	पेक्खिय	पेक्खिऊण
८	१	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि	सासणसम्माइट्ठि पहुडिं
९	८	ओघलावा मूलोघभंगा	ओघालाओ मूलोघभगो
३	२	उपसहरिद	उवसघरिद

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
१	२	णमिऊण	णमियूण
"	"	दव्वणिओग	दव्वाणियोग
२	५	दुविहो	दुविधो
१	१०	हेऊ	हेदू

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
५, ६	२, ३, ५, ७, ८	दुव्व	दव्व
६	१२	तव्वत्थमायात्रो	तव्वट्ठामायात्रो
१३	४	दव्याणत चेदि	दव्याणवमिदि
,,	,,	जाणुगसरीर	जाणुगस्स सरीर
१४	२	दुक्खेज्जेत्ति	दुक्खेज्जेदि त्ति
१४	२	गद्दव्य	गद्दव्यं
१७	२	सधाद्सणात्रो	सद्दाद्सणात्रो
१९	७	अहया	अथया
२९	५	ययहारजोग्गो	ययहारजोगो
३०	५	अणाइस्स	अणादिस्स
३२	७	जधा	जहा
३२	७	मिणिज्जदि	मिणिज्जदे
३२	८	लोपण	लोगेण
३७	५	येयणासुत्तेण	येयणसुत्तेण, येदणसुत्तेण
३८	७	होंति	हवंति, भवंति
४०	४	पगरूव	पग रूव
४०	९	भाजिद	भजिद
४३	४	विरलणय-	विरलण
६३	६	भयहिरिज्जदि	भयहिरदि
६४	५	अठतीस	अट्ठतीस
६७	१०	सेसुस्सासे वि	सेसुस्सासासो वि
७१	२	पलिदोषमे	पलिदोवमे
९०	२	तेणउदी	तेणउदा
९८	१०	भायमापण्ण	भायमायण्ण
,,	९	चउसट्ठी	चउसट्ठा
१००	१	णयणउदी	णयणउदा
१००	२	अट्ठाणउदी	अट्ठाणउदा
१००	१२	उणतीसा	उगुतीसा
११४	२	भयदि त्ति	भयदीति
१२३	३	सव्व भागा	सव्व भागो
१४२	९	सुंदो	सुदीदो
१५७	९	-स्सरण	चरण
१७३	१	भाणेयव्याओ	भाणेदव्याओ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
१९०	२	पगुणवीसेहि	पत्तूणवीसाहि
२०१	३	दुग	दुय
२१०	१०	णेदव्वो	णेयव्वो
२१३	४	भट्ठम	भट्ठ
२१९	७, ९	वेसय	विसय
२२३	१	भागेण	भापण
"	५	भागे	भाए
२२४	१	सपहि	सपदि
२२८	२	कप्पमाणपरूवणा	कप्पयमाणपरूवणादो।
२२९	१४	भाणेदव्वा	भाणिदव्वा
२४४	७	सेसगइपडिसेहो	सेसगइपडिसेधो
२४९	५	-मिच्छाइट्ठीण	मिच्छाइट्ठीण
२६२	१२	वियहिचारे	वभिचारे
२७२	१०	पण्णरस्सेदि	पण्णरस्सेत्ति
२७३	३	विरोहादो	विरोहा
२७८	३	अण्णूणाहियाओ	अणूणाहियाओ
२९५	२	चउग्गइ	चउग्गइ
३३०	२	-मक्कारस्स	मक्कारयस्स
३३७	६	गुणेज्ज	गुणिदत्त
३३७	६	पवेसमाण	पविसमाण
३४८	३	भाइओ	भुवओ
[illegible]०	१	पज्जत्तरासिणा	पज्जत्तरासिपदि
[illegible]१	३	पक्खेविय	पक्खिविय
[illegible]	१	पविसिदव्वाणि	पवेसिदव्वाणि
[illegible]	३	ओगरासिं	ओगरासीओ
[illegible]	१	समद्धाए गुणगारेण	समद्धागुणगारत्त
	१३	कायजोगम्हि	-कायजोगम्हि
	५	मणेपत्तम्हि	-अवेयणिरयम्हि
	२	पवेसविधी	पवेसणविधी
	११	पडिवादीए	दविवादीए

ख—मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके वे पाठ जो पाठ या अर्थकी दृष्टिसे अशुद्ध प्रतीत हुए।

नोट—जिन पाठोंके सम्बन्धमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देखिये। जो पद पाठ या अर्थकी दृष्टिसे स्पष्टतः अशुद्ध प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई।

भाग १

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
८	३	अरिहंताणं	अरहंताणं
१३	१	उजुसुद	उजुसुद
१६	४	णियत	णियत (?)
,,	८	तस्सायुसं	तस्साण्सुस
२१	१	अणुपजुत्तो	अणवजुत्तो
२१	५	विपर्ययस्यतोः	विपयस्ययोः
४४	४	अरिहंता	अरिहंत
,,	७	,,	,,
५३	५	तत्करणारम्भुप	तत्करणारम्भुप
५८	११	अणुविद्धणं	अणुविद्धणं
६०	३	व्याकुलता	व्याकुल
६४	६	दिग्वासाणं	दिग्वाससाणे
६८	५	पादमूलमुपगता	पादमूलमयगया
८२	१०	ओवट्टाणे	ओवट्टाण
८३	८	ओवट्टाणं	ओवट्टाणे

८ ३ पृष्ठ ४२ पर [illegible] किया गया है वहां ' अरिहंताणं ' [illegible] [illegible] नहीं हुआ। [illegible] ' अरिहंताणं ' [illegible] ' अरिहंत ' [illegible] ([illegible] ८, [illegible]) [illegible] ' [illegible] ' नहीं।

१० ५ [illegible] हुए हैं [illegible]

४४ ४ [illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
९२	३	वियोगापायस्य	वियोपायस्य
९७	१	पुरिस च	पुरिस च
१००	१	बहाभो	×
,,	२	सुद्धिं करेंती	सुद्धिमकरेंती
१११	२	उत्त च	उत्ता च
११२	३	इयर	×
१२४	१२	णामं कम्माण	णाम कम्माण
१५८	■	जमरियस्स	जमतिरियस्स
१८९	८	जेरिस	जंस
२१०	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अब्भहिय	अब्भहिय
२२२	४	णियट्टति	णिब्बुट्टिति (?)
२६२	९	मसिभिमभृतयः	ससिभिमभृतयः
२९८	६	मैव	मैव दोषः
३१५	२	बाधा	बाधान्
३२६	१०	महब्बयाइं	महब्बएसु य
३२८	८	तत्रैनासा	तत्रैतेषा
३३३	१	अस्मादेयापांन्	यस्मादेयापांत्
३४९	१	लद्दुवसमिय	लद्दिवसमिय
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अथैक	इत्यत्र एक
३६६	५	स्थितम्	स्थित
३७६	७	पवयम	पंचयमा
,,	८	,,	,,
३८०	११	चक्खुणा	चक्खुणो
३९२	८	तद्	ते

भाग २

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसज्ञाया	मैथुनसज्ञायां
	,,	विशेषलक्षण	विशेषलक्षण
,,	५	आलीढबाह्याथाः	आलीढबाह्यार्थ
४१४	१०	वेदमार्गणाप्रभेदः	वेदमार्गणाप्रभेदा
४१७	११	आणप्पाणप्पाणा	आणपाणप्पाण

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
६७	४	मुहुत्तब्भुयगमासो।	-मुहुत्तब्भुगसो
७०	३	-मंजुर	-सजत्त
९९	९	छासट्ठि	छायत्तरि
[illegible]	[illegible]	परिमाण	पमाणं[1]
१००	५	भद्दसमयादिय	भद्दसमयाविय
१०५	७	अथ घेरूयादिय	अथवा रूयादिय
१२३	४	कट्टकम्मादिसु	कट्टमादिसु
१३१	१	ओगाढे	ओगाडे
१३३	७	जडादि	जडादि
१९१	९	मयणिद्दसेसपमाण	मयणिद्दे सेसपमाणं
१९१	[illegible]	हेट्ठिमविरल्लणाए	विरल्लणाए
१९२	२	पुव्वट्ठविदयेति	पुव्वट्ठविदजेत्ति
१९५	६	सोधिदे	सोधिदे
१९९	३	अण्णोण्णब्भासेण	अण्णोण्णब्भासो
२०१	४	पद्दम	पढम
२२७	४	अदीव	अदीद
२३२	३	अयणादियाणं	अणादियाण
२३२	८	छज्जोयण	तिण्णिजोयण
२३६	१०	तव्वग्गवग्ग	तस्सस वग्ग
२४३	[illegible]	पज्जत्तमयहारकालो	पज्जत्तमिस्सअयहारकालो
२४१	७	असंखेज्जादि	असंखेज्जादि
२६०	६	कोडाकोडाकोडाकोडीए	कोडाकोडाकोडीए
२६२	११	तदियवग्गमूलगुणिदेण	तदियवग्गमूलगुणिदेण। तिस्से सेढीए आयामो[2] असंखेज्जाओ ओयणकोडीओ
६३	१	जेय	जेय
८	३	असखेज्जासखेज्जाहि	असखेज्जासखेज्जाओ
[illegible]	५	बहुसाविरोहाओ	बहुसाविरोहो
[illegible]	६	घणधारुप्पण्ण	बहुणधारुप्पण्ण
[illegible]	२	गधव्व-णागादि	गधव्वणिगादि
[illegible]	४	घाण्डेज्जति	घोण्डेज्जंता

१ 'पमाणं' पद रखनेसे अर्थमें कोई भेद न पड़ते हुए भी व्याकरण दृष्ट्या ठीक जचता है।

२ 'तिस्से सेढीए' आदि पाठ उसके पुनरुक्त होता है।

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
३५१	२	घणाघणे	वेऊये
३५२	१०	हिये	हये
३५३	५	आगच्छदि।	आगच्छदि त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदे।
३५९	७	सेसरासिणा	-सेसरासि
३७२	३	सरीरपज्जत्तेण	सरीरपज्जत्त
३८१	१२	विमाहिओ ऊणो	विमादीओ ऊणा
३८२	३	बादरआउपज्जत्त	बादरयाउपज्जत्त
३८४	१	-दव्यमसंखेज्जगुण	दव्यमणंतगुण
३८६	९	जदो	जादो
४०४	४	पुणरवि ओदरमाणा	पुण द्वयियोदरमाणा
४१२	१	मोसवचिजोगि सच्चवचिजोगि	मोसवचिजोगि संमवदि
४१४	७	संखेज्जगुणाओ	असंखेज्जगुणाओ
४२५	८	भागमेत्तो	भागमेत्ते
,,	९	ण च	णय
,,	९	णिग्गम-पवेसाण	णिग्गमपवेसण
४३०	४	अक्कसाइणो ण	अकसाइणा
४४८	११	चेवज्झवसाया	चेदज्झवसाया
४५४	६	चक्खुदंसणट्ठिदी	चक्खुदंसणट्ठिदीओ
४७४	६	पत्तो	पगो
४८१	३	णामहत्त	ण महत्त
४८४	१०	अणाहारिअसजद	आहारिअसजद-
४८६	१०	(खगा संखेज्जगुणा)	पधगा संखेज्जगुणा